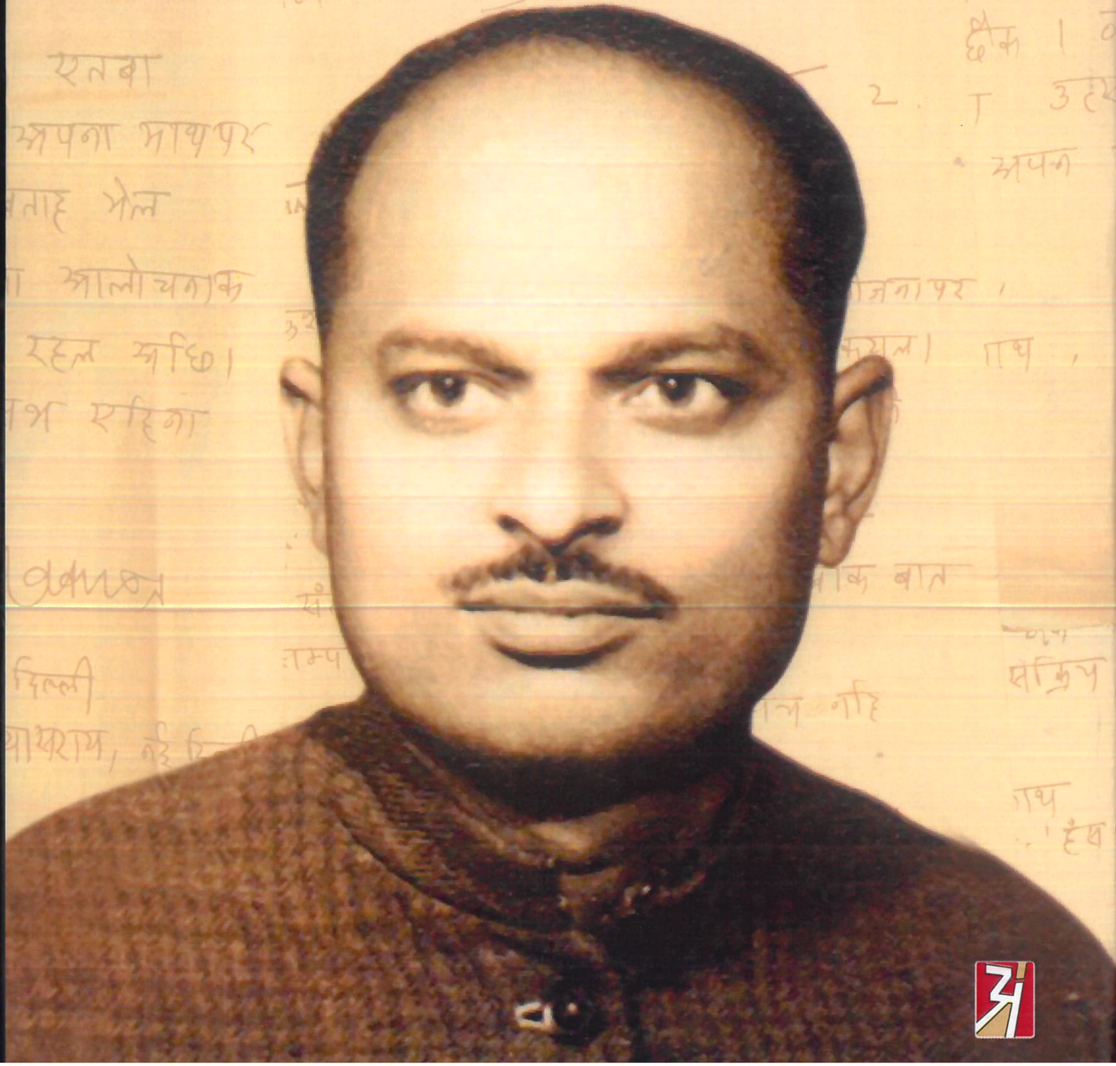
अक्ष पर नचैत

केदार कानन



चिट्ठी सभक मादे की लिखू। एकरा पूरा करू। हमरा पठनीय बुझायल अछि।

एक टा नदी अछि। ओ बहैत अछि। गीत गबैत अछि। ओकर गीत सुनबा लेल कान चाही। से कान जकरा सुनत, से सुनत। यमुनाक एक हजार नाम छनि। एक टा नाम छनि—नदी। तकर अर्थ छैक जे नाद करैत होअय, कदाचित गीत गबैत होअय। अहाँक एहि रचना मे से गीत अछि। से एकरा पठनीय आ स्वागत-योग्य बनबैत अछि।

अहाँक एहि निबंध मे 'तुलसी-दल' पड़ल अछि। ई शब्द हम कुबेरनाथ रायक पोथी 'रामायण महातीर्थम्' सँ उठबैत छी। ओ कहैत छथि—'आधुनिक सभ्यता की सारी उपलब्धियों का पतन अवदमनों और शोषण-प्रक्रियाओं के पुनरावर्तन में इसीलिए हो जाता है कि इसमें शील औ उपासना का तुलसीदल नहीं पड़ा है।' पुनः शील शब्दक व्याख्या करैत ओ कहैत छथि—'...'शील' शब्द का भी अनुवाद अभारतीय भाषा में असंभव है। डा. कृष्ण चैतन्य ने इसको 'सोशीओ कलचरल ब्यूटी' कहा है। परंतु 'ब्यूटी' से काम नहीं चलता क्योंकि इस 'शील' शब्द में 'गुडनेस' का भाव भी अंतर्निहित है।'

शब्द सँ एक संसार बनैत छैक। एक वातावरण बनैत छैक। से अहाँ वातावरण बना रहल छी।

बंगाली कवि जय गोस्वामी कहैत छथि जे लिखबा लेल भाषा प्राप्त होइत छैक। से भाषा रचल आ कीनल नहि जा सकैत अछि। ओ अनायास प्राप्त होइत छैक। से भाषा अपन संसार अपनहि रचैत छैक। से भाषा लिखबा लेल बाध्य आ विवश कए दैत छैक। ओ कहैत छथि एहि भाषाक आविर्भाव होइत छैक, तकर प्रतीक्षा लेखक केँ करक चाही। बिना एहेन प्रतीक्षा कयने लेखन शुरू नहि कयल जा सकैत छैक, आ ने से पूर्ण कयल जा सकैत छैक।

अहाँक एहि लेखन मे तकर आभास होइत अछि।

सभ्यता, भाषा आ एहि सभक साहित्य नदीक समान छैक। अनादि, अनंत आ असीम। संगहि अपरिचित। ओकरा सँ थोड़ दूर धरि संग चलि कए जा सकैत छी। थोड़ आ एक अंशक परिचय कए सकैत छी।

अहाँक एहि लेखन सँ किछु एहनो आभास होइत अछि।

—जीवकांत

चिट्ठी सभक मा
पठनीय बुझायल
एक टा नदी
ओकर गीत सुनब
से सुनत। यमुना
छनि—नदी। तव
कदाचित गीत गं
अछि। से एकरा प
अहाँक एहि
शब्द हम कुबेरन
उठबैत छी। ओ व
उपलब्धियों का
के पुनरावर्तन में
उपासना का तुल
व्याख्या करैत अं
अनुवाद अभारती
इसको 'सोशीओ
से काम नहीं चल
का भाव भी अंतर्नि
शब्द सँ एव
छैक। से अहाँ वा
बंगाली कवि
लेल भाषा प्राप्त
जा सकैत अछि
अपन संसार अ
बाध्य आ विवश
भाषाक आविर्भा
करक चाही। बि
कयल जा सकैत
अहाँक एहि
सभ्यता, भ
छैक। अनादि,
ओकरा सँ थोड़
आ एक अंशक
अहाँक ए
होइत अछि।

अक्ष पर नचैत

अक्ष पर नचैत

(संस्मरण : जीवकांतक पत्रक बहाने)

केदार कानन

अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.

ISBN 978-93-88799-97-3
अक्ष पर नचैत

पहिल संस्करण (सजिल्द) : 2021
पुनर्मुद्रित संस्करण (सजिल्द) : 2023

मूल्य : 345.00 रुपए

प्रकाशक
अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.
सी-56/यूजीएफ-IV, शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-II
ग़ाजियाबाद-201005 (उ.प्र.)
फ़ोन : +91-9871856053
ई-मेल : antika56@gmail.com
वेबसाइट : www.antikaprakashan.com

सौजन्य सहयोग
किसुन संकल्प लोक
किसुन कुटीर, सुपौल-852131 (बिहार)
फ़ोन : +91-7004917511

आवरण सज्जा : अंतिका आर्ट्स

मुद्रक : आर.के. आफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

AKSH PAR NACHAIT (Maithili Memoir) by Kedar Kanan
Published by Antika Prakashan Pvt. Ltd., C-56/UGF-IV, Shalimar Garden Ext.-II
Ghaziabad-201005 (UP) India
Price : ₹ 345.00

पत्रक दुनिया

ई पोथी 2003 मे लिखि लेल गेल छल।

तखन जीवकांत छलाह। आरंभिक किछु अंश हम हुनका देखबा लेल पठौने रही, धकचकाइत। हुनक जे प्रतिक्रिया हमरा भेटल, से उत्साहित कयलक।

ओ 16 फरवरी, 2003क पत्र मे लिखलनि—'चिट्ठी सभक मादे की लिखू। एकरा पूरा करू। हमरा पठनीय बुझायल अछि।

एक टा नदी अछि। ओ बहैत अछि। गीत गबैत अछि। ओकर गीत सुनबा लेल कान चाही। से कान जकरा सुनत, से सुनत। यमुनाक एक हजार नाम छनि। एक टा नाम छनि—नदी। तकर अर्थ छैक जे नाद करैत होअय, कदाचित गीत गबैत होअय। अहाँक एहि रचना मे से गीत अछि। से एकरा पठनीय आ स्वागत-योग्य बनबैत अछि।

अहाँक एहि निबंध मे 'तुलसी-दल' पड़ल अछि। ई शब्द हम कुबेरनाथ रायक पोथी 'रामायण महातीर्थम्' सँ उठबैत छी। ओ कहैत छथि—'आधुनिक सभ्यता की सारी उपलब्धियों का पतन अवदमनों और शोषण-प्रक्रियाओं के पुनरावर्तन में इसीलिए हो जाता है कि इसमें शील औ उपासना का तुलसीदल नहीं पड़ा है।' पुनः शील शब्दक व्याख्या करैत ओ कहैत छथि—'...'शील' शब्द का भी अनुवाद अभारतीय भाषा में असंभव है। डा. कृष्ण चैतन्य ने इसको 'सोशीओ कलचरल ब्यूटी' कहा है। परंतु 'ब्यूटी' से काम नहीं चलता क्योंकि इस 'शील' शब्द में 'गुडनेस' का भाव भी अंतर्निहित है।'

शब्द सँ एक संसार बनैत छैक। एक वातावरण बनैत छैक। से अहाँ वातावरण बना रहल छी।

बंगाली कवि जय गोस्वामी कहैत छथि जे लिखबा लेल भाषा प्राप्त होइत छैक। से भाषा रचल आ कीनल नहि जा सकैत अछि। ओ अनायास प्राप्त होइत छैक। से भाषा अपन संसार अपनहि रचैत छैक। से भाषा लिखबा लेल बाध्य आ विवश कए दैत छैक। ओ कहैत छथि एहि भाषाक आविर्भाव होइत छैक, तकर प्रतीक्षा

लेखक केँ करक चाही। बिना एहेन प्रतीक्षा कयने लेखन शुरू नहि कयल जा सकैत छैक, आ ने से पूर्ण कयल जा सकैत छैक।

अहाँक एहि लेखन मे तकर आभास होइत अछि।

सभ्यता, भाषा आ एहि सभक साहित्य नदीक समान छैक। अनादि, अनंत आ असीम। संगहि अपरिचित। ओकरा सँ थोड़ दूर धरि संग चलि कए जा सकैत छी। थोड़ आ एक अंशक परिचय कए सकैत छी।

अहाँक एहि लेखन सँ किछु एहनो आभास होइत अछि।'

आब जीवकांत नहि छथि।

सत्रह बर्खक बाद एहि किताब केँ टाइप मे देलहुँ। जखन टाइप कयल सोझाँ आयल तँ सत्ते अफसोच भेल जे जीवकांत जीक जीविते मे ई किताब किएक नहि छपा लेलहुँ।

मुदा, आब अफसोचक कोनो अर्थ नहि बनैत अछि।

जीवकांतक नश्वर देह हमरा सभक बीच नहि अछि। मुदा हुनक कविता, कथा आ विचार हमरा सभ मे जीवित अछि। ओ जीवित रहत। अपन संपूर्ण स्वादक संग। रंग, ध्वनिक संग। अपन स्मृतिक संग।

जीवकांतक पत्रक संग हमर दुनिया आ सोच सेहो किछु अंश मे एहि किताब मे रूपायित भेल अछि। तत्कालीन साहित्य, संस्कृति आ समाजक थोड़ेक अंकन भेल अछि। थोड़ेक हलचलक चर्चा भेल अछि। एहि पोथी मे मात्र 1991 धरिक पत्राचारक उल्लेख भेल अछि।

आब मैथिलीक पाठक लोकनिक हाथ मे ई पोथी दैत निश्चिंतताक अनुभव क' रहल छी।

केदार कानन

अक्ष पर नचैत

1976क मइ मास। एक मासक लेल अरुणाचल प्रदेशक गच्छम नामक दुर्गम इलाका मे गेल रही। से गेल रही आर्मी अटेचमेंट कोर्स करबाक लेल। ओहि समयक सहरसा जिला सँ दू गोट एन.सी.सी कैडेटक चुनाओ कयल गेल छल। ओहि दू मे एक हम रही। सौंसे बिहार सँ मात्र तीस गोट कैडेट।

गच्छम सँ सटले रूपा छल। पहाड़ी उपत्यका सँ घेरल ई इलाका सामान्य नागरिकक प्रवेश लेल वर्जित छल। हमसभ सेकेन्ड सिक्ख रेजीमेंट मे छलहुँ। ओहि रेजीमेंटक प्रमुख रहथि लेफ्टिनेंट कर्नल एल.एन. संधु। बहुत मिलनसार, तेजस्वी। अपन ड्यूटीक प्रति ततबे पक्का, अनुशासनप्रिय आ समयक पाबंद ऑफिसर।

एक मास कोना बीति गेल, से आब आश्चर्य लगैत अछि। भारत-चीन युद्ध खतम भेल छल। मुदा तकर भयाओन अवशेष बचल छल। जतय हमसभ गेल रही ततय धरतीक हरियरी समाप्त भ' गेल छल आ ओतय पसरल छल युद्धक कालिमा। हरियर गाछ सभ कारी सियाह, ठुट्ठ आ बारूदक प्रहार सँ आहत आ हतप्रभ। बौक भेल गाछ आ पहाड़ अपन मौन व्यथा आ अजस्र करुणा सँ मोन केँ व्यथित-मथित करैत छल। दू-दू तीन-तीन हाथ जतय-ततय धँसल छल आ ओतय कारी सियाह धरती जेना एखनो कराहि-कलपि रहल छल। युद्ध मे प्रयुक्त भेल मीलक मील बनल बंकर सभ, ठुट्ठ गाछ आ गोला-बारूद सँ भेल बरबादीक दृश्य सभ सभतरि पसरल छल। एहि सभक अतिरिक्त चौबगली प्राकृतिक सुषमाक मोहकता सब सँ बेसी आकृष्ट कयलक। प्रकृतिक सौन्दर्यक द्वंद्व सँ ई हमर पहिल परिचय छल।

अद्‌भुत दृश्य सभ छल। चारूकात पहाड़, हरियरी। बीच मे, हमरा सभक बैरक केर आगाँ सँ बहैत एक टा पहाड़ी नदी। कलकल-छलछल गतिमान जल-राशि। कनकनी ततेक जे मइ मास मे, राति केँ दू टा कंबल ओढ़ि सुतैत रही। एहि नदी केँ पार कए ओहि कात जाइत रही पी.टी. करबाक लेल। नदी केँ पार करबाक लेल लोहा आ लकड़ीक छोट सन पुल। पहाड़ी नदीक बीच-बीच मे पाथरक अनेक खंड।

पहाड़ीक ओहि कात सघन जंगल। तकर तराइ मे छोट-छोट घर। लकड़ी आ टीन सँ बनल। घर सभ मे जापानी-चीनी मूलक लोक सभ। अपरिचित जीवन-शैली, रहन-सहन आ अपरिचित भाषा। कहल जाइत अछि जे ओ सभ बहुत दिन सँ एतय बसल अछि। ओ दृश्य सभ आकर्षित करय आ मोन केँ मोहने रहय। राति-दिन पहाड़ी

नदीक जल-रौरवक अभ्यास जकाँ भ' गेल छलैक कान केँ।

पहाड़ पर छोट-पैघ चाहखाना, होटल आ एक टा सिनेमा हॉल। होटल सभ मे स्त्रीगण। देह पर थोड़बे कपड़ा-लत्ता। कथूक लाज नहि। सभ स्त्रीगण अपने सँ सभ टा कार्य-व्यापार करैत—परम परिश्रमी, परम स्वतंत्र। स्त्री-विमर्श आ स्त्री-स्वाधीनताक एहि समय मे, हमरा रूपाक ओ स्त्री सभ मोन पड़ैत अछि आ ओकर सभक श्रम पर हम अभिभूत होइत छी, श्रद्धा सँ माथ झुकि जाइत अछि। श्रम आ सौन्दर्यक ई उद्दाम भाव जेना शोषणक सभ टा परिभाषा केँ ध्वस्त करैत छल। चमोली निवासी सूबेदार राम सिंह पहिल बेर हमरा ओहिठामक होटल सभ सँ, ओहि स्थल-विशेष सँ परिचित करबौने रहथि। आइ ओहो मोन पड़ैत छथि।

मोन पड़ैत अछि जे एत्तहि, एही अरुणाचलक गच्छम मे हमरा भीतर पहिल बेर कविता प्रस्फुटित भेल छल। चकित भेल रही जे अनायास ई की भ' रहल अछि हमरा भीतर! जेना सभ किछु केँ, सभ चीज केँ देखबाक आ अनुभव करबाक 'दृष्टि' बदलि गेल छल। राता-राती भेल एहि आंतरिक परिवर्त्तनक पृष्ठभूमि मोन पड़ैत अछि।

मोन पड़ैत छथि बाबूजी। मोन पड़ैत अछि राजकमल चौधरीक रचना सभ। मोन पड़ैत अछि बाबूजीक समय मे हुनका आदेशें नित्त दिन डाकघर जायब। डाकघर सँ हुनक मारते रास चिट्ठी आनब। डाक मे दू गोटाक पत्र सभ सँ बेसी रहैत छल। हस्तलिपि सँ परिचय छल। पहिल जीवकांत जीक आ दोसर पं. चंद्रनाथ मिश्र अमर जीक। आन-आन पत्र सभ मे हिंदीक अनेक लेखकक संग सोमदेव जी, कीर्त्तिनारायण जी, रेणु जी, उपेन्द्र जी आ गंगानाथ झा गंगेश जीक। आनो-आनो अनेक लेखक लोकनिक।

मुदा सर्वाधिक आकृष्ट करय जीवकांत जीक पत्र। ठाढ़-ठाढ़, सुस्पष्ट आखर—जेना बजैत हो। चिट्ठी बाट भरि पढ़ैत रही जँ ओ पोस्टकार्ड हो, तखन। पता नहि, की-की सभ लिखल रहैत अछि... एतेक-एतेक पत्र अबैत छलनि... ततबे बाबूजी लिखितो छलाह...।

तँ जखन 1976 मे कविताक स्फुरण भेल तँ होइत छल जे जीवन मे, कविता सँ बेसी महत्त्वपूर्ण आन किछु नहि अछि। लिखी आ से खूब लिखी। नुका-चोरा केँ लिखी। क्यो बूझथि नहि जे पढ़ाइ-लिखाइ छोड़ि ई की क' रहल अछि?

सुपौलक साहित्यिक पृष्ठभूमि आ तकर नायक लोकनि मोन पड़ैत छथि। महाप्रकाश, सुभाष। रामानुग्रह झा, महेंद्र। धीर जी। बाद मे सुरजीत प्रकाश आ सुशील कुमार दास। हिनका लोकनि केँ कविता देखाबी-सुनाबी। ओ सभ प्रोत्साहित करथि,

प्रेरित करथि। भाइ जी, माने मायानंद मिश्र सँ धखाइत रही। की कहताह? यैह ने जे पढ़ाइ-लिखाइ छोड़ि ई की सभ शुरू कए देलक...।

तखन मोन पड़लाह जीवकांत। वैह जीवकांत, जिनका विषय मे हमर मित्र तारानंद वियोगी लिखैत छथि जे—'बानि-बगय सँ सुच्चा अध्यापक, बात-विचार मे युगीन आदर्शवादी, आचार-व्यवहार आ लेखन मे परम रचनात्मक मुदा, असल मे निष्कम्प चेतनाक बिम्बस्वरूप, बाल-सुलभ तरलता सँ ओतप्रोत—एहि सुधांग आत्मीय जन, जीवकांत सँ जे क्यो कहियो घुलल-मिलल हेताह से हुनका कहियो नहि बिसरतनि। अपना सभक मैथिल समाज मुदा महाग झमेलिया, चरित्र जटिलताक पराकाष्ठा पर पहुँचल। सहज जीवन आ रचनात्मक विचार सँ शून्य। मैथिल-मूलक पंडा-पंडित, मुल्ला-मौलवी, कवि-कोविद लोकनि धरि केँ चकचोन्ही लगै छनि जखन ओ एहि जीवकांत केँ देखै छथि। गांधी जी केँ देखि क' आइन्सटीन जे कहने रहथिन—आब' बला पीढ़ी विश्वास नहि करत जे हाड़-मासुक एहन लोक पृथ्वी पर भेलाह—से, एहि मैथिल समाज आ एहि जीवकांत केँ देखिक' हमरा रहरहाँ मोन पड़ैत अछि।

नेना रही तँ एही जीवकांतक देखा-देखी हमरा लोकनि लिखनाइ सिखने रही आ आइ यैह जीवकांत हमरा लोकनि केँ मित्र कहैत छथि आ मित्रो-सन लगैत छथि। युग बदलैत छैक, समय, समाज आ प्रतिमान बदलैत रहैत छैक आ तकरा संग-संग साहित्यक स्वर, मिजाज आ प्रस्तुति सेहो बदलैत छैक। मनुक्खे एक एहन जड़ीभूत जीवन थिक, जकरा स्वयं केँ बदलबा मे भारी असौकर्य होइछ। युग बदलबाक गति एहि बीच तँ आरो बढ़ि गेल अछि। व्यक्तिगत जीवनक छाउर केर ओगरवाही करैत, अपने आँखियें अपन लिखल सत्य केँ भारी असत्य होइत देखैत ढेरीक ढेरी बूढ़-बुजुर्ग कवि-मनीषी लोकनि जतय 'ठहराव केर रौरव' भोगि रहल छथि, हमर ई साहित्य-नायक नित नवीन उत्साह आ ओज सँ सत्यक अन्वेषण मे लागल छथि। जेना-जेना युग बदलल, तेना-तेना अपना केँ अद्यतन करैत जीवकांत बदललाह। संपूर्ण भारतीय साहित्य मे जीवकांत एक एहन विरल आ विलक्षण लेखक थिकाह जे अपन एक्कहि जीवन मे कम सँ कम पाँच बेर शून्य सँ अपन यात्रा शुरू कयलनि आ सय धरि पहुँचलाह।

आब जीवकांत अपन रचनात्मक लय केर शिखर उच्चता पर छथि। संसारक प्रत्येक भौतिक पदार्थ आब हुनका लेल एक 'संवेदना' थिकियनि। एहि ब्रह्माण्डीय अस्तित्वक कण-कण हुनका सामने अपन मूलस्वरूप मे उतरल आबि रहल अछि आ तकर आलेखन ओ कि तँ चित्रकार जकाँ क' रहलाह अछि अथवा संगीतकार

जकाँ। हमर ई ऋषि अपन अंतर्तम मे आब शब्दक बेगरतूत नहि रहलाह।

जीवकांतक कथा सभ केँ, कविता सभ केँ पढ़लाक बहुत दिनक बाद जखन अहाँ मोन पाड़ब तँ कदाचित कोनो घटना, कोनो खिस्सा अहाँ केँ मोन नहि पड़त। मोन पड़त तरल करुणा आ प्रवहमान संवेदना-तरंग सँ आप्लावित दृश्य सभ। लागत जेना एहि दृश्य सभ केँ कहियो अहाँ अपन गहन मौनक क्षण मे, अपने आँखिऐं प्रकृति मे प्रकट होइत देखने होइऐक। साहित्य धरती केँ सुंदर बनेबाक साधन थिक—ठीके, जीवकांत सँ हमरा लोकनि सिखैत छी।'

अपन एक पत्र मे 23 सितंबर 1998 केँ मोतिहारी सँ तारानंद जीवकांतक विषय मे ई टिप्पणी लिखि पठौने छलाह।

जीवकांत मोन पड़लाह। कहैत छलाह महाप्रकाश जे जखन जीवकांत महात्मा गांधी स्मारक विद्यालय, खजौली मे छलाह—तँ सुभाष, सुकांतक संगे ओ लोकनि खजौली गेल रहथि तँ मारते रास पोथी-पत्रिका उठा अनने रहथि। दू-एक दिन ओतय रुकि, साहित्यिक विमर्श कए गद्गद् होइत घुरल छलाह।

अपन आरंभिक लेखन-काल मे जीवकांत हमरा सर्वाधिक अपन आ आत्मीय लगैत रहलाह। हमर कवि-मन केँ लगैत रहैत छल जे सही दिशा, सही निदेशकत्वक बाट वैह देखा सकैत छथि।

बाबूजीक पुस्तकालय मे हुनक 'दू कुहेसक बाट' उपन्यासक अनेक प्रति छल, से हम पढ़ि गेल रही। मिथिला मिहिर मे प्रकाशित हुनक कथा सभ पढ़ि गेल रही। हुनक कविताक आक्रामकता मोन केँ छुबय। संग्रहक अतिरिक्त जतेक पत्रिका देखी, ओहि मे कोनो ने कोनो रूपें जीवकांत केँ देखी।

हमरा लगैत रहैत छल जे जीवकांत हमरा साहित्य-लेखनक तमीज सिखा सकैत छथि। से, बहुत साहस कए हम जीवकांत केँ पत्र लिखय चाहैत रही।

से एहू लेल जे हमरा सँ जेठ भाइ केँ ताधरि जीवकांत संग पत्राचार शुरू भ' गेल रहनि। ओ बदरी वैरागीक नामे लिखैत छलाह, से खूब लिखैत छलाह। कविता आ उपन्यास। कविता सभ मिथिला मिहिर मे छपैत छलनि। आ मोन पड़ैत अछि जे चारि-पाँच गोट हिंदी-मैथिलीक उपन्यास ओ मोटका कूट बला कॉपी मे लिखि-लिखि रखने छलाह। ककरो देखय नहि दैत छलाह।

जीवकांतक पत्र बदरी वैरागीक नाम देखी। तखन थोड़ेक उत्साह बढ़ल। लागल जे पत्रक उत्तर ओ हमरो अवश्ये देताह।

से एक दिन हुनका धड़कैत हृदयें एक पत्र लिखि देल। अपनहि सँ जा क'

डाकघर मे स्नेहपूर्वक खसा अयलहुँ आ घुरिक' हुनक पत्रोत्तरक प्रतीक्षा करय लगलहुँ। समय बीति रहल छल उद्वेग मे, प्रतीक्षा मे। की लिखताह ओ? कोना लिखताह ओ? एहि मे समय बीति रहल छल। ई 1979क मार्च छल।

पत्र मे विलंब भ' रहल छल। मार्चक प्रथमे सप्ताह मे पत्र खसौने रहियनि। तावत मिथिला मिहिर मे हमर कविता छपि गेल छल। पहिल कविता प्रकाशित होयबाक उल्लास आ उछाह मे रही।

हम अपन पत्र मे अपन कविता सभक बारे मे लिखने रहियनि आ अपन प्रिय कथाकार राजकमलक बारे मे अनेकानेक जिज्ञासा कयने रहियनि। मोन पड़ैत अछि यैह आ एतबे जिज्ञासा सोमदेव आ रमानंद रेणु आ कीर्त्तिनारायण सँ सेहो करैत रहैत छलहुँ। राजकमल... राजकमल... आ राजकमल हमरा मोन-प्राण मे औनाइत आ आच्छादित छलाह।

अंततः प्रतीक्षा समाप्त भेल। एक दिन डाकघर गेलहुँ तँ परिचित हस्तलेख मे एक पत्र भेटल। मोन प्रसन्नता आ उल्लास सँ झूमि उठल। ई जीवकांतक पत्र छल।

ई 21 मार्च 79 छल।

कँपैत आ धड़कैत हृदयें अंतर्देशीय फाड़लहुँ। 18 मार्चक लिखल हुनक पहिल पत्र। ओ लिखलनि खजौली सँ—'फगुआ मे गाम सँ घुरला पर अहाँक पत्र भेटल। एहि सँ किछु दिन पहिने अहाँक एक गोट कविता मिथिला मिहिर मे पढ़ने रही। कविता बहुत संभावना-पूर्ण लागल छल, मुदा आरंभिक मेहनतिक प्रयोजन अछि।

हम अपनो नेना सभ केँ ओकरा सभक इच्छाक प्रतिकूल कवि-कर्म सँ मना करैत छिऐक। मैथिल युवक केँ एखन शिक्षा आ जीविकाक बेसी आवश्यकता छैक, प्रायः कविता लिखबाक-पढ़बाक स्थिति मे मैथिल-समाज नहि आयल अछि। कविता लिखब कोनो पाप, तथापि, नहि छैक, मुदा अपन पढ़ाइ आ जीविका केँ क्षति पहुँचाक' कविताक पाछाँ बताह होयब पाप अवस्स छैक। तें अहाँ सँ हम अपेक्षा करब जे पहिने अहाँ नीक डिग्री आ नीक नोकरी प्राप्त क' देखा दिय', तखन अपन काव्य-प्रतिभाक प्रदर्शन करू।

राजकमल चौधरीक अनेक पोथी हिंदी आ मैथिली मे प्रकाशित छनि। बेसी आब उपलब्ध नहि होइत छैक। ओहि पोथी सभक मादे माननीय रामानुग्रह बाबू सँ पुछियौनु।

नीके छी। पत्रोत्तर दिय', तँ आरो विस्तृत लिखबाक इच्छा होयत।'

जेना आकाश सँ खसलहुँ। झमाक' खसलहुँ। मोन झूस भ' गेल। ई की लिखि देलनि जीवकांत ?

एखन तँ हमर हालति ई छल जे जेम्हरे ताकी, मात्र कविते-कविता भेटय। प्रकृति मे, चान मे, सुरुज मे, आकाश मे, धरती पर। जतय-ततय कविता आ तकर मोहकता। खेत-पथार-चर-चांचर सभतरि कविता। आ एही कविता कें छोड़ि दी ?

मुदा, पत्र कें बेर-बेर पढ़लहुँ। कतेक खेप पढ़लहुँ। ध्यान गेल हुनक पहिल पाराग्राफ पर। जतय ओ लिखने रहथि जे 'कविता बहुत संभावनापूर्ण लागल छल, मुदा आरंभिक मेहनतिक प्रयोजन अछि।' आ सभ सँ अंतिम पंक्ति—'पत्रोत्तर दिय', तँ आरो विस्तृत लिखबाक इच्छा होयत।'

हम हुनक एही दुनू वाक्य पर केन्द्रित भेलहुँ। ई दुनू वाक्य हमरा पक्ष मे जाइत छल, से नीक लागल। आ फेर हम कविता मे डूबि गेलहुँ।

आब सोचैत छी तँ लगैत अछि जे ओ कतेक महत्त्वपूर्ण बात लिखने रहथि हमरा—'मैथिल युवक कें एखन शिक्षा आ जीविकाक बेसी आवश्यकता छैक, प्राय: कविता लिखबाक-पढ़बाक स्थिति मे मैथिल-समाज नहि आयल अछि... अहाँ सँ हम अपेक्षा करब जे पहिने अहाँ नीक डिग्री आ नीक नोकरी प्राप्त क' देखा दिय', तखन अपन काव्य-प्रतिभाक प्रदर्शन करू।'

ओहि समय मे शशिकांत खूब छपैत छलाह। मुदा हमरा हुनका सँ परिचय नहि छल। चेतना समितिक नाम सुनी। मुदा, तकरा विषय मे बूझल नहि छल। हम हुनका सँ जिज्ञासा कयल।

ओ 22 सितंबर '79क पत्र मे लिखलनि—'शशिकांत (लाल दास) इंजीनियर छथि। कवि-कथाकार छथि। साहित्यानुरागी लोक छथि। हमरा हुनका सँ भेंट/पत्राचार नहि अछि।' तहिना 14 सितंबर '79क पत्र मे लिखलनि—'चेतना समिति, पटना ओतुक्का स्थानीय संस्था छैक। हमरा बुझने ने बाहरक लोक सदस्य होइत छैक, ने तकर ओ लोकनि प्रयोजने बुझैत छथि। ...अहाँ पढ़बा पर ध्यान दी। कोनो चिक्कन-सन नोकरी ताकू आ ताहि लेल पढ़ी।' चेतना समितिक विषय मे कयल गेल हुनक टिप्पणी किछु अर्थ मे एखनो प्रासंगिक अछि।

ओ 31 अक्तूबर '79क पत्र मे लिखैत छथि—'थोड़ेक प्राचीन श्रेष्ठ (Classic) साहित्य पढ़ि जाउ। संस्कृत, अंग्रेजी, मैथिली, हिंदीक प्राचीन साहित्य पढ़ब आवश्यक। ...नव-नव साहित्यिक वाद, आन्दोलन, फैशन बुझबा लेल विभिन्न भाषाक साहित्यिक पत्रिका आ प्रतिष्ठित नव लेखक लोकनिक कृति पढ़ि जाउ। नीक नोकरी पयबाक हेतु जतबा-जे क' सकी, करू।'

14 नवंबर '79क पत्र मे पुन: ओ लिखैत छथि—'प्रकृति जीवनक उत्स थिकैक। जीवन कें बुझबा लेल प्रकृति लग जाइये पड़त। प्रेम, घृणा, लोभ, मोह, त्याग कें स्वयं अपना अनुभव सँ जान' पड़त। अनका अनुभव सँ प्राप्त धारणा कोनो सहायता नहि करैत छैक। अपन जीवन स्वयं अपनहि जीब' पड़ैत छैक। साहित्यक उत्स थिकैक जीवन। अपन अनुभव सभ कें व्याख्याक दृष्टि दिय'। एक टा कथा-मासिक 'अनामा' नाम सँ बहार होयब प्रारंभ भेल अछि।' आ प्रभास जीक पटना डेराक पता ओ लिखि पठौलनि। एक टा नव कवि कें प्रशिक्षित करबाक कला जीवकांत हमरा सिखबैत चलैत छथि, से हम हुनक पत्र सभ मे नोट करी। हमरा कविक प्रति हुनक प्रेम आ स्नेह बढ़ल जाइत छलनि। मुदा एकर सभक स्थायी भाव, माने टेक छलैक—'नीक नोकरी पयबाक हेतु जतबा-जे क' सकी, करू।'

हमर बाबूजीक मृत्यु 15 जून 1970 कें भ' गेल छलनि। हम तखन सातम क्लास मे रही। प्राय: ओ सातम क्लासक अंतिम बोर्ड परीक्षा छल आ हम प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण भेल रही। मुदा, ता बाबूजी जीवित नहि रहथि। ओ जीवित रहितथि तँ प्रथम श्रेणी सँ उत्तीर्णताक समाचार हुनका कतेक आह्लादित करितनि, ओ हमरा कतेक प्रेरित-प्रोत्साहित करितथि, तकर कल्पना करी। मुदा से सभ किछु नहि छल...। बाबूजीक पश्चात जेहन जीवन संभव छल, तेहन जीवन जीबि रहल छलहुँ। कठिन संघर्ष आ दुख-दैन्य सँ भरल जीवन। ताधरि परिवारक कोनो स्थायी आर्थिक स्रोत नहि छल। जीवकांतक पत्र सभ मे पिताक स्मृति छिड़िआयल भेटय, से मोन कें संतोष देअय आ नीक लागय। हमर संघर्षरत मोन कें हुनक पत्र सभ सँ आत्मिक संतुष्टि भेटय। हमर कवि-हृदय कें हुनक पत्र आह्लादित करय आ आगाँ बढ़बाक लेल, अपन संघर्ष-पथ पर अविराम चलबाक लेल प्रेरित करय।

बाबूजीक समयक जीवन मोन पड़ैत छल। हुनक आमदनी सीमित रहनि मुदा तैयो परिवारक भरण-पोषण नीक जकाँ होइत छल। कोनो वस्तुक बेगरता होइत छल तँ तकर पूर्त्ति एकाध दिन मे अवश्ये भ' जाइत छल। सीमित आमदनी मे बाबूजी जतेक प्रकारक काज क' लैत छलाह से हमरा सभ लेल विस्मय-विमुग्ध करय बला छल। समाजक कतेक रास उपेक्षित आ निर्धन छात्र कें ओ पढ़बा-लिखबा मे मदति करैत छलाह। एहन अनेक मे सँ एक छात्र रहथि रामाधीन ठाकुर तहिना दोसर दुलारचन्द्र, जनिक प्रतिभा देखि हुनका सभक सहयोग ओ बहुत आगाँ बढ़ि क' करैत छलाह। रामाधीन ठाकुर आगाँ चलि क' सेन्ट्रल बैंक आफ इंडियाक चीफ मैनेजरक पद सँ अवकाश प्राप्त कयलनि आ दुलारचन्द्र जी तँ एखनो चिकित्साक

क्षेत्र मे अपन धाक जमौने छथि, एक यशस्वी चिकित्सकक रूप मे। एहिना गामेक सत्यनारायण राउत, जे हुनक प्रिय शिष्य रहनि आ हुनक संगीत-गायन प्रतिभा पर ओ मोहित रहथि आ अपन व्यक्तित्वक प्रभाव सँ राउत जी केँ आकाशवाणी, पटना मे रखबा देने रहथि, जतय सँ आब ओ अवकाश ग्रहण कयलनि। तहिना रहुआ (मधेपुर)क जलधारी मामा, बुढेब (घनश्यामपुर)क सत्यनारायण भैया आदि हमरे ओतय रहिक' पढ़लनि। एहन अनेक उदाहरण छल, जतय जाति-पाति सँ ऊपर उठि ओ सभटा जरब अपना पर उठाक' सामाजिक काज करैत रहैत छलाह। हुनक जीवनक ई सभ एहन पक्ष छल जाहि पर आइयो हमरा सभ केँ गौरव अछि।

मुदा बाबूजीक पछाति हमरा सभक जीवनक दशा-दिशा बदलि गेल छल। एकटा असुरक्षा, हीनता आ आर्थिक दवाब सँ हमसभ ढहि-ढनमना गेल छलहुँ। खेतक उपजा पर आश्रित रहि परिवारक गाड़ी घिचाइत छल। दूर-दूर धरि कतहु कोनो आग्रह नहि, कतहु कोनो भरोसक बोल नहि। बीच धार मे पड़ल, बिनु खेनिहारक नाह जकाँ, जेम्हर-तेम्हर पताइत-भसिआइत छलहुँ हमसभ। अढाइ-तीन सय बला एक टा जीवन बीमा पॉलिसीक भरोसें थोड़ेक दिन परिवारक जीवन चलल। ई पॉलिसी बाबूजी हालहि मे मोती लाल अग्रवाल सँ करौने रहथि, अस्तु।

जीवकांत 27 नवंबर 1979क एक पत्र मे हमरा लिखलनि—'आगाँ बढ़बाक लेल बड़ संघर्ष कर' पड़ैत छैक। सहायक लोकनि, असहायक सिद्ध भ' रहलाह अछि अहाँ केँ, आब कहियो अहाँ अनुभव करब जे वैह लोकनि बाधको सिद्ध भ' जयताह। मुदा, अहाँक बाट बन्न नहि हैत, से हमर विश्वास अछि। गाछ दिन मे नहि बढ़ैछ, जखन रौद रहैत छैक। गाछ अन्हार मे बढ़ैछ जखन सूचीभेद्य अन्धकार रहैत छैक।

अहाँक कविता 'एक टा आर संदर्भ' पढ़लहुँ। भग्न-प्रेमक नीक कविता भेल अछि। एक टा कुमारि कन्या प्रेमक जिनगी भरि 'प्रॉक्सी' करैत अछि, सामाजिक मान्यता बड़ जोरगर छैक जे—'...अहीं समेटि लेने रही/अपन लहराबैत सिनुरायल आँचर केँ/आ जड़ि देने रही/कोनो अनचिन्हार चेहरा पर एक मुट्ठी प्रेम...' मुदा, प्रेमक दोसर पक्ष बड़ उदास आ बिलटाहु भ' जाइत अछि—'सोनचिड़ैक नोर सँ/निकलि गेल छल/कोनो अनचिन्हार-अपरिचित वेग सँ/एक गोट नदी...।'

लोक मरि जाइत अछि, मुदा स्मृति नहि मरैत छैक। ई नदी कालातीत अछि, गंगेक धार जकाँ सनातन। भग्न प्रेम पर 'एक टा आर संदर्भ' प्रौढ़ कविता भेल अछि।

प्रेमक जे धारणा छैक, से भारत मे आ मिथिला मे बड़ विकृत अछि। देखाक' प्रेम करब अपराध आ बतहपनी कहल जाइछ। चोराक' सात खून माफ। भारत मे एहने चोरा खूनी सभक चलि सकैत छैक। 'प्रॉक्सी', विवाह की थिक? प्रेमक प्रॉक्सी। मुदा प्रेम एक मूल भावना छैक, से कतहु दाबल जा सकैत छैक। तें अनायास

सभ काल मे साहित्य-संगीत-चित्रकला एहि दाबल 'ओकरे नोर सँ निकलि गेल छल कोनो अनचिन्हार-अपरिचित वेग सँ एक गोट नदी' केँ बहबाक सुविधा दैत आयल अछि।' हमर एक छोट आ साधारण कविता केँ अपन व्याख्या सँ ओ नव आयाम देलनि। हम चकित भेलहुँ। अपन कविता सँ हम जतेक संतुष्ट भेल होइ, मुदा प्रेम आ संघर्षक हुनक अनुभव सँ अपना केँ अनुभव-संपन्न मानलहुँ। एक टा नवागंतुक केँ ओ जाहि गंभीरता सँ देखने रहथि, से बात नोटिस लेब' जोगर छल। ई हमर सौभाग्य छल।

12 दिसंबर '79क एक पत्र मे ओ हमरा लिखलनि—'एम्हर विद्यापति पर्व करबा लेल रहिका गेल रही। उदयचंद्र झा 'विनोद' रहिकाक आयोजनक मूल मे छथि। हुनका सँ अहाँक विषय मे गप भेल। मुदा, ओ अहाँक विषय मे बहुत कम जनैत छथि। तें हमर इच्छा जे अहाँ हुनका सँ पत्राचार करू। हुनक तीन गोट कविता संकलन छपल छनि—संक्रांति, धुरी आ मौसम अयला पर।

आइकाल्हि मैथिली कविता केँ नव उच्चता धरि विनोद ल' गेल छथि। नवकविता मे प्रतिष्ठित थोड़ेक नाम मे विनोद अग्रगण्य छथि। आर नाम थिक—सुकांत सोम, रामलोचन ठाकुर, कुलानंद मिश्र इत्यादि। पटना जाइ तँ विनोद सँ अवश्य भेंट करियनि।'

विनोद जीक कविता सँ परिचय छल मुदा हुनक व्यक्तित्व आ काव्यात्मक ऊँचाइक विषय मे ई हमर पहिल परिचय छल बकलम जीवकांत। ओ आनो कवि सभक विषय मे हमरा जनतब देलनि, कालांतर मे जनिका सभ सँ हमर सघन पत्राचार संभव भेल। एक कवि केँ अपन काव्य-परंपराक सही बोध हमरा जीवकांत अपन पत्र सभ मे दैत रहलाह।

एहि अवधि मे निरंतर हुनका सँ पत्राचार होइत रहल। ओ मैथिली भाषा पर होइत सरकारी दमन सँ आहत भेल 2 जुलाइ 1980क एक पत्र मे लिखैत छथि—'मैथिली भाषाक दमन जाहि तरहें भ' रहल अछि, ताहि प्रकारक प्रतिरोध देख' मे नहि आबि रहल अछि। सुपौल-सहरसा दिस एखन केहेन उत्साह छैक?' ई समय छल जखन चारूभाग मिथिलांचल मे सरकारी दमन-नीतिक विरुद्ध आन्दोलन भ' रहल छल। प्राय: उर्दू केँ द्वितीय राजभाषाक रूप मे मान्यताक विरोध मे ई आन्दोलन भ' रहल छल। मुदा ई आन्दोलन भरखर नहि छल। सुपौल-सहरसा दिस भ' रहल आन्दोलनी-उत्साहक विषय मे हुनक जिज्ञासा हुनक संवेदनशील लेखकीय मानस केँ चित्रित करैत अछि। ओ एहि भाषा-आन्दोलन सँ कतेक हद धरि संपृक्त रहथि, तकर दृष्टांत थिक हुनक ई पत्र।

'संकल्प' नामक एक पत्रिकाक प्रकाशन 1980 मे सुपौल सँ भेल छल।

कलानंद भट्ट ताहि मे आदि सहयोगी रहथि। पत्रिका लेल हम एक प्रश्नावली जीवकांत केँ पठौलियनि। संगहि संकल्पक लेल चन्दा-रसीद सेहो। हम चाहैत रही जे पहिले अंक मे जीवकांतक रचना रहनि। हुनक उत्तर 30 सितंबर 1980क पत्र द्वारा भेटल—'अहाँक पत्र मे प्रश्नावली भेटल। अहाँक सुझावक मौलिकता पर खुशी भेल। एतबा बातक जवाब जल्दी देब संभव नहि अछि। बड़ व्यस्त रहैत छी, से प्राय: अहाँ नहि जनैत होइ।

राज मोहन लिखने छलाह जे हम 'संकल्प' लेल कोनो टिप्पणी पठा दी। कही, तँ ताहि पर विचार करी। अहाँक प्रश्नावली हम राखि लेल अछि, विचार करब, लिखल भ' जायत, तँ पठा देब। मुदा, एना अगुता क' तँ कथमपि नहि।

अहाँ चन्दा बला जिल्दो पठा देने छलहुँ। मुदा ने हम अपन वला कोटा पठा सकलहुँ आ ने आने प्रकारक कोनो ब्योंत क' पठा सकलहुँ। तकरो कारण अछि आ व्यावहारिक कारण अछि।'

हमर प्रश्नावलीक उत्तर हमरा संकल्प लेल नहि भेटल आ संकल्प बहरा गेल। मुदा हमर प्रश्नावली मे सँ तीन टा महत्त्वपूर्ण प्रश्नक उत्तर ओ हमरा शीघ्रहि पठा देलनि, जे बाद मे बेगूसराय सँ प्रदीप बिहारीक संपादन मे प्रकाशित पत्रिका 'मिथिला सौरभ' मे छपल।

संकल्पक दोसर अंकक क्रम मे हम जीवकांत केँ लिखलियनि जे किसुन स्मृति अंकक रूप मे एकरा प्रकाशित करय चाहैत छी।

हम बी.ए.क परीक्षा दरभंगा मे एक मास प्रिंस लॉज मे रहि क' द' आयल रही आ परीक्षाफलक प्रतीक्षा करैत रही। अनेक शुभचिंतक दरभंगा मे रहि एम.ए.क पढ़ाइ लेल प्रयास कयलनि मुदा अंतत: से नहि भ' सकल रहय। एहि प्रसंग जीवकांत हमरा 23 दिसंबर 1980क एक पत्र मे लिखलनि—'अहाँक पत्र ठीके बहुत खेप आयल अछि। एम्हर स्कूली परीक्षा सभ जे शुरू नवंबर सँ दिसंबर लगाति चलैत अछि, ताहि मे बाझि गेल छलहुँ। विद्यापति पर्वक सिलसिला, मैथिली आन्दोलन, प्रदर्शन, गिरफ्तारी, जेल, लाठी चार्ज, बम-विस्फोट, अगिलग्गी, कर्फ्यू... जेना लिखबा लेल सभ टा विरोधी वातावरण।

संवर्द्धना करैत छी अहाँक, अहाँक परीक्षाफलक हेतु। दरभंगा मे आबि जायब, तँ भेंट-घाँटक सुविधा बेसी रहत।

संकल्पक कभर पटना मे छपबाउ, मैटर सुपौल मे। किसुन जीक समस्त रचना—कथा, कविता, लेख एक ठाम संकलित क' मैथिली अकादमी, पटना सँ छपबाउ। राजकमलक थोड़ेक रचना ओत' सँ छपलैक अछि। किसुन स्मृति अंक बहार करबा सँ बेसी आवश्यक छैक जे किसुन जीक छिड़िआयल रचना सभ एकठाम

संकलित रूप मे भेटय जे नव-पुरान पाठक ओकर स्वाद ल' सकय, हमरो लोकनि पढ़ि सकी आ ओहि रचना सभक आधार पर हुनक उचित मूल्यांकन कयल जा सकय।'

अंतत: हम पटना आबि गेलहुँ आ दरभंगा हाउस मे नाम लिखा लेलहुँ। जीवकांतक पत्रक प्रेरणा काज कयलक आ मैथिली अकादमी सँ किसुन रचनावलीक प्रकाशन संभव भ' सकल। मुदा से कथा बादक थिक। पटना गेलाक बाद जीवकांत 24 मार्च 1981क एक पत्र मे लिखलनि—'बहुत खुशीक बात जे अहाँ पटना विश्वविद्यालय मे प्रविष्ट भेल छी। अपन नाम सँ कुलक नाम उज्ज्वल करू। नोकरी करबाक अभिलाषा करू जाहि सँ परिवारक रक्षा होअय।'

किसुन रचनावलीक संयोजन-आयोजन मे ओ सभ प्रकारक सहयोग देबाक वचन देलनि। 27 जून 1981क पत्र मे ओ लिखलनि—'किसुन जीक साहित्य आ स्मृति रक्षाक प्रत्येक आयोजन मे हार्दिक सहयोग देबाक इच्छा अछि। आउ। शनि-रवि खजौली नहि रहैत छी। शनिक साँझ धरि खजौली सँ चलि दैत छी। तें रवि बारिक' आउ।' भेल एना रहैक जे किसुन जीक पत्र-साहित्य लेल आ हुनक किछु रचना सभक संकलन लेल हमर आ रामानुग्रह झाक योजना बनल जे खजौली जा क' जीवकांतक भेंट करी। रामानुग्रह झाक सासुर ड्योढ़े रहनि, जीवकांत सँ हुनका शुरूहे सँ आत्मीयता रहनि। मुदा किछु आवश्यक कारणे हम सभ नहि जा सकलहुँ ओ 20 अगस्त '81क पत्र मे लिखलनि—'अहाँक पत्र 13.8 केँ आयल छल। आइ एत' अहाँक आ मान्यवर रामानुग्रह बाबूक प्रतीक्षा कयल। जुलाइक दोसर सप्ताह मे सेहो अहाँक प्रतीक्षा कयने छलहुँ।'

जीवकांत अक्तूबर 1981 मे स्थानांतरित भ' गामक उच्च विद्यालय मे आबि गेलाह। किसुन जीक पत्र सभ लेल हम निरंतर हुनका लिखैत रहियनि। ओ पत्र सभ केँ खजौली सँ ड्योढ़ ल' अनने छलाह। तकर सूचना दैत 18 दिसंबर 1981क पत्र मे लिखलनि—'गाम आबि गेल छी मुदा लिखबाक लेल बैसल नहि भेल अछि। किसुन जीक पत्र सभ आर सभ प्रकारक पत्र सभ संग एत' ल' आयल छी। छाँटल नहि अछि। आलस्य बाधक भ' रहल अछि।'

अंतत: ओ अपन आलर्स्य त्यागि किसुन जीक पत्र सभ केँ छाँटि-बेराक' हमरा 5, पी.जी. होस्टल, रानीघाटक पता पर पठा देलनि, से बात ओ 11 अप्रील 1982क पत्र मे लिखलनि—'किसुन जीक पत्र सभ जतबा जे भेटल से बान्हि क' तोरा पता पर पठा देल अछि। ओकरा गनि लिहह आ तारीखक क्रम सँ सरिआ लिहह।

पुबरिया घर तोड़ि रहल छी आ बैसाख मे नव घर बान्ह' चाहैत छी, तें बड़ आर्थिक चिंता मे पड़ि गेल छी आ तें खूब निष्क्रिय भ' गेल छी। एम्हर निबंध आ टिप्पणी खूब लिख' लागल छलहुँ। से आब बन्न अछि।

रामलोचन ठाकुरक माता 2.4.82 केँ मरि गेलथिन। अपन आ पटनाक समाचार लिखह।'

जीवकांत किसुन जीक पत्र पठा देलनि, ओ घरहट मे सक्रियता सँ लागल छथि आ लेखन निष्क्रिय भ' गेल छनि। संगहि लेखकीय-संसार सँ हुनक संपृक्ति केहन छनि तँ रामलोचन ठाकुरक माताक मृत्यु धरि केँ ओ अपन पत्र मे स्थान दैत छथि आ तकरा एकाधिक ठाम लिखैत छथि।

एहि बीच किसुन रचनावलीक प्रकाशनक बात मैथिली अकादमी सँ भ' रहल छल। हम चाहैत रही जे किसुन जीक कथा सभ पर जीवकांत एक टा लेख लिखथि, किसुन जीक कविता पर एक टा लेख लिखथि। ओना ई लेख पहिने तँ हम चाहैत रही जे हुनक रचनावली मे आबि जानि मुदा से अकादमी निदेशक योगानंद झा केँ नहि रुचलनि। अंततः ओ लेख सभ अन्यत्र प्रकाशित भेल। दोसर, किसुन जीक पत्रक एक पैघ पैकेट ओ हमरा पठौने रहथि, मुदा हमरा लगैत छल जे किछु आरो पत्र हुनका लग भ' सकैत छनि—ई सभ हुनका लिखलियनि तँ ओ 28 अप्रील 1982क पत्र मे हमरा लिखलनि—'घरहटक जोगाड़ एकट्ठा करबा मे अपस्याँत रहैत छी। तेँ बैसबोक कष्ट अछि। लेख लिखबा मे खुशी हैत। मुदा, हमरा लग हुनक कथा आ कविताक धूमिल स्मृति अछि, जे ओहि सँ लिखल नहि जा सकैत अछि। एक-एक प्रति प्रूफ कॉपी भेटि जाय, तँ काज शुरू क' सकैत छी।

किसुन जीक पत्र हमरा लग आरो अछि कि नहि तथा जे पठाओल ततबे छल, से बुझबाक शक्ति नहि अछि। फेर सँ समुद्र उपछब, तखने ई बात फड़िछा क' कहि सकब।'

हम रही हड़बड़ियाह। जे काज राति दिमाग मे आयल से होअय जे भोर मे संपन्न भ' जाइ। मुदा से व्यावहारिक नहि होइत छैक। हम चाहैत रही जे किसुन रचनावलीक एक-एक फर्माक प्रूफ जीवकांत केँ पठा दियनि आ तकरा पढ़ि-पढ़ि ओ लिखब शुरू करथि। मुदा एहि प्रक्रिया मे हमरा डाकखर्च अत्यधिक होइत तेँ ओ 5 मइ 1982क एक पत्र मे लिखलनि—'एक-एक फर्माक मैटर पठयबह, तँ बेसी डाकखर्च आ परेशानी होयतह। थोड़ेक छपि जाइक, जेना आधा अथवा आधा सँ बेसी, तखन पठबिहह।

एखन साहित्य मे हम थोड़ेक मूलभूत प्रश्न सभ उठौने छी, जाहि सँ देह बचाक' बढ़बाक प्रयास बहुत लोक क' रहल छथि। प्रभास ताहि मे सभ सँ बेसी मुखर आ बचकानी छथि। मुदा, एहि सभ सँ हमरा कोनो मतलब आ अंतर्द्वंद्व नहि अछि। हमर सोचबाक एक तरीका अछि आ ताहि मे हमर विश्वास स्खलित नहि होइत अछि।'

जीवकांतक वैचारिक दृढ़ता एक टा महत्त्वपूर्ण लेखकक वैचारिक दृढ़ता छल।

जीवकांत अपन लेख आ टिप्पणी सभ मे प्रखर-मुखर रहलाह अछि।

एहि बीच हम हुनका किसुन रचनावलीक अधिकांश भाग प्रूफक रूप मे, भूमिका लेल पठा चुकल छलहुँ। एहि बीच पटना मे विभूति आनंद आ हमर आयोजकत्व मे मैथिली नवतुरिया लेखक सम्मेलन संपन्न भेल छल आ से सभ तरहें सफल रहल। अधिकांश लेखक एहि मे सम्मिलित भ' आयोजन केँ सफल करबा मे अपन योगदान देलनि। कथाकार विभूति आनंद हमरा सँ दू वर्ष सीनियर रहथि आ विभागक अतिरिक्त पटनाक साहित्यिक स्थल सभ पर भेंट-घाँट आ विचार-विमर्श होइत रहैत छल। नवतुरिया लेखक सम्मेलन आयोजित करबाक बात हमरा दिमाग मे मित्रवर तारानंद वियोगीक संग गपशप मे उचरल छल। किछु एहि तरहक बात भाइ विभूति आनंदक दिमाग मे सेहो घुरिआइत रहैत छलनि। ओहो अनेक योजना बनबैत रहैत छलाह। हमसभ एहि लेल गप-शप आरंभ कयल, योजनाक प्रारूप बनाओल। अग्रज भाइसाहेब, उदयचंद्र झा विनोद, प्रभास कुमार चौधरी, कुलानंद मिश्र, भीमनाथ झा आदि सँ सघन विचार-विमर्शक उपरांत तिथि स्थिर भेल छल—10 एवं 11 जुलाइ 1982। तीन-चारि मास निरंतर अपन पीढ़ीक मित्र लोकनि सँ पत्राचार आ वैचारिक आदान-प्रदानक बादे ई तिथि आ आयोजन स्थल स्थिर भेल छल। एहि सम्मेलन पर अनेक रिपोर्टिंग अखबार आ पत्रिकादि मे आयल छल। एतय सब सँ पहिने दैनिक आर्यावर्तक 13 जुलाइ 1982क रिपोर्टिंग आ ओहि समय मे पटना सँ बहराइत 'नव बिहार' नामक साप्ताहिकक 18 सँ 24 जुलाइ मे प्रकाशित रिपोर्टिंग देखल जाय—

दैनिक आर्यावर्त

नयी पीढ़ी के मैथिली साहित्यकारों से बड़ी अपेक्षाएँ व्यक्त

नवतुरिया लेखकों का सम्मेलन संपन्न

पटना, 13 जुलाई। नयी पीढ़ी के मैथिली लेखकों के दो दिवसीय 'नवतुरिया सम्मेलन' में यहाँ आठवें दशक की लेखकीय उपलब्धियों पर विस्तारपूर्वक चर्चाएँ हुई। वक्ताओं ने नवलेखन की ताजगी एवं विशेषताओं की सराहना करते हुए नयी पीढ़ी के मैथिली साहित्यकारों से बड़ी अपेक्षाएँ व्यक्त की।

सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए मैथिलीसेवी श्री पीतांबर पाठक ने युवा लेखकों का आह्वान किया कि वे मैथिली साहित्य को नया आयाम देने में जुटे रहें। उन्होंने इस अवसर पर बाबू भोला लाल दास की 'युवक' शीर्षक कविता का पाठ किया। सम्मेलन में युवा साहित्यकार सर्वश्री कुणाल, शैवाल, अग्निपुष्प, विभूति आनंद, केदार कानन, वैद्यनाथ विमल, कलानंद भट्ट, तारानंद वियोगी, प्रदीप बिहारी, विभा रानी, नूतन राकेश, विकास कुमार, रामचैतन्य धीरज, एम. मणिकांत, पवन

कुमार वैश्वानर एवं लक्ष्मीकांत सजल आदि के अतिरिक्त स्थापित साहित्यकारों ने भी भाग लिया।

आठवें दशक की मैथिली कथा परिचर्चा की अध्यक्षता प्रसिद्ध कथाकार एवं उपन्यासकार श्री प्रभास कुमार चौधरी ने की। युवा कथाकार श्री शैवाल ने कहा कि युवा कथाकारों को शिल्प-सामर्थ्य के साथ-साथ दिशा की स्पष्टता भी प्रदर्शित करनी चाहिए। कथा के विभिन्न पक्षों पर अन्य कथाकारों ने भी अपने विचार प्रकट किए।

आठवें दशक की मैथिली कविता विषयक परिचर्चा की अध्यक्षता लोकप्रिय कवि एवं समीक्षक श्री कुलानंद मिश्र ने की। युवा कवि श्री तारानंद वियोगी के आलेख पर लंबी बहस चली। पत्रकारिता विषयक परिचर्चा की अध्यक्षता श्री छत्रानंद सिंह झा ने की, जिसमें सर्वश्री प्रभास कुमार चौधरी, कुलानंद मिश्र एवं गोकुलनाथ झा आदि वक्तताओं ने मैथिली पत्रकारिता की स्थिति पर असंतोष व्यक्त किया। श्री भीमनाथ झा ने कहा कि अभी मैथिली पत्रकारिता का शून्यकाल है। वास्तविकता यही है कि अभी मैथिली को सही पत्रकार नहीं मिला है। साहित्यकारों ने कहा कि मैथिली पत्रकारिता को आधुनिक दृष्टिकोण से संपन्न बनाना आवश्यक है ताकि वह आत्मनिर्भर हो सके।

सम्मेलन का समापन आचार्य गोविंद झा की अध्यक्षता में आयोजित कवि सम्मेलन से हुआ। कवि सम्मेलन में अध्यक्ष के अतिरिक्त सर्वश्री गोपालजी झा गोपेश, कुलानंद मिश्र, भीमनाथ झा, उदयचंद्र झा विनोद एवं नयी पीढ़ी के लगभग एक दर्जन कवियों ने काव्यपाठ किया।

सम्मेलन के संयोजक श्री केदार कानन एवं श्री विभूति आनंद ने क्रमशः स्वागत भाषण एवं धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर युवा साहित्यकारों ने मैथिली में एक त्रैमासिक पत्रिका के प्रकाशन का निश्चय किया।

नव बिहार

नवतुरिया लेखक सम्मेलन बनाम नव-पुरान लेखक सम्मेलन

(विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

भाषाविदों के अनुसार जिस भाषा को अपनी लिपि एवं व्याकरण होता है, उसे ही भाषा के रूप में स्वीकार किया गया है और मैथिली इससे वंचित नहीं है, क्योंकि लिपि के साथ-साथ इसे अपना व्याकरण तो है ही साथ ही इसने पाठ्यक्रमों में प्रवेश पा लिया है, साहित्य अकादमी ने भी इसे अपनी मान्यता दे दी है। मैथिली अगर उपेक्षित है, तो बस संविधान की आठवीं अनुसूची से।

खैर! गत 10 एवं 11 जुलाई को मैथिली के युवा साहित्यकार द्वय श्री विभूति

आनंद एवं केदार कानन ने मैथिली नवतुरिया लेखक सम्मेलन का दो दिवसीय आयोजन कर एक सराहनीय कार्य किया।

10 जुलाई के प्रातः सम्मेलन का उद्घाटन किया मैथिली आन्दोलन के अग्रदूत श्री पीतांबर पाठक ने। श्री पाठक ने मातृभाषा के प्रति श्रद्धा पर बल देते हुए नवतुरिया लेखकों से आह्वान किया कि वे सामाजिक विषमता पर आधारित समस्यामूलक रचनाओं का सृजन करें। अपने उद्घाटन भाषण के अंत में श्री पाठक ने क्रांतिकारी कविता 'युवक' का पाठ किया।

आश्चर्य का विषय तो यह है कि जिस समय सम्मेलन में भाग लेने वाले साहित्यकार तन्मय होकर श्री पाठक का व्याख्यान सुन रहे थे, उस समय मैथिली के एक प्रसिद्ध कथाकार ऊँघ रहे थे। अब साहित्य का निर्माता ही साहित्य-चर्चा के समय ऊँघने लगे, तो साहित्य के विकास के सामने प्रश्नवाचक चिह्न लग जाता है।

इससे पूर्व श्री केदार कानन ने आगत अतिथियों का स्वागत अपने स्वागत-भाषण के माध्यम से किया। सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए श्री मार्कण्डेय प्रवासी ने कहा कि साहित्य युवा साहित्यकारों पर ही आशान्वित रहता है क्योंकि पुराने साहित्यकार तो पके हुए आम के सदृश्य हो जाते हैं। किंतु, उस समय भी एक युवा साहित्यकार ऊँघता नजर आया। इस अवसर पर सर्वश्री छत्रानंद, ललित कुमुद, राजेंद्र झा, देवेंद्र झा, वैद्यनाथ विमल, विकास कुमार झा, कमलेश, अग्निपुष्प, तारानंद वियोगी, नूतन राकेश ने भी साहित्य-निर्माण में युवा साहित्यकारों की भूमिका पर प्रकाश डाला तथा सम्मेलन के इस प्रथम चरण का समापन गीतकार नवल के गीत से हुआ।

सम्मेलन का दूसरा चरण प्रभास कुमार चौधरी की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ, जिसका विषय था—'आठवें दशक की मैथिली कथा।' इस विषय पर सर्वश्री शैवाल, गोविंद झा, वैद्यनाथ विमल, एम. मणिकांत, तारानंद वियोगी, अग्निपुष्प, प्रदीप बिहारी, नूतन राकेश, राज मोहन झा, गंगेश गुंजन, रमानंद झा रमण, मुनीन्द्र नारायण झा, भीमनाथ झा, गोपालजी झा गोपेश, विभारानी एवं कुणाल ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए। अंततः यही निष्कर्ष निकला कि आधुनिक मैथिली कथा दिशाहीन है तथा मैथिली कथा में दिशा निर्धारण की आवश्यकता है।

कार्यक्रम का तीसरा चरण 11 जुलाई को प्रारम्भ हुआ एवं इस चरण में राम चैतन्य धीरज लिखित गीत संग्रह 'द्विपर्णा' विमोचित हुई। पुनः 'आठवें दशक की मैथिली कविता' पर सर्वश्री तारानंद वियोगी, अग्निपुष्प, धीरज, उदयचंद्र झा विनोद, वैद्यनाथ विमल, केदार कानन, गोविंद झा, कलानंद भट्ट, रमानंद झा रमण, शैवाल, प्रभास कुमार चौधरी, नूतन राकेश, कुणाल एवं सुश्री विभारानी ने अपने-अपने मंतव्य व्यक्त किए, जिसकी अध्यक्षता कुलानंद मिश्र ने की।

सम्मेलन का चौथा चरण छत्रानंद की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ जिसका विषय था 'मैथिली पत्रकारिता'। इस चर्चा में सर्वश्री अग्निपुष्प, गोकुलनाथ झा, प्रभास कुमार चौधरी, वैद्यनाथ विमल, भीमनाथ झा एवं कुलानंद मिश्र ने भाग लिया और अंततः यही निष्कर्ष निकला कि मैथिली पत्रकारिता अब भी शून्य काल में है।

सम्मेलन का समापन कवि सम्मेलन से हुआ जिसकी अध्यक्षता पं. गोविंद झा ने की एवं संचालन मार्कण्डेय प्रवासी ने किया।

इसमें दो मत नहीं कि सम्मेलन काफी सफल रहा क्योंकि मिथिलांचल के विभिन्न भागों के युवा साहित्यकारों ने इसमें भाग लेकर आधुनिक मैथिली साहित्य को एक सही दिशा देने का प्रयास किया है और इसमें दो मत नहीं कि अगर इस प्रकार की प्रक्रिया चलती रही तो मैथिली साहित्य प्रगति के पथ पर अग्रसर होता रहेगा।

इस अवसर पर एक त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशित करने का भी निर्णय लिया गया। खैर! सम्मेलन की सफलता के लिये इसके आयोजक बधाई के पात्र हैं, किंतु अस्वाभाविकता हमें अब भी खटकती है। अगर यह सम्मेलन नवतुरिया लेखकों का था, तो सम्मेलन का उद्घाटन एवं समारोह के सभी चरणों की अध्यक्षता भी किसी नवतुरिया लेखक से ही कराना श्रेयस्कर रहता और तब नवीनता आने की संभावना रहती। जब सम्मेलन का नामकरण नवतुरिया लेखक सम्मेलन रखा गया, तो नवतुरिया लेखकों की अपेक्षा पुराने लेखकों को ही संचालन, उद्घाटन एवं अध्यक्षता का भार क्यों सौंपा गया? इससे तो अच्छा यह रहता कि इसका नाम 'नव-पुरान लेखक सम्मेलन' रखा जाता।

जहाँ तक मेरी समझ की बात है, इसमें दो नीति थी। या तो नवतुरिया लेखक सम्मेलन के नाम पर स्वयं को स्थापित करना या सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों पर अपना प्रभाव छोड़ना। अंततः इस सम्मेलन से यही निष्कर्ष निकला कि नवतुरिया लेखक सम्मेलन बनाम नव-पुरान लेखक सम्मेलन।

मिथिला मिहिरक 25 जुलाइ 1982क अंक मे, भाइ भीमनाथ झा द्वारा 'लेखकक नवतुरिया माहौल' नाम सँ जे रिपोर्ताज प्रकाशित भेल छल, से एतय अविकल द' रहल छी—'पटना मे नवतुरिया लेखक-सम्मेलन होयत।' —दू-तीन मास पूर्व कान मे पड़ल छल ई खबरि। उड़ैत खबरि, एहिना, बहुत, कान मे पड़ैत रहैत अछि आ जेना हमर स्वभाव अछि—उधिआइत खबरि केँ गम्भीरता सँ नहि लैत छी। एकरो गम्भीरता सँ नहि लेलहुँ। फ्रेजर रोड पर, साँझ केँ चन्दा-प्रकरणक सरस गप्प सँ कखनो काल मनोरंजन भ' जाइत छल।

'दस-एगारह जुलाइ केँ सम्मेलन होयब तय भेलैक अछि।' —एहि सँ दस-एगारह दिन पहिने सुनिश्चित तिथिक संग फेर कान मे ई खबरि पड़त। नवतुरिया लेखक सम्मेलनक प्रवक्ता एकर व्याख्या देलनि—आठम दशकक लेखकक सम्मेलन अर्थात् सन् एकहत्तरि सँ जे लेखन शुरू कयलनि अछि, तनिका लोकनिक जुटान।

बात खूब साफ नहि भेल। आ, जे भेल ताहि मे हमरा लोकनि, अर्थात् ओहि सँ पूर्व सँ लिखब शुरू कर' बला, नवतुरियाक परिधि सँ बाहर भ' जाइत छी—भलहि एहू दशक मे अथवा एहि दशक मे हमरा लोकनिक महत्त्वपूर्ण वस्तु साहित्य मे आयल हो।

उधिआइत खबरि जे कान मे पहुँचल, ताहि सँ आर सुनिश्चित त' भ' गेलहुँ—हमरा लोकनि बाहर छी।

हमर समकालीन एक मित्र गम्भीरता सँ पुछलनि—'तखन ककर उपलब्धिक चर्च करैत जयताह ई सभ? लिखब शुरू कयलनि अछि कि नहि—उपलब्धि बखान शुरू? हमरा लोकनिक लेखन केँ अर्थात् हमरा लोकनिक पीढ़ीक लेखन केँ बारीकी एहि दशकक उपलब्धि पर की विचार भ' सकैत छैक? मैथिली मे यैह सभ जे बात छै...'

—गम्भीरता सँ किए लै छी बात केँ अहाँ? अहाँ केँ उड़ि जयबाक डर होइए? एत्तेक कमजोर डारि पकड़ने छी...।'

—'अहाँ नहि बुझै छिऐ भाइ!'

—'से हम कहाँ कहै छी?'

—'हम कहै छी जे एहि सभ मे किछु 'बात' छै।'

—'भ' सकै छै। मुदा, हम बुझै छी जे ई सभ नकल छिऐ, देखौंसी छिऐ। आ, जाहि 'बात' द' अहाँ इशारा कयलहुँ अछि, ततेक 'भारी' बात हमरा नहि बूझि पड़ैत अछि—हमरा तँ बड़ छोट, बड़ छुछुन्न, बड़ हल्लुक 'बात'क गंध लगैत अछि।

—'कथीक नकल? ककर देखौंसी?'

—'अरे हम सभ ककर देखौंसी क' सकै छी—एक हिंदी छोड़िक'? हिंदी मे नै देखै छिऐ—रंग-विरंग सभा-समारोहक समाचार? जनवादी-लेखक-सम्मेलन प्रभृति। मुदा, ई सभ कोनो-ने-कोनो झंडाक तर होइ छै। कोनो खास खेमाक लेखक एहि मे जुटैत अछि। ओकर उद्देश्यो झलकैत रहै छै। ओकर उद्देश्यक प्रति कोनो 'कन्फ्यूजन' ककरो नहि रहै छै। मुदा, मैथिली मे?'

—'मैथिली मे एहन कोनो समेना कहाँ तानल गेलै अछि?'

—'सैह तँ तानल जयबाक जोगाड़ भ' रहल छै। दस-एगारह जुलाइ केँ एहने-सन समेना तानल जायबला छै। मुदा, एकर तर मे सभ तरहक लोक जुटैत। तें, जेना

हिंदी मे होइ छै, तेना 'खेमा' बला बात एखन नहि सम्भव छै एहिठाम। हिनका लोकनिक मोन मे जे छैक, तकरा ने साफ-साफ कहबाक साहस छनि, ने ओहि दिशा मे बढ़ैत कुहेस सोझरायल दृष्टि। खाली सेहंता छनि—साधना नहि, सिद्धिक प्रचार करबाक लौल टा। तें, दृष्टिहीनता आ हड़बड़ी डेग-डेग पर देखबा मे आओत।

दृष्टिहीनता तथा हड़बड़ी कोनो आयोजनक जड़ि कें हिला दैत छैक, उपलब्धि कें टुस्से मे झकझोड़िक' झाड़ि दैत छैक।

आठम दशकक कथा, आठम दशकक कविता तथा पत्रकारिता विचार-गोष्ठीक हेतु यैह तीन टा विषय निर्धारित छैक, ई सुनबा मे आयल। आठम दशकक साहित्यिक उपलब्धि कें एही तीन पाँती मे बन्द क' देबाक तात्पर्य बुझलिऐक नहि। अनुमान कयलहुँ—कथा आ कविता सभ सँ सशक्त विधा मानल जाइत अछि, तें आ पत्रकारिता टग्ग हनैत अछि तें, विचारक हेतु पात्रता ई पाबि सकल। टग्ग हन' बला विधा तँ आरो अछि, जेना आलोचना, यात्रा-साहित्य, निबन्ध-साहित्य, बाल-साहित्य प्रभृति। कथा आ कविताक बाद, आठम दशक मे, नाटकक उपलब्धि अनेक अर्थ मे उल्लेखनीय भेल अछि, मुदा ताहि पर नवतुरिया लेखक-सम्मेलन दृष्टिपात नहि करत। आलोचना, यात्रा, निबन्ध, बाल-साहित्य पर सेहो दृष्टिपात नहि करत। नहि करत, तकर पाछाँ की कारण भ' सकैत छैक ?...

सम्मेलनक संयोजक छथि—विभूति आनंद आ केदार कानन। पीढ़ीक प्रतिनिधित्व कयनिहार लोकनि छथि—कुणाल, शैवाल, अग्निपुष्प, वैद्यनाथ विमल, कलानंद भट्ट, तारानंद वियोगी, प्रदीप बिहारी, विभारानी, नूतन राकेश, विकास कुमार झा, राम चैतन्य धीरज, नवल, एम. मणिकांत, डा. गिरीशचंद्र, पवन कुमार वैश्वानर तथा लक्ष्मीकांत सजल।

करीब-करीब सभ कवि आ कथाकार! एकाध पत्रकारिता कर' बला सेहो।

ई लोकनि अपन विचारक सीमा कें कथा, कविता आ पत्रकारिता मे बान्हि लेलनि तँ ताहि मे हानिये की भेलनि ? एकरा दृष्टिहीनता नहि, दृष्टि-सूक्ष्मता कहबाक चाही... एहि तरहक आनो भाषाक लेखन-सम्मेलन मे आन सभ विषय पर कहाँ चर्चा होइत छैक ?...

मुदा, जाहि पर चर्चा होइत छैक, ताहि पर तेना नहि, जेना मैथिली नवतुरिया लेखक सम्मेलन मे भेलैक। ओहि सभ संगोष्ठी मे विषय बान्हल रहैत छैक, एना छिड़िआयल नहि।

आठम दशकक कथा तथा आठम दशकक कविता तथा पत्रकारिता—ई अपना मे कोनो विषय नहि भेलैक दू-तीन घंटाक विचार गोष्ठीक हेतु। संयोजक लोकनि कें चाहैत छलनि जे आठम दशकक कथाक तथा कविताक कोनो एक-एक विंदु

पर अपन विषय कें सीमित बना दितथि एवं ओही पर विभिन्न दृष्टिकोण सँ विचार करबितथि। एना मे गप्प सार्थक होइत। किछु तथ्य सोझाँ अबैत। किछु दृष्टि साफ होइत लोकक...

तहिना, अंतिम समय मे, संयोजक लोकनिक गोष्ठीक अध्यक्षक लेल दौड़-बड़हा आश्चर्यचकित कर'बला छल! ई लोकनि एतेक महत्त्वपूर्ण सम्मेलन तँ कर' जा रहल छलाह, मुदा अंत-अंत धरि ओकर अध्यक्ष के-के होयताह, ताहि पर कि तँ सोचनहि नहि छलाह कि एकमत नहि छलाह। ताहू मे, एक-एक संगोष्ठीक हेतु दू दू गोट अध्यक्षक प्रस्ताव कम सँ कम हमरा हेतु तँ अश्रुतपूर्व छल।

9 जुलाइ कें कार्ड हस्तगत भेल। कार्डक भाषा कें ने औपचारिक कहल जा सकैछ, ने अनौपचारिक। स्वच्छता कार्ड मे छल, शालीनता कार्ड-वितरक अर्थात संचालकद्वय मे। हुनके लोकनि सँ ज्ञात भेल (कार्ड सँ नहि) जे 10 तारीखक उद्घाटन-समारोहक अध्यक्षता करताह पण्डित श्रीगोविंद झाजी। प्रसन्न भेलहुँ।

10 जुलाइ। शनि। स्थान विधायक-क्लब। दस बजे समारोहक औपचारिक उद्घाटन होब'बला छलैक। पहुँचलहुँ साढ़े दस बजे।

विधायक-क्लब मे प्रभासजी, प्रवासीजी, छत्रानंदजी, विनोदजी, गोकुलनाथजी, एम. मणिकांतजी, विभारानी, पवन कुमार वैश्वानर, देवेंद्र झा प्रभृति दस-बारह गोटेक उपस्थिति। किछु आकृति अपरिचित। अन्दाज कयलहुँ—आगंतुक साहित्यकार लोकनि होयताह। हुनका लोकनि सँ परिचय करबाक इच्छा भेल, किंतु दुनू आयोजक व्यवस्था मे व्यस्त छलाह, तें हुनका सभ कें अपन काज मे व्यवधान देब उचित नहि बूझि पड़ल। क्रमशः उपस्थिति बढ़ैत गेल... राज मोहनजी अयलाह, पीतांबर पाठक अयलाह..., डा. गंगेश गुंजन अयलाह..., अग्निपुष्प अयलाह..., ललित कुमुद अयलाह... आओर किछु गोटे अयलाह। उपस्थिति चालीस-पचासक करीब भ' गेल, समय साढ़े एगारह सँ ऊपर भ' गेल, मुदा मनोनीत अध्यक्ष पं. श्रीगोविंद झाजी नहि अयलाह। पता लागल—ओ गामे सँ नहि अयलाह अछि।

तकरा बाद संयोजक केदार कानन ठाढ़ भेलाह। बजलाह—अपने लोकनिक स्वागत अछि। नवतुरिया लेखक सम्मेलनक उद्घाटन करबाक लेल हम श्री पीतांबर पाठक जी सँ अनुरोध करैत छियनि। ओ कृपया स्थान ग्रहण करथु। संयोजक विभूति आनंद प्रस्तावक समर्थन कयलनि। थपड़ी गड़गड़ा उठल।

थपड़ीक ओहि गड़गड़ाहटि मे हमरो थपड़ीक ध्वनि छल। प्रस्ताव सुनिते मस्तिष्कक नस एक रत्ती तनायल सन अनुभव भेल। लगले हाथ पर हाथ बजरि गेल। ...गोविंद झा आ पीतांबर पाठक एक भेलाह...। लेखक सम्मेलनक उद्घाटन करयबाक हेतु कोनो पाठक कें पकड़ब बड्ड दिव्य बुझना गेल! आ, एहि हेतु मनेमन नवतुरिया

लोकनि केँ धन्यवाद देलियनि। पाठक जी मैथिलीक सजग पाठक छथि, ओ नवतुरिया लोकनि केँ सेहो पढ़ैत छथि—कम सँ कम एखन तँ हिनका लोकनि केँ हुनका पर आस्था भेलनि!

ओना, पाठक जी मैथिली आन्दोलनक सजग प्रहरी आ सफल प्रवक्ता रहलाह अछि। से, हुनक भाषण सँ, हुनक भंगिमा सँ ओतहु स्पष्ट होइत छल। ओ अपन ओजपूर्ण भाषण मे मैथिली आन्दोलनक संक्षिप्त इतिहास, एकर वर्तमान स्वरूप तथा नवतुरिया लोकनि केँ एहि मे दतचित्त सँ पड़ि जयबाक आह्वान कयलनि। मैथिली आन्दोलनक आदि महारथी भोला लाल दासक सुप्रसिद्ध 'युवक' कविताक गर्जनाक संग ओ अपन जोशीला भाषणक अंत कयलनि आ एही संग द्विदिवसीय नवतुरिया लेखक-सम्मेलनक औपचारिक उद्घाटन भ' गेल।

एहि सत्रक अन्य वक्ता लोकनि छलाह प्रभास कुमार चौधरी, छत्रानंद, मार्कंडेय प्रवासी, तारानंद वियोगी, अग्निपुष्प, विकास कुमार झा। ई लोकनि संक्षेप मे एहि सम्मेलनक उद्देश्य पर प्रकाश दैत एकर सफलताक कामना करैत गेलाह। मुरलीधर प्रेसक व्यवस्थापक श्री देवेंद्र झा (जे आनो तरहें एकर संयोजक लोकनिक बीच उल्लेखनीय छलाह) सेहो साहित्य मे नवतुरिया लोकनिक प्रवेशक स्वागत कयलनि आ एहि प्रकारक सम्मेलन बराबरि करबाक प्रेरणा देलनि।

चेतना समितिक सचिव श्री राजेंद्र झा समारोहक बीचे मे अयलाह आ ओहने ससम्मान बैसाओल गेलाह। हमरा भान भेल जेना संयोजक लोकनि केँ भी.आइ.पी. भेटि गेलथिन अछि। राजेंद्र बाबूक भाषण लगले जारी भ' गेल—चेतना समिति अहाँ लोकनिक थिक। अहाँ लोकनि ओत' आउ, गप्प करू, विचार करू, गोष्ठी करू, सम्मेलन करू। विद्यापति भवन केँ देखियौक। किछु तकनीकी कारण सँ काज एखन ठप्प अछि, मुदा शीघ्र शुरू भ' जायत। राजेंद्र नगरवला जमीन मे सेहो आब जोर-सोर सँ हाथ लागत। बहुत योजना अछि। आउ, ओत' परामर्श-बही सेहो राखल अछि। ओहि पर अपन विचार अंकित करू। अहाँ लोकनि मैथिलीक भविष्य छी, चेतना समितिक सदस्य छी।...

राजेंद्र बाबूक धाराप्रवाह भाषण करीब दस मिनट धरि चलल। नवतुरिया लेखक सम्मेलन... राजेंद्र नगर वला जमीन... तकनीकी कारण सँ काज मे व्यवधान... परामर्श-बही... चेतना समितिक सार्वजनिक सदस्यता—चाहियोक' कोनो तारतम्य नहि पाबि रहल छलहुँ।

भाषणक दौड़ थम्हला पर परिचयक दौड़ चलल। धड़ाधड़ि दू-तीन मिनट मे ई कार्य संपन्न भ' गेल। परस्पर 'भेंट-घाँट' दौड़ैत कयल गेल। जनिका लोकनिक रचना पढ़ैत रहलहुँ अछि, जनिक लोकनिक नाम बराबरि उभरैत रहल अछि, तनिका

लोकनिक 'परिचय कनेक जमिक' होइत तँ हमरा बेसी नीक लगैत।

केदार काननक एहि घोषणाक संग जे चारि बजे सँ कथा-गोष्ठी शुरू होयत, करीब डेढ़ बजे उद्घाटन-समारोह संपन्न भेल।

चारि बजे सँ तँ नहि, पाँच बजे सँ कथागोष्ठी आरम्भ भेल। बहुत बढ़िया उपस्थिति—लगभग पचास-साठिक। बूझि पड़ैत छल जे नवीन पीढ़ीक साहित्यकारक गरिमामय उपस्थिति अछि एहिठाम। प्रभास कुमार चौधरी तँ अध्यक्षते क' रहल छलाह। महत्त्वपूर्ण कथाकार लोकनि छलाह—पण्डित गोविंद झा, राज मोहन झा, डा. गंगेश गुंजन, प्रो. मनमोहन झा, उदयचंद्र झा 'विनोद', पूर्णेन्दु चौधरी, छत्रानंद, तथाकथित अग्रज पीढ़ी मे। कविवर गोपालजी झा 'गोपेश', कलाकार ललित कुमुद सपत्नीक, पत्रकार विनोद कुमार झा ओ गोकुलनाथ झा प्रभृति अन्य आमंत्रित उल्लेखनीय व्यक्ति। हिनका लोकनिक अतिरिक्त आठम दशकक स्थानीय आ अन्य स्थानीय प्रतिनिधिगण। एकर अलावे किछु प्रबुद्ध पाठक-श्रोता लोकनि सेहो।

शैवाल आलेख पाठ कयलनि। ओ की करितथि, आठम दशकक कथा (फेर मोन पड़ि लिय' जे आठम दशक मे लिखब शुरू कर'बला कथाकारक कथा)क कोनो खास बिन्दु पर किछु कह' लेल हुनका कहल गेल रहितनि, तखन ने ओ ओहि खास बिन्दु केँ उजागर करितथि तथा अपन बात सँ विचार-विमर्शक 'फिल्ड' तैयार करितथि! जेना सरमगोलिया कहबाक छलनि, ताहि हिसाबें हुनक आलेख दमगर छलनि—ई बूझि पड़ैत छलैक जे एहि व्यक्ति केँ कथा सभ पढ़लो छैक, कथा केँ बुझबाक क्षमतो छैक तथा अपन कथ्य केँ प्रबुद्ध समाज लग रखबाक शैलियो छैक।

तथाकथित पुरनका लोकक कथा सँ एहि आठम दशकक कथाकार मे की भेद छैक आ ओकर अवदान सँ साहित्य केँ की प्राप्त भेलैक अछि, एहि पीढ़ीक कथा मे की अभाव छैक—आदि विषय पर संक्षेप मे, किंतु विश्वासपूर्वक, ई प्रकाश देलनि।

सभाध्यक्ष प्रभासजी उपस्थित प्रतिनिधि लोकनि केँ बेर-बेर सोदाहरण अपन गप्प रखबाक आग्रह करैत रहलाह, किंतु ओ लोकनि अपन गौले गीत गबैत रहलाह।

किनको आठम दशकक कथा मे पुरना कथा सँ आगाँक कथ्य आ शिल्प भेटलनि, किनको कथाक उद्देश्ये साफ-साफ नहि बूझि पड़ि रहल छलनि तँ किनको कोनो-कोनो कथा मे नारा उभरैत छलनि। ई बूझ' मे नहि आबि रहल छल जे एके पीढ़ीक एक प्रतिनिधि अपन दशकक कथा केँ विश्वक श्रेष्ठ कथाक पतियानी मे स्थापित कयलनि तँ ओही पीढ़ीक दोसर प्रतिनिधि ओहने कथा केँ उद्देश्यहीन कहलनि आ चाहलनि जे कोनो आधार निर्धारित भ' जाय, जाहि पर ओ लोकनि अपन कथाक गाड़ी गुड़कौताह। दुनू दू छोरक एहि गप्प केँ राज मोहनजी, गुंजनजी, विनोदजी आ

रमणजी पकड़लनि आ अपन-अपन ढंग सँ कथाक मूल्यांकन कयलनि। राज मोहनजीक ई बात सभ केँ नीक लगलैक जे कथा मे शिल्प या कथा आगाँक बात होइत छैक, आरम्भिक बात होइत छैक कथा केँ कथा होयब अर्थात रचनात्मकता कोनो साहित्यिक विधा लेल मूल तत्व होइत छैक।

विचार-प्रवाह स्वाभाविक गति सँ आगाँ बढ़ि रहल छल कि एक टा घटना घटि गेल। घटना की घटल कि वातावरण मे बिरड़ो उठि गेल आ कनेकाल मे बूझि पड़ल जे विचार-गोष्ठीक ई जहाज ने कतहु डूबि जाय! कोनो राजकुमार सन प्रियदर्शी कुणाल अपन वक्तव्यक क्रम मे किछु एहन बात बाजि गेलाह जाहि सँ अग्रज पीढ़ीक कथाकार लोकनि केँ चोट लगलनि। अपन (पीढ़ीक) कथा आ पूर्ववर्त्ती पीढ़ीक कथा स्पष्ट नहि होयबाक बात बुझबा मे आयल, किंतु ताहि लेल अपन पूर्ववर्त्ती कथा आ कथाकार पर करीब-करीब व्यक्तिगत आक्षेप करब आवश्यक नहि, ओहिठाम अवांछित सेहो छल। सभाध्यक्ष प्रभासजी बड़ कौशलपूर्वक आ चतुरता सँ जँ स्थिति केँ नहि सम्हारि लितथि तँ गुंजनजी तथा किछु आओर साहित्यकार, हमरा लागल जे उठिक' बाहर चल जैतथि।

शिष्टताक परिभाषा सभ युग मे बदलैत छैक, कुणालक ई कथन ठीक छलनि। मुदा, शराबीक शिष्टता तथा सम्मत लोकक शिष्टता—दुनू एक नहि होइत छैक—सेहो हुनका बूझक चाहैत छलनि।

नौ बजे राति केँ जखन गोष्ठीक समापनक घोषणा भेल तँ लोकक ठोर पर ओही घटनाक क्रिया-प्रतिक्रिया छल। जँ ई घटना नहि घटल रहैत, तँ स्वाभाविक छल जे गोष्ठीक उपलब्धि पर लोक गर्व करैत। ई घटना एहि निराशा पर अनायास पर्दा खसा देलक।

दोसर दिन, अर्थात 11 जुलाइ केँ प्रातः आठ बजे सँ कविता पर विचार गोष्ठी आयोजित छल—विद्यापति भवन मे।

हम दस बजे नियत स्थान पर पहुँचलहुँ। कुलानंद मिश्र अध्यक्षक पद पर विराजमान छलाह। उपस्थिति लगभग ओतबे आ वैह, जे कथागोष्ठी मे छल। हम जखन पहुँचलहुँ तँ तारानंद वियोगी अपन आलेख समाप्त क' रहल छलाह। हुनक स्वरक आत्मविश्वास हमरा आकर्षित कयलक। हिनक आलेख-पाठ सँ पूर्वहि रामचैतन्य धीरजक नव प्रकाशित गीत-गजल संग्रह 'द्विपर्णा'क कलाकार ललित कुमुद द्वारा विमोचन भ' चुकल छल।

विषयक अनुरूप विचार एतहु फलकल रहल। कथागोष्ठी मे जे ध्वनि दबल सन छल, से एहिठाम प्रमुखता सँ आगाँ आयल। कविता हथियार थिक अथवा नहि, एहि पर खुजिक' बहस चलल। सभाध्यक्ष स्वयं घोषणा कयलनि जे ओ मार्क्सवादी

विचारधाराक लोक थिकाह। हुनक तथा गोष्ठीक मुँहगर स्वरक अनुसारें जे नवीन कविता वैह थिक जे सर्वहाराक दंश केँ वाणी दैत अछि तथा ओकर हथियारक काज करैत अछि। विनोदजी आ रमणजी तीन-चारि नव कविक नाम ल' बाँकी केँ अस्वीकार करैत ई स्थापित करबाक चेष्टा कयलनि जे नवका मे ओहन कोनो विशेष बात नहि छैक जे ओहि सँ पहिलुका मे नहि। अग्निपुष्प आ कुणालक ई कथन छलनि जे जे नवका मे छैक, से पहिलुका मे भैये ने सकैत छलैक। कुणालजी जखन मैथिली गजल केँ पैरोडीक संज्ञा देलनि तँ हुनके पीढ़ीक गजलकार लोकनि हुनक विरोध कयलथिन। किछु काल धरि तँ विचार गोष्ठीक बदला गजल गोष्ठी भ' गेल। कलानंद भट्ट, विभूति आनंद तथा रामचैतन्य धीरज धड़ाधड़ि अपन गजल पढ़' लगलाह। हुनका लोकनिक कहब छलनि जे मैथिली गजल केँ अपन जमीन छैक आ ई ककरो नकल नहि थिक। कुणाल उर्दूक गजल पढ़ि ओहि ओजनक मैथिली गजल प्रस्तुत करबाक चुनौती देलनि। अध्यक्षक बेर-बेर उकसौला पर पहिने उदाहरण सँ परहेजे करैत रहलाह वक्ता लोकनि, मुदा एहि काल मे अध्यक्षक बेर-बेर टोकलो पर उदाहरणक वर्षा होब' लागल। हमरा बूझि पड़ल जे कुणालक चुनौती अपन जगह पर कायमे रहल। कुलानंद जीक संचालन आ अध्यक्षीय भाषण प्रभावशाली छल। ओ एकहत्तरि मे मैथिली मे लेखन शुरू कयलनि, ताहि हिसाबें हुनका आठम दशकक लेखक मानल जयबाक चाहियनि, किंतु आठम दशकक रचनाकार हुनका अग्रज मानैत छथिन—से प्रायः चानि परहक उड़ल केश देखिक'। कुलानंद जी केँ एहि मे आपत्ति नहि छलनि। चानि परक उड़ल केश वला नवतुरिया कोना भ' सकैत अछि? आ जे नवतुरिया नहि अछि, तकर रचना पर विचार कोना कयल जाइत—भनहिं, ओ लिखओ ओही अवधि मे।

कथा-गोष्ठी जकाँ, कविता गोष्ठीक अंत मे उत्तेजना नहि छल। लोक एकर उपलब्धि पर किछु ने किछु अवश्य गप्प करैत जँ ओकरा लोकनिक पेट भूखें कुलबुला नहि उठितैक! लगभग एक बजे कविता-गोष्ठीक समापन भेलैक आ संयोजक दिस सँ जलपान अयबाक घोषणा भेलैक। जाइत-जाइत ई घोषणा कान मे पड़ल जे दू बजे सँ पत्रकारिता पर विचार-गोष्ठी होयत।

तीन बजे घुरि क' अयलहुँ। ता, अग्निपुष्प अपन आलेख खतम क' बैसल छलाह तथा गोकुलनाथ जी मिथिला मिहिरक अल्प प्रसारक दोषारोपण क' रहल छलाह। हुनको भाषण लगिचायल छल। अध्यक्ष छत्रानंद जी गोकुलनाथ जी केँ टोकलथिन जे ई गोष्ठी ककरो आंतरिक समस्या पर विचार करबा लेल नहि आयोजित अछि। हमरा लोकनिक पत्रकारिताक वर्तमान समस्या पर विचार करी। अग्निपुष्पक आलेख मे प्रायः एकरे उल्लेख छल जे आठम दशकक साहित्य केँ स्वर देबाक

सर्वप्रमुख श्रेय छैक शिखा तथा अग्निपुष्प केँ। चर्चा एहू सत्रक छिड़िया गेल आ पत्रिका प्रकाशन, ओकर प्रसार-समस्या, ग्राहकक उदासीनता तथा पाठकक प्रभाव पर आबि गेल। अधिक पत्रिका प्रतिक्रिया मे प्रकाशित होइत अछि कि गहन प्रभाव केँ विचारिक' सुनियोजित ढंगे—ताहू पर दुगोला देखबा मे आयल। छत्रानंद जी प्राय: समयक अतिकाल केँ विचारिक' संगोष्ठी केँ संक्षेप कयलनि आ अपन समन्वयात्मक संयमित वक्तव्य सँ एक-सबा घंटा मे एहि सत्र केँ समाप्त घोषित क' देलनि। बाद मे, एक टा त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशित करबाक योजना पर सेहो अनौपचारिक रूपें गप्प-सप्प भेल।

तीन बजेक बाद डेलीगेट लोकनि भोजनालय दिस गेलाह आ हमरा लोकनि चाहालय दिस।

करीब सात बजे सँ कवि-सम्मेलन शुरू भेल। अध्यक्ष पं. गोविंद झा आ संचालक मार्कण्डेय प्रवासी। प्रवासी जीक संचालन मनोरंजक रहल। ओ बड़का-बड़का कवि सम्मेलनक माँजल संचालक केँ मोन पाड़ि देलक। शैवाल केँ छोड़ि प्राय: सभ डेलीगेट काव्यपाठ कयलनि। पवन कुमार वैश्वानर तथा विभा रानी तृषा अपन रचना सँ श्रोतागण केँ विशेष प्रभावित कयलनि। अग्रज पीढ़ीक कवि लोकनि छलाह—अध्यक्ष पं. गोविंद झा, गोपालजी झा 'गोपेश', मार्कण्डेय प्रवासी, कुलानंद मिश्र, उदयचंद्र झा 'विनोद' तथा भीमनाथ झा।

कवि सम्मेलन मे जेना तथाकथित आठम दशकक रचनाकार तथा अतिथि रचनाकार लोकनि एकाकार भ' गेलाह तहिना तीनू विचार-गोष्ठी मे सेहो दुनू तथाकथित पीढ़ी एकाकार छल—केवल विचारक परिधि सँ अतिथि रचनाकारक पीढ़ीक रचना बाहर छलनि।

मैथिली साहित्यक 'भविष्य' जे बाहर सँ आयल छलाह तथा पटनाक जतबा साहित्यकार जुटल छलाह—किछु गप्प करबाक लेल, किछु आत्मनिरीक्षणक लेल, किछु परस्पर परिचय-पात करबाक लेल—से कम महत्त्वपूर्ण नहि छल। आ, एहि लेल, खाली एही लेल संयोजक लोकनि केँ धन्यवाद दैत छी।

विचार-विमर्शक परिणाम तँ भविष्य लेल होइत छैक—से उपलब्धिपूर्ण होउक वा नहि, ई दोसर गप्प भेल, मुदा एतेक साहित्यकारक उपस्थिति—एक ठाम उपस्थिति, तात्कालिक महत्त्वक होइत छैक। आ, ओहो अपना मे एक उपलब्धि भेलैक। साहित्यकार वर्गक उपस्थितिक महत्त्व केँ स्थानीय संस्था बुझैत आ अपन ढंग सँ हुनका लोकनि सँ परिचय प्राप्त करैत, हुनक आतिथ्य करैत, हुनक सहानुभूति अर्जित करैत तँ ई संस्थेक हेतु गौरवक विषय होइतैक। मैथिली अकादेमी तथा चेतना समिति ई कार्य नहि कयलक तँ ताहि मे दोष हमरा लोकनिक ओहि चेतने केँ अछि जे

साहित्यकारक महत्त्व केँ एखन धरि नहि चीन्हि सकल अछि। मैथिली अकादेमीक, अकादेमीक पदाधिकारीक हैसियत सँ कोनो व्यक्ति ओहि सम्मेलन मे उपस्थित पर्यंत नहि छल—तखन ओहि सँ आगाँक बात की सोचल जाय? चेतना समिति एक दिनक हेतु विद्यापति-भवन देबाक उदारता अवश्य देखौलक, चेतना समितिक सचिव उद्घाटन-समारोह मे सम्मिलित होयबाक सदाशयता अवश्य देखौलनि, किंतु जाहि प्रकारक सम्मेलन छल, ताहि मे हुनका लोकनिक कर्तव्य किछु विशेष छलनि।

किंतु, ककर-की कर्तव्य होइत छैक ताहि पर कतेक विचार कयल जाय? आब नीक यैह होयत जे संयोजक लोकनि जे कयलनि ताहि हेतु हुनका लोकनि केँ फेर सँ धन्यवाद दियनि।

नवतुरिया लेखक सम्मेलनक लेल हमरालोकनि बहुत उत्साहित रही। बहुत जोर-शोर सँ एकर प्रचार-प्रसार आ पत्राचार भेल छल। हमरा सभक पीढ़ीक लगभग सभ रचनाकारक उपस्थिति आ सहभागिता महत्त्वपूर्ण छल। दू-तीन दिन हमसभ संग रहलहुँ, संग-संग अनेक चर्चा-परिचर्चा कयल, योजनादि बनाओल आ एक प्रकारक संतुष्टिक भाव सभ तरि पसरल रहल। एहन आत्मीय आयोजन फेर कहाँ भ' सकल बहुत दिन धरि। मोन पड़ैत अछि जे भाइ साहेब, प्रभास जी, उदयचंद्र झा विनोद जी, कुला भाइ, भीमनाथ जी आ देवेन्द्र झा आदि सभ तरहें वैचारिक सहयोग क' रहल छलाह। पंडितजी (गोविन्द झा) आत्मीयतापूर्वक प्रोत्साहित करैत रहलाह। पहिल दिनक अध्यक्षता हुनके करबाक रहनि, ताहि लेल ओ आश्वस्तो कयने रहथि मुदा कोनो विशेष कारणे ठीक ओहि समय हुनका गाम जाइ पड़लनि, तें ओ पहिल दिन उपस्थित नहि भ' सकलाह। एहि आयोजन मे दौड़-बड़हा बहुत करय पड़ल छल, अनेक अग्रज रचनाकार सभसँ भेंट-घांट, विचार-विमर्श। नीक सँ नीक आयोजन हो, ताहि लेल अनेक सलाह अग्रजलोकनि सँ भेटल छल। एक मंच आ एक सोचक कारणे आयोजन सफल भेल छल। बहुत ऊर्जा आ उत्साह सँ हमर पीढ़ीक रचनाकार पटना सँ विदा भेल छलाह।

हमहूँ सभ एकदम नव रही। उत्साह आ उछाह सँ भरल-पुरल। तैयो एतेक संगोर भ' सकल छल जे एक उपलब्धि सन बुझाइत रहल। अनेक नव-नव अनुभव सँ सम्पृक्त भेल रही। अपना भीतर आत्मविश्वास भरल छल, सर्वथा नव ऊर्जा सँ लबालब भेल रही। नवतुरिया लेखक सम्मेलनक स्मृति बहुत दिन धरि उत्साहित करैत रहल। एहि अवसर पर मित्र रामचैतन्य धीरजक 'द्विपर्णा' किसुन संकल्प लोक द्वारा प्रकाशित भेल छल, जकर भूमिका गुरुदेव प्रो. आनन्द मिश्र लिखने रहथि।

पोथीक अक्षरांकन कयने रहथि प्रिय भाइसाहेब। हरियर कचोर रंगक गीत संग्रह 'द्विपर्णा'। धीरजक परिचय ओही पोथीक पीठ पर हमहीं लिखने रही। कोनो कवि अथवा कविता संग्रहक विषय मे ओ हमर पहिल परिचयात्मक टिपपणी छल। तकर थोड़बे दिनक बाद मित्रवर कलानन्द भट्टक गजल संग्रह 'कान्ह पर लहास हमर' दू दिनक अथक परिश्रम सँ बहरायल छल—ई दुनू पोथी किसुन संकल्प लोकक प्रारंभिक प्रकाशन छल। मुरलीधर प्रेस सँ बहरायल एहि पोथीक प्रकाशन मे भाइ विभूति आनन्दक सहयोग बिसरय बला नहि अछि।

जीवकांत 21 जुलाइ 1982क पत्र मे लिखलनि—'कल्हुका डाक मे किसुन रचनावली/कथाक प्रूफ-प्रिंटक दोसर खेप प्राप्त भेल। पढ़ि रहल छी। शीघ्रे भूमिका पठा देब। एकर बाद आर कैक गोट कथा छपबा लेल छैक? इच्छा करैत छी जे लिखबा सँ पूर्व सभ कथा पढ़बाक अवसर भेटि जाय तँ नीक।

अहाँ कैँ कहिया धरि भूमिका पहुँचि जाय, तँ सुविधा रहत। ई बात बुझला सँ अगुतायब, अथवा विचार-सिचार करब।

अहाँ लोकनिक लेखक सम्मेलन सफल रहल, से उदयचंद्र झा विनोदक पत्र सँ पता लागल।

एम्हर बड़ व्यस्त रहलहुँ अछि। लिखब-पढ़ब बन्न जकाँ रहैत अछि। सूर्योदय सँ सूर्यास्त धरि पारिवारिक जीवन अछि। सूर्यास्त सँ सूर्योदय धरि रोशनीक अभाव मे सभ काज बन्न रहैत अछि।'

हुनक भूमिका भेटि गेल। ओ 27 जुलाइ 1982क पत्र मे लिखलनि—'किसुन जीक कथा सभ पर एक गोट भूमिका पठा रहल छी। आशा जे ई काजक जोग होयत। एकर पहुँचनामा शीघ्र पठाबी। चिंतित रहब।' हुनक भूमिका—किसुन जीक कथा सभक मादे—मैथिली अकादमी पत्रिका मे प्रकाशित भेलनि।

हमर एम.ए.क परीक्षा समाप्त भ' गेल छल। हम आब मुक्त रही आ चाहैत रही जे कोनहुना हिंदी सँ एम.ए. सेहो क' ली। हिंदी सँ एम.ए. कयलाक बाद हम दिल्ली जाइ चाहैत रही आ जे.एन.यू. सँ पी-एच.डी. करय चाहैत रही। बी.पी.एस.सी. मे बैसय चाहैत रही। बहुत किछु करय चाहैत रही। ई हमर इच्छा-आकांक्षा छल जे असीमित छल। असमाप्त छल।

मुदा दोसर दिस, पटनाक जीवन अत्यंत संघर्षपूर्ण छल। डेग-डेग पर संघर्ष आ पराजय छल। जीवित रहबाक लेल ई संघर्ष कठिन छल आ हमरा साध्य सँ बाहरक

छल। हमर एम.ए.क पढ़ाइ मे माताश्रीक बीस भरी चानीक हंसुली बिका गेल छलनि। मुख्यमंत्री, बिहार सँ विवेकानुदान प्राप्त करबाक लेल जेठ भाइक समय आ ऊर्जा तँ नष्ट होइते छलनि, नेता लोकनि लग खेखनी सेहो करय पड़ैत छलनि। से बात हमरा भीतर धरि दुखी करैत छल आ अपन स्वाभिमान कैँ ठेस लगैत छल। मुदा दोसर उपाय नहि छल। साहित्यिक बंधु लोकनिक कर्जा सदति माथ पर सवारी कसने रहैत छल। तीन-तीन मास धरि मनीआर्डरक प्रतीक्षा मे समय कटि जाइत छल। आसरा रहैत छल गंगाक जल केर आ फुटपाथ पर दोकान करैत अमरनाथक ओहिठामक उधारी पाव रोटी केर। अपन अत्यंत सीमित आय मे सँ जेठ भाइ परिवारक संपूर्ण दायित्वक निर्वाह करैत जखन-तखन किछु ने किछु पठबैत छलाह। मुदा ओ बालु मे एक बुन्न पानिक ठोप छल। जेठ सँ छोट अखनो बेरोजगार छलाह। ओहि सँ छोट भाइ राँचीक बैंक मे रहथि मुदा हुनको ओतबे दायित्व। भाइ सभक उत्साह, प्रेरणापूर्ण पत्र हमर जीवनक पाथेय छल। अन्हारो मे अपन बाट ताकि लेबाक लूरि तकरे सभक परिणाम छल।

मैथिली अकादमीक पोथी सभक प्रूफ देखैत रही। राष्ट्रभाषा परिषदक पोथीक प्रूफ देखैत रही आ ताहि सभ सँ थोड़-बहुत पाइ आबि जाइत छल। मुदा, ई नियमित नहि होइत छल। आइ मायानंद मिश्र, भीमनाथ झा, मोहन भारद्वाज, राज मोहन झा, देवेंद्र झा आ विभूति आनंद मोन पड़ैत छथि। हिनका सभक स्नेह आ अनुराग मोन पड़ैत अछि।

मुदा, एहि सभ चक्रव्यूह मे, समयक विपरीत परिस्थिति मे, समय केर दाहक वन-प्रदेश मे हमर इच्छा-आकांक्षा आ स्वप्न सभ फँसि गेल, ओझरा गेल आ खकस्याह भ' गेल। तें नाना प्रकारक संकटगुच्छ मे ओझरायल रहि गेलहुँ। समय सभ चीज कैँ मर्दन करैत बीति रहल छल। हमरा लेल ई समय भारी उथल-पुथल केर छल।

एहना मे जीवकांत अपन पत्र सभ सँ हमरा भीतर ऊर्जाक संचार करैत रहलाह, जीवन जीबाक लूरि सिखबैत छलाह, कठिन सँ कठिन परिस्थिति मे धैर्य रखबाक गुर सिखबैत छलाह। ई हुनक व्यक्तित्वक महान पक्ष छल। हुनक नमी छल, हुनक सम्वेदनाक प्रसार छल, जे एक संग हमरो आ हमर समकालीन बन्धु कैँ सेहो स्पर्श करैत छल—समान रूपें, एक रंग।

ओ लिक्खाड़ लेखकक रूप मे ख्यात रहलाह अछि। कोनो एहन पत्रिका नहि, नव हो वा पुरान, जाहि मे हुनक रचना ओहि पत्रिकाक शोभा नहि बढ़बैत हो। ओ निरंतर लिखैत रहलाह आ निरंतर छपैत रहलाह अछि। 4 जनवरी 1983क एक पत्र मे ओ लिखैत छथि—'एक गोट पत्र अहाँ कैँ सुपौलक पता पर पठौने छलहुँ। राज मोहन जी कैँ दू गोट रचना पठौलियनि अछि—घेघ (कथा), आलोचना कैँ निरापद बनाउ

(लेख)। मिथिला मिहिर केँ थोड़ेक रचना सेहो पठाओल अछि—माटि कल्ला अलगबैत अछि (कविता), एक टा कलसद्दई आकाशवाणी (भाषा आन्दोलन), लोक रुचिक संग बहैत साहित्य (लेख)—एहि मे विद्यापतिक रहस्य (खंडकाव्य), आंजुर भरि सिंगरहार (कविता संकलन) आ चकोर चाहय चान (उपन्यास) पर चर्चा अछि। आकाशक ओरियानी मे एक टा कचिया हाँसू (लेख) जाहि मे इतिहासहंता, आकाश तों लग आ, मीताक नाम आ सहस्रबाहु कविता संकलन पर चर्चा अछि।

पटनाक गोलैसी मे राज मोहन जी बड़ एकसर अनुभव क' रहलाह अछि, हुनक मनोबल बढ़ौने रहबनि। कुलानंद भाइक हाल लिखब।'

10 फरवरी 1983क एक पत्र मे ओ लिखैत छथि—'राज मोहन जी केँ दरभंगा मे देखबाक प्रतीक्षा क' रहल छी। ई बात फराक छैक जे हमरो दिनचर्या खूब भ' गेल अछि जे आब छौ-छौ मास बीति जाइत अछि आ दरभंगा नहि जा पबैत छी।

योगानंद बाबू केँ लिखने छलियनि। ओ उत्तर देलनि अछि जे हमर कथा-संग्रह 'वस्तु' प्रेस मे जा चुकल अछि, दू मास मे बहार भ' जायत।

परीक्षाक बाद अहाँ कत' रहैत छी?'

ओ हमरा एक टा उपन्यास लिखबाक लेल सदैव प्रेरित करैत रहलाह। एहि तरहक सुझाओ हमर आनो मित्र-रचनाकार सभ दैत रहलाह अछि मुदा से संभव नहि भ'सकल। 15 फरवरी 1983क पत्र मे लिखलनि—'कीर्तिनारायण जी केँ आरंभ पठाउ। ओ हमरा सँ नवका कविता संकलन सभ वी.पी.पी. सँ मँगने छलाह। ड्योढ़ सँ कोनो वस्तु पठायब संभव नहि छैक। हम उदयचंद्र झा विनोद आ अग्निपुष्प केँ ई वस्तु सभ हुनका वी.पी.पी सँ पठयबाक लेल लिखलियनि अछि।

परीक्षा आ परीक्षाफलक बीच मे एक गोट उपन्यास पूरा करू। अपने संघर्ष पर, गाम सँ आयल नगर मे पढ़ैत एक युवा बुद्धिजीवीक जीबाक संघर्षक कथा लिखू। विलक्षण आ महत्त्वपूर्ण वस्तु होयत।

नीकें छी। मुदा हम अपने कथा आ उपन्यास लिखबाक कोनो प्रेरणा नहि पबैत छी।'

लगले 19 फरवरी 1983क पत्र मे लिखलनि—'हिंदी मे एम.ए. करबाक अहाँक इच्छाक समर्थन करैत छी। कतबा दिन लागत? 18.2.83 केँ मधेपुर मे विद्यापति पर्व मे कविता-पाठ कयने रही।' दिल्ली जयबाक प्रसंग हुनक 29.4.83क पत्र भेटल। 'माटिपानि'क पहिल नाम संपादक-द्वय 'हस्ताक्षर' रखने रहथि, सेहो एहि पत्र सँ ज्ञात होइत अछि—'आरंभ—2, किसुन रचनावली, एक टा चम्पा-कली : एक टा विषधर मे सँ कोनो वस्तु नहि भेटल अछि। राज मोहन भाइक कोनो पत्र हमरो एक युग सँ नहि भेटि रहल अछि।

विभूति अपन पत्रिका 'हस्ताक्षर' लेल कथा मँगलनि अछि जकर संपादन ओ विनोदक संग कर' जा रहलाह अछि।

दिल्ली जयबाक जोगाड़ बैसाउ। दिल्ली मे संस्कार परिष्कृत होयत। साहित्यिक बोधक क्षितिज पैघ होयत। ओहुना दिल्ली एखन भारतीय साहित्यिक क्रियाकलापक केन्द्र मे अछि।'

1983क एही समय एम.ए.क परीक्षा दए हम गाम घुरि गेल रही। एतय हुनक 18 मइ 1983क पत्र भेटल, जाहि मे ओ लिखैत छथि—'आरंभ—2 आ चंपाकली... 17.5.83 केँ भेटि गेल। तारानंद वियोगी लिखने छलाह एकर समालोचना लिखबा लेल, मुदा राजकमल पर ततेक लिखने छी जे एखन लिखबाक कोनो रुचि नहि अछि।'

14 जुलाइ 1983। ई हमर विवाहक दिन छल। ओहि बर्खक अंतिम लगन।

आइ सोचैत छी तँ सभ किछु अजगुत लगैत अछि। एहि विवाहक पृष्ठभूमि बड़ पैघ, बड़ व्यापक। डेग-डेग पर संघर्ष आ तनातनी। तनाओ। केहन आ कोन तरहक जीवन भ' गेल छल? एक दिस परिवार, दोसर दिस हम। एकसरे तनल। विवाह करब तँ ओत्तहि करब।

ओहि समय सुस्मिता अद्भुत कविता सभ लिखैत छलीह। तन्मयता सँ चित्र बनबैत छलीह। हिंदीक अखबार सभ मे हुनक कविता सभ छपैत छलनि। मोन पड़ैत अछि जे हुनक एक कविता 'भूख' जनशक्ति, पटना मे छपल रहनि आ बहुत प्रशंसा भेटल रहनि। हम चाहैत रही जे समान रुचिक सामंजस्य रहला सँ साहित्यिक कर्म मे सभ तरहक सहयोग भेटत—परस्पर एक-दोसरक सहयोग आ सहकार सँ बहुत रास योजना पूर्ण होयत। घर-आँगनक काज सम्हारैत ओ साहित्य आ कलाक विरल-विलक्षण संतुलन बनौने रहैत छलीह। हिनक ई गुण सभ नीक लगैत छल।

दोसर आकर्षण रहथि हमर श्वसुर आ गुरु शैलेश कुमार पाठक। ओ स्थानीय विलियम्स हाइस्कूल मे अंग्रेजीक शिक्षक रहथि। ई परिचय असल मे हुनक पूर्ण परिचय नहि छल। ओ दार्शनिक रहथि आ अपन संपूर्ण जीवन एक ओहन भारतीय संन्यासी जकाँ बितौलनि, जकर उदाहरण देल जा सकैए। ओ भारतीय परिवेश मे मार्क्सवादक अद्भुत व्याख्या कयलनि। हुनका लिखबा मे लाचार हाथक कारणे बड्ड कष्ट होनि मुदा तैयो अनवरत लिखैत रहथि आ लगभग साठि-सत्तर टा डायरी मे अपन जीवन आ सिद्धान्तक सार तत्व लिखलनि। ओही क्रम मे 'पहल' संपादक श्री ज्ञानरंजन केँ जखन ई सभ सूचना देलियनि तँ ओ उत्साहित होइत हमरा पत्र देलनि जे कोनहुना एकरा सभ केँ उपराउ जे हम पत्रिका मे छापि सकी। मुदा ओ केरियरिष्ट

नहि रहथि, हेडमास्टरक पद ठोकरौलनि, जीवन मे आयल अनेक अवसर कें ओ लात मारि चुकल रहथि। आब स्मृतिशेष छथि। सुपौल मे अनेक विरोधक अछैत, अपन किछु मित्र लोकनिक सहयोग सँ वैह निराला नगरक स्थापना करबौने छलाह। ओ टोल पहिने गोढियारी अथवा अन्हरा टोल कहबैत छल। निराला नगरक स्थापनाक क्रम मे यात्री नागार्जुन, जानकी वल्लभ शास्त्री, लाल धुआँ सहित अनेक रचनाकार जुटल छलाह—ई सभ हुनक व्यक्तित्वक प्रभाव रहनि।

हुनक सान्निध्य हमरा भेटैत रहैत छल। साहित्य, कला, संस्कृति पर जेना हुनक एकाधिकार रहनि। ओ एक संग अनेक भाषाक परम ज्ञाता रहथि।

से एहन घर मे संबंध हो, से के नहि चाहत...।

विवाहो हमर अद्‍भुत भेल छल। अनेक मान-मनौवलक बाद परिवारक लोकक संग हमर मित्रलोकनि—नीरज, शंभू, परमानंद, लाल, किशोर, अजित, शंकर आदि। हाथ मे लालटेन लेने हमर प्रिय कलानन्द भट्ट। हमरा आगाँ-आगाँ चलैत, अन्हार सँ इजोत दिस ल' जाइत। मित्रलोकनिक सहयोग सँ कुल्लम अड़तालीस टा टाका हमरा जेबी मे विवाहक राति जमा भ' गेल छल। आरो की चाही...?

हमर विवाह 14 जुलाइ 1983 कें सुपौलहि मे भेल। मुदा विवाहक अग्रिम सूचना हम जीवकांत कें पूर्वहि देल तँ ओ अग्रिम शुभकामना दैत 4 जून 1983क पत्र मे लिखलनि—'अहाँक पत्र एतय 3.6.83 कें प्राप्त कयल। विनोद भारतीक विवाह मे सम्मिलित भ' आयल छी। अहाँक विवाहक सुखद समाचार भेटल। वर-वधू भागमंत आ यशस्वी होउ, से कामना करैत छी। एहि अवसर पर सुपौल मे रहब एक गोट अविस्मरणीय अवसर होइत, तकर लोभ संवरण क' रहल छी।

राज मोहन जी दरभंगा आबि गेल छथि। प्रो. हरिमोहन झाजी कहलनि जे मैथिलीक एहि पीढ़ीक लेखक लोकनि अपना मे झगड़ि रहल छथि, से तुरत रोकथि। हुनक ई बात हम मानि लेल अछि।'

हरिमोहन बाबू दरभंगा आबि गेल छलाह। राज मोहन जीक बदली भ' गेल रहनि दरभंगा। एहि पीढ़ीक लेखकक बीच झगड़ाक कारण मे छल 'आरंभ' आ 'कथा दिशा'क संपादकीय-प्रकरण। ई झगड़ा नहि छल, अपितु कोनो चतुर सुजान व्यक्ति पटने मे हरिमोहन बाबूक कान भरि देने रहनि। हरिमोहन बाबू बात कें बिसरितो बहुत छलाह आ बात कें रगड़ितो बहुत छलाह। ई हुनक सहज स्वभाव छलनि। जीवकांत हुनक एहि तथाकथित झगड़ा रोकबाक बात कें मानि लेलनि—एहि सँ हुनक महानता तँ प्रकट होइते अछि, वरिष्ठ लेखकक प्रति आदरभाव सेहो परिलक्षित होइत अछि।

अगस्त मे हमर एम.ए.क परीक्षाफल प्रकाशित भेल, तकर सूचना हम जीवकांत कें देलियनि। ओ 30 अगस्त 1983क एक पत्र मे हमरा लिखलनि—'अहाँक परीक्षाफल

बूझल। शुभ होअय, भागमंत होअय। अहाँ पढ़ैत-लिखैत होयब। आब अहाँ की सभ क' रहल छी? आर आगाँ की सभ करबाक बात सोचि रहल छी?

कोनो तरहें तीन गोट कथा एम्हर लिखि क' तीन ठाम पठा देने छी—लड़ाइ अन्हराइत अछि (मि.मि.), डबरा (माटिपानि), आ अवज्ञा (मै. अ. पत्रिका)।

काल्हि एत' डा. जयकांत मिश्र आयल छलाह। शिक्षाक मैथिलीकरण लेल गोष्ठी बजौने छलाह। हमरा सँ ओ थोड़ेक आर समय मँगलनि...। पटना मे हुनका सँ उदयचंद्र झा 'विनोद' इन्टरव्यू लेलकनि, प्राय: जे हुनक माटिपानि मे छपय। ओ कहलनि जे इन्टरव्यू एक टा बिखाह वातावरण मे भेल। ओ कहलनि जे पटना मे हमर (जीवकांत) विरोधी बड़ अछि।'

जीवकांतक विरोधी पटने मे की, सभ ठाम अछि। जे काज करैत अछि, तकर विरोध होइते अछि। ई अदौ सँ होइत आबि रहल अछि। नीक लोकक विरोध, नीक काजक विरोध—आ ताहू मे मैथिल समाज! 25 अक्तूबर 1983क पत्र मे अपन गामक जीवनक विषय मे लिखैत छथि—'किसुन रचनावलीक तेसर खंड जरूर पठाउ। हमरा तँ होइत अछि जे लिखबा लेल समय आब नहि पायब। जँ-जँ गाम पर पुरनायल जाइत छी, तँ-तँ सभ टा समय गामेक काज मे लगौने जाइत छी। एखन घरक पलस्तर चलि रहल अछि। घरक सामान सभ टा जहतर-पहतर फेकल अछि। एहना स्थिति मे लिखबाक कोनो योजना कोना बना सकैत छी?

एहि बेर विद्यापति पर्वक अवसर पर पटनो अयबाक संभावना कम अछि। एम्हर किछु नहि लिखल अछि। कोनो मंच सँ हम पुरान रचना नहि पढ़ैत छी।

गामक रंग चढ़ल जाइत अछि। खजौली मे समय कटैत छल, ओकरा हम लेखन सँ कटैत छलहुँ। गाम मे समय कें परिवार कटैत अछि, तें लेखन लेल कोनो समय आ दिनतालिका पायब कठिन अछि। दिनानुदिन एहि तरहें समय आरो थोड़ भेल जाइत अछि।'

जीवकांत लेल ई क्षणिक समस्या छलनि। घरक पलस्तर आ समय कें परिवार कटैत अछि—ई सभ अस्थायी आ अल्प अवधिक विराम छल। ओ एहू कठिन परिस्थिति मे लिखबाक हूबा रखैत छलाह आ आवश्यक भेला पर लिखितो छलाह।

हम, एम्हर, निरंतर गाम मे बैसि क' समय खेपि रहल छलहुँ। पढ़बा-लिखबाक अतिरिक्त कोनो काज नहि छल। नोकरी अखनो नहि छल आ आयक कोनो निश्चित स्रोत नहि रहने जीवन कठिन छल। हम अपन एही मन:स्थिति मे एक पत्र हुनका देल, जकर उत्तर ओ 3 दिसंबर 1983क पत्र मे दैत हमरा लिखलनि—'नोकरी आ

आय नहि अछि, से तात्कालिक आ क्षणिक समस्या थिक। नोकरियो होयत आ पाइयो कमायब, तावत एहि स्थिति केँ आशा आ आनंदक संग जीबू। निरर्थक समय नहि गमाउ। योजनापूर्वक समय बिताउ। एहि स्थितिक मन:स्थिति केँ कविता आ कथा मे अंकित करू। कोनो उपन्यासक योजना बना ओकरा पूरा करू। पी-एच.डी.क योजना बनाउ। थोड़ेक समीक्षा लिखि पत्रिका सभ मे पठाउ। 'डेसर्टेशन' केँ मोन मानय जे छपबाक योग्य अछि, तँ छपयबाक बात सोचू।'

हमर तत्कालीन मन:स्थिति केँ हुनक पत्र आस्थावान बनबैत छल, उत्साहित आ प्रेरित करैत छल। अपन एम.ए.क परीक्षा मे हम बाबूजी पर डेसर्टेशन रखने रही आ तकरा लेल बहुत मेहनति कयने रही। ओ प्रकाशित होयबाक सामग्री अवश्य छल मुदा प्रकाशनक व्यय तत्कालीन परिस्थिति मे हमरा लेल भारी छल। सभ किछुक अछैत हुनक उत्साह आ प्रेरणा हमरा लेल निश्चये महत्त्वपूर्ण छल, जे हमरा जीवन आ लेखन दुनू केँ जीवंत बनौने रहैत छल।

जीवन जेना-तेना बीति रहल छल। लिखबाक लेल बैसी तँ मोन उचटि जाय। मोन मे कुंडली मारि क' बैसल छल नोकरी। नोकरी आ एक निश्चित आयक स्रोत। मुदा से अपना सक्क मे नहि छल। जे संभव प्रयास छल, करैत छलहुँ। सहरसाक बी.एड. कॉलेज मे नाम लिखा लेने छलहुँ।

एहि सभक अतिरिक्त साहित्यिक गतिविधि चलैत रहल। जीवकांतक पत्र निरंतर अबाधित रूपें अबैत रहल। हुनक 2 जनवरी 1984क एक पत्र भेटल, जाहि मे ओ लिखैत छथि—'समय बीति रहल अछि। समय बीति जाइत छैक, नीको आ बेजायो। कोनो स्थिति मे विचलित नहि होइ। धैर्य वीरता थिक। धैर्य अपन चारूकात आनंदक प्रसार करैत अछि।

आरंभ 3 आ 4 राज मोहन भाइ पठा देलनि अछि। एम्हर हुनको कोनो पत्र नहि आयल अछि। लक्षण सँ बुझाइत अछि जे प्रो. हरिमोहन बाबूक स्वास्थ्य बहुत शोचनीय भ' गेल छनि।

'कान्ह पर लहास हमर'क रिभ्यू लिखबाक मोन अछि। पोथी मुदा महेश राजस्थानी ल' गेल छथि। एक मास सँ हुनके लग अछि। हम कोशिश करब जे शीघ्रे लिखि क' प्रकाशनार्थ द' दिऐक।

गाम पर बड़ व्यस्तता अछि। एक-दू गोट दुखिताहक दबाइ-बिरो मे समय लगैत अछि। खेती मे बड़ काज रहैत अछि। सेहो बूझ' पड़ैत अछि, ओना खेतक आरि पर जयबाक कोनो अवसर नहि भेटैत अछि।

लिखबा लेल दिनो-दिन कम समय भेटि रहल अछि। एहि साल प्राय: किछु नहि लिखि पायब।'

हरिमोहन बाबू ठीके अस्वस्थ छलाह। हुनक दबाइ-दारू आ पथ्य-परहेज मे राज मोहन जी आ भुवन जी लागल रहैत छलाह। 'कान्ह पर लहास हमर' कलानंद भट्टक गजल संग्रह छलनि जे हमहीं पटना सँ प्रकाशित कयने छलहुँ। मैथिली मे गजलक पहिल संग्रह यैह छल प्राय:। गाम-घरक व्यस्तता जतय हुनक सामाजिकताक बोध करबैत अछि ओतहि ओ एक कृषक रूप मे सेहो व्यस्त रहैत छलाह। एहि सभ दायित्व बोधक निर्वाहक संग-संग ओ निरंतर लिखैत रहैत छलाह, जखन कि ओ प्रत्येक चारिम-पाँचम पत्र मे लिखैत छलाह जे किछु नहि लिखि पाबि रहल छी। 6 जनवरी 1984क पत्र मे ओ लिखलनि—'आइ 'कान्ह पर लहास हमर'क समीक्षा 'लोरिक-सल्हेस बनब कहिया धरि' मिथिला मिहिर केँ पठा देल अछि।' एहि सँ हुनक सजगताक पता लगैत अछि जे तमाम व्यस्तताक अछैतहु ओ लेखन केँ कतेक महत्त्व दैत छथि। हरिमोहन बाबूक प्रसंग ओ 20 जनवरी 1984क एक पत्र मे लिखैत छथि—'हरिमोहन बाबू नीकें छथि। हुनक मोतियाबिन्दक ऑपरेशन भेल अछि। राज मोहन जी आन प्रकारें व्यस्त छथि।' 14 फरवरी '84क एक पत्र मे ओ लिखैत छथि—'किसुन रचनावली पर सेहो लिखब। पलखति देखला पर।

प्रो. बालगोविंद झा 'व्यथित' एखन सरिसव पाही कॉलेज मे प्राचार्य छथि। प्रो. कामेश्वर चौधरी, प्राचार्य, चंद्रमुखी भोला कॉलेज, ड्योढ़-घोघरडीहा मैथिली-प्रेमी छथि आ विद्वान छथि। जँ मोन मानय, तँ हुनका सँ पत्राचार/भेंट क' सकैत छी।

मैथिली अकादेमी सँ 'वस्तु' कथासंग्रह छपि गेल अछि। 'नानी' कथाक अनुवाद तेलुगु मे छपि रहल अछि। 'कोसी-कुसुम' देखबाक उत्सुकता रहत।' बालगोविंद बाबू पहिने सुपौल कॉलेज मे रहथि। हम हुनक छात्र रही आ हुनक स्नेह पबैत रही। ओहि समय मे प्राचार्य डेली वेजेज पर व्याख्याताक नियुक्ति करैत छल। तें हम जिज्ञासा कयने रहियनि।

सहरसा सँ 'कोसी-कुसुम' पत्रिका बहरा रहल छल। श्रीमती अम्बिका मिश्र एकर कर्त्ता-धर्त्ता छलीह। सहयोग करैत छलाह हमर मित्र तारानंद वियोगी। तें स्वभावत: हमरो रुचि छल एहि मे। मुदा, एहि बीच महान साहित्यिक स्तम्भ हरिमोहन बाबूक निधन भ' गेलनि। संपूर्ण मैथिली-जगत मर्माहत भ' उठल। 8 मार्च 1984क पत्र मे ओ लिखलनि—'कोसी-कुसुम' हम भाइ भीमनाथ जीक डेरा पर देखल। हरिमोहन बाबूक श्राद्ध मे दरभंगा गेल रही। अहाँक समाचार-सूचनाक हेतु राज मोहन जी उत्सुक छलाह। काल्हि विद्यापति पर्व मे भाग लेबाक हेतु राँची जा रहल छी। अहाँ की सभ क' रहल छी? रचना रामलोचन ठाकुरक नवका 'देसकोस' मे सेहो पठबियौक। 'माटिपानि'क की हाल छैक?'

ओ मैथिलीक प्रत्येक पत्रिका मे स्वयं तँ रचनात्मक सहयोग करिते छलाह

अपन संपर्कित रचनाकार केँ सेहो निरंतर प्रेरित-प्रोत्साहित करैत छलाह। ई हुनक स्वभावगत विशेषता थिकनि। जीवकांत जीवन आ साहित्य दुनू मोर्चा पर डटल रहयबला लेखक छथि—सिद्ध आ निष्णात। ओ 1 अप्रील 1984क पत्र मे हमरा लिखलनि—'रामलोचन ठाकुरक देसकोसक दोसर अंक बहार होयबा पर छनि। पटना नहि गेल छलहुँ, 'वस्तु' डाक मे जनवरीक अंतिम सप्ताह मे एत' आयल छल। ई हमर अनिच्छा रहैतो अपात्र सभ मे बिलहा गेल अछि। 'माटिपानि'क फगुआ अंक नीक छल। माटिपानि केँ 'कविवरक प्रभा-मंडल' (पोथी समीक्षा) आ 'पतितपावनी गंगा केँ असिधारिणी दुर्गा बनयबाक प्रयोजन' (हरिमोहन अंक) लेख पठा रहल छिऐक।

बेरोजगारीक यातना केँ लेखन सँ बहटारू। एहि अनिवार्य नियति केँ शालीनताक संग ऊघू।

एक गोट कविता संग्रह छपबा लेल मोन लुसफुसा रहल अछि। मुदा पांडुलिपि तैयार नहि अछि।'

20 अप्रील 1984क पत्र मे लिखैत छथि—'अहाँक आ कलानंद भट्ट जीक पत्र भेटल। 'कविवरक प्रभा-मंडल' 'सीताराम झा' नामक पोथीक समीक्षा थिक जे साहित्य अकादेमी सँ प्रकाशित भेल अछि। ट्रेनिंग क' रहल छी, करू। मुदा, हाइ स्कूलक नोकरी ज्वाइन नहि करब। आरंभ मे लोक जे नोकरी पकड़ि लैत अछि, तकर मोह नहि छुटैत छैक। कॉलेजक नोकरी ताकू। ओही लेल प्रयत्नशील होउ।' 5 मइ 1984क एक पत्र मे ओ लिखलनि—'अहाँक पोस्टकार्ड पौलहुँ। मधुबनी कापी देख' जइतहुँ, तँ ओत' शिक्षक संघक प्रेस मे सोझाँ मे अपन कविता पोथी छपबितहुँ। कापी देख' लहेरियासराय बजा लेलक। ताहू ठाम ने गेलहुँ। पत्नी केँ दरभंगा ल' जा डाक्टर सँ देखौने छी आ गाम पर रहि हुनक परिचार करैत छी।

जनकपुरक 'अर्चना' लेल एक गोट लेख—'कन्यादान मे किछु अवांतर प्रसंग' लिखि पठा रहल छी। राज मोहन जीक उदासी लेल पीड़ा होइत अछि। बहुत दिन सँ हुनक कोनो पत्र नहि आयल अछि।

कुलानंद जी नीकें छथि। थोड़ेक कविता लिखलनि अछि। दू गोट टिप्पणी मिथिला मिहिरो मे पठाओल अछि। कविता आ कथा लिख' चाहैत छी।

विद्यालय मे पढ़ाइ 12-5 धरि स्थगित अछि। फेर 1.6 सँ ग्रीष्मावकाश होयबाक संभावना अछि। एहि बेर आम नहि अछि।

विभूति आनंद नोकरी लेल अहूँ सँ बेसी छटपटा रहल छथि।'

22 मइ 1984क पत्र मे ओ हमरा लिखलनि—'अहाँक पत्र आयल छल। 19 केँ दरभंगा मे रेडिओ पर रेकार्डिंग छल, अहाँ सँ भेंटक कल्पना छल। राति मे राज

मोहन जीक ओहिठाम रहबाक मौका भेल। दरभंगा सँ 'रचना' बहार भेल अछि। अहाँ एम्हर आबी, तँ हमरो दर्शन दी जाहि सँ किछु सार्थक गप भ' सकय। रामलोचन ठाकुर केँ अहाँ सँ आ कलानंद भट्ट सँ रचना-सहयोग लेल संपर्क कर' कहने छलियनि।' ओ 12 जून 1984क एक पत्र मे लिखैत छथि—'आइ अहाँक पोस्टकार्ड भेटल। भेंट होयबाक प्रतीक्षा हमरो अछि। कलानंद भट्टक पत्र सेहो आयल छल। कीर्त्तिनारायण मिश्रक पत्र आयल छल। राज मोहन, सोमदेव, ज्योतिवर्द्धन आ सुमन जी सँ भेंट भेल छल। योगानंद झा जीक पत्र आयल छल। ओ 28 जून केँ अवकाश प्राप्त क' रहल छथि।

अहाँक रचना सब नहि आबि रहल अछि। अयबाक चाही। एम्हर आठ-दस दिन सँ एक गोट कथा आ किसुन जीक कविता-संग्रह पर एक गोट लेख लिख' चाहैत छी, मुदा कोनो वस्तु शुरू करबा मे आलस होइत अछि। ग्रीष्मावकाश वाह-वाह मे बीति गेल। 'कोशी-कुसुम' केँ पटना मे छपयबाक विचार दियनु।' 20 जून 1984क एक पत्र मे लिखलनि—'समकालीन भारतीय साहित्य' मे काल्हि मैथिलीक तीन कविक हिंदी अनुवाद पठाओल अछि। किसुन जीक 'खुटेसल'क अनुवाद 'खूँटे में बंधे हुए' गेल अछि। किसुन जीक अतिरिक्त कीर्त्तिनारायण मिश्र आ गंगेश गुंजनक कविताक अनुवाद सेहो गेल अछि। आब नचिकेता, अग्निपुष्प, नूतन राकेश इत्यादिक अनुवाद कर' चाहैत छी।

मि.मि. मे एक गोट टिप्पणी पठाओल अछि—'मैथिली आ अनुवाद।' अनुभव करैत छी जे मैथिली साहित्यक हिंदी आ अंगरेजी अनुवाद सेहो कयल जाय आ ओकरा छपाओल जाय। तोंहू अनुवाद क' सकैत छह। नीक कथा आ नीक कविता सभ चुनह। अपनो रचनाक अनुवाद करह आ अनको रचनाक अनुवाद करह। ईहो एक टा काज छैक जे बड़ जरूरी छैक आ जे हमरा लोकनि नहि क' रहल छी। कदाचित मैथिलीक लेखक अनुवादक काज केँ परिश्रम-साध्य आ असम्मानजनक बुझैत छथि। हम एहि सँ पूर्वो राजकमल चौधरीक मैथिली कथा-कविताक अनुवाद कयने छी।

आब हम कार्यक्रम बना क' ई काज करब। आ तोरो सँ आग्रह करब जे ई काज करह आ एकरा महत्त्व द' क' करह। भ' सकैत अछि जे समकालीन भारतीय साहित्य दिस सँ अनुवाद प्रकाशनक अनुमति माँगल जाय, से पठा दिहक।

पछिला सप्ताह मे किसुन जी पर एक गोट लेख लिखल—'विद्रोह आ अपराजेयताक कवि किसुन जी'। एकरा रचना मे पठाब' चाहैत छी। ताहि लेल भीमनाथ झा केँ लिखल अछि। 'रचना' केँ बिना नोंतल ई लेख पठाब' नहि चाहैत छी।'

31 जुलाइ 1984क एक पत्र मे लिखलनि—'पटना गेल रही। 'मुदा ई वैराग्य नहि थिकै' कविता संग्रह मैथिली अकादमी कें प्रकाशनार्थ देल अछि। हाजीपुर मे उदयचंद्र झा विनोद भेटलाह। पूर्णेन्दुजी भेटलाह।' 14 अगस्त 1984क एक पत्र मे लिखलनि—'मैथिली लेखक सम्मेलन (पटना, अक्तूबर '84 लेल समीक्षा मे आधारभूत लेख लिखबाक भार हमरा पर छल, से लेख लिखि हम गोविंद बाबूक पता पर पठा देल अछि।

वैद्यनाथ बाबूक पटनाक नोकरी पर हुनक अभिवर्द्धना करैत छी। पटना मे अहाँ लोकनि कें एक ठौर तँ भेल।' 28 सितंबर 1984क एक पत्र मे चैलेंज दैत लिखैत छथि—'अहाँक बाढ़िक पूर्वक पोस्टकार्ड एत' काल्हि भेटल। बाढ़ि मे की सभ भोगलहुँ? उपन्यास लिखि सकब एहि पर?

'मिथिला सौरभ'क प्रवेशांक भेटल। 4.9 सँ हड़ताल पर छी। एहि बीच मात्र तीन गोट कथा लिखल अछि।' पुन: 6 अक्तूबर 1984क पत्र मे लिखलनि—'बाढ़ि सँ अहाँ बचल छी, से संतोषजनक बात। हमरो सभ बचल छी। पुबरिया बाध मे भुतही बलान धार थोड़ेक खेत आ धानक रोप कें भरलक अछि।

मिथिला सौरभ। प्रदीप बिहारी कें मुद्रण आ प्रकाशनक सुरुचि नहि छनि अथवा स्थानीय पत्रिका मे थोड़ेक बाध्यता होइत छैक, से सभ छनि। नीक प्रेस नहि भेटने पत्रिकाक दुर्गति होइत छैक।' 11 नवंबर 1984क एक पत्र मे हमरा लिखलनि—'6 सँ 10 धरि अघुआढ़ मलाढ़ मे एक गोट कन्यादानक प्रसंग मे गेल रही। तरुण जी सँ भेंट भेल। अहाँ बेसी काल मोन पड़ैत रहलहुँ। ओतेक समीप जा क' सहरसा आ सुपौल नहि जा सकलहुँ।' 8 दिसंबर 1984क पत्र मे पुन: लिखलनि—'मलाढ़ सँ सुपौल बहुत निकट रहैतो आ इच्छाक अछैतो नहि जा सकल छलहुँ। जेरगर रही आ काज छल अनिश्चित। तें से सभ भेल। अहूँ एम्हर अबैत छी, तँ काते-कात निकलि जाइत छी। एम्हर रामानुग्रह बाबू सँ थोड़ेक काल गप भेल।

विद्यापति पर्व मे पटना आ दरभंगा नहि गेल छलहुँ। जयबाक मन:स्थिति नहि बनैत अछि। बेसी काल अपने दिनचर्या ओझरौने रहैत अछि।

डा. इंद्रकांत झा भेलाह राजनैतिक मनोनीत लोक। सरकारी महालक जे दुर्गति होइत छैक, से होयबाक चाही। राज मोहन भाइक गतिविधि नहि बुझैत छी।

विभूतिक पत्र नहि आयल अछि। मुदा हुनक मि.मि. मे नोकरीक चर्चा सुनने छलहुँ आ मि.मि. मे विभूति चंद्र झाक नामे जे रिपोर्टिंग रहैत अछि, ताहू सँ हुनक उपस्थिति सूचित होइत रहैत अछि।' 17 दिसंबर 1984क एक पत्र मे लिखलनि—'मास्टरी नहि करब, नहि करू। निर्णय नीक अछि। पत्रकार बनबाक प्रयास करू। पटना मे विभूति आ सुकांत कें भार दियनु जे कतहु कोनो भेकेंसी होइक, तँ अहाँ

कें खबरि करथि। अपन बायोडाटा आ मार्क्स सभक अभिप्रमाणित प्रति हिनका लोकनि कें दियनु जे अहाँक लेल आवेदन करथि आ अहाँ कें इन्टरभ्यू लेल खबरि करथि। प्रेस मे लोक प्रूफ रीडरोक रूप मे घोंसिआइत अछि आ समयक संग आगाँ घुसुकि जाइत अछि।

अहाँक लेल विभूति आ कुमार शुभेश्वर सिंह कें पत्र देलियनि अछि। देखी, एहि सँ की होइत छैक? पटना जाइ, तँ संपादक लोकनि सँ संपर्क करी आ कोनो मित्रक द्वारा अपना कें इंट्रोड्यूस कराबी।

रामलोचन ठाकुर द्वारा संपादित 'आजुक कविता' नामक संकलन आयल अछि।' 30 दिसंबर 1984क पत्र मे लिखैत छथि—'अहाँ कें हमर कोनो बात सँ तकलीफ भेल, एहि सँ अहाँक चरित्रक दृढ़ता आ हमर, अहाँक प्रति भावनात्मक आवेगक आधिक्य सूचित होइत अछि। मुदा तीर निकलि गेल अछि।'

जीवकांत एक संग कतेक प्रकारक चिंता मे डूबल रहैत छथि, कतेक प्रकारक संलग्नता हुनका रहैत छनि, ओ कतेक सजग आ जागरूक लेखक छथि—ई सभ चकित करैत अछि। ओ एक टा एहन केन्द्रक रूप मे हमरा सभक बीच उपस्थित छथि, जतय चारूभरक सूचना आ संवेदना सँ ओ लैस रहैत छथि। एक टा अत्यंत संवेदनशील लेखक जकाँ ओ सभक बारे मे सोचैत छथि—चाहे ओ लेखक होथि, रचना होइ वा मैथिलीक अन्यान्य प्रसंग। एक संग एतेक रास भार कें ऊघब हुनके सँ संभव।

जीवनक अपन व्यापक अनुभव आ तकर प्रसार कें ओ अपन पत्र-मित्र संग बँटैत छथि। नीक-बेजायक प्रति सचेत करैत छथि। आश्चर्य थिक जे ओ पत्र अहाँ कें लिखि रहल छथि मुदा अहाँक संग-संग आनो-आनो लेखकक प्रति अपन टिप्पणी दैत रहैत छथि। ई टिप्पणी हार्दिकता सँ भरल आ प्रेम सँ लबालब रहैत अछि।

साहित्यक जे विधा दुब्बर आ कांतिहीन बनल अछि ओ तकरा मे एक विशेष चमक पैदा क' दैत छथि। मैथिलीक अनुवाद अन्यान्य भाषा मे हो, तकरा लेल ओ वरिष्ठ आ कनिष्ठ दुनू पीढ़ी पर एक समान योजनाबद्ध ढंगें काज करैत छथि, काज करय चाहैत छथि आ एहि लेल अनको प्रेरित करैत रहैत छथि।

ओ हमरा कुशल-क्षेम लेल कतेक चिंतित आ व्यग्र छथि, से हुनक अनेकानेक पत्र मे देखल जा सकैत अछि। एक दिस सँ ओ हमरा लेल कुमार शुभेश्वर सिंह, विभूति आनंद आदि कें लिखैत छथि आ कोनो खबरि लेल उत्सुक आ चिंतित बनल रहैत छथि।

हमर जेठ भाइ श्री वैद्यनाथ झा कें नोकरी भेलनि तँ ओ आह्लाद सँ भरि उठैत छथि। ई सभ हमरा प्रति हुनक अकुंठ आपकता कें दर्शबैत अछि, जे हमरा लेल गौरवक विषय थिक।

ड्योढ़ सन साधन विहीन, भुच्च देहात मे रहैत ओ स्वयं कें नगर-महानगर सँ जोड़ने रहैत छथि, सभक खबरि रखैत छथि—ई स्वयं मे विलक्षण थिक।

7 जनवरी 1985क एक पत्र मे हमरा लिखैत छथि—'लेखक लेल अखबारक नोकरी सभ सँ नीक। सीधा-सम्मर बान्हि क' डा. मिश्र लग पैरवी भिड़ाउ। विधानसभा चुनाओ सँ पहिने घोंसिअयबाक चेष्टा करू। पैरवी लेल पटना धरू। सभ जोगाड़ भिड़ा क' काज निकालू। पहिल नोकरी पयबा मे बड़ घाम चुआब' पड़ैत छैक। अनुभव भ' जायत, तँ लोक खुशमद क' ल' जायत।

कुमार शुभेश्वर सिंह कें एक बेर लिखने छियनि। फेर लिखबाक बात सोचि रहल छी। डाक्टरेट लेल सेहो कोनो आलस्य बिना कयने भिड़ि जाउ। समय बेरबाद नहि करू।'

एहि बीच हमरा वयस्क शिक्षा पर्यवेक्षकक पद पर सहरसाक कहरा ब्लॉक मे नोकरी भ' गेल। सहरसाक तत्कालीन आयुक्त जिया लाल आर्यक अध्यक्षता मे साक्षात्कार आयोजित भेल छल आ हम 25 जनवरी 1985 कें अपन योगदान देल। मुदा तावत ई सूचना जीवकांत कें नहि भेटल छलनि आ हमर नोकरी लेल ओ एखनो व्यग्र आ चिंतित छलाह। 28 जनवरी 1985क एक पत्र मे हमरा लिखलनि—'बहुत अंतरालक पछाति अहाँक पत्र भेटल अछि। सुकांतक उत्तर हमरो नहि आयल अछि। मार्कण्डेय प्रवासी आ विभूति पत्र लिखि अपन-अपन असहायताक चर्चा कयलनि। थोड़ेक रिभ्यू लिखू आ उदारतापूर्वक लिखू।

राज मोहन जीक दम्माक कथा अहींक पत्र सँ बुझलहुँ अछि। एखन धरि हिनका पत्र नहि लिखलियनि अछि। 'कोसी कुसुम' मे हमरा नाम मे 'झा' जोड़ि हमरा किछु अप्रतिभ करैत गेल छथि।

आँखि देखाबय लहेरियासराय जायब। आँखि कोनो काज नहि कर' दैत अछि।'

हमर नोकरीक समाचार हुनका भेटलनि तँ ओ 8 फरवरी 1985क पत्र मे हमरा शुभकामना पठबैत लिखलनि—'अहाँ नोकरी ज्वाइन कयलहुँ, से जानि खुशी भेल। भोग होअओ। शुभ होअओ। मुदा ई नोकरी सँ संतुष्ट नहि होउ। अगिला नोकरी धरि एकरा जिआ क' राखू।' हमरा विभाग मे नियमित वेतन भुगतान नहि होइत छल, तें चिंतित होइत ओ 28 फरवरी 1985क पत्र मे लिखलनि—अहाँक विभाग मे कहियो काल पेमेंट बकना जाइत छैक। एखन की हाल अछि?' ओ हमर एहि नोकरी सँ

संतुष्ट नहि छलाह, एकर प्रमाण थिक हुनक 17 अप्रील 1985क पत्र—'अखबार मे, पाटलिपुत्र टाइम्स मे जोगाड़ बैसयबा लेल उद्यम करू। हम नीकें छी। भोजनक परहेज बड़ करैत छी। तें एभेलुएशन मे नहि जा रहल छी। तथापि सृजनात्मक उपलब्धिक हिसाब शून्य अछि। स्मारिका लेल 'अरिपन' कें एक गोट टिप्पणी आ कुलानंद जीक प्रस्तावित पत्रिका कें दू गोट पुरनायल कविता पठा देल अछि। आर की?' एहि बीच हम सकरी होइत बाबा यात्रीक गाम तरौनी घूमि अयलहुँ। सकरी टमटम पर बैसि तरौनी धरिक यात्रा। बाबाक गाम-घर, डीह आ जोड़ा मंदिर। शोभाकांत भाइ बाबाक थोड़ेक हिंदी पोथी सेहो देलनि। संग मे रहथि हमर पितिऔत गुरुजी। नाम अमरनाथ मुदा गुरुजी नामे ख्यात। आब ओ एहि संसार मे नहि छथि। कतेक रास यात्रा गुरुजी संग कयने छी, तकर हिसाब नहि। शोभाकांत भाइक माताश्रीक चरण-स्पर्श कए अपना कें धन्य मानल। बाबाक गाम देखबाक सेहंता बहुत दिन सँ छल, से पूर्ण भेल। हुनक 9 मइ 1985क एक पत्र हमरा भेटल, जाहि मे ओ लिखलनि—'पत्र भेटल। सकरी आ तरौनी देखलहुँ, ई जानि खुशी भेल। घुमला सँ लोक दैनन्दिन तनाओ सँ मुक्त होइत अछि।

रचना थोड़ेक छपबा लेल पठाओल अछि। टिप्पणी मिथिला टाइम्स लग दू, कर्णामृत लग एक, मिथिला मिहिर लग एक अछि। कथा विभूति लग एक, मि.मि. लग एक, कुलानंद मिश्र लग एक आ स्वाती लग एक अछि। आकाशवाणीक केन्द्र निदेशकक प्रति हमर टिप्पणी कें 'मिथिला भूमि' अश्लील कहलक अछि, नाम नहि लेलक अछि।

7 मइ कें मिथिला संघर्ष समिति कलकत्ता आकाशवाणीक समक्ष एक प्रदर्शन कयलक। लोक नहि छल। हमरो आयोजक श्री कमलेश झा बजौने छलाह। गेल रही। निराश भेल रही।' एतय मोन पड़ैत अछि जे तरौनी सँ अयलाक बाद, शोभा भाइ बाबा कें हमर तरौनी जयबाक बात लिखने रहथिन। बाबाक ओहि प्रसंग एक पत्र भेटल हमरा—'शोभाकांत बतौलनि जे एहि बीच तों हमर गाम तरौनी सँ घूमि-फिरि आयल छह, से बड्ड नीक लागल...। आब हमरो किसुन कुटीर धरि अयबाक अछि।' 23 जून 1985क पत्र मे ओ पुनः हमर नोकरी आ मैथिली साहित्य पर अपन चिंता व्यक्त करैत लिखलनि—'अहाँक नोकरी मोन लायक नहि अछि। जाधरि मोन लगबा जोग नोकरी नहि भेटैछ, ताधरि एहि मे रहू। नोकरी आ जीविका मे फर्क होइछ। जीविका लेल ओकरा धयने रहू।

मैथिली साहित्य लेल दुर्भाग्यक बात छैक जे प्रकाशनक अवसर नहि छैक आ जेहो छैक, से घटल जा रहल छैक, मुदा मैथिली लेखक लेल दुर्भाग्यक बात नहि छैक। मैथिली लेखन एहू सँ भयावह परिस्थिति सभ मे जीवित आ अव्याहत

रहल अछि।

कुलानंद जी 'सन्निपात' केँ पुनः पजारताह। हंसराज 'बसात'क तीन अंक लेल रचना जमा भेला पर प्रवेशांक प्रेस मे देताह। हम एखन किछु लिखबा लेल नहि छी। अहाँ की सभ लिखैत छी?' एम्हर 26 जून 1985 केँ हमरा पुत्र भेल आ हम पिता भेलहुँ। जीवकांत 3 जुलाइ 1985क पत्र मे शुभकामना दैत लिखलनि—'पुत्रक पिता होयबाक उपलक्ष्य मे अहाँ केँ आ नवजात शिशु केँ हार्दिक शुभकामना। पत्रोत्तर हम दैत रहल छी। पता नहि, किएक अहाँ केँ हमर चिट्ठी सभ नहि भेटैत रहल अछि।

कुलानंद मिश्र आ मोहन भारद्वाज यात्री-अभिनंदन ग्रंथक आयोजन क' रहलाह अछि।

अहाँ एम्हर बड़ थोड़ लिखलहुँ अछि। से किएक? एना थकनी किएक? मैथिली मे लेखक एक प्रकारें प्रवाहक विरुद्ध लेखन क' रहल अछि। प्रवाहक दिशा मे मैथिली भाषा लुप्त होइत जा रहल अछि। मैथिली लिखि-लिखि क' लोक एहि भाषा केँ जिऔने रहबाक भ्रम बनौने अछि। ई भ्रम बड़ मधुर अछि। एहि मे त्याग आ बलिदान अछि। एहि मे प्राप्त करबा लेल किछु नहि अछि। गमयबा लेल बहुत छैक।' 10 जुलाइ 1985क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'राज मोहन जी आ हंसराज जीक पत्र आयल अछि। राज मोहन भाइ 'बसात' लेल कथा लिखि रहल छथि।

जीवनक पीड़ा आ संत्रास मे आनंद आ उत्कंठा छैक। पीड़ा केँ आनंद आ शालीनताक संग जियबे जीवनक पर्याय थिक। से कौशल अहाँ केँ होयत, तकर आशा अछि। कीर्त्ति भाइ सँ संपर्क एखन टूटल अछि, ओहिना, संयोगात।' 18 जुलाइ 1985क पत्र मे ओ लिखलनि—'यात्री-नागार्जुन अभिनंदन-ग्रंथ लेल अपन निर्धारित लेख तैयार क' पठा दियनु। कुलानंद जी लिखने छलाह जे एहि लेल हमरो पत्र पठाओल गेल अछि, मुदा तारीफक बात ई जे से पत्र हमरा नहि भेटल अछि। तें हम एखन चैन छी।' आ लगले 30 जुलाइ 1985क पत्र मे लिखलनि—'बाद मे कुलानंद जीक पत्र सँ ज्ञात भेल जे हमरा यात्रीक उपन्यास सभक वैचारिक आधारभूमि पर लिखबाक अछि। रवि दिन हम 'पारो' पर लिखि एक गोट टिप्पणी पठा देने छियनि। हमरो लग 'बलचनमा' नहि छल। उपन्यास मे 'नयी पौध' आ 'पारो' (हिंदी अनुवाद) छल।

माया बाबूक उपन्यास-लेखनक समाद नीक लागल।

समकालीन भारतीय साहित्य अंक—21 मे हमर अनुवाद कयल राजकमलक दू कविता, हमर दू कविता आ नचिकेताक एक कविता आयल अछि। राज मोहन भाइ अपना पत्र मे कहैत छथि जे विनोदजी मधुबनी सँ 'स्वर' पत्रिका बहार करबाक निर्णय लेलनि अछि। प्रदीप बिहारी अपन पत्रिकाक चारिम अंकक ओरिआओन क'

रहल छथि।' 20 अगस्त 1985क एक पत्र मे ओ लिखलनि—'प्रो. मायानंद मिश्र लेखन मे दत्तचित्त भेल छथि, से बड़ सुखद समाचार। एहि पीढ़ीक लोक सभक मौन बड़ अखरलैक। मुदा किछु लोक बहुत रचनाक संग मौन तोड़लनि अछि। प्रो. धीरेंद्र एक उदाहरण। प्रभास जी से पाँच बर्ख पूर्व तरातरि चारि-पाँच गोट उपन्यास देलनि। ओहि अर्थ मे बीरेंद्र मल्लिक, धूमकेतु, सोमदेव प्रभृति लेखक आश्चर्यित करैत छथि।

बजैत सूगा बौक भ' जाइत अछि। से हम स्वयं अपनहुँ बूझि रहल छी। गाम परक लटखुट, छोट बच्चा सभक लालन आ रोग-निदान, अपन पारिवारिक काज-करतेबताक आगाँ लेखन-सन बात बहुत परोक्ष भ' जाइत छैक।

हंसराज, कुलानंद मिश्र, कमला चौधरी, उदयचंद्र झा 'विनोद' लोकनिक पत्रिका नहि आयल अछि। पता नहि अम्बिका मित्र कोसी कुसुम चलबैत छथि, कि बन्न कयलनि।

डा. इंद्रकांत झा मैथिली अकादमी पत्रिकाक कथा-अंक बहार करताह, से पत्र आयल छल।'

कवि चंद्रभानु सिंह एम्हर अपन गीत बेच' आयल छथि।'

6 सितंबर 1985क पत्र मे ओ लिखलनि—'एम्हर पेट मे दर्द बहुत बेसी तंग कयने अछि। रक्षा-बंधन दिन सँ दवाइयो खा रहल छी। तथापि ई वश मे नहि आबि रहल अछि। खयबाक परहेजक अति कयने छी। एक सप्ताह मे छमाही परीक्षाक लगभग चारि सय कौपी देखि देल। ताहि मे बैसारी किछु बेसी भ' गेल। दर्द उखड़बाक ई कारण बुझाइत अछि। दर्द उखड़बाक आरो कारण सभ होयतैक, जे नहि बुझाइत अछि।

पूर्णेन्दु चौधरी बेर-बेर रोगाक्रांत होइत छथि। राज मोहन भाइ बेस निरस्त सन अनुभव करैत छथि। हमहूँ बैसबा सँ, पढ़बा-लिखबा लेल बैसबा सँ, दर्दक डरें बच' चाहैत छी।

मैथिली अकादमी पत्रिकाक कथा अंक लेल एक गोट कथा 'झोटहा' पठा देल अछि। डा. इंद्रकांत झाजी 'मैथिली की प्रसिद्ध कहानियाँ' लेल हमर कथाक हिंदी अनुवाद हमरा सँ मँगलनि। समकालीन भारतीय साहित्यक अंक तीन मे 'नानी'क हिंदी अनुवाद छपल छलैक। तकरे उतारि क' पठा देल अछि। संयोग सँ एकर तेलुगु अनुवाद 'विपुला' (हैदराबाद) मे छपल छलैक।

कोसी कुसुम मे डा. भीमनाथ झा मैथिली कार्यक्रमक आकाशवाणीक बहिष्कारक मादे बड़ निराशाजनक बात लिखलनि अछि। ओना मैथिलीक बहुसंख्यक लेखक मैथिली प्रोग्राम लेल बड़ हलसित रहैत छथि, तें ओ आयल प्रोग्राम केँ त्यागबाक बात नहि सोचि सकैत छथि। ई बात सत्य छैक। तें मैथिली आन्दोलन लेल ककरो

संगोरब कठिन छैक, लेखकको सभ केँ संगोरब कठिन छैक। त्याग आ बलिदान सँ आन्दोलनक प्राण-प्रतिष्ठा होइत छैक। से भावना एखन मैथिली लोक सभ मे आश्चर्यजनक रूपें बड़ थोड़ अछि।' 23 सितंबर 1985क पत्र मे लिखलनि—'अहाँक पत्र गामे पर भेटल छल। होम्योपैथी दवाइ सँ कनेक आराम अछि। आइ लहेरियासराय मे डा. सी.एन. यादव सँ देखाओल अछि। काल्हि बेरियम मील एक्सरे स्क्रीनिंग रिपोर्ट हैत, तखन दवाइ लिखल जायत।

एत' आयल छी मैट्रिक सप्लिमेंटरी परीक्षाक हिंदी कापी देखबा लेल। मने बांतर आ दवाइ संग-संग।

रेणु आ चंद्रमणि सँ भेंट भेल अछि। जगदीप नारायण चौधरी 'दीपक' सँ भेंट कर' गेल छलहुँ, नहि भेटलाह। पत्र ड्योढ़क पता पर देल जाय।' 12 अक्तूबर 1985क एक पत्र मे फेर लिखलनि—'आइ फेर दरभंगाक डाक्टर सँ देखा क' गाम आयल छी। पछिला खेप डा. सी.एन. यादव गैस्ट्रिक आ पित्त नलीक सूजन केँ पेट दर्दक कारण मानि दवाइ देने छलाह। एम्हर पित्त थैलीक पथरीक जाँच लेल आब' कहने छलाह। काल्हि कहलनि जे एखन टेस्ट नहि करायब। जरूरति नहि अछि। पुछला पर हम कहलियनि जे दर्द बारह आना खतम अछि आ चारि आना रहि गेल अछि।

दरभंगा मे सुमनजी भेटलाह। नीकें छथि। हंसराज केँ पुत्र भेलनि अछि। पुत्रक आयुष्य लेल बड़ चिंतित, तें एखन अस्पताले मे नवजातक आ प्रसूता केँ रखने छथि।

दर्दक कारण हम स्वयं बहुत चिंतित आ क्षीण-मनोबल भ' गेल छलहुँ। से स्थिति नहि अछि। मनोबल बढ़ल अछि।' 30 अक्तूबर 1985क पत्र मे लिखैत छथि—'दशमी आ दीवाली अंक सँ जखन आन-आन भाषाक पत्र-पत्रिका लाल-पीयर लगैत अछि, तखन मैथिली भाषाक पत्र-पत्रिकाक स्थिति देखि बड़ कष्ट होइत अछि। 'बसात'क प्रवेशांक तँ नहिये बहरायल। एकर अतिरिक्त मैथिली सौरभ, कर्णामृत, स्वाती सन उपेक्षणीय पत्रिको सभ जेना परोरिआ गेल।

आकाशवाणी कार्यक्रमक बहिष्कार कर' चाहैत छी? ओना गोटपंगरा लेखकक बहिष्कार सँ की होइत छैक? अंगरेज सभ छल जे गांधीक सत्याग्रहक आगाँ झुकल, भारतीय नौकरशाह आ नेता ततेक ओछ चरित्रक लोक अछि जे ओकरा लग एहेन-एहेन बातक कोनो मोजरे नहि छैक। सत्ते, उच्च नैतिकताक बात केँ उच्च नैतिकते बला लोक बूझि सकैत छैक। एहेन लोकक कमी छैक।

पेटक दर्द एखन शांत अछि। भोजनक परहेज जे जनैत छी, से करैत छी। परहेजक कारणे लिखबो आ पढ़बो बन्न कयने छी।

राज मोहन भाइ लिखैत छथि जे एक टा सौंस जन्म चाही सोचबा लेल आ फेर एक सौंस जन्म चाही लिखबा लेल। एहि लाथें हमरो लोकनि एहि जन्मक शेष

दिन खेपि सकैत छी।' छठिक खरना, माने 17 नवंबर 1985क एक पत्र मे ओ हमरा लिखलनि—'चेतना समिति, पटना सँ एखनधरि कोनो नोंत-हकार अथवा सूचना नहि भेटल अछि। कोनो मित्रो ने एकर चर्च-बर्च कयलनि अछि। ओना हम लगातार अनेक बर्ख सँ चेतना समितिए नहि, कोनहु ठाम कोनो आयोजन मे जयबा लेल ने समय निकालि पबैत छी, आ ने कोनो रचनेक लेखन क' पबैत छी।

पत्रिका मैथिली मे नहि अछि। मैथिली अकादमी पत्रिका कथा अंकक घोषणा कयने छल, ओकरा लेल एक गोट कथा पठओने छलहुँ। से ईहो पत्रिका नहि देखाइत अछि।

सुमन जी केँ कहलियनि जे एक गोट साप्ताहिक/मासिक बहार करू। ओ प्रस्ताव केँ उनटा देलनि जे हमरे एक गोट पत्रिका बहार करबाक चाही। मने अपन हिस्साक पत्र-पत्रिका निकालि सुमनजी आब निवृत्त भ' गेल छथि।

हमरा हिस्सा मे अनेक पत्रिका मे लिखब अछि। अपन पत्रिका हम ने तँ खजौली सँ बहार क' सकैत छलहुँ आ ने से हम ड्योढ़े सँ बहार करब संभव बुझैत छी। एहना स्थिति मे हम ककरो पर दोषारोपणक स्थिति मे सेहो नहि छी।' 5 दिसंबर 1985क पत्र मे लिखलनि—'धारा' बुलेटिनक प्रसंग पाटलिपुत्र टाइम्स आ मिथिला मिहिर मे समाचार पढ़ल। देखबाक इच्छा भ' रहल अछि।

विद्यापति पर्व तमाशा (शो) भ' गेल अछि। नेता आ नचनियाँक मंच भेल अछि। जयकांत बाबू द्वारा आयोजित मैथिली पदयात्रा मे नहि जा सकलहुँ।

व्याख्याता पद लेल आवेदनक संग दत्तचित्त भ' प्रयासो करी।

'बसात' आ 'हालचाल' बहरायल अछि। देखल नहि अछि। स्वास्थ्य ठीक अछि।'

एहन बात नहि छल जे पाटलिपुत्र टाइम्स लेल हम आरंभ मे प्रयास कम कयने रही। आवेदन सेहो कयने रही मुदा ओहिठामक अराजक व्यवस्था मे ठठि जायब सहज बात नहि छल। बड़का-बड़काक घाम एंड़ी दने चुबि जाइत छलैक, हमर कोन बात! मुदा, ई नोकरी हमरा नहि होयबाक छल आ नहि भेल। कालांतर मे पाटलिपुत्र टाइम्स बन्न भ' गेल।

तावत एक टा छोट सन नोकरी हमरा भ' गेल छल। बी.एड. मे नाम लिखौने रही मुदा परीक्षा मे सम्मिलित नहि भ' सकलहुँ, ओहो छूटि गेल। जे छूटि गेल से छूटि गेल। घुरि क' ताकबाक आब कोनो बेगरता नहि बूझैत छी। जीवनक पथ मे कतेक रास बात एहिना छूटि जाइत अछि। जे छूटि जाइत अछि से छूटि जाइत अछि। स्मृति मे एक टा लहरि जकाँ ओ सभ मोन मे बनल रहैत अछि मुदा तकरा लेल

रुकि क' देख' पड़ैत छैक... अखियास' पड़ैत छैक।

मोन पड़ैत अछि अपन पटनाक जीवन। मैथिली अकादमी मे सहायक निदेशक केर पद। एहि पद लेल प्राय: विभूति आनंद सेहो प्रत्याशी रहथि। एक प्रत्याशी हमहूँ रही। हमर जेठ भाइ श्री विश्वनाथ झा ओहि समय कांग्रेसक समर्पित कार्यकर्त्ता रहथि। गाम-घर मे रिक्शा यूनियनक अध्यक्ष। आ हुनक हाल ई रहनि जे कोनो रिक्शा बला जँ उघाड़े देह रिक्शा चलबैत छल तँ तकरा कुरता खोलि क' द' देथि आ अपने गंजी पहिरने घर घुरथि! हम सभ हुनक ई हाल देखि गुम्म रहि जाइ। एकाध बेर ओ उघाड़े देहें घुरथि। पता लगैत छल जे कुरता एक टा रिक्शा बला केँ आ गंजी दोसर रिक्शाबला केँ द' देल गेलैक।

आ समय कतेक बदलि जाइत अछि... आजुक नेताक हाल देखैत छी, सुनैत छी—तखन पता लगैत अछि। तखन पता लगैत अछि जे आइ हमर सभक नैतिकता कतय फँसल अछि, कतय लसकल अछि। अस्तु।

कहैत रही मैथिली अकादमीक प्रसंग। एहि प्रसंग हमर जेठ भाइ तत्कालीन मुख्यमंत्री डा. जगन्नाथ मिश्र सँ हमर आवेदन पर टिपौत लगा देने छलाह। मुख्यमंत्री सचिवालयक पत्रांक, दिनांक। आ ओहि आवेदन पत्र केँ ल' क' हम डा. मदनेश्वर मिश्र सँ ल' क' मुख्यमंत्री आवास धरि छिछिआइत रहलहुँ। ई एहन सुरंग छल, जाहि मे बहरयबाक कोनो बाट नहि, अंध-सुरंग। ई राजनीति केर अंध-सुरंग छल। हम एहि लेल बनल नहि छलहुँ। तें बेसी दिन टिकि नहि सकलहुँ। हमर ओ आवेदन पत्र समय केर धूल-गरदा मे मैथिली अकादमीक तर कतहु पिचायल पड़ल होयत।

पी-एच.डी. लेल हम पटने विश्वविद्यालय मे निबंधन करौने छलहुँ। प्रो. आनंद मिश्र हमर निदेशक रहथि। अपन थीसिस हम हाथहि सँ लिखने रही। ललित कुमुद ओकर कवर बनौलनि आ हम बाइंड करबाओल। मुदा ओ समय पर जमा नहि भ' सकल छल आ एतहू हम फँसि गेलहुँ—अखनो ई फँसाव लागले अछि। मोन पड़ैत अछि जे गुरुदेव आनंद बाबू कहने रहथि जे पटना विश्वविद्यालयक इतिहास मे भरिसक हस्त लिखित अहींक थीसिस होयत।

जीवकांत हमर एहि सभ क्रिया-प्रतिक्रिया, इच्छा-आकांक्षा मे हमरा संग रहथि आ हमरा प्रेरित-उत्साहित करैत रहथि। ओ सुकांत सोम केँ लिखलनि, विभूति आनंद केँ लिखलनि, मार्कण्डेय प्रवासी केँ लिखलनि, कुमार शुभेश्वर सिंह केँ लिखलनि—मुदा सभ असहाय सिद्ध भेलाह...।

राज मोहन जीक संग बिताओल दू बरख हमर जीवनक अमूल्य निधि थिक। अपन विभाग सँ छूटैत देरी हुनक कार्यालय जाइ, जे विश्वविद्यालये मे अवस्थित छल आ फेर हुनके संग डाकबंगला चौराहा, इण्डियन नेशन, पहलवान जीक दोकान, शर्मा

जीक पानक दोकान वा हार्डिंग पार्कक पाछाँक एक टा होटल मे, जतय ओ साँझक जलखै करैत रहथि... बीच-बीच मे राज मोहन जी केँ दम्माक दौरा पड़नि। दम फूलब आ बाजय-भूकय मे, साँस लेबा मे तकलीफ। मुदा ओ छलाह जीवट लोक। एकरा सभ केँ ओ नहि गुदानथि आ अपन सभ टा काज संपादित करैत रहथि। हुनक दम्माक सूचना हम जीवकांत केँ देने रहियनि, से हुनका लेल पहिल सूचना रहनि।

सहरसा सँ कोसी कुसुम नामक पत्रिका बहराइत छल। ओकर कर्त्ता-धर्त्ता छलीह श्रीमती अम्बिका मिश्र। बाद मे एहि पत्रिकाक सहयोगी भेलाह डा. तारानंद वियोगी। जीवकांतक कोनो रचना मे 'जीवकांत झा' छपि गेल रहनि। हमरो सभ चकित भेल रही, जीवकांत तँ स्वाभाविके अप्रतिभ भेल छलाह। तारानंदक आबि गेला सँ ओहि पत्रिकाक स्वरूप आ रचनाक स्तर मे यथेष्ट परिवर्त्तन भेल, जे ओहि समय सहरसाक लेटर प्रिंटिंग प्रेस मे संभव छलैक, से भेलैक।

हमर नोकरी जाहि प्रकारक छल, ताहि मे काज तँ बहुत नहि छल। मुदा मास मे चारि गोट मीटिंग आ तकरा बाद आवंटित पंचायत मे सर्वेक्षण-कार्य। से गामे-गाम छिछिआइ। मुदा वेतन छओ मास धरि बन्न। आवंटन नहि रहला सँ एना होइत रहैक, हिस्सक पड़ि गेल छल। मुदा, जेना-तेना समय कटि रहल छल। जीवकांत तें एहि नोकरी केँ छोड़ि कोनो नीक नोकरी लेल प्रेरित करैत रहथि।

23 जून 1985क पत्र मे जीवकांत जाहि तथ्य दिस संकेत करैत छथि, से सय प्रतिशत सही अछि। मैथिली लेखक कठिन सँ कठिन परिस्थिति मे लेखन करैत रहल छथि, प्रकाशन करैत रहल छथि आ पोथीक वितरण करैत रहल छथि। दोगा-दोगी पत्रिका बहराइत रहैत अछि। एक पत्रिका बन्न होइत अछि तँ दोसर बहराइत अछि। तहिना ओ 3 जुलाइक पत्र मे एही दिस इशारा करैत छथि जे मैथिलीक लेखन सँ लेखक केँ कोनो तेहन प्राप्ति नहि होइत अछि, हँ, गमयबा लेल बहुत किछु अछि। एक टा भ्रम अछि, जाहि मे मैथिलीक लेखक जीवित अछि आ जीवित रहय चाहैत अछि।

जीवनक पीड़ा आ संत्रास मे आनंद आ उत्कंठा छैक। पीड़ा केँ आनंद आ शालीनताक संग जियबे जीवनक पर्याय थिक—हमरा मे जीवकांत एहन कौशलक अपेक्षा करैत छथि। ज्ञात नहि, हमरा मे ई कौशल अछि वा नहि...।

यात्री-नागार्जुन अभिनंदन ग्रंथक योजना 1985 मे बनल छल। मोहन भारद्वाज आ कुलानंद मिश्र एकर संयोजक रहथि। जीवकांत अपन लेख पठौलनि, हमहूँ एक लेख पठा देने रहियनि। मुदा, ई ग्रंथ अनेक कारणे प्रकाशित नहि भ' सकल। मुदा एखन मोन पड़ैत अछि पं. चंद्रनाथ मिश्र 'अमर'क ई पांति, जे काकु आ व्यंग्य सँ भरल अछि—'योजना तँ हिनको भक्त लोकनि बनौने रहथिन मुदा भक्त सब अपना मे विभक्त भ' गेलाह, योजना 'टाँइ टाँइ फिस्स' भ' गेलनि।' यात्रीक अभिनंदन ग्रंथ

नहि प्रकाशित होयबाक पाछाँ ई कारण कथमपि नहि छल। संपूर्ण मैथिली-संसार जनैत अछि जे मोहन भारद्वाज आ कुलानंद मिश्र संबंधें कहियो विभक्त नहि रहि सकैत छलाह।

प्रो. मायानंद मिश्र एहि बीच अपन जड़ता तोड़लनि आ निरंतर अध्ययन-लेखन मे डूबल रहलाह। ई वैह समय छल जखन कथाकार मायानंद अपन कथात्मक ट्रेंड केँ छोड़ि एक नव ट्रेंडक कथा लिखब शुरू कयलनि। ई ट्रेंड छल राजनीतिक व्यंग्य केर। मैथिली मे एहि प्रकारक कथा विरल अछि। कथ्यक नवीनता मे, अपन शिल्प-सौष्ठव मे ई कथा सभ विलक्षण छल। भये प्रकट कृपाला, दीनदयाला, कौशल्या हितकारी, भैरव, धंधा, हर्रे लगे न फिटकिरी, माध्यम, अभिनंदन, झाँकी, नमकहराम आदि कथा विशिष्ट आ मोन रखबाक योग्य थिक। एहि मैथिली लेखनक लगले बाद ओ हिंदीक दुनिया मे डूबि गेलाह आ ताहि क्रम मे बहरायल कालांतर मे हुनक उपन्यास—प्रथमं शैलपुत्री च, मंत्रपुत्र, पुरोहित, स्त्रीधन आदि। राजकमल प्रकाशन सँ तीने गोट मैथिली लेखक हिंदी मे प्रकाशित भ' सकलाह—यात्री, राजकमल चौधरी आ मायानंद मिश्र। ओहि समय धरि आन कोनो मैथिली लेखक केँ ई सौभाग्य नहि प्राप्त भ' सकल छलनि। ओना, बाद मे आबि क' मैथिली पुस्तक प्रकाशनक क्रम मे एहि प्रकाशन सँ पाँच-छओ टा लेखकक पोथी आयल। से हुनक औपन्यासिक लेखन सँ जीवकांत सहजहिं प्रसन्न भेलाह, पुलकित भेलाह।

मैथिली कार्यक्रमक आकाशवाणीक बहिष्कारक बात ओहि बीच बहुत जोर पकड़ने छल। डा. भीमनाथ झा, प्रदीप मैथिलीपुत्र आ अनेक लेखक कार्यक्रमक बहिष्कार कयने रहथि। हमहूँ करबाक सोचैत रही। आनो-आन मैथिली लेखक कयने हेताह, जनिका विषय मे हम नहि जनैत छी। जीवकांत 30 अक्टूबर 1985क एक पत्र मे लिखैत छथि जे गोटपंगरा लेखकक बहिष्कार सँ की होइत छैक? भारतीय नौकरशाह आ नेता ततेक ओछ चरित्रक अछि जे ओकरा लग एहन-एहन बातक कोनो मोजरे नहि छैक। आजुक समय मे ई बात आरो गंभीर रूपें अनुभव कयल जा सकैत अछि।

जीवकांत मैथिलीक पत्र-पत्रिका मे सेहो साज-सज्जा आ नीक आवरण चाहैत छथि। ओना एहन इच्छा ककरा नहि हेतैक जे पत्रिकाक आवरण बहुरंगी हो, आकर्षक हो। ओना, आब एहि दिशा मे पहिनेक अपेक्षा बहुत परिवर्त्तन भेल अछि जे सराहनीय आ प्रशंसायोग्य अछि। मैथिली पाठकक सक्रियता बढ़ने आरो अपेक्षित परिवर्त्तन-परिवर्द्धन संभव अछि।

चेतना समितिक विद्यापति-पर्वक उदासीनता आब धीरे-धीरे सौंसे पसरय लगलैक। शुद्ध साहित्यिक मंच नहि भ' क' ओ आब जीवकांतक शब्द मे तमाशा

भ' गेल अछि। नेता आ नचनियाँक मंच भेल अछि।

राज मोहन झाक पत्रक अंश उद्धृत करबाक लोभ संवरण नहि क' पबैत छी। ओ जीवकांत केँ लिखैत छथि जे एक टा सौंस जीवन सोचबाक लेल आ तखन एक टा सौंस जीवन लिखबाक लेल चाही। ओना, ई तँ असंभव थिक। जीवकांत हुनक पत्र पर विलक्षण टीप दैत कहैत छथि जे एहि लाथें हमरो लोकनि एहि जन्मक शेष दिन खेपि सकैत छी।

जीवकांत जाहि विपरीत परिस्थिति मे अपन संपूर्ण जीवन जीलनि, ताहि स्थिति मे पत्रिका प्रकाशित करब हुनका सँ संभव नहि रहनि। साधनविहीन गाम मे ओ अपन शिक्षकक नोकरी कयलनि, ओहि देहात मे जतय वास्तव मे सुविधा नहि अछि। ई बात सत्य जे हुनका संपादकत्व मे जँ कोनो पत्रिका बहराइत तँ ओ विलक्षण होइत मुदा ई कहबाक कोनो औचित्य नहि छैक। सुमन जीक चर्च करैत ओ कहैत छथि जे ओ अपन हिस्साक पत्रिका निकालि निवृत्त भ' गेल छथि आ जीवकांतक हिस्सा मे मैथिलीक तमाम पत्रिका मे निरंतर लेखन मात्र रहलनि अछि। ई तथ्य सोलह आना सत्य थिक। हम पूर्वहु कहने छी जे प्रायः मैथिलीक कोनो एहन पत्रिका नहि अछि, जाहि मे जीवकांत उपस्थित नहि होथि—ई सिद्ध करैत अछि जे हुनका सन लिक्खाड़ कोनो दोसर लेखक मैथिली केँ उपलब्ध नहि छैक।

14 फरवरी 1986क एक पत्र मे ओ नहि लिखबाक कारण केँ व्याख्यायित करैत लिखलनि—'तेइस वर्ष खजौली मे काटि एत' आयल छी। एहू ठाम चारि बर्ख पुरि गेल अछि। गाम मे अपन परिवार केँ अधिक समय देब नीक लागल अछि। लिखबाक प्रयोजन अछि, लिखब नीको लगैत अछि। मुदा गाम पर एहि सभ लेल बैसबाक एक तँ मोन नहि होइत अछि आ दोसर बैसबा लेल कोनो उपयुक्त स्थान आ काल नहि भेटैछ। गाम पर एक टा फराक दिनचर्या भ' जाइत छैक। से खूब ओझरौने रहैत छैक। आ, से हमरा ओझरौने अछि।' एहेन विपरीत परिस्थितियो मे जीवकांत निरंतर लेखनरत रहलाह। तेइस बर्ख परिवार सँ अलग रहि नोकरी कयलनि, गाम अयलाह तँ वाजिबे परिवार केँ समय देब अपनो नीक लगैत हेतनि, ई स्वाभाविको छलनि। मुदा, कठिनो परिस्थिति मे हुनक लेखन अविराम चलैत रहलनि। 4 मार्च 1986क पत्र मे ओ सूचित कयलनि जे—'भाइ मोहन भारद्वाज कहलनि जे साहित्य अकादेमी लेल ओ रामकृष्ण झा 'किसुन' पर मोनोग्राफ लिखताह। अहाँक सहयोगक प्रयोजन हुनका होयबे करतनि। किसुन जी हमरा नामे बहुतो रास पत्र लिखने छलाह जकर संग्रह हम अहाँ केँ पठा देने छी। एहि संग्रहक उपयोग भाइ मोहन भारद्वाज करताह।

जँ ओ खोज करथि, तँ हुनका सेहो उपलब्ध करबियनि।' जीवकांतक संग-संग भाइ मोहन भारद्वाजक पत्र हमरो आयल। हम जीवकांतक पत्र समेत अनेक वांछित सामग्री हुनका मोनोग्राफ मे उपयोग लेल पठा देलियनि।

हमर पी-एच.डी.क विषय छल—मैथिली नवकविता मे आक्रोश। निबंधन कराओल मुदा अनेक कारणे समय पर जमा नहि करा सकलहुँ। तखन ओकर एक्सटेंसन लेल आवेदन कयल। ताहि प्रसंग जीवकांत 2 अप्रील 1986क पत्र मे लिखलनि—'शोध प्रबंधक विषय उत्तम अछि। परिश्रम करब, तँ एक पंथ दू काज होयत। ओहुना विश्वविद्यालय सभ नवकविता केँ रिजेक्ट क' चुकल अछि। ओकरा सभ केँ नव कविताक प्रति उत्सुकता जगैक, से नीक बात।' 26 अप्रील 1986क पत्र मे ओ लिखलनि—'नव-नव शुरू होब' वला पत्रिको सभ रचना मँगा लैत अछि आ अंक नहि पठबैत अछि। 'संदर्भ' मे रचना नरेंद्रक पता पर पठाओल। ई लोकनि अपना मे कलह क' लेलनि। 'संदर्भ' बहार भेल अछि। मुदा 'संदर्भ'क नाम पर एकत्र रचना ल' नरेंद्र 'बसात' मे चल गेलाह। आरो कतेक रचना प्रस्तावित आ प्रकाशित पत्रिका सभ लेल गेल अछि। कखन कोन चीज बन्न भ' जाइछ आ कखन कोन प्रस्तावित पत्रिका प्रकाशन सँ पूर्वे अटकि जायत, से कहब कठिन। आ, एहेन प्रत्येक दुर्घटना मे थोड़ेक रचना सभक अपगति भ' जाइत छैक। से तमाशा देखैत छी। पूर्णेन्दु जी लिखैत छथि जे बिना पारिश्रमिकक रचना किएक लिखू—ठीक करैत छथि।

सुकांत 'नवभारत टाइम्स' (पटना) मे चल गेल छथि। पूर्णेन्दु वित्त विभाग मे समंजन लेल छथि। तारानंद जी तरुण किसनपुर मे विद्यापति पर्व करबा लेल छथि।'

मैथिली पत्रिकाक संदर्भ मे कयल गेल जीवकांतक टिप्पणी सटीक अछि। मैथिली पत्रिकाक इतिहास एहने रहल अछि। कोन पत्रिका कखन प्रस्तावित होयत, कखन प्रकाशित होयत आ कखन अलोपित भ' जायत, से कहब कठिन अछि। पूर्णेन्दु जीक समर्थन क्षणकालक लेल ओ जेना करैत होथि—मुदा जीवकांत एहि बिन्दु पर स्थिर नहि रहि सकैत छथि। ओ अनेक समाचार लिखैत सुकांत जी, पूर्णेन्दु जी आ तरुण जीक विषय मे संसूचित करैत छथि। 17 मइ 1986क पत्र मे ओ मैथिलीक सर्वाधिक लोकप्रिय आ प्रशंसित पत्रिका मिथिला मिहिरक विषय मे दुखी होइत लिखलनि—'मिथिला मिहिर 15 केँ नोटिस छापि 16 सँ बन्न भ' गेल। तोर दही मोर चुड़बो गेल। दैनिक गेबे कयल, साप्ताहिको केँ संग लेने गेल। साप्ताहिक मिथिला मिहिर सँ बहुतो तीत-मीठ स्मृति जुड़ल अछि।' मैथिलीक अनेक लेखकक तीत-मीठ स्मृति एहि ऐतिहासिक पत्र सँ जुड़ल अछि। कतेक वाद-विवाद-संवाद एहि पत्रिका मध्य भेल। अकस्मात एकर बन्न भ' जायब सभ केँ अखरलैक। 8 जून 1986क पत्र मे ओ लिखलनि—'भाइ रामलोचन ठाकुर कहैत छथि जे लेखक सभक

को-ऑपरेटिभ बनयबाक चाही, लेखक सम्मेलन सँ किछु होब' वला नहि... बात ठीक अछि। पत्रिका सभ एक दू अंक बहार क' बन्न भ' जाइत अछि, सेहो कोनो बात नहि भेल।

पी-एच.डी.क काज करू। एकरा पूरा करब बहुत जरूरी अछि। नोकरी लेल सेहो जरूरी।' ओहि समय मैथिली-संसार मे 'राइटर्स को-ऑपरेटिव'क सघन चर्चा शुरू भेल छल आ बहुत ठाम बहुत लेखक एहि लेल तैयार भेल छलाह। हमहूँ सभ सुपौल-सहरसाक लेखक लोकनि को-ऑपरेटिव लेल सुरफुरायल छलहुँ। बहुत रास तैयारी भेल मुदा फेर सभ किछु थस्स ल' लेलक। 24 जून 1986क पत्र मे ओ लिखलनि—'मणिपद्मक देहांत एक टा पैघ घटना थिक। अकबका गेल छी। हमर कनिष्ठ पुत्र वरुण रेडियो पर अहाँक मणिपद्मक प्रति शोक-काव्यांजलि सुनलनि।

को-ऑपरेटिभ वला योजना हमरो आसान नहि बुझाइछ। एक अंकक बाद 'संदर्भ' टूटल। प्रवेशांक बहरयबा सँ पूर्वहि 'लोकवेद' खंड-खंड भेल। की यैह को-ऑपरेशन थिकैक? मैथिलीक प्रत्येक संस्था अपने कार्यकर्त्ता सभक कटाउझिक कारणे खंडित आ रूग्ण होइत रहल अछि। जँ हमरा लोकनि ई आशा करी जे कोनो पीढ़ी आब एहि रोग सँ मुक्त भ' काज करत, तँ एहि लेल समर्पित भाव सँ संयोजक के बनत?

यात्री जीक कृपा अहाँ पर रहैत छनि, से प्रसन्नताक बात। शोध-प्रबंधक काज मे की प्रगति अछि?'

डा. ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'क देहांत भ' गेल छलनि। संपूर्ण मैथिली जगत शोकाकुल छल। संयोग जे ओहि समय दरभंगा रेडियो पर हमर कविताक प्रसारण होयबाक छल। से ओहि प्रसारण मे एक कविता मणिपद्म जी पर केन्द्रित छल जे बाद मे एक पत्रिका मे प्रकाशित भेल छल। मैथिलीक लेखक आ मैथिलीक संस्थाक कार्यकर्त्ता सभ आपस मे जेना कटाउझ करैत छथि आ एहि सँ साहित्य आ संस्था सभ पर जे दूरगामी प्रभाव पड़ैत छैक, से निश्चित रूप सँ मैथिल जगत मे कोनो नीक संदेश नहि दैत छैक से चिंता वाजिबे जीवकांत केँ गंभीर रूपें छनि।

28 जून 1986क एक पत्र मे ओ लिखैत छथि—'वेंगार्ड वला जैतुक (काटर) संबंधी संतवचन देखल। बात सभ बहुत ठीक अछि। जैतुक देनिहारक मानसिकताक नीक विश्लेषण भेल अछि। आजुक लोक नेता सभक, स्मगलर सभक, आर्थिक अपराधी सभक देखाउस क' रहल अछि, संतवचन के मानत?

हिंदू समाज ने कोनो बात केँ पूरा मानैत अछि आ ने कोनो बात केँ साफ खंडित करैत अछि, तें ई समाज चिरजीवी आ चिररोगी अछि आ एहि मे क्रांतिक संभावना नहि अछि।' एकर पृष्ठभूमि मे हमर ससुर शैलेश कुमार पाठक द्वारा प्रकाशित एक टा लीफलेट छल जे ओ वेंगार्ड द्वारा प्रकाशित करबौने छलाह। हम विवाह आ दहेज

संबंधी ओ चारि पृष्ठीय वक्तव्य हुनका पठौने रहियनि, जकर प्रतिक्रियास्वरूप ओ पत्र लिखने रहथि। 20 जुलाइ 1986क एक पत्र मे ओ लिखैत छथि—'राइटर्स को-ऑपरेटिव चलि सकैत अछि, अनेक प्रादेशिक भाषा मे ई चलाओल जा रहल अछि। मुदा अपना ओहिठाम ई सभ नहि चलत। हमरा लोकनि बहुत कर्मठ आ परिश्रमी नहि छी। बिना परिश्रम सँ ई सभ होब'वला नहि छैक।

हमरा सभ थोड़ बहुत लिखि लैत छी, तकर कारण छैक। हमरा लोकनि वैयक्तिक काज मे थोड़ेक रुचि लैत छी आ थोड़-थोड़ सफल होइत छी। सामूहिक काज मे ठेलनहुँ ने ठेलाइत छी।

प्रदीप बिहारी रिफाइनरी मे रिफाइनरी दिस सँ एक कथा-सेमिनार कर' चाहैत छथि। एहि मे सहयोग दियनु। योजना बना दियनु आ कार्यान्वयन मे संग दियनु।

प्रो. मायानंद मिश्रक उपन्यास के छपैत छनि आ कतय छपैत छनि? ओ एखन खूब लिखि रहलाह अछि जे मैथिली लेल सौभाग्यक बात थिक। हुनक एहि मोमेंटम कें बनओने रहू।'

7 अगस्त 1986क एक पत्र मे ओ लिखैत छथि—'समकालीन भारतीय साहित्य 25 मे अहाँक अनुवाद कयल पाँच कविक कविता सभ देखल। अनुवाद नीक भेल अछि। संतोष भेल।

राज मोहनक चिंता बुझबा योग्य होइत अछि। राइटर्स को-ऑपरेटिभ नीक बात थिक, बनबाक चाही। अविश्वास छैक, तँ छोट-छोट को-ऑपरेटिभ बनाओल जयबाक चाही, जेना सहरसा मे एक, दरभंगा मे अनेक, पटना मे अनेक इत्यादि।

कुलानंद जी 'सन्निपात'क पाछाँ हरान छथि, राज मोहन जी 'आरंभ' लेल कछमछा रहलाह अछि। जरूरी छैक जे एहि पत्रिका सभक हजार प्रति बेचबाक आ पाइ पलटयबाक बातो सुनिश्चित होयबाक चाही।'

राइटर्स को-ऑपरेटिव पर ओ निरंतर अपन विचार दैत रहलाह। आनो-आनो लेखकक विचार हमरा प्रेषित करैत रहलाह। थोड़ेक सुगबुगी सभठाम भेल मुदा फेर थस्स भ' गेल।

प्रदीप बिहारी बेगूसराय मे सफलतापूर्वक आयोजन संपन्न कयलनि, जतय किछु पोथीक विमोचन सेहो संभव भेल।

प्रो. मायानंद मिश्रक लेखन कें निरंतरता प्रदान करबा लेल उपस्थित छलाह प्रो. महेंद्र, डा. सुभाष चंद्र यादव, महाप्रकाश, डा. शिवेंद्र दास, डा. तारानंद वियोगी, डा. देवशंकर नवीन आ हम।

ओहि समय समकालीन भारतीय साहित्य मे मैथिलीक पाँच कवि—राजकमल, धीरेंद्र, मायानंद, कीर्त्तिनारायण आ जीवकांतक कविताक अनुवाद कए पठाओल जे

अंक 25 मे प्रकाशित भेल छल, तकर प्रशंसा करैत ओ पत्र पठौलनि।

कुलानंद जी आ राज मोहन जी अपन-अपन पत्रिका लेल ठीके कछमछा रहल छलाह। 'आरंभ'क ई दोसर प्रकाशन-फेज छल आ ताहि लेल राज मोहन जी निरंतर लेखक लोकनिक संपर्क मे छलाह। मुदा जीवकांतक चिंता पत्रिकाक स्थायित्व दिस बेसी छलनि जे पत्रिकाक सभ सँ मजगूत आधार थिक, मुदा से संभव नहि भ' सकल।

11 अगस्त 1986क एक पत्र मे जीवकांत समकालीन भारतीय साहित्यक एक अंक मे वरिष्ठ लेखक मणिपद्म जी पर किछु विशेष आयोजन करबाक चेष्टा मे छथि। वरिष्ठ लेखकक प्रति हुनक श्रद्धा आ किछु विशेष आयोजनक व्यग्रता सम्मोहित करैत अछि। ओ लिखैत छथि—'समकालीन भारतीय साहित्यक अगिला कोनो अंक लेल मणिपद्म पर सामग्री सभ प्रायोजित करू। एखन आब' वला मैथिली पत्रिका सभ मे सँ कोनो नीक समीक्षा, कोनो नीक संस्मरण आ हुनक कोनो नीक कथा अथवा उपन्यास अंशक संकलन करू। सभक अनुवाद, संभव होअय तँ कोनो रेखांकन अथवा हुनक फोटोक संग, एहि पत्रिका कें पठयबाक जोगाड़ धराउ। कोनो आन लेखक मित्रक सहयोग लेब आवश्यक बुझाय, तँ सेहो करू।' 20 अगस्त 1986क पत्र मे ओ लिखलनि—'मोहन भारद्वाज कें मदति करियनु। ओ जतबे सहयोग मँगैत छथि, ततबे दियनु। अपना दिस सँ कोनो सजेसन नहि देबाक थिक। लेखक कें स्वतंत्रता छैक जे ओ कोना काज कर' चाहैत अछि। पत्र लेल ओ कहथि, तँ सभ टा पत्र द' दियनु। जे बात हुनका पसिन्न होयतनि, ताहि लेल ओ पत्र स्वयं छाँटि लेताह। ओना किसुन जीक पत्र सभ पर अहाँ कें किछु कथनीय लक्षित होइत अछि, तँ ओहि पर एक टा वा एकाधिक लेख ट्राइ क' सकैत छी।

सहरसा मे पाँच-सात गोटे मेंबर भ' को-ऑपरेटिभ चला सकैत छथि। को-ऑपरेटिभ किताब आ पत्रिका छापत आ ओकरा बेचि क' मैथिली प्रकाशन कें एक लाभकारी व्यवसाय मे परिणत करबाक चेष्टा करत।'

किसुन जी पर मोनोग्राफ लेल जीवकांत व्यग्र बुझाइत छथि। सभ तरहक सहयोग देअयबा लेल ओ तत्पर छथि आ हमरो पत्र द्वारा कहैत रहैत छथि। मैथिलीक हित-चिंता मे ओ लागले रहैत छथि। 25 अगस्त 1986क एक पत्र मे ओ 'हालचाल' मे फेर अपना नामक आगाँ 'झा' शब्द देखि विचलित होइत छथि, दुखी होइत लिखैत छथि—'हालचाल' मे हमर एक रचना 'जीवकांत झा' नाम सँ छपल अछि। पता नहि, ई लोकनि झा जोड़बा लेल किएक अपस्याँत छथि। एखनधरि हमर दू रचना ई लोकनि छपने छथि, दुनू रचना कतहु सँ प्राप्त कयने छथि। ने ई लोकनि रचना मँगैत छथि आ ने हम हिनका सभ कें किछु पठा रहल छियनि। तथापि ई लोकनि रचना उपरा लैत छथि। ईहो एक गोट अद्भुते बात थिक।' 'हालचाल'क सर्वेसर्वा ओहि समय

एक असाहित्यिक छलाह, जिनका साहित्य सँ कोनो लेन-देन नहि रहनि। ओ नामक पाछाँ झा लगा अपना केँ मठोमाठ बूझैत हेताह प्रायः। भ' सकैत अछि, जे ओ बूझैत होथि जे जीवकांत अपना नाम मे झा लगायब बिसरि गेल हेताह, तें ओ एकरा संपादकीय दायित्व बूझि संपन्न करैत हेताह।

मणिपद्म जी पर किछु विशेष अयोजन हो, तकरा लेल ओ बहुत चिंतित रहलाह। हुनक रचना सभ लेल ओ हमरा संकेत करैत 27 अगस्त 1986क एक पत्र मे लिखलनि—'मणिपद्मक पुरान कथा मे बहुत प्रसिद्ध छनि 'बालगोविंद।' नवको कथा सभ मे सँ चुनाओ क' सकैत छी।

'नैका बनिजारा' (अकादेमी सँ पुरस्कृत)क कोनो अंश अनुवाद लेल चुनू। 'हालचाल'क मणिपद्म अंक बहरा गेल अछि। आब 'कर्णामृत' आ 'कोसी कुसुम'क प्रतीक्षा करू। 'हालचाल' मे अमर जीक संस्मरण, मृदुला सिन्हाक संस्मरण नीक अछि। भीमनाथ जीक 'परिचायिका'क अंश सेहो द्रष्टव्य।

संपादक, समकालीन भारतीय साहित्य सँ पत्राचार क' एहि हेतु विचार-विमर्श क' लेब कोनो बेजाय नहि।'

अनुवाद लेल ओ बहुत प्रेरित करैत छलाह। मैथिली साहित्य बेसी सँ बेसी आन भाषा-साहित्यक माध्यमे आबय, से हुनक कामना रहनि। कालांतर मे एहन बहुत रास काज हम कयल, जे हिंदीक विभिन्न पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित भेल। किछु अनुवाद कए हम जीवकांत केँ पठाओल तँ 28 सितंबर 1986क एक पत्र मे ओ लिखलनि—'अनुवाद सभ ठीक अछि। अहाँ अपनहि फेर-फेर पढ़ि देखिऔक जे हिंदी पाठक लेल ओ स्पष्ट होइत छैक। पढ़बा मे प्रवाह होइक, अर्थ स्पष्ट होइक। मूल रचनाक निकट होइ, इत्यादि।

अनुवाद कयने लेखकीय क्षमता घटैत नहि छैक, प्रत्युत बढ़ैत छैक। एकर अतिरिक्त अंग्रेजी सँ हिंदी-मैथिली, हिंदी-मैथिली सँ अंग्रेजी वला काज करबाक सेहो योजना बनाउ। एहि सभ सँ शब्द सभक प्रति दृष्टि फड़िच्छ होयत। जतेक काज करब, ततेक समृद्ध होयब।' अनुवाद करबाक पाछाँ हुनक प्रेरणा-प्रोत्साहन हमरा लेल महत्त्वपूर्ण रहल अछि।

मणिपद्म जी पर केन्द्रित अंक लेल ओ ठीके बहुत व्यग्र रहथि, तकर प्रमाण थिक हुनक 5 अक्तूबर 1986क कार्ड—'हालचाल' मे राज मोहन जीक एक लेख मणिपद्म पर आयल अछि। 'समकालीन भारतीय साहित्य' लेल एकरा बेराउ। 'कर्णामृत' आ 'कोसी कुसुम'क नवका अंकक प्रतीक्षा करू।' 31 अक्तूबर 1986क एक पत्र मे ओ लिखलनि—'पहल' हम नहि देखने छी, तें ओकर राजनैतिक विचारधारा सँ हम अवगत नहि छी। 'पहल' लेल रचना चुनबा मे एके टा बात ध्यान मे राखू

जे ओ मैथिलीक प्रतिनिधित्व क' सकय। नव-पुरान सभ पीढ़ीक रचनाकार केँ सम्मिलित करू। अधिक सँ अधिक रचनाकारक समावेश हमरा मोने नीक होयत।

रामानुग्रह बाबू ड्योढ़ आयल छलाह। शिक्षक संघ मे बड़ समय देब' लगलाह अछि, से जानि बड़ कष्ट भेल। किछु कहलियनि, से सभ सुनताह, तँ वैह ने सुनताह।'

ई समय छल, जखन हम 'पहल' लेल मैथिली कविता सभक चयन आ अनुवाद क' रहल छलहुँ। पहल संपादक ज्ञानरंजन जी सँ निरंतर संपर्क आ पत्राचार छल। एहि अभियान मे हमरा संग छलाह कवि महाप्रकाश, सुभाषचंद्र यादव आ डा. शिवेंद्र दास। मुदा नेपथ्य मे जीवकांत आ हुनक पत्र-प्रेरणा। जेना-तेना ई काज संपन्न भेल आ पहिल बेर मैथिली कविता एतेक विस्तार सँ हिंदी-जगत मे आयल आ समादृत भेल। मुदा क्षेपक कथा ई जे प्रकाशित भेला पर मैथिलीक किछु अत्यंत क्षिप्र धनुर्धर जतय-ततय बहुत तीर छोड़लनि—मुदा, हाय रे भाग्य! तीर उनटि क' हुनके सभ केँ लगलनि। आब तँ ई बात पुरान भेल।

रामानुग्रह झा। हम भैया कहैत रहियनि। नेनपने सँ हुनका देखैत रहियनि, प्रत्येक साँझ नियमित रूपें बाबूजी लग अबैत रहथि। एक घंटा साहित्यिक सान्ध्य-गोष्ठी होइत छल। सघन विचार-विमर्श। सघन सृजन। रामानुग्रह भैया अद्भुत छलाह। दुर्भाग्यक बात जे हुनक समग्र लेखन एखन धरि पुस्तकाकार नहि भ' सकल अछि। आधुनिक मैथिली साहित्य केँ ओ जाहि दृष्टियें व्याख्यायित कयलनि, से विलक्षण अछि। आचार्य रमानाथ झाक बाद जँ कोनो दोसर आलोचक केँ, इमानदारीक संग मोन राखल जायत, तँ ओ रामानुग्रहे झा हेताह, तकर बाद आन क्यो। आइ हमसभ रामानुग्रह झा केँ बिसरि गेल छी मुदा हुनक लिखलाहा जे अछि, तकरा क्यो ने क्यो विवेकवान आइ ने तँ काल्हि उजागर करबे करताह, तकर विश्वास अछि।

से रामानुग्रह भैया अपन जीवनक उत्तरार्द्ध मे आबि विद्यालय आ शिक्षक संघक राजनीति मे ओझरा गेलाह आ ओझराइते रहलाह। हम आ भट्ट जी बड्ड कहियनि मुदा ओ रमि गेल रहथि राजनीति मे। साहित्यक प्रति, बाबूजीक परोक्ष भेने, ओ उदासीन भ' गेलाह। ओना शिक्षक-संघक राजनीति मे अयलाक बादो ओ थोड़ेक गंभीर लेखन कयलनि मुदा अत्यल्प।

से ई चिंता हमरा सभ केँ तँ रहबे करय, जीवकांतो केँ कम नहि रहनि। रामानुग्रह भैयाक सासुर ड्योढ़े रहनि आ सेहो जीवकांतक फरीके मे। 25 नवंबर 1986क पत्र मे जीवकांत लिखैत छथि—'अनुवादक काज खतम करू। फैल सँ सामग्री तैयार करू। 'पहल'क संपादक केँ आग्रह करियनु जे जगह बढ़ाबथि। हमरा आशा अछि जे ओ मानताह। 'पहल'क पता लिखू। हमरा नहि देखल अछि। पटना मे भाइ कुलानंद जी सेहो किछु चर्चा करैत छलाह। अहाँ जाहि कवि आ कथाकारक चुनाओ कयने छी,

से मैथिली साहित्यक प्रतिनिधित्व करैत छथि, तें आत्मविश्वासक संग काज करू।

हमर कथा 'मजबा'क अहाँ अनुवाद क' लेने छी, बेस। मुदा, ई कथा अहाँ कें किएक नीक लागल, से नहि पता।' एहिना 7 दिसंबर 1986क पत्र मे ओ लिखलनि—''मजबा' कथाक अनुवादक मादे अहाँ जे तर्क लिखैत छी से युक्तिसंगत बूझि पड़ल।

संयोग एहन जे हम 'पहल'क कोनो अंक नहि देखने छी। बेसी काल एहि देहात मे एहेन वस्तु सभ देखब संभवो नहि अछि। ओना हम ज्ञानरंजन कें 'पहल'क एक प्रति पठयबाक आग्रह कयलियनि अछि। 6 एवं 7 कें दरभंगा मे मैथिली साहित्य परिषदक आ 8, 9 एवं 10 कें लहेरियासराय मे चिनगी विचारमंचक आयोजन अछि। एहि मे भाग लेब' जा रहल छी।

वीरेंद्र मल्लिक कविता संग्रह आ उपेन्द्र दोषी अपन कथा संग्रह बहार करबाक स्वीकृति पटना मे देने छलाह।'

अंततः पहल पुस्तिकाक रूप मे स्वतंत्र रूपें छपल—मैथिली कविताएँ। जखन अनुवाद करय लगलहुँ तँ मैथिली कथा सभक अनुवाद सेहो कयल। ताहि मे जीवकांतक एक अचर्चित कथा 'मजबा'क अनुवाद सेहो कयल। मजबा धोबी सभक जीवनक व्यथा-कथा छल, से हमरा आकृष्ट कयने छल। एहि कथाक पक्ष मे हम थोड़ेक तर्क देल जाहि सँ ओ संतुष्ट भेलाह।

ओ मैथिली साहित्य परिषद आ चिनगी मंचक कार्यक्रम मे सम्मिलित भेलाह। ओ सभा-समारोह आ विचार-गोष्ठी मे नियमित रूपें सम्मिलित होइत रहलाह।

पटनाक विद्यापति पर्व समारोह मे हुनका बीरेंद्र मल्लिक आ उपेन्द्र दोषी जी सँ भेंट भेल रहनि, जतय ओ दुनू गोटे अपन-अपन पोथी प्रकाशनक बारे मे जीवकांत कें आश्वस्त कयने रहनि। बीरेंद्र मल्लिक जीक बात तँ सत्य नहि भेलनि मुदा बहुत दिनक पछाति उपेन्द्र दोषी जीक दू गोट पोथी—यंत्राणाक क्षण मे (कविता संग्रह) आ गंधवाह (कथा संग्रह) मैथिली पाठक कें देखबा लेल भेटलनि। ओना, दोषी जी अपन संग्रह लेल ठीके व्यग्र छलाह। ओ एहि प्रसंग हमरो अनेक पत्र लिखने छलाह, किछु कथा सभ कें हम उतारि कए सेहो रखने रही, अस्तु।

1987 मे ओ हमरा लगभग साठि गोट पत्र लिखलनि। जाहि मे सँ किछु साधारण आ औपचारिक पत्र सभ अछि, जे आवश्यक पत्र हमरा बुझायल आ जाहि सँ हुनक चारित्रिक विशेषता परिलक्षित होइत अछि, हम मात्र तकरे टा उपयोग कए रहल छी।

'पहल'क 'मैथिली कविताएँ' मे एक भूमिकाक आवश्यकता छल आ एहि

भूमिका लेल हम जीवकांत जी सँ आग्रह कयल। हुनक अपन जे स्वभाव रहनि, से हमरा बूझल छल। पहिल आ दोसर पत्र मे ओ साफे नकारि देताह जे हम लिखब। बाद मे कोनो दिन डाक मे वांछित सामग्री अहाँ कें भेटि जायत। ई अद्भुत बात हुनका संग अछि। ओ 18 जनवरी 1987क पत्र मे हमरा लिखलनि—'समकालीन मैथिली कविता पर लेख लिखबाक मनःस्थिति मे नहि छी। मोहन भारद्वाज जी ऑडिट मे एखन एहिठाम छथि। ओ एहि पर बढ़ियाँ लिखि सकैत छथि। हमर आग्रह पर ओ व्यस्तताक लाथ लगओलनि।

इतिहास-लेखन लेल मार्च मे एक वर्कशॉप कर' चाहैत छी, ताहि मे अहूँ कें बजायब। चिट्ठी आब जायत।'

19 जनवरी 1987क पत्र मे ओ फेर लिखैत छथि—'काल्हि हम लिखने रही जे मैथिली कविता पर हिंदी मे लेख हमरा मनःस्थितिक अनुकूल नहि अछि, तें एहि पर काज करब संभव नहि अछि।' एहि बात कें दोहरबैत ओ अपन अगिला पत्र, जे 24 जनवरी 1987क थिक, मे पुनः नहि लिखबाक बात करैत छथि आ संगहि 'सन्निपात मंच' द्वारा आयोजित वर्कशॉपक आमंत्रण सेहो पठबैत छथि—'मैथिली कविता पर टिप्पणी लिखबाक आग्रह अहाँक 20 जनवरीक पोस्टकार्ड मे पुनः कयल गेल अछि। एहि सँ पूर्व हम लिखि देने छी जे ई टिप्पणी लिखबाक मनःस्थिति मे हम नहि छी। तें कृपया एकरा अन्यथा नहि लैत क्षमा करी आ एकर लेखन अहाँ स्वयं करी।

दरभंगा मे एक वर्कशॉपक आयोजनक पत्र एहि मे संलग्न करैत छी। प्राप्ति स्वीकृति पठाबी आ एहि पर चर्चा करी।' ओहि पत्रक प्रारूप छल—'सन पचासक कविताक मूल्यांकन आ इतिहास-लेखनक आवश्यकता अछि। एहि समय मे 'चित्रा'क प्रकाशन भेल। 'चित्रा' पर विचार करबा लेल ई ताकब आवश्यक अछि जे एहि सँ पूर्वक कोन कविता-प्रवृत्ति 'चित्रा' सन संग्रहक बाट बनओलक। ईहो विचारब आवश्यक जे 'चित्रा'क पछाति ओकर कोन-कोन बात मैथिली कविता मे एखनो छैक आ आगुओ रहतैक।

एहि लेल 'सन्निपात-मंच' दरभंगा मे संस्कृत विश्वविद्यालय परिसर मे मार्च मासक पहिल रवि कें पचासक कविता पर एक कार्यशाला आयोजित करत जाहि मे डा. धीरेंद्र, मोहन भारद्वाज, जीवकांत, कुलानंद मिश्र, डा. भीमनाथ झा, डा. रमानंद झा 'रमण', सुकांत सोम, केदार कानन आ सारंग कुमारक भाग लेबाक संभावना कयल जाइछ। निवेदक, जीवकांत, 23.01.1987।' ई पत्र मैथिलीक अनेक लेखक कें गेल हेतनि। 28 जनवरी 1987क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'कविता पर लेख लिखबा लेल सोचि रहल छी। नीक जे एक टा लेख अहूँ लिखू। एक टा सूचनाक

अनुसार मिथिला मिहिर पाक्षिक रूप मे फरवरी सँ बहरायत।' ई पत्र ओ 28 जनवरी केँ लिखलनि मुदा डाक मे खसौलनि नहि। ओहि पत्रक पीठ पर 29 जनवरी केँ लिखलनि—'साँझ मे 'मैथिली कविता के सौ वर्ष' लिखल जे पठा रहल छी। काजक जोग बुझाय, तँ पठा देबैक।' 5 फरवरी 1987क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'मैथिली कविता के सौ वर्ष' लेख हम पठा देने छी। समीक्षा वर्कशॉप पर मात्र अहाँक स्वीकृति आयल अछि।

आइ जेठ बालक परिवार ल' क' वीरपुर गेल छथि। पहिल खेप परिवार ल' गेल छथि। पौत्र आ पौत्री घर सुन्न क' गेल छथि।' यैह हम कहैत रही जे जीवकांत आरंभ मे अपना केँ अनठा देताह मुदा ओ फेर लिखि क' पठाइयो देताह। हम कतेक रास चीज एहि तरहें हुनका सँ लिखाओल अछि। 'मैथिली कविता के सौ वर्ष' लेख मे अनेक कविक नाम छूटल छल, जे हमरा लागल जे अवश्य जोड़ि देबाक चाही। से, ई बात हम हुनका लिखलियनि, तँ ओ लगले 7 फरवरीक पत्र मे हमरा लिखलनि—'हमर टिप्पण—मैथिली कविता के सौ वर्ष—बड़ अगुताइ मे लिखल, कवि लोकनिक नाम छूटब स्वाभाविक। हमर मोन छल जे आर नाम सभ जोड़ल जाय। से काज अहाँ अपन इच्छा आ औचित्यक अनुसार क' सकैत छी। हमरा प्रसन्नता होयत। टिप्पण अहाँ केँ काज जोग बुझायल, सेहो हमरा लेल प्रसन्नताक बात।' हम एहि टिप्पणी मे छूटल नाम सभ केँ जोड़ि देल आ प्रेस कॉपी बना क' ज्ञानरंजन जी केँ पठा देल।

एहि बीच दरभंगा मे 'सन्निपात मंच' द्वारा आयोजित मूल्यांकन गोष्ठी संपन्न भेल मुदा हम नहि जा सकलहुँ। एही बीच 'कर्णामृत' मे हमर मित्र डा. तारानंद वियोगीक एक लघुकथा—केदारनाथ—प्रकाशित भेल। ओहि लघुकथाक नायक हमहीं रही। ओ लघुकथा थोड़ेक दिन हलचल मचौने रहल। मुदा हम शांत छलहुँ। कतेक मित्र केँ होइत रहनि जे आब किछु ने किछु हेतैक, नहि किछु, तँ बाजा-भुक्की तँ बन्न होयबे करत। एही प्रसंग 15 मार्च 1987क एक पत्र मे ओ हमरा लिखलनि—'कर्णामृत मे तारानंद वियोगीक कथा पर अगुताएब नहि। मार्चक पहिल रवि केँ दरभंगा मे कविता पर आलोचना आ मूल्यांकन पर विचार-गोष्ठी भेल। भाग लेलनि कुलानंद मिश्र, मोहन भारद्वाज, भीमनाथ झा, बलराम, विनोद बिहारी लाल प्रभृति। हमरा लोकनि अहाँक उपस्थितिक प्रति बड़ जिज्ञासु रही। सुकांत आ धीरेंद्र चिट्ठीक तिरस्कारो नहि कयलनि। डा. रमानंद झा 'रमण' असमर्थता सूचित कयलनि।'

एही बीच संकल्प लोक, दरभंगा सँ प्रो. मायानंद मिश्रक ऐतिहासिक उपन्यास 'मंत्रपुत्र' प्रकाशित भेल। बेस भरिगर उपन्यास छल। हमरा सभ, माने डा. शिवेंद्र दास, डा. तारानंद वियोगी, डा. देवशंकर नवीन, डा. महेंद्र, महाप्रकाश, धीरज, अरविंद मिश्र

नीरज आ हम प्रो. मायानंद मिश्र सँ डा. शिवेंद्र जीक आवास पर वृहत इन्टरव्यू लेल। इन्टरव्यूक पछाति संग-संग फोटो खिंचाओल। ओना तारानंद ओहि इन्टरव्यू केँ मिथिला मिहिर मे प्रकाशनार्थ पठौने छला, मुदा प्रकाशित नहि भ' सकल छल।

सहरसा ओहि समय अत्यंत सक्रिय छल साहित्यिक वातावरणक कारणे। डा. शिवेंद्र दासक क्लिनिक छल बीच गंगजला चौक पर। क्लिनिक मे चारू भरक देबाल पर कविताक पोस्टर टाँगल। मरीज सँ बेसी लेखकक जुटान। गरमागरम बहस। प्रतिदिन गोष्ठी। प्रतिदिन साहित्यिक योजना। अनेक-अनेक रूप-छवि मे अपस्याँत। साँझ होइते उपस्थित होथि प्रो. मायानंद मिश्र, डा. महेंद्र, प्रो. मनोरंजन, सुभाष चंद्र यादव, महाप्रकाश, कुमार मुकुल, दीपक गुप्ता, धीरज, नीरज। हम ओहि समय कहरा ब्लॉक मे रही आ कार्यालय रहय गंगजला मे। तें दिनुका गोष्ठी मे हम रहैत छलहुँ बेसी काल। ओतय साहित्यिक गोष्ठीक अलावे बेगरतूत लोकक समस्याक त्वरित समाधान सेहो होइत छल। एहि गोष्ठीक केन्द्र मे छलाह कवि आ चिकित्सक डा. शिवेंद्र दास। एही गोष्ठीक रचनाकार लोकनि 'मुक्तांगन'क परिकल्पना कयलनि आ एही नाम सँ एक पत्रिका प्रकाशित करबाक प्रयास कयलनि, जे कालांतर मे 'उजास' भेल छल। डा. तारानंद वियोगी किछु पत्राचार शुरू कयलनि। एही प्रसंग जीवकांत 5 अप्रील 1987क पत्र मे लिखलनि—'मंत्रपुत्र' ओहि दिन दरभंगा सँ अनलहुँ अछि। माया बाबूक विशद अंतर्दर्शन (इन्टरभ्यू) लेल, से नीक। टेप दूरि नहि होअय, तकर प्रयत्न कयल जाय।

तारानंद वियोगी हमरा अपन रचना-प्रक्रिया पर लेख डा. शिवेंद्र दास केँ पठयबा लेल लिखैत छथि। रामानुग्रह बाबूक समाचार लिखू। माया बाबू आ रामानुग्रह बाबू केँ हमर नमस्कार कहल जाय।

'मुक्तांगन'क योजना नीक लागल। को-ऑपरेटिव बनबैत छी तँ ओकर निबंधन करा लिअ'। सरकार सँ ऋण ल' प्रत्येक व्यक्ति अपन-अपन पोथी प्रकाशित करू।'

एहि बीच गंगजला चौक पर भयंकर आगि लागि गेल। पछबाक प्रचंड झोंक मे अनेक घर जरि क' स्वाहा भ' गेल। अखबार सभ मे ई समाचार आयल। जीवकांत एहि समाचार केँ पढ़ि उद्वेलित भ' उठलाह आ 9 अप्रील 1987क पत्र मे लिखलनि—'गंगजला चौक जरल अछि, से सूचना अछि। डा. शिवेंद्र दास आ शेफालिका वर्माक चिंता भेल। तारानंद वियोगीक आग्रह पर शिवेंद्र दास केँ एक टिप्पणी—बन्न कन्दरा सँ फूजल कन्दरा धरि—अपन रचना-प्रक्रिया पर प्रस्तावित 'मुक्तांगन' लेल पठा देल अछि।' कालांतर मे जीवकांतक रचना-प्रक्रिया पर उपरोक्त लेख सुपौल सँ प्रकाशित 'संकल्प' मे प्रकाशित भेल। एहि बीच 19 अप्रील 1987क एक पत्र मे

ओ हमरा लिखलनि—'पहल-31 भेटल अछि। एकरा संग एक टा पुस्तिका केदारनाथ अग्रवाल पर अछि। तकर अंतिम कवर पृष्ठ पर मैथिली कविता पर अहाँक संकलनक विज्ञापन क' देने अछि। तें ओकरा मैथिली कविताक अनुवादक संकलन देबाक नैतिक दायित्व बनैत अछि।

1984 मे हम 30-35 गोट कविता मैथिली अकादमी मे तत्कालीन निदेशक पं. गोविंद झा केँ द' आयल छियनि। मैथिली अकादमी छापत, से विश्वास कमे अछि। तथापि ओकरा सँ पांडुलिपि वापस ल' लेबाक बात अनठओने छी। कविता-संग्रह अवश्य अयबाक चाही, से हमहूँ सोचैत छी। हमरा कविता संग्रह लेल अहाँ सोचू, देखी, हम की सहयोग क' पबैत छी। से अहाँक योजना देखला पर लिखब।'

एम्हर कलकत्ता सँ कमलेश झा आ नवीन चौधरी लोकनि कविचूड़ामणि काशीकांत मिश्र मधुप पर एक अभिनंदन-ग्रंथक योजना बनौलनि आ दरभंगा-मधुबनी-सहरसा-सुपौलक लेखक लोकनि सँ लेख उपरयबाक भार जीवकांत पर देलनि। जीवकांत एहि प्रसंग पहिल बेर हमरा 28 मइ 1987क पत्र मे लिखलनि—'मधुप अभिनंदन ग्रंथ लेल सामग्री नहि जुटि रहल अछि। मधुप जी पर समग्रत: अथवा हुनक कोनो पोथी पर अहाँक विचार-विश्लेषण शीघ्र चाही। आयोजक कमलेश झाक दबौट अछि। लेख तैयार भ' जाय तँ हमरा पठाउ। तारानंद वियोगी समेत नवतूरक सभ प्रतिभाशाली हस्ताक्षर सँ आग्रह अछि। प्रौढ़ लोकनि नहि सकैत छथि।' एहि प्रसंग एकाधिक बेर कलकत्ता सँ नवीन चौधरी सेहो अनुरोध कयने रहथि। हम जूनक दोसर सप्ताह मे एक टा छोट सन टिप्पणी लिखि पठा देलियनि आ एकर सूचना नवीन जी केँ कलकत्ता पठा देलियनि। टिप्पणी भेटलाक पछाति जीवकांत 17 जून 1987क पत्र मे लिखलनि—'मधुप जी पर छोट सन टिप्पणी भेटल। अगुताइ मे लिखल बुझायल। मधुप जी बेर मे अधिकांश लोक एहने-सन वस्तु लिखि-लिखि पठओने छथि।

मंत्रपुत्र पढ़ल। तीन-चारि टा पोथी पर साझी गप एक गोट लेख—'आजुक कथा-भूमि' मे कयल अछि।' मधुप जी पर नवका लोक की आ कोना सोचैत अछि, ताहि प्रसंग ओ अपन अगिला पत्र मे प्रकाश दैत छथि संगहि चिनगी मंच, दरभंगा आ सोमदेवक पत्रक चर्चा करैत छथि अपन 26 जून 1987क एक पत्र मे—'भाइ सोमदेव हमरो लेल 'चिनगी' मे एक विषय निर्धारित क' पठओने छथि—हमर सहयात्री लोकनि। एहि पर सोचल। लिखल नहि भेल। एहि सोचक परिणाम भेल एक लेख—'दरभंगा राजधानी किएक?' से लेख हम सोमदेव केँ पठा देने छियनि।

मधुप अभिनंदन ग्रंथ लेल किछु लेख कलकत्ता मे आयल अछि। नवीन चौधरी आ कमलेश झा कहैत छथि जे ई लेख सभ बेगार टारबाक लेल लिखल अछि। तें हम पछिला पोस्टकार्ड मे लिखल जे मधुप जीक कपारे मे यैह लिखल छनि जे क्यो

हुनका मादे गंभीरता आ श्रमपूर्वक नहि सोचि आ लिखि रहल अछि।

तकर कारण अछि। नवका पीढ़ी जे कविता मे पुरान कथ्य आ शिल्प केँ अस्वीकृत करैत आयल अछि, से मधुपो जीक अस्वीकृति मोन मे रखने अछि। मुदा अभिनंदन ग्रंथक मूड एहि अस्वीकृति लेल नहि छैक। एहेन स्थिति मे सर्वसाधारण बात लिखबाक अपेक्षा किछु नहि लिखी, से उत्तम।

मुदा किरण जी पर लिखबा लेल से धर्मसंकट नहि छैक। ओना किरण अभिनंदन ग्रंथ लेल रचनाक ओरिआओनो मे वैह बात अनुभव कयल जा रहल अछि।

कविता-संग्रहक बात सोचैत थाकनिक अनुभव होइत अछि। ओना हम बुझैत छी जे हम अपन संग्रह लेल प्रयत्नशील नहि होयब, तँ ओ कहियो नहि छपत। जेना किरण जीक कविता-संग्रह आ कथा-संग्रह नहि छपल अछि। तखन किरण जी जकाँ ई सोचल जा सकैत अछि जे अपन संकलन छपबा लेल आतुरता किएक?' 30 जून 1987क पत्र मे लिखलनि—'तारानंद वियोगी केँ मधुप जी पर लिखबाक लेल चाहियनि राधा विरह। हमरा पठाब' कहलनि अछि। हमरा लग नहि अछि। अहाँ लग अछि? अहाँ पठा सकैत छियनि?

सत्ते, मधुप जी केँ नव चेतना बला लोक सभ बड़ कम पढ़ने छथि, तें हुनका पर विचार करब बहुत कठिन छैक।

हमहूँ सभ फरमाईश पर जखन लिखैत छी, तँ अगुताइ मे लिखैत छी आ स्वभावत: बहुत महत्त्वपूर्ण नहि लिखि पबैत छी।'

मधुप जी पर जतय-ततय सँ रचना उपरयबाक जीवकांतक प्रयास स्तुत्य थिक आ संगहि इहो ओ मानैत छथि जे नव पीढ़ीक लेखक मधुप जी केँ गंभीरता सँ नहि पढ़लनि अछि, तें हुनका पर गंभीरताक संग विचार नहि कयल गेल अछि अथवा नव पीढ़ीक लेखक लेल असौकर्यक विषय भ' जाइछ।

उग्रमोहन झा मैथिली सँ एम.ए. रहथि आ शिक्षक रहथि। हुनको हम आग्रह कयल तँ ओ मधुप जी पर एक लेख तैयार कयलनि जे हम जीवकांत केँ पठा देलियनि। ओ एहू छोट सन काज लेल हमर आभारी भेलाह आ हमरा लज्जित कए देलनि।

मैथिली अकादेमी हुनक कविता संग्रह अंतत: नहि-ए प्रकाशित कयलक आ 'ई वैराग्य नहि थिकैक'—एहि नाम सँ हुनक कोनो संग्रहो नहि आयल। कांचीनाथ झा 'किरण' जीक मान्यता मैथिलीक अनेक लेखक पर लागू होइत अछि।

जीवकांत 3 जुलाइ 1987क पत्र मे लिखलनि—'अहाँक पत्र आ उग्रमोहन झा जीक मधुप अभिनंदन ग्रंथक निमित्त लेखक पांडुलिपि भेटल अछि। एहि अतिरिक्त प्रयासक हेतु अहाँक आभारी भेल छी।

'मंत्रपुत्र' पर अपन पकठोस विचार भाइ माया बाबू कें पठा देल अछि। माया बाबू एहि पत्रक कोनो सूचना नहि देलनि अछि। कथा पर इतिहास भारी भेल अछि। राज मोहन जी लिखैत छथि जे ओ 'मंत्रपुत्र' कें पढ़बाक मन:स्थिति कहिया धरि बना पओताह, से कहब हुनका लेल कठिन छनि। हुनक बदली बोकारो भ' गेल अछि। कथा लिख' चाहैत छथि, कहैत छथि जे बोकारोक वातावरण भ' सकैछ हुनक कथा-लेखन लेल अनुकूल होइनि।'

'मंत्रपुत्र' एक तँ ऐतिहासिक उपन्यास थिक, दोसर मैथिली मे ऐतिहासिक उपन्यासक परंपरा अत्यल्प। तेसर बात जे उपन्यासक काया पैघ, तें पढ़बा मे ओतेक समय देब सभ सँ संभवो नहि। ओना सत्य तँ ई थिक जे पाठक जँ ओकरा शुरू करत तँ जावत समाप्त नहि करत, तावत उत्सुकता आ आगूक प्रति जिज्ञासा बनले रहत। ऐतिहासिक उपन्यास मे ऐतिहासिकताक रहब अनिवार्य होइछ।

एम्हर हमरा भीतर एक टा नव चीज शुरू भेल यात्राक आतंक। कतहु जयबाक प्रति हमर निषेध-भाव। से घनघोर रूपें शुरू भेल, तकर दुष्परिणाम हमरा बहुत भोग' पड़ल अछि। एहि विषय मे हम हुनका पत्र देलियनि तँ ओ 12 जुलाइ 1987क पत्र मे लिखलनि—'अहाँक एम्हर दू टा अंतर्देशीय पत्र आयल अछि। अहाँ कें यात्राक प्रति 'फोबिया' (आतंक-भाव) उत्पन्न भेल अछि। अहाँ अपनहि एकर विश्लेषण करू। कागज-पेंसिल ल' क' बैसू आ डरक कारण आ उत्स नोट करू। कारण भेटि जायत। वास्तव मे ओ बहुत काल्पनिक आ तुच्छ कारण होयत, से बूझि गेने ई भय नष्ट भ' जायत। नहि तँ कोनो मेधावी डाक्टर सँ निष्कपट भ' गप करू। ओहो एहि भय-उन्मूलन मे सहायता क' सकैत अछि।

'चतुरंग'क योजना नीक अछि। पहिने अहाँ चारू गोटे एक कथा-संकलन बहार करू। ओहू सँ नीक जे चारू गोटे फूट-फूट संकलन बहार करू। राजकमल सँ हरेकृष्ण झा धरिक कृति कें प्रकाशित करबाक योजना नीक अछि, मुदा बहुत पैघ आ तें बहुत व्यावहारिक नहि अछि। नहि सम्हरय, तेहन काज नहि करी। छोट-छोट योजना पर काज करी, एहि मे सफलता भेटैत छैक। मैथिली अकादमी बकना गेल अछि। ओकरा सँ आब कोनो काजक आशा नहि कयल जा सकैछ। हरिमोहन झा आ ललितक रचनावली कें ओ लस्सा लगओने अछि। किरण जीक रचनावलीक भगवान रखबार छथि। लेखक लोकनि किछु क' क' रहि जयताह, मैथिली अकादमी नहि सुधरत। तें एहि प्रकारक पानि डेंगयबा सँ कोन लाभ?'

'चतुरंग'क योजना प्रदीप बिहारी, तारानंद वियोगी, देवशंकर नवीन आ केदार काननक छल। ओहि समय मे मास्टर माइंड छलाह तारानंद वियोगी। योजना मास्टर। हुनका दिमाग मे नव सँ नव चीज आबनि। हमसभ मिलि क' बहुत रास काज करय

चाहैत रही। राजकमल चौधरी सँ ल' क' हरेकृष्ण झा धरिक लेखकक रचना सभक प्रकाशन करय चाहैत रही, वितरण करय चाहैत रही। हमसभ मंसूबा आ हूबा सँ भरल-पुरल रही आ साहित्य मे नव-नव काज करय चाहैत रही। मुदा, एहि सभ काजक बीच हमसभ स्वार्थ सँ बहुत ऊपर रही आ संपूर्ण साहित्यक बेहतरी लेल समर्पित रही।

मुदा आब सोचैत छी जे ई योजना सभ ठीके व्यावहारिक नहि छल। जेना जीवकांत कहने रहथि जे चतुरंगक चारू गोटे अपन-अपन फूट संकलन निकालू। राजकमल सँ हरेकृष्ण झा धरिक रचनाक प्रकाशन व्ययसाध्य आ अव्यावहारिक थिक—से बात आइ सोचैत छी तँ लगैत अछि, हुनक कहब सोलह आना सत्य छल।

मैथिली अकादमीक रवैया लेखक-विरोधी छल। प्रो. हरिमोहन झा, कांचीनाथ झा किरण आ ललितक कारणे मैथिलीक एक परिचय आ पहिचान छैक। हिनको सभक रचनाक संग मैथिली अकादेमी अपन संवेदन-शून्यतेक परिचय द' रहल छल। चकित तँ ई बात करैत अछि जे आइयो धरि मैथिली अकादमी अपन एहि कलंक कें नहि मेटा सकल अछि। हमसभ एकर विरोध करय चाहैत रही आ ई बात जीवकांत कें पत्र द्वारा सूचित कयने रही, तकर उत्तर दैत ओ हमरा अपन उपरोक्त पत्र लिखने रहथि।

जीवकांतक गाम मे आ तकरा चारूकात, बाध-बोन मे प्रत्येक वर्ष बाढ़ि तबाही मचौने अछि। रेल, बस आ डाक-सेवा बन्न भ' जाइत अछि। सभ क्यो दू-अढ़ाइ मास असुरक्षित आ क्षण-क्षण आशंकित रहैत अछि। 17 सितंबर 1987क पत्र मे ओ लिखलनि—'अहाँक 13.8.87क कार्ड काल्हि भेटल जखन छिन्न डाक सेवा डेढ़ मासक बाद फूजल। हमरा लोकनि सुरक्षित छी। रेल, बस एखनो बन्न अछि। बाढ़ि आ बरखा मे भारी आतंक मे जीबैत रहलहुँ।' 18 अक्तूबर 1987क पत्र मे ओ लिखलनि—'अहाँक 6.10क पत्र एहि ठाम 17.10 कें प्राप्त भेल। काल्हि मलाढ़ सँ गाम आयल छी। ओहि ठाम हमर बहिनोइक देहांत भ' गेल छनि।

बाढ़िक असरि अछि। यातायात व्यवस्था एखनो बड़ रद्दी अछि। रेलगाड़ी नहि पहुँचल अछि। पत्र-पत्रिका भेटि जायब सौभाग्यक बात सन बूझल जाइत अछि।

तारानंद झा 'तरुण' सँ किसनपुर मे दस मिनट गप भेल। सुपौल जयबाक बड़ मोन भेल, मुदा व्यस्तताक कारणे गाम घुरि अयलहुँ।' ओ एहू खेप सुपौल नहि आबि सकलाह। 25 अक्तूबर 1987क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'कलकत्ताक एक संस्था दिस सँ हमरा सँ कथा-संग्रहक पांडुलिपि माँगल गेल अछि। ओकर पांडुलिपि तैयार करब जरूरी अछि। एक सय सँ डेढ़ सय पृष्ठक बीच डिमाइ आकारक पोथी लेल सामग्री चुन' पड़त। एहि लेल हमरा धैर्य आ समय आ ऊर्जा नहि अछि। चुनबाक

आ प्रेस कापी तैयार करबाक भार अहाँ केँ देबाक विचार भेल अछि। सुविधापूर्वक अहाँ क' सकी, तँ करू।

1984 मे मैथिली अकादेमी केँ तीस-पैंतीस गोट कविताक एक संग्रहक पांडुलिपि देने छिऐक। से एखनधरि तोपायल अछि।

क' सकी, तँ हमर पचास टा कविताक चयन अहाँ करू। धीरे-धीरे ओकरो छपबाक विचार करब।

चेतना समितिक कवि-सम्मेलन मे जयबाक विचार अछि। 4 नवंबर केँ विदा होयब। गाड़ी, बस, डाक सभ किछु अवरुद्ध अछि। झंझारपुर केँ कमला बलान तहस-नहस उठओने अछि। झंझारपुर मे रेल आ सड़क नष्ट छैक, तें हमरा लोकनि एखनो धरि बहुत असुविधा आ कष्ट मे छी।' 13 नवंबर 1987क पत्र मे ओ पुन: लिखलनि—'पहिने कथा संग्रहक पांडुलिपि। 'वस्तु', 'सूर्य गलि रहल अछि', 'एकसरि ठाढ़ि कदम तर रे'क कथा सभ केँ छोड़ि देबाक होयत। आग्रह जे तत्काल कथा संग्रहेक पांडुलिपि तैयार करू जे कलकत्ताक एक संस्था माँगि रहल अछि। ओना कलकत्ताक संस्था सभक प्रकाशन पोटरी बन्हल नष्ट भ' जाइत छैक, बजार नहि देखि पबैत छैक।

'हालचाल'क संपादक (अवैतनिक) भेल छथि मोहन भारद्वाज। 'भाखा' संपादक-विहीन भेल अछि। विभूति आनंद मैथिली अकादमी पत्रिकाक एक अंक (विद्यापति विशेषांक) बहुत सुत्थर बहार कयलनि अछि।

मोहन भारद्वाज 'भाखा'क संपादन लेल कुलानंद जी, पं. गोविंद झा, प्रो. आनंद मिश्रक नाम मोन मे रखने छथि। हमरा मोन मे अहाँक नाम आयल। मोहन भारद्वाज कहलनि जे केदार सुपौल छोड़ि पटना मे नहि आब' चाहताह। 'भाखा' वेतन देत। एक हजार धरि देब' लेल तैयार भेल छल। दूओ हजार धरि द' सकैछ, एहेन अन्दाज मोहन भारद्वाजक छलनि।' हम एहि बीच हुनक असंकलित पचास गोट कविताक पांडुलिपि तैयार कयल आ हुनका पठा देल। तकरा बाद हुनक कथा सभ केँ जोहि-ताकि पांडुलिपि बनायब शुरू कयल। सेहो हुनका पठा देल। तकरा बाद हुनक टिप्पणी, निबंध, समीक्षा आदि-इत्यादि जे आन-आन पत्रिका मे छपल छल, तकर सभक सूची स्रोत सहित तैयार कयल आ हुनका पठाओल।

'भाखा' संपादक लेल जीवकांत हमर नामक ओकालति करैत रहलाह। अंतत: ओ छल तँ मैथिलीएक पत्रिका, ओकर स्थायित्व पर बड़का प्रश्नचिह्न छलैक, तें ओहि मे जयबाक बहुत उत्सुकता हमरा नहि छल। नोकरी मे रही आ देर-सबेर पाइ भेटिए जाइत छल, तें एक तरहें आर्थिक चिंता सँ मुक्त रही।

16 नवंबर 1987क पत्र मे ओ अनेक कथा आ तकर स्रोतक सूची पठबैत

हमरा लिखलनि—'कविता-संकलन लेल पचास गोट कविताक पांडुलिपि भेटि गेल अछि। हम चाहैत छलहुँ, जे चयन आ संपादन अहाँ करी।

एहि लिस्ट मे अहाँ जे ताकि सकी आ ताकि क' उतारि सकी, से बड़का उपकार होयत। अकच्छ होयबा सँ पहिनहि उतारब बन्न क' देब। ओना, हम आब थकैत छी।' ई पत्र ओ पेंसिल सँ लिखने छथि। 29 नवंबर 1987क पत्र मे लिखलनि—'14 गोट कथाक पांडुलिपि रजिस्टर्ड डाक मे प्राप्त क' आभारी भेल छी। काज जोग भेल 11 गोट कथा। आर किछु कथा उतारि रहल छी? नहि उतारैत होइ, तँ सेहो ठीक। मात्र सूचना पठा दी। एतबे मे अहाँक स्वास्थ्य पर असरि पड़ि गेल होयत। तकरो चिंता भ' रहल अछि। सूचना पठा चिंताक निवारण करी।

अहाँ खजुरा-भखराइन आबि ड्योढ़ नहि अयलहुँ, से हमर थरभीटा सँ घुरि आ सुपौल नहि जयबाक बदला सोल्ह क' लेलहुँ।'

ओहि समय मे हम सात-आठ घंटा धरि बैसि क' लिखैत रही। मोन अकच्छ नहि होइत छल। जीवकांत केँ भेलनि जे हमर मोन खराब भ' गेल होयत जखन कि ई तँ हमर दैनिक क्रिया जकाँ छल।

एहि बीच हम विशेष प्रयोजने अपन मातृक खजुरा, मधेपुर गेलहुँ मुदा ड्योढ़ नहि जा सकलहुँ, ओ तकरो उपराग देलनि। 3 दिसंबर 1987क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'एक बेर पटना जाउ। घूमि-फिरि आउ। मोहन भारद्वाज जीक भेंट करबनि। एक बेर पटना मे पयर रखबाक जगह भ' जायत, तँ ओ बड़ फलदायी होयत।

अहाँक पठाओल सभ टा पांडुलिपि भेटि गेल अछि। आब आगाँ अहाँ एहि दिशा मे कष्ट नहि करी।

विभा रानी एखन पेकिंग (चीन) मे छथि। वैह हमर कविताक अनुवाद दैनिक हिंदुस्तान मे देने छलीह। संयोग सँ ओहि अनुवाद केँ हम नहि देखि सकलहुँ। ओ चीनक साहित्यक अनुवाद मैथिली मे कर' चाहैत छथि। पोथी छपाब' चाहैत छथि। कोनो प्रकाशक दिस सँ आश्वासन चाहैत छथि।

कलकत्ताक प्रकाशक मित्र केँ हम लिखलियनि अछि जे ओ हमर कथा-संग्रह छपबाक बदला कविता-संग्रह छापथि। ई विचार कुलानंद जीक छनि जे तत्काल हमर कविता संग्रहे अयबाक चाही। मुदा, होइत ई छैक जे कविता-संग्रहक प्रकाशक नहि भेटैत छैक। बेसी काल कविता संग्रह लेखकके केँ छाप' पड़ैत छैक। देखी, कलकत्ता सँ की उत्तर अबैत अछि? ओना एहि लाथें बहुत रास रचनाक प्रेस कापी बनि गेल अछि। बहुत रास हेड़ायलो वस्तु भेटल अछि। 1971 मे हमर कविता संग्रह आयल छल। 71 सँ 80 धरिक हमर अनेक कविताक मूल प्रति हमरा लग नहि छल। हम पत्रिका सभ जोगि क' रखैत नहि छी। तें दुर्दशा मे छलहुँ। अहाँक काज सँ एहू

तरहक उपकार भेल अछि।

लेख आ टिप्पणीक नकल हम रखैतो नहि छी। लिखल आ मूल प्रति छपबा लेल पठा देल। ओना लेख-संग्रह निकालब एखन धरि हमर योजना मे नहि अछि।'

श्रीमती विभा रानीक पति श्री अजय ब्रह्मात्मज ओहि समय चीन मे कार्यरत छलाह। विभा जी तें चीन गेल छलीह आ बहुत दिन ओतय रहलीह। जीवकांत सँ हुनका निरंतर संपर्क रहनि, तें हुनके विषय मे ओ हमरा जनतब देलनि। विभा रानी द्वारा कयल गेल जीवकांतक कविता हम दैनिक हिंदुस्तान सँ उपरयलहुँ आ हुनका पठाओल।

हुनक टिप्पणी आ लेखादिक संख्या पाँच सय सँ ऊपर होयत, ताहि मे सँ सय-सवा सय टिप्पणी आ लेखक सूची हम हुनका पठा देलियनि।

ओ एखनो हमर पटना जयबाक आ ओहिठाम कोनो दोसर नोकरीक जोगार धरबाक विषय मे चिंतित रहथि। 10 दिसंबर 1987क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'भाखा' सँ कुमार शैलेन्द्रक पत्र आयल रचना लेल। हम हुनका समक्ष पूर्णकालिक भाखा-संपादकक रूप मे अहाँक नामक अनुशंसा कयल अछि।

सहरसा मे राजकमल स्मृति पर्व दिस सँ पत्र आयल अछि। ओत' पहुँचब, मुदा कठिन अछि।

कलकत्ता सँ उत्तरक प्रतीक्षा मे छी जे ओ कथा-संग्रहक बदला मे कविता-संग्रह छपताह की नहि।' 18 दिसंबर 1987क पत्र मे ओ लिखलनि—'अहाँक आजुक पत्रक संग हिंदुस्तान दैनिकक कतरा (जाहि मे हमर कविताक अनुवाद छल) आ हमर प्रकाशित रचना सभक 'डॉक्युमेंटेशन' अछि। अद्भुत श्रम कयने छी अहाँ। यद्यपि अहाँ लग उपलब्ध पत्रिका बड़ थोड़ अछि। साप्ताहिको मिथिला मिहिर सभ टा नहि अछि। तथापि जे पठओलहुँ, शीर्षक पढ़ि क' अपनहि आश्चर्य भेल अछि।

कलकत्ता सँ कोनो उत्तर नहि आयल अछि, तें ई बुझबा योग्य नहि भ' रहल अछि जे ओ सभ हमर प्रस्ताव पर की निर्णय लेलनि अछि।

'भाखा' सँ कुमार शैलेन्द्र लिखैत छथि जे पछिला मइ मे अहाँ केँ 'भाखा' मे अनबाक प्रयास भेल छलैक जे कोनो कारणे नहि पाकि सकलैक। ओ आगाँ लिखैत छथि एखन 'भाखा' लेल व्यावसायिक पत्रकारिताक अनुभव वला संपादकक खोज चलि रहल छैक। ओना ओ लिखैत छथि जे अहाँक नामक हमर प्रस्ताव 'भाखा' प्रकाशक लग राखल अछि।

होइत अछि जे सभ टा कथाक प्रेस कॉपी तैयार करी आ कोनो दृष्टि-विशेष सँ कथा सभ केँ पुन: संकलित करी। जेना एखन ध्यान पर अछि जे मैथिल महिला लोकनि पर लिखल हमर कथा सभक एक संकलन तैयार कयल जा सकैछ।

अहाँ लेख सभक संकलनक बात करैत छी, बात जरूर युक्तिसंगत होयत, मुदा ई योजना हमर कल्पना मे नहि अछि। दोसर जे कथा आ कविताक पांडुलिपिक एक प्रति रखबाक हम हिस्सक बनओने छी (जकर अपवाद कम नहि अछि), मुदा लेख आ टिप्पणीक एहेन नकल रखबाक आइ धरि बात नहि सोचल। पत्रिका सेहो हम नहि राखल। प्रकाशित रचनाक कतरा (कटिंग) सेहो नहि राखल। कारण जे रहल हो।

एक बेर किरण जी केँ पुछलियनि जे अहाँ रचना सभक संकलन किएक ने देल? ओ सुखायले मुहें कहलनि जे जकरा जरूरति होयतैक, संकलन बहार क' लेत, हम किएक ओहि पाछाँ हरान होउ? ठीक एहने सन मन:स्थिति भेल जा रहल अछि हमरो।

हमर प्राय: सभ रचना प्रकाशित अछि। ओना संग्रह कयनिहार केँ बड़ हरानी होयतैक। सभ ठाम रचना छैक आ बड़ रचना छैक।'

कलकत्ता सँ हुनक ने तँ कथा संग्रह प्रकाशित भेल आ ने कविता संग्रह। कुलानंद जीक इच्छा आ जीवकांतक कविता संग्रह देखबाक लालसा दबले रहि गेल।

हम जीवकांत केँ निरंतर लिखैत रहियनि जे कम सँ कम दू गोट लेख आ टिप्पणी सभक संग्रह आबि जयबाक चाही। मुदा ओ एखनो एहि योजनाक मादे नहि सोचैत छथि। एहन रचना सभ ततेक छनि जे ओकर लगभग पाँच-सात टा पोथी आबि सकैत छनि।

मैथिल महिला लोकनि पर केन्द्रित हुनक कथाक संकलन सेहो नहि आबि सकल। हँ, ई बात जरूर अछि जे हुनक एक गोट कथा संग्रहक पांडुलिपि हमरा लग तैयार अछि। डा. कांचीनाथ झा 'किरण' जीक मन:स्थितिक मर्म केँ बूझल जा सकैत अछि। मैथिलीक लेखक सभक दशा लगभग एहिना अछि। आइ जँ मैथिली केँ विशाल पाठक वर्ग रहितैक तँ प्राय: एहन दुर्दशा नहि रहैत। मैथिलीक लेखक अपन पोथीक दू सय वा तीन सय वा अधिकतम पाँच सय प्रति नहि छपबितथि।

1988 मे जीवकांतक 54 गोट पत्र हमरा भेटल। ओहि मे सँ बहुत रास पत्र औपचारिक आ समाचार विहीन अछि। ओहि सभक उल्लेख आवश्यक नहि अछि।

किसुन जी कविचूड़ामणि मधुप सँ प्रेरित भ' मैथिली मे लिख' लगलाह। हम एहि प्रसंग जीवकांत सँ जिज्ञासा कयल तँ ओ 16 जनवरी 1988क पत्र मे हमरा लिखलनि—'किसुन जी धनखोरि मे रहि फुलपरासक पाठशाला मे छात्र छलाह। मधुप जी अरड़िया मे रहि नवानी पाठशाला मे पढ़ैत छलाह। किसुन जी कोना मधुप जीक

प्रभाव मे आबि मैथिली मे लिख' लगलाह, से एहेन रहस्य अछि जकरा उघार करब आब कठिन अछि।' एही पत्र मे कलकत्ताक प्रकाशन संस्था सँ आजिज भ' ओ लिखलनि—'कलकत्ताक संस्था जे प्रकाशन केँ दोयम काज बूझि रहल अछि, तकरा संग पत्राचार की करू? हुनका सभक शर्त्त पर पोथी छपबायब बहुत नीक नहि लगैत अछि। तखन की होयतैक? यैह ने होयतैक जे पोथी नहि छपतैक। से नहि छपओ।' 21 जनवरी 1988क पत्र मे ओ लिखलनि—'कुलानंद जी लेल लेख लिखबा लेल बैसबाक हिम्मति नहि अछि। मोहन भारद्वाज उच्च रक्तचाप सँ पीड़ित भ' विश्राम क' रहल छथि।

कलकत्ताक प्रकाशक बन्धु पत्र बन्न क' बैसल छथि। एहना स्थिति मे हमरा दिस सँ खोर-चार करब उचित नहि।'

एहि बीच ओ कुलानंद जी केँ लेख पठा दैत छथि आ साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित अनुवाद कार्यशालाक चर्चा 1 फरवरी 1988क पत्र मे करैत छथि—'1.2.88 केँ मिथिला मिहिर केँ लेख पठाओल—धर्म-निरपेक्ष कविता निर्घेस अछि। 27.1.88 केँ 'हालचाल' लेल कुलानंद जी केँ पठाओल—आधुनिक कविताक बोधक स्वरूप।

कलकत्ता मे अनुवाद लेखनक कर्मशाला साहित्य अकादेमी दिस सँ आयोजित छल। नवीन चौधरी आ डा. जयकांत मिश्र अपन पत्राचार मे एकर आ अपन भाग लेबाक उल्लेख कयलनि अछि। एक मासक, की बीस दिनक आयोजन छल। पता नहि, सरकारी पाइक सद्गति लेल कोन-कोन काज भ' रहल अछि।' फरवरी मे हमर द्विरागमन भेल आ पुत्र आ भातिजक मूड़न भेल, से पूर्व-सूचना जीवकांत केँ रहनि। ओ 1 मार्च 1988क पत्र मे तकर उल्लेख करैत लिखलनि—'24 सँ 29 धरि हम गाड़ाटोल (सासुर) मे रही। द्विरागमन आ मूड़न भ' गेल होयत। शुभकामना।

बाबूसाहेब चौधरीक पत्र आयल अछि। ओ एक पोथी छपताह। निर्णय भेंट भेलाक बाद करताह। इच्छा छनि जे हम कलकत्ता जाइ। नहि तँ 19 अप्रैलक बाद ओ ड्योढ़ आबि भेंट करताह।'

आब चौधरी जी जीवकांतक पोथी प्रकाशनक बात कयलनि। ओहूठाम सँ हुनक पोथी प्रकाशित नहि भ' सकलनि। एही बीच हम रेडियो प्रोग्राम मे दरभंगा गेलहुँ मुदा राज मोहन जी सँ भेंट नहि क' सकलियनि। तकर उपराग राज मोहन जी जीवकांत केँ देलखिन आ जीवकांत हमरा 7 मार्च 1988क पत्र मे लिखलनि—'राज मोहन जी सँ दरभंगा मे अहाँ भेंट नहि कयलियनि, एहि बात सँ ओ उपेक्षित अनुभव कयलनि अछि।

प्रो. सुरेंद्र झा 'सुमन' दोसर खेप पाँच बर्ख लेल साहित्य अकादेमी मे मैथिलीक

प्रतिनिधि भेल छथि। प्रो. सुमन, डा. भीमनाथ झा आ पी.के. झा केँ अहाँ लेल लिखि देलियनि अछि।'

सुमन जी, भीमभाइ आ प्रमोद जी केँ हमरा लेल जीवकांत अनेक खेप लिखने रहथि। साहित्य अकादेमी सँ थोड़ेक काज हमरो भेटय आ रेडियो मे नियमित प्रसारण होइ, ताहि लेल। 21 मार्च 1988क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'सुमन जी दोसर खेप प्रतिनिधि होयबाक संग साहित्य अकादेमीक कार्यकारिणी समितिक सम्माननीय सदस्य सेहो बनलाह अछि। नारायणजीक पी-एच.डी.क मौखिकी भ' गेलनि।

भीमनाथ जी केँ रीडरशिपक संग पी.जी. मे नियुक्ति भेल छनि। हम भीम भाइ केँ शुभकामना-संदेश पठा देलियनि अछि। भीमनाथ जी अहाँ लेल अनेक तरहें उपयोगी होयताह। हुनका सँ संपर्क बनओने रहू।

बाबूसाहेब चौधरी कलकत्ता बजओने छलाह। हमर कलकत्ता नहि गेला पर ओ 19 अप्रैलक पछाति ड्योढ़ अओताह, से सूचित कयलनि अछि।

फगुआ मे तीन गोट कथा लिखल अछि। तकर प्रतिक्रिया-स्वरूप आँखि मे पीड़ा बढ़ि गेल अछि। लाली। काँची आ जलन।'

अपन एहि पत्र मे नारायणजीक डाक्टरेटक उपाधि बला सूचना हमरा देलनि, नारायण जीक पत्र सेहो आयल छल। भीमनाथ जीक विषय मे अद्यतन सूचना ओ हमरा देलनि। भीम भाइ सँ हमरा अपन प्रथमे परिचय सँ आत्मीयता रहल अछि। हुनक अकुंठ आ अपार स्नेह हमरा सदति भेटैत रहल अछि। अपन उपरोक्त पत्र मे राज मोहन जीक उपराग केँ सेहो ओ लिखि देने छथि, जे भाइसाहेब बोकारो गेलाक बाद जीवकांत केँ लिखलनि, बकलम भाइसाहेब—'...और सभ ठीके अछि। एम्हर दरभंगा गेल रही। ओहि दिन केदार दरभंगा रेडियो मे आयल छलाह। हुनका अवश्य सूचना भेल होयतनि जे हम दरभंगा मे छी आ शैलेन्द्र बाबूक ओतय छी, मुदा ओ किए नहि भेंट कयलनि से हमहूँ नहि बूझि पबैत छी। हुनक चिट्ठी अबैत रहैत अछि, आर किनको नहि, आब तँ भीमनाथो जीक नहि...। रा.मो. झा, बोकारो स्टील सिटी, 28.2.88।' हमरा स्वाभाविके दुख भेल जे हम भाइसाहेब सँ दरभंगा मे भेंट नहि क' सकल छलहुँ। ओना लगले हम भाइसाहेब केँ बोकारोक पता पर पत्र देल आ क्षमा माँगल।

गाड़ाटोल कतय अवस्थित अछि, तकरा विषय मे हम हुनका सँ जिज्ञासा कयल तँ ओ 26 मार्च 1988क पत्र मे लिखलनि—'गाड़ाटोल हमर सासुर थिक। फुलपरास थाना मे झंझारपुर आ फुलपरासक बीच बस रूट पर पड़ैत अछि। हमरा गाम सँ खुरूरपट्टी सँ जाइ, तँ दू कोस। पीच रोड सँ जाइ तँ 16-17 किलोमीटर दूर अछि।

जमीन्दार बाभन सभक गाम जे आब दीन-हीन आ आपसी द्वेष आ विध्वंस मे लागल अछि। अपन पड़ोसियाक कौचर्य आ खिधांश मे लागल ई गाम हमरा इलाका

मे आमक गाछी लेल बेस चर्चित रहल अछि।' गाड़ा टोलक विषय मे ई पत्र पर्याप्त जानकारी दैत अछि। जीवकांत जी सँ हुनक अनुज लेल जिज्ञासा कयल तँ ओ 10 अप्रील 1988क पत्र मे ढेर जानकारीक संग लिखलनि—'देवशंकर नवीन मैथिली कथा पर एक परिचर्चा-प्रश्नावली पठा देलनि अछि। भाइ विजयकांत ठाकुर (चिनगी मंच) मैथिली कथा-साहित्यक इतिहासक लिखबाक प्रस्ताव देलनि अछि। ओ कहैत छलाह जे हमर नाम हुनका पंडित गोविंद झा कहलथिन। हम हुनका एहि लेल अहाँक नाम लिखि पठओलियनि अछि।

हम सहोदर दू भाइ। जेठ हम। छोट नवकांत। सेन्ट्रल बैंक, लहेरियासराय मे एखन फिल्ड अफसर छथि। सासुर छनि भखराइन (मधेपुर)। ससुर पं. लक्ष्मीनारायण झा, अवकाशप्राप्त प्रधानाध्यापक, मधेपुर हाइ स्कूल। नवकांत अखबारो ने पढ़ैत छथि। हमर लिखल कोनो वस्तु नहि पढ़ैत छथि।

मैट्रिक परीक्षा मे पहिल बेर प्रधान परीक्षक बनओलक अछि। कॉपी कत' सँ उठायब, से संचय-केन्द्रक सूचना नहि देलक अछि।'

नवकांत जीक साहित्यिक अरुचिक विषय मे जानि हम थोड़ेक दिन गुम्म रहि गेलहुँ। मुदा बाद मे सोचल जे एना भ' सकैत छैक आ होइते छैक। अपन-अपन रुचि।

एहि बीच पहल पुस्तिकाक रूप मे 'मैथिली कविताएँ' आबि गेल छल। अनेक उत्साह, अनेक हर्ष, अनेक प्रतिक्रिया। जीवकांत 20 अप्रील 1988क पत्र मे लिखलनि—'आब कहू जे गंगेश गुंजन आ शिवशंकर श्रीनिवास प्रभृतिक कविता पहल पुस्तिका मे किएक नहि छैक? वीरेंद्र मल्लिक आ पूर्णेन्दु चौधरी अनेक कारण सँ हमरा नजरि मे अपन प्राप्य नहि पाबि रहल छथि।' 23 अप्रील 1988क पत्र मे ओ लिखलनि—'वंशी माहेश्वरी (संपादक : तनाव) केँ पहल पुस्तिकाक मैथिली कविता सभ नीक लगलनि अछि। ओ आरो कविता सभ पढ़' चाहैत छथि।

पहल पुस्तिका मे नाम देला सँ बहुत लोक तृप्त अनुभव करैत छथि।

चकला निर्मली, सुपौल मे हमर जेठ पितिऔत भाइक ससुर छथिन पं. दीनानाथ मिश्र। हुनका ओहिठाम स्व. किसुन जीक संग गेल छी। किसुन जीक ओ अपेक्षित छथि।' पहलक विषय मे तँ आरो तीत-मीठ अनुभव भेल छल, जकर चर्चा करब आब आवश्यक नहि बूझैत छी।

चकला निर्मलीक पं. दीनानाथ मिश्र लगभग सय वर्षक अपन जीवन जीबि हालहि मे दिवंगत भेलाह।

एहि बीच हमर पत्नी सुस्मिता दरभंगा मे एम.ए. (इतिहास)क परीक्षा दैत छली। प्रत्येक सप्ताह एक पेपर होइत छलनि। चारि पेपर ओ द' देलनि। प्रत्येक पेपरक परीक्षा मे ओ भीम भाइक आवास पर रुकैत छलीह आ परीक्षा देलाक बाद सुपौलक गाड़ी

पकड़ैत छली। एक बेर संग मे हम गेल रही, तकरा बाद हमर पितिऔत भाइ गुरुजी हुनका संग जाइत रहल। मुदा, ठीक यैह समय थिक जखन हमर वेतन बन्न भ' गेल आ अंततः सुस्मिता केँ चारि पत्र देलाक बादो परीक्षा स्थगित क' देब' पड़लनि। मोन माहुर भ' गेल छल। परीक्षो पूरा नहि द' सकली आ चारू पेपर देबाक क्रम मे आ फार्म भरबा मे जे पाइ, श्रम आ समय लागल—सभ व्यर्थ भ' गेल छल। 27 अप्रील 1988क पत्र मे ओ हमरा लिखलनि—'कनियाँ एम.ए. परीक्षा ड्रॉप कयलनि। एहि सँ पाइ बेर्थ नहि भेल। प्रत्येक प्रयासक किछु-ने-किछु उपलब्धि अबस्से होइत छैक।' ओ हमरा सान्त्वना देलनि, हम हुनक आभार व्यक्त कयल। हमर जिज्ञासा कयला पर ओ अपना विषय मे जानकारी दैत 13 मइ 1988क पत्र मे लिखलनि—'1957 मे आई.एस-सी. पास क' नोकरी मे गेलहुँ। विज्ञान पढ़बैत रहलहुँ। 1964ई. मे प्राइवेट सँ बी.ए. कयलहुँ तखन विज्ञानक संग हिंदी-अंग्रेजी पढ़ाब' पड़ैत छल। खजौलीक प्रबंध-समितिक कहब छलैक जे बी.ए.क वेतन लैत छथि, तँ तकर विषय पढ़ाबथि। बी.ए. मे अंग्रेजीक अलावे हिंदी आ दर्शनशास्त्र रखने छलहुँ। हिंदी मे एम.ए. करबा लेल तीन बेर प्रयत्नशील भेलहुँ, मुदा परीक्षा मे बैसबाक मनोरथ मोने मे रहि गेल। 1969ई. मे प्राइवेट सँ डिप्लोमा इन एडुकेशन कयलहुँ। 1981 ई.क अंत मे खजौली सँ ड्योढ़ हाइ स्कूल मे अपनहि बदली करा क' आबि गेलहुँ। ड्योढ़ मे हिंदी शिक्षकक स्थान रिक्त रहैक। ताही स्थान पर बदलि क' आबि गेल छी आ आब अगबे हिंदी पढ़ा रहल छी।' जीवकांत अपन नोकरी आ शिक्षाक विषय मे समग्रतः लिखि पठौलनि। ओ समस्तीपुर प्रशिक्षण कॉलेज सँ सरकारी आदेश पर एस.टी.सी क' डिप.एड. कयने रहथि। 25 मइ 1988क पत्र मे ओ लिखलनि—'यात्री जी सँ पत्राचार छिन्न अछि। हुनक पता बताउ जे हुनका सँ आग्रह कयल जाय।

पछिला दस बर्ख आ ताहू सँ बेसी समय सँ हम मात्र पत्रिके लेल लिखैत रहलहुँ अछि। अपन योजना बना क' लिखबाक बात जेना मोन मे नहि अबैत अछि।

अहाँ उपन्यास, आत्मकथा आ शोध-निबंध लिख' कहैत छी, से उचिते कहैत छी। नाटको लिखबाक चाही। मुदा, लिखबा लेल बैसबा मे जेना डर लगैत अछि। एक कारण थिक पेटक अल्सर। दोसर कारण थिक, हाइ स्कूलक नोकरी, जे स्वयं अपना मे बड़ थकाब' बला काज अछि।

संयोग सँ भाइ प्रभास कुमार चौधरीक पत्र आयल अछि। प्रभास अपन लेखनक गतिहीनता, निष्क्रियताक बात करैत छथि, से बुझबा मे अबैत अछि। भाइ राज मोहन जीक पत्र अबैत अछि, ओहो लिखैत छथि जे लिखबा लेल कोनो प्रेरणा, कोनो आंतरिक ऊर्जा नहि पबैत छथि।

तें लेखनक कोन योजना हाथ मे लेब, अथवा की लिखब, से कहब बड़ कठिन

अछि।' हम हुनका निरंतर उपन्यास-लेखन लेल, आत्मकथा लिखबाक लेल, अपन संघर्ष-कथा लिखबाक लेल पत्र दैत रहियनि, ताहि पर ओ उपरोक्त तथ्य सभ हमरा लिखि पठौलनि। प्रभास जी आ भाइसाहेब सेहो एही समय मे बेस निष्क्रियताक अनुभव करैत छलाह। 29 जून 1988क पत्र मे ओ लिखलनि—'शिक्षक लोकनिक व्यापक उन्मुखीकरण चर्या मे हम 18.6 सँ 27.6 धरि पंडौल मे रही। 25.6 केँ टेलीविजन पर मैथिली फिल्म 'भौजी माय' देखलहुँ जकर पटकथा आ संवाद आचार्य सोमदेव लिखलनि आ जकर संवाद हमरा नहि अरघल। पंडौल सँ घुरला पर लिखबाक इच्छा मे बल भेटल अछि।' 12 जुलाइ 1988क पत्र मे ओ लिखलनि—'पंडौलक उन्मुखीकरण केन्द्र सँ घुरला पर शिक्षा विभाग पर खौंझायल रही। एक टा टिप्पणी लिखल—शिक्षक और उनका उन्मुखीकरण। पढ़ि क' प्रधानाध्यापक जनओलनि जे हमर एहि टिप्पणी पर हमरा पर अनुशासनिक कार्रवाई भ' सकैत अछि। ई टिप्पणी 'पाटलिपुत्र टाइम्स' मे पाठकीय स्तंभ मे 7.7.88 केँ छपल अछि।' संयोग जे जीवकांतक ई टिप्पणी हम नहि देखि सकलहुँ। मुदा, उन्मुखीकरणक व्यर्थता-बोधक प्रतिक्रिया मे ओ एहन टिप्पणी लिखने हेताह। 28 जुलाइ 1988क पत्र मे ओ प्रो. मायानंद मिश्रक सक्रियताक प्रसंग लिखैत छथि—'प्रो. मायानंद मिश्र एहि बीच मे बेस सक्रिय भेल छथि, से बड़ प्रशंसा आ प्रसन्नताक बात थिक।' प्रो. मायानंद मिश्र निरंतर लेखनरत छलाह आ कालांतर मे हुनक हिंदीक अनेक उपन्यास प्रकाशित भेल। 31 जुलाइ 1988क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'यात्री जी केँ भारत-भारती आ डा. बासुकीनाथ झा केँ ग्रियर्सन पुरस्कारक घोषणा अखबार मे देखल अछि। यात्री केँ तीन टा पत्र पंडासरायक पता पर देल अछि। भारत-भारती पुरस्कार पर, बी.बी.सी इन्टरव्यू पर आ मैथिलीक अनुवाद हिंदी पत्रिका सभ मे छपबाक प्रस्ताव पर तीन टा पत्र खसाओल अछि।

पाठक लोकनिक धर्म-निर्भरता, अंधविश्वास आ दैववाद पर तीन-चारि टा लेख लिखने छलहुँ जे 'भाखा', 'हालचाल', 'चिनगी' आ 'मिथिला मिहिर' केँ पठाओल गेल अछि। एहि मे मि.मि. बला—धर्मनिरपेक्ष कविता निघेंस अछि—लेख छपल अछि। आर सभक छपबाक आशा नहि करैत छी।

एखन लिखबाक मोन नहि होइत अछि। बर्खा, संचारक साधन एखन सामान्य अछि।'

यात्री जी केँ पुरस्कार भेटलनि, बी.बी.सी. सँ इन्टरव्यू प्रसारित भेलनि, ताहि पर बधाइ पत्र पठौलनि। बी.बी.सी.क इन्टरव्यूक प्रसंग भीम भाइक एक टा लेख सेहो प्रकाशित भेल रहनि। हिंदीक पत्र-पत्रिका मे मैथिलीक अधिकाधिक रचना आबय, ई चेष्टा शुरुहे सँ जीवकांत मे रहलनि अछि। यात्री जी केँ एहू तरहक प्रस्ताव ओ पठौलखिन।

दैनिक नवभारत टाइम्स मे सहरसाक एक पत्रकार संजय झाजीक पहल पुस्तिकाक विरोध मे एक टिप्पणी नवभारत टाइम्सक 26 जून 1988 केँ छपल छल। हुनक ओ टिप्पणी आधारहीन आ निरर्थक छल। हम तकर विरोध करैत एक टिप्पणी पठाओल, जे नवभारत टाइम्सक 31 जुलाइ 1988क अंक मे आयल छल। पत्रकार संजय झा जीवकांत आ हमरा दुनू गोटे पर अनेक आरोप लगौने रहथि। जीवकांत सेहो एकर प्रतिवाद कयने रहथि, जे 8 जुलाइ 1988क नवभारत टाइम्स मे छपल छल। एतय संजय झाक रिपोर्ट, जीवकांतक प्रतिवाद आ हमरो नभाटा मे प्रतिवाद प्रकाशित भेल छल, से देखब मनोरंजक होयत—

मैथिली कविताओं की राष्ट्रीय पहचान की 'पहल'

'पहल' का तैंतीसवां अंक, जिसके साथ संलग्न है मैथिली कविताओं का हिंदी अनुवाद। अनुवादक हैं केदार कानन। मैथिली कविता के सौ वर्ष के संदर्भ में संक्षिप्त टिप्पणी जीवकांत ने की है। यह टिपपणी बहस का मुद्दा बन सकती है। टिप्पणी में कहा गया है कि ग्रियर्सन ने जब भारतीय भाषाओं का व्याकरण तैयार किया, तो मिथिला भाषा का क्षेत्र भी निर्धारित किया। सनद रहे कि ग्रियर्सन ने केवल विभिन्न क्षेत्रों का भाषाई सर्वेक्षण किया है। जीवकांत की टिप्पणी कई सवाल खड़े करती है। यह अंक मैथिली कवियों के बीच ही विवाद का विषय बना हुआ है। कारण, कई ऐसे सशक्त हस्ताक्षर हैं, जिन्हें इस अंक में शामिल नहीं किया गया है। गिनाने को बहुत सारे नाम हैं, जिसमें एक नाम सबसे महत्त्वपूर्ण है आरसी प्रसाद सिंह। तब मैथिली पर लगाए जा रहे यह आरोप कि 'किसी खास खेमे की बपौती है मैथिली' सही लगने लगती है। इस अंक में यात्री, रामकृष्ण झा किसुन, राजकमल चौधरी, मायानंद मिश्र, सोमदेव, महाप्रकाश, अग्निपुष्प, सुकांत सोम, कुणाल सहित करीब दो दर्जन कवियों की रचनाएँ हैं। यात्री जी (बाबा नागार्जुन) एवं राजकमल चौधरी की धारदार कविताओं को शामिल नहीं करना काफी खटक रहा है। इसमें संदेह नहीं कि इस अंक में मैथिली की वैसी भी कविताएँ शामिल हैं, जिन्हें पढ़ने के बाद पुस्तिका को बिछावन के नीचे रखकर सो जाने की इच्छा होने लगती है।

हाँ, एक बात अवश्य महत्त्वपूर्ण है कि मैथिली कविताओं का यह संग्रह राष्ट्रीय स्तर पर मैथिली की पहचान तो 'पहल' के माध्यम से बनाने में सफल हो सकेगी। यात्री जी से लेकर नयी पीढ़ी तक के अनाम और गुमनाम कवियों को शामिल किया गया है इस अंक में। यात्री जी, राजकमल चौधरी, मायानंद मिश्र, रामकृष्ण झा किसुन, सोमदेव आदि की कविताओं को पढ़ते हुए इसे मैथिली की प्रतिनिधि कविताओं का संकलन कहना गले नहीं उतरता।

मैथिली के युवा कवियों का सृजन अपनी संभावनाओं को पूरी तरह उजागर करता है। खासकर महाप्रकाश, सुकांत सोम, अग्निपुष्प, कुणाल, तारानंद वियोगी, डा. कुमार पवन, नरेन्द्र और डा. शिवेंद्र दास की कविताएँ संघर्ष, छटपटाहट के बीच आदमी के अंदर सुलगते विद्रोह को रेखांकित करती है। इस संग्रह में सिर्फ एक मैथिली कवयित्री की कविता है। कवयित्री सुस्मिता पाठक अपनी कविताओं में क्या कहना चाहती हैं, यह एकदम स्पष्ट नहीं हो सका। फिर भी उनकी रचनाओं का मैथिली में कद्र तो होनी ही चाहिए, क्योंकि सवाल मैथिली कवयित्रियों की पहचान का है। लेकिन अनुवादक ने संकलन में अन्य सशक्त कवयित्रियों को शामिल नहीं करके शांति सुमन, शेफालिका वर्मा, इलारानी सिंह, सुशीला झा, पद्माशा, मीरा झा, सरस्वती कापड़ि जैसी कवयित्रियों के साथ न्याय नहीं किया।

महाप्रकाश, अग्निपुष्प, सुकांत सोम, डा. शिवेन्द्र दास की कविता विशेष रूप से प्रभावित करती है। अग्निपुष्प की कविता मरीचिका लोकतंत्र के विकृत स्वरूप पर बगैर किसी लाग-लपेट के कि, ''मेरे देश का संविधान, कुछ लोगों की सुविधा के लिए बनाया गया है और जनतंत्र कभी संसद में और कभी सड़क पर, खाली कनस्तर सा लुढ़क रहा है।'' इसके अलावा अन्य युवा कवियों की कविताओं में तीखापन, ग्रामीण परिवेश और फिर यथार्थ की बुनावट सहजता को समेटने की पूरी-पूरी कोशिश की है। डा. शिवेंद्र दास की कविता 'विरासत' भटकाव की जमीन पर खड़ी दिखती है। बानगी के तौर पर, ''बंधे हाथ, बेवजह गोलियाँ चलाने से ही सही, मुझे आ तो गया है निशाना लगाना, बदल सकता हूँ अब मैं रूख, कभी भी, सलामी में उठी बंदूक का।''

समग्र रूप में मैथिली कविताओं का यह संग्रह एक सराहनीय प्रयास तो अवश्य ही कहा जा सकता है। मैथिली को 'पहल' के माध्यम से पहली बार व्यापक फलक तक ले जाने की कोशिश हुई है।

मैथिली कविताएँ

जीवकांत

26 जून की रविवार्त्ता में संजय झा ने 'मैथिली कविताओं की राष्ट्रीय पहचान की पहल' शीर्षक से पत्रिका-समीक्षा छपाई है। टिप्पणीकार ने मैथिली के अनेक कवियों के असंतोष की चर्चा की है। यह असंतोष हमारे अनेक कवियों में और पाठकों-समीक्षकों में है। यह बात हमें भी मालूम है। मगर यह सब होना था। कोई संकलन न तो अपने आप में पूर्ण ही होता है और न किसी छोटे, सीमित आकार-प्रकार वाले संकलन में सारे लोग लिए जा सकते हैं। कविवर आरसी प्रसाद सिंह का नाम छूट

जाना वास्तव में खेद का विषय है।

आरसी बाबू ने हिंदी और मैथिली कविताओं का भंडार भरा है। मैथिली कवि के रूप में उन्हें साहित्य अकादेमी (दिल्ली) ने सम्मानित भी किया है। मैथिली में आरसी बाबू की कविताओं का अभी तक विश्लेषण मूल्यांकन नहीं हुआ है। मोहन भारद्वाज ने बताया था कि प्रो. हरिमोहन झा ने मैथिली के गद्य को बहुत समृद्ध किया था, उनके जीवन-काल में उन पर एक भी पंक्ति नहीं लिखी गई थी। ऐसा मैथिली में हो रहा है। इसमें भाग्यशाली यात्री जी (नागार्जुन) हैं। उनके जीवन-काल में ही ढेर लोगों ने उनके कृतित्व पर बहुत सारी चर्चा की है। दूसरे भाग्यशाली लेखक राजकमल चौधरी हुए हैं जो बीस वर्षों में परस्पर विरोधी मूल्यांकनों के केंद्र बने हुए हैं।

आरसी बाबू अपने समकालीन दर्जनों बड़े कवियों और लेखकों के साथ विश्लेषण और मूल्यांकन के हकदार नहीं बन रहे हैं। ऐसा मैथिली समीक्षा का स्वभाव बना हुआ है। एक कारण यह भी हो सकता है कि भूमिका लेखक को उनका नाम सही वक्त पर याद नहीं आया और उल्लेख से छूट गया। एक महत्त्वपूर्ण नाम छूटने का भूमिका लेखक को पश्चाताप है। वैसे सारे नाम जो भूमिका से लेकर कविताओं के संपादन तक छूटे हैं, उसके लिए रचनाकारों के साथ संपादक को भी खेद और ग्लानि है, परंतु यह सब कुछ किसी मजबूरी में हुआ होगा और प्रकाशक द्वारा निर्धारित स्थान-सीमा भी एक कारण बनी होगी।

ग्रियर्सन ने मैथिली भाषी क्षेत्र की सीमा निर्धारित की या न की हो, परंतु ग्रियर्सन के द्वारा प्रकाशित मैथिली भाषी क्षेत्र का मानचित्र छापा जा रहा है। निश्चयत: ऐसा मानचित्र मैथिली इतिहास ग्रंथों, पत्रिकाओं और स्मारिकाओं ने छापा है और अब तक दर्जनों बार छापा है, अत: ग्रियर्सन का संदर्भ देकर भूमिका लेखक ने मैथिली की सीमाओं का जो उल्लेख किया है, उसमें कोई राजनीतिक लाभ कमाने की भावना नहीं है।

दरअसल मैथिली ग्रियर्सन की ऋणी है

केदार कानन

संजय झा की समीक्षा 'मैथिली कविताओं की राष्ट्रीय पहचान की पहल' शीर्षक से आई थी।

ग्रियर्सन के बारे में वह बताते हैं कि उन्होंने सिर्फ विभिन्न क्षेत्रों का भाषाई सर्वेक्षण भर किया है। ऐसा कहना भ्रामक है। मिथिलावासी मिथिला और मैथिली के संदर्भ में किए गए महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिए ग्रियर्सन के आभारी हैं। उन्होंने सिर्फ

मैथिली क्षेत्र का ही निर्धारण नहीं किया अपितु उन कठिन परिस्थितियों में अंग्रेज प्रशासक होते हुए भी अपनी संस्कार सम्पन्नता के कारण अनेक दुर्लभ पांडुलिपियों को एकत्र किया, इतिहास में कई नए अध्याय जोड़े एवं कई महत्त्वपूर्ण कार्य किए। ऐसे कई तथ्य जो इतिहास में उपेक्षित पड़े थे, उन्हें प्रकाश में लाने का श्रेय भी ग्रियर्सन महोदय को ही जाता है।

श्री झा कहते हैं कि 'जीवकांत की टिप्पणी कई सवाल खड़ा करती है', लेकिन वे बताने की जरूरत नहीं समझते कि वे कौन-कौन से सवाल हैं? क्या उन्हें सवालों का उल्लेख करना आवश्यक नहीं लगा? 'पहल' का अंक एक निश्चित विचारधारा के तहत तैयार किया गया है। ऐसी कविताएँ जो भाषा की अग्रगामी चेतना को रेखांकित करती हों और समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व को तलाशती हों, उन्हें ही संकलित करने का प्रयास किया गया है। यह सही है कि बहुत से नाम नए लगते हैं।

कुछ गंभीर कवियों की कविताएँ अवश्य इस संकलन में नहीं आ सकी हैं। वे महत्त्वपूर्ण कवि हैं—डा. धीरेन्द्र, डा. गंगेश गुंजन, डा. भीमनाथ झा, डा. बीरेन्द्र मल्लिक और उपेंद्र दोषी। मुझे व्यक्तिगत रूप से इसके लिए खेद है। किसी अन्यथा भाव से नहीं, अपितु आपसी तालमेल, समय और संकलन-सीमा के चलते ही ऐसा हुआ।

कवयित्रियों के प्रसंग में संजय झा ने अनेक नाम सुझाये हैं, उन्हें धन्यवाद। इस प्रसंग मैं कहना चाहूँगा कि डा. शांति सुमन गीत-नवगीत लिखती रही है और यह संकलन कविताओं का था। श्रीमती शेफालिका वर्मा एक अरसे से कविताएँ लिख रही हैं लेकिन जिस प्रगतिशील विचारधारा की कविताएँ 'पहल' में आई है, वैसी कविता उनके यहाँ दुर्लभ है।

डा. इलारानी सिंह की कविता एक अरसे से प्रकाश में नहीं आई है। श्रीमती मीरा झा और पद्माशा हिंदी में ही लगातार लिखती रही हैं। वैसे इनकी अनेक रोमानी कविताएँ मैथिली में हैं। सरस्वती कापड़ि बहुत पहले लिखती थी, अब उनकी कविताएँ पत्रिकाओं में नहीं आती हैं। इनमें से श्रीमती सुशीला झा लगातार लिखती रही हैं और महत्त्वपूर्ण भी।

अंत में मैं अब भी इस उधेड़बुन में हूँ कि यात्री जी से लेकर नई पीढ़ी तक के अनाम और गुमनाम कवि कौन हैं, जिन्हें मैंने इस अंक में शामिल किया है।

एहि प्रसंग 1 अगस्त 1988क अपन पत्र मे ओ लिखलनि—'संजय झा अपन टिप्पणी मे ई आरोप लगओने छलाह जे आरसी बाबू केँ बारने मैथिली पर ई आरोप सत्य सिद्ध होइत अछि जे मैथिली भाषा आ साहित्य एक जाति-विशेषक एकाधिकार

थिक। अस्तु, आब ई चर्चाक अंत भेल, से हम बूझि रहल छी।'

21 अगस्त 1988 केँ संपूर्ण बिहार मे भयंकर भूकम्प आयल। धरती जतय-ततय फाटल, कतहु धरती सँ बालुक ढूह निकलि आयल, कतहु धरती सँ जलक झरना बहरायल, चापाकल स्वतः घंटो धरि चलैत रहल, इनार सभ भथि गेल, अनेक-अनेक घर ढहि गेल, कतेक लोक घर मे दबि क' मरि गेल। चारूकात मृत्युक भयावह आ आतंककारी सन्नाटा पसरि गेल। जीवकांत 23 अगस्त 1988क पत्र मे लिखलनि—'बीच मे बड़का भूकम्प आयल छल। चारूकात मृत्यु आ टूटल आ ढहल घर सभक बीच लोक जीबि रहल अछि। फेर भूकम्प होयबाक आशंका मे लोक निद्राविहीन राति बिता रहल अछि। भूकम्प सँ अहाँ सभ सुरक्षित होयब।' पुनः ओ 27 अगस्त 1988क पत्र मे लिखलनि—'भूकम्प भेल। दरारि फाटि क' पानि आ बालु बहरायल। जान सँ सुरक्षित छी। घर सभ फाटल अछि। बर्खा आ बाढ़ि अछि। लोक आदंक मे जीबि रहल अछि।

एखनहुँ लोक छगायल अछि। सुतैत नहि अछि। प्राण छन्न छैक।'

11 सितंबर 1988क पत्र मे पुनः ओ लिखैत छथि—'मोहन भारद्वाजक पत्र आयल अछि। ओ लिखैत छथि जे सोमदेवक घर भूमिसात भ' गेल छनि। भूकम्पक बाद दू बेर लहेरियासराय गेल छलहुँ। हुनक खोज नहि क' सकलहुँ, तकर पश्चाताप अछि।

राजकमल चौधरीक बंगला हम 1967 मे देखने रही। अहाँक पत्र सँ ओ मोन पड़ि गेल। राजकमलक स्मृति कागत मे—अक्षर मे—बचि जायत। मिथिला मे प्रत्येक स्थूल स्मारक केँ प्रकृति धोइत-पोछैत रहैत अछि।

रामानुग्रह जीक शिक्षक संघक व्यस्तताक अतिरिक्त आर कोनो लेखन-अध्ययनक कार्यक्रम छनि, की नहि? हुनका आ हुनक बच्चा लोकनि केँ हमर समाचार आ शुभकामना कहि देल जाय।' भूकम्प मे सोमदेव जीक घर ढहि गेलनि, से जीवकांत केँ आहत कयलकनि। लहेरियासराय जाइयो क', नहि बूझल रहबाक कारणे, सोमदेव जी सँ नहि भेंट क' सकलाह, तकर पश्चाताप भेलनि—एहि सँ हुनक सम्वेदनाक आर्द्रता केँ देखल जा सकैछ।

1966 मे राजकमल अपन लेखन लेल, आराम करबाक लेल एक टा अतीव मनोहर बंगला अपनहि बनबौने छलाह—खढ़क घर, चिक्कन-चुनमुन, विभिन्न प्रकारक तिलिया-फुलिया सँ सजाओल, दर्शनीय। 1967क फरवरी मे सुपौलक राष्ट्रीय सार्वजनिक मेला मे किसुन जीक संयोजकत्व मे आयोजित द्विदिवसीय नवलेखन-सेमिनार सँ घुरलाक बाद राजकमल बहुत आवेश सँ रमानंद रेणु, धीरेंद्र जी आ जीवकांत केँ महिषी ल' गेल छलाह। तकर स्मृतिवश जीवकांत एहि बंगलाक

चर्चा कयलनि अछि।

रामानुग्रह भाइ वास्तविक अर्थ मे शिक्षक संघक राजनीति मे व्यस्त, अतिव्यस्त भ' गेल रहथि। लेखन-अध्ययन लगभग छूटि गेल रहनि। तकर खौंझ जीवकांत केँ छनि, हमरो छल।

15 सितंबर 1988क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'हिंदीक पत्रिका आ हिंदीक लेखक लोकनि चाहैत छथि जे हिंदीक साम्राज्य बढ़य। बिहार आ तें मैथिली भाषी क्षेत्र एहि साम्राज्य मे पूर्णतया आबि गेल अछि। जखन मैथिली कथा-कविताक बात होअ' लगैत अछि, तँ हिंदी पत्रिका आ हिंदी विद्वान लोकनि केँ अदंक पैसि जाइत छनि जे बिहार मे हिंदी साम्राज्य टूटि क' खसि पड़त।

डा. रामविलास शर्माक मैथिली-विरोध मैथिल लोकनि लेल ऐतिहासिक महत्त्वक बात थिक। यात्री जी केँ तकर जवाब देब' पड़ल रहनि। हिंदी बला सभ तें ऊपर सँ बजताह जे मैथिली हिंदीक बोली थिक, मुदा अन्दर सँ एहि भाषा केँ मटियामेट करब अपन दीर्घकालिक नीति बुझैत छथि। मैथिली हुनका लोकनि केँ फुटलीयो आँखि सँ नहि सोहाइत छनि।

66-67 मे 'आजकल' (हिंदी, दिल्ली) मे तीन-चारि गोट हमर कथा छपल छल। अनुवाद हम स्वयं करी आ पांडुलिपिक शीर्ष पर लिखि दिऐक—मैथिली कहानी। निरपवाद रूपें ओ कथा सभ बेर छपलक आ 'मैथिली कहानी'क मुद्रण आ उल्लेख नहि कयलक। विशेषांक सभ लेल कथा माँगि क' छापय। एक बेर वार्षिकांक मे सेहो हमर कथा छपने छल, जे भाइ राज मोहन झा कहैत छथि। हमरा घृणा भेल। हम ओकरा कथा पठायब बन्न क' देल।

यात्री जी मैथिलीक वर्त्तमान आ भविष्य सँ बहुत पहिनहि निराश भ' गेल छथि। ओ तेजस्वी मैथिली लेखक सभ केँ हिंदी मे लिखबा लेल प्रेरित करैत छथि। राजकमल चौधरी आ यात्री हमरो हिंदी मे लिखबा लेल उत्साहित कयने रहथि। ई बात फूट जे हम हिंदी मे लिखबा लेल प्रवृत्त नहि भेलहुँ।

तें यात्रीक सोंगर पर मैथिली साहित्य केँ हिंदी मे ठाढ़ करब बेकार अछि। मैथिली साहित्य अपने शक्ति सँ हिंदी मे, अंग्रेजी मे, बांग्ला मे अथवा रूसी मे ठाढ़ होयत।'

कहल जाइछ जे रचनाकार भविष्यद्रष्टा होइत छथि। जीवकांतक बात आइ सोलह आना सत्य भेल अछि। आइ मैथिलीक रचनाक अनुवाद हिंदी, अंग्रेजी, बांग्ला, पंजाबी, उड़िया, तमिल आ तेलुगुक अतिरिक्त आनो भाषा मे भेल अछि आ भ' रहल अछि। एखन हमरा मोन पड़ैत छथि बांग्लाक कवि कालीपद कोनार। मैथिली कविता सँ हुनका आत्मिक लगाओ रहनि। मैथिली कविताक अतिरिक्त मैथिल जीवन आ

संस्कृति सँ सेहो ओ ओतबे जुड़ल छलाह। हुनका प्रयासें तत्कालीन बांग्ला पत्रिका सभ मे लगभग सैकड़ो मैथिली कविता प्रकाशित भेल आ 'मैथिली कोविता' नाम सँ एक टा संपूर्ण कविता पुस्तक सेहो प्रकाशित भेल, जाहि मे मैथिलीक उनचालीस गोट कविक कविता संकलित कयल गेल। कालीपद जी मैथिली लेल समर्पित छलाह।

तहिना पंजाबी मे डा. रामसिंह चाहल आ डा. अमरजीत कौंकेक प्रयास सँ अनेक मैथिली कविताक अनुवाद आ प्रकाशन भेल। एहि तरहें आनो-आन भाषा मे मैथिलीक रचना सभक प्रकाशन संभव भेल।

हिंदी मे तँ व्यापक स्तर पर मैथिली रचना सभक प्रकाशन भेल। सर्वप्रथम कमलेश्वर द्वारा संपादित 'सारिका'क दू अंक मे मैथिलीक किछु सशक्त कथा प्रकाशित आ प्रशंसित भेल। छिटपुट प्रयासक अतिरिक्त 'पहल', 'विपक्ष', 'कारखाना', 'साम्य' आ 'समकालीन परिभाषा'क संपूर्ण अंक मैथिली पर केन्द्रित आयल आ एकर सभक व्यापक प्रतिक्रिया भेल, जे मैथिली लेल सुखद आ उत्साहवर्द्धक रहल।

एतय जीवकांतक दू गोट बात हमर ध्यान खिंचैत अछि। पहिल जे ओ 'आजकल' केँ मात्र एहि दुआरे कथा पठायब बन्न क' देलनि जे ओ कथाक शीर्ष पर 'मैथिली कहानी' नहि छपैत छल आ दोसर जे यात्री जी आ राजकमलक उकसौलो पर ओ हिंदी-लेखन दिस प्रवृत्त नहि भेलाह, अपितु मैथिलीक प्रति एकनिष्ठ भावें समर्पित रहलाह। ओना, हिंदी मे लेखन केँ हम खराब नहि मानैत छी। मुदा, अपन भाषाक प्रति जे प्रतिबद्धता होयबाक चाही कोनो लेखक मे, से होयब तँ अनिवार्य अछि।

5 दिसंबर 1988क पत्र मे ओ लिखलनि—'18 केँ बेर मे पटना पहुँचलहुँ। कुलानंद जीक डेरा पर झोरा राखि देल। घुरि जयबाक चाहैत छल। मुदा, पटनास्थ मित्र लोकनिक आग्रह सँ रहि गेलहुँ। ओ लोकनि लालच देलनि—21 केँ चेतना समितिक कविगोष्ठी, 23 केँ चेतना समितिक विचार गोष्ठी। 22 केँ युवालेखन मे प्रभास जी कथा-गोष्ठी कयने छलाह। तीनूक लालच मे रहि गेलहुँ। 24 केँ गाम घुरलहुँ। घुरला पर मोन खराब भेल। स्वास्थ्य सामान्य होयबा मे एक सप्ताह लागि गेल।

'अवांतर'क अतिरिक्त आर कोनो पोथी नहि आयल। एहि सँ पहिने किरण जीक संग्रह 'कथा-किरण' आयल छल।

कलकत्ता जयबाक मोन अछि। कमलेश जीक आग्रहो छनि। मुदा, एखन धरि विस्तृत विवरण (स्थान, समय इत्यादि) नहि आयल अछि। देखी, जा पबैत छी कि नहि!

पटना जा क' बहुत पछतयलहुँ। एहेन कार्यक्रम सभ मे नहि जयबाक चाही।

छओ दिन कुलानंद जीक निवास पर रहि गेलहुँ। एहेन निवासो उचित नहि।'

20 दिसंबर 1988क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'जतेक सरकारी पाइक स्रोत अछि, ओहि सभ संस्थानक गद्दी पर द्वितीय श्रेणीक मैथिली-भक्त (?) बैसल छथि। सुमन जी एक चांडाल चौखड़ीक पेंच मे द्वितीय श्रेणीक लोलुपता आ पक्षपातक प्रमाण द' रहलाह अछि। सैह रेडियो, सैह साहित्य अकादेमी।

ई भेल यथास्थितिक एक पक्ष। दोसर पक्ष ई जे हमरा लोकनि एहि संस्थान सभ मे घोंसिअयबाक कोनो प्रयत्न नहि करैत छी। तेसर ई पक्ष जे जे क्यो जाइत अछि, छूति जाइत अछि।

कतेक विरोध करब ? हम ठेहिआइत छी। कोनो बात होइक, तँ होइक। ओहिना पानि डेंगयने की लाभ ?

कोनो नवतुरिया एहि लेल विश्लेषण आ खंडन आ विरोध करबा लेल कहाँ तैयार होइत अछि ?

महाप्रकाश आहत अनुभव करैत छथि। से किएक ? प्रत्याक्रमण किएक नहि करैत छथि ?

तारानंद वियोगी एहि सन्नाटा लेल हमरा दोषी बुझैत छथि। किएक ? आ कतबा दिन ?'

पछिला पत्र मे ओ लिखैत छथि जे विद्यापति पर्व आ मैथिली अकादेमीक कार्यक्रम मे जा क' अपन स्वास्थ्य चौपट कयलनि। महानगर मे छओ दिन कोनो व्यक्तिक घर मे पहुनाइ सेहो उचित नहि। ताहू मे कुलानंद जी जाहि स्थिति मे रहैत छलाह, हुनका ओतय छओ दिन रुकब हुनका नीक नहि लागल हेतनि। पर्व पर मात्र प्रो. मायानंद मिश्रक 'अवांतर' प्रकाशित भेल रहनि, ओहि सँ पूर्व डा. शिवशंकर श्रीनिवास जीक स्नेह-सहयोग सँ 'कथा-किरण' आबि चुकल छल।

कलकत्ता अखनो हुनक मोन केँ लुसफुसा रहल छनि। मुदा ओ जा नहि सकलाह।

मैथिली मे सरकारी पाइक जे स्रोत अछि, तकर अनेक ढंग सँ अपव्यय होइत रहल अछि। किछु सार्थको काज भेल अछि मुदा निरर्थक बेसी भेल अछि। संपूर्ण मैथिलीक प्रगतिशील लेखक एक दिस आ चांडाल चौखड़ी एक दिस। ई संघर्ष निरंतर चलैत रहल अछि आ आगाँ सेहो चलैत रहत। विरोध आ समर्थनक पक्ष-विपक्ष मे जतेक बात पत्र-पत्रिका मे छपैत रहल अछि, तकरो सभक संकलन कम रोचक नहि होयत। ई यथास्थिति अखनो बनले छैक।

जीवकांत ईहो कहैत छथि जे प्रगतिशील विचारधाराक लोक सभ एहि संस्था सभ मे नहि आबि पबैत छथि। जे एहि संस्था मे जाइत छथि, हुनका लोकनि केँ 'यस

मेन' चाही। ओना, अनेक प्रगतिशीलो लेखक अकादेमी मे जाइत रहलाह अछि मुदा ओ मुख्यधारा सँ बारल गेलाह अछि अथवा बारल रहलाह अछि। जे किछु थोड़ेक सृजनात्मक काज संभव भ' सकल अछि, से एही प्रगतिशील लेखक लोकनिक कारणे, एहू मे संदेह नहि।

जीवकांत नवतुरियाक आवाहन करैत छथि खंडन-मंडन आ विरोध लेल। विरोधक माहौल मुदा तैयार भेलैक अछि, भ' रहल अछि।

महाप्रकाश आ तारानंद वियोगीक संवेदन-पक्ष केँ बूझल जा सकैत अछि।

1989 मे ओ हमरा लगभग पैंतालीस गोट पत्र लिखलनि। 8 जनवरी 1989क पत्र मे ओ लिखलनि—'अहाँक 30.12.88क पत्र भेटल। थीसिस जमा होयबे करत।

किसुन जी पर सामग्री आ हुनक लिखल अप्रकाशित सामग्री अहाँ प्रकाशित कराब' चाहैत छी, से नीक लागल।

किसुन जी पर बड़ लिखने छी, फेर नव किछु लिखबा लेल कोनो नव बात ने अछि ने नव कहबा योग्य फुराइत अछि।

कविताक रचना-प्रक्रिया पर किछु सोचब, तँ लिखब आ जँ लिखब, तँ अहाँ केँ पठा देब। एखन नहि लिखब।

1965 मे कथा लिखब शुरू कयने रही। पहिल लिखल कथा एखनधरि अप्रकाशित अछि, ओकरा उतारि क' अहाँ केँ पठा देब। एक टा कथा हेरा गेल अछि—हेलो धरती—ई कथा 'अनामा' मे छपबा लेल पठओने रहिऐक। मुदा, कथा डाक मे नष्ट भेल। ओकर नकल नहि अछि।

थीसिस जमा करयबाक लेल हम 18 दिसंबर 1988 केँ पटना लेल विदा भेल रही। 19 दिसंबर केँ भोरे-भोर चारू प्रति थीसिसक संग सर्वप्रथम मोहन भारद्वाजक डेरा पर गेलहुँ। मुदा, एक मास पहिने ओ ब्रह्मचारी जी बला डेरा छोड़ि आर. ब्लॉकक विभागीय क्वार्टर मे चलि गेल रहथि। फेर प्रो. आनंद बाबूक ओतय जाक' हुनका सँ प्रमाणपत्र लेलहुँ आ ओकरा टाइप करौलहुँ। 20 दिसंबर केँ फेर मोहन भारद्वाजक डेरा पर गेलहुँ मुदा ओ मुजफ्फरपुर निकलि गेल छलाह। ओहि दिन मुरलीधर प्रेस मे आचार्य सुमन जी सँ भेंट भेल छल। ओ ओही दिन दिल्ली जाइत छलाह। सुमन जी थीसिस देखि बहुत प्रसन्न भेल छलाह। फेर आनंद बाबूक हस्ताक्षर करबाओल आ तकरा बाद बोरिंग रोड जा क' ललित कुमुद सँ थीसिसक कवर आ शीर्षक हाथहि सँ बनबाओल। हमर थीसिस हाथे सँ लिखल छल आ पटना विश्वविद्यालय मे एहि कारणे ओ अपना तरहक एकसर थीसिस छल। 21 दिसंबर केँ फेर मोहन भारद्वाजक ओतय। गप-शपक पछाति प्रो. आनंद बाबूक ओतय गेलहुँ, नहि भेटलाह तँ प्रो.

अमरेश पाठक ओतय गेलहुँ। ओहि समय विभागाध्यक्ष वैह छलाह। लगभग दू घंटा धरि हुनका संग बैसि मैथिलीक विभिन्न समस्या पर गपशप भेल रहय। मुदा जाहि काजें गेल छलहुँ, से काज नहि भ' सकल। पाठक जी कहलनि जे हमर थीसिसक निबंधन नवंबर 1983 मे भेल छल जे 1987 मे समाप्त भ' गेल। एकर नवीकरण कराब' पड़त। ई सुनिते मोन झूस भ' गेल। दोसर कोनो उपाय नहि छल। फेर यूनिवरसिटी जा क' एक्सटेंशन फार्म भरि, सभ प्रक्रिया कराओल आ जमा कयल। घुरि क' गाम आबि गेलहुँ। आब फेर मीटिंग होइत, तखन हमर आवेदन पर विचार होइत। ई प्रक्रिया दीर्घ छल आ तिथि अनिश्चित। आबि क' जीवकांत कें लिखने रहियनि।

किसुन जीक छिड़िआयल किछु रचना आ किसुन जी पर लिखल लेख सभ कें एकत्र कए एक टा पुस्तक प्रकाशित कराब' चाहैत रही। तें किसुन जी पर समग्रता मे एक लेख लिखबा लेल जीवकांत सँ अनुरोध कयने रहियनि।

पत्रिका लेल रचना-प्रक्रिया पर जीवकांत आ कीर्त्ति नारायण मिश्र सँ एक लेख माँगने रही, जे ओ बाद मे पठौलनि।

1965 सँ ओ कथा लिखब शुरू कयने छलाह आ संयोग सँ हुनक पहिल कथा एखनोधरि अप्रकाशित छल, से हम हुनका सँ प्रकाशनार्थ माँगने रहियनि। 4 फरवरी 1989क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'ओना आब हम ठीक छी। एक जनवरीक बाद पेट मे दर्द नहि उठल अछि। स्थानीय चिकित्सक आगाँ कोनो उपचार करबा लेल नहि कहैत छथि। तें चैन सँ छी। भोजनक मात्रा घटा क' आ ओकर आवृत्ति बढ़ा क' कष्टमुक्त भेल छी। तखन लगातार दुबरायल जा रहल छी। चितवालसा सँ कीर्त्ति भाइ पेटक ऑपरेशन करयबाक सलाह दैत छथि। भाइ फजलुर रहमान हाशमी होम्योपैथी चिकित्सा लेल लिखैत छथि। भाइ मोहन भारद्वाज एहि ठाम आबि आरो परामर्श सभ देलनि। मुदा, स्थविर भेल छी। कारण यैह जे एखन कोनो तकलीफ नहि अछि। अहाँ सभ बंधु लोकनिक शुभकामना लेल आभारी भेल छी।

अपन पहिल कथाक मूल प्रति हम तकैत छी। भेटला पर उतारि क' पठायब। ओहि पर टिप्पणी क' अहाँ कतहु उपयोग क' सकैत छी।

कविताक अपन रचना-प्रक्रिया पर हम लेख लिखबाक बात सोचि रहल छी। कथा पर कोन प्रकारक लेख चाही, ओकर विषय-वस्तु की हो, तकरा अहाँ फड़िछा क' लिखू।' जीवकांत कें गैस्ट्रिक परेशान कयने रहैत छलनि। पथ्य-परहेज आ नियमित दबाइ। ई रोग हुनका बेर-बेर उखड़ैत छलनि आ पथ्य-परहेज आ दबाइ सँ रोग कें ओ शमित करैत रहलाह।

पहिल कथाक मूल प्रति ओ ताकि रहल छलाह। कविताक रचना-प्रक्रिया पर

ओ लिखबाक सोचि रहल छलाह।

हम हुनका चिकित्सा करयबा लेल सुपौल बजौने छलहुँ। ओहि समय सुपौल मे डाक्टरक बेहतर टीम उपलब्ध छल आ सभ सँ पैघ बात जे परम साहित्यिक चिकित्सक डा. नवीन कुमार दास हमरा सभक आत्मीय छलाह। ओहो इच्छुक रहथि जे जीवकांत सुपौले आबि चिकित्सा कराबथि। ओ 17 फरवरी 1989क पत्र मे लिखलनि—'चिकित्सा लेल सुपौल अयबाक नोंत सँ प्रसन्न आ आभारी भेलहुँ। एखन पेटक हालति सामान्य अछि आ तें एखन चिकित्सकीय सहायताक कोनो आवश्यकताक अनुभव नहि करैत छी।

'कारखाना' लेल कथा पर जे आलेख 1921 सँ 1950 धरिक कथा पर अहाँ लोकनि कें चाही, से आलेख मोहन भारद्वाज तैयार कयने छथि। एहि आलेख कें ओ पटना मे युवालेखनक परिसम्वाद मे पढ़ने छलाह। एही कालखंडक कथा-लेखन पर एक दीर्घकाय आलेख भाइ कुलानंद मिश्र ओही गोष्ठी मे पढ़ने छलाह।

अपन पहिल कथा 'दहाइत चुट्टी'क उतारबाक आधा काज हम क' लेने छी। आब ओकरा पूरा करब। कविताक अपन रचना-प्रक्रिया पर लेख हम सुविधानुसार तैयार करब।'

रमेश नीलकमल आ तारानंद वियोगीक संपादकत्व मे जमालपुर सँ 'कारखाना' नामक हिंदी पत्रिका बहराइत छल। तारानंद 'कारखाना'क एक अंक मैथिली कथा पर केन्द्रित करबाक योजना बनौलनि। आब कथा सभक चयन आ अनुवादक समस्या छल। ताहि मे जीवकांत कें सेहो थोड़ेक भार देल गेलनि। 'कारखाना' मे कथा पर लेख सेहो देबाक छलैक तें ओ अपन पछिला पत्र मे कुलानंद मिश्र आ मोहन भारद्वाजक चर्च करैत छथि। 12 मार्च 1989क पत्र मे ओ लिखलनि—'एक टा लेख आ एक टा कथा अहाँ कें पठाओल अछि। 'कारखाना' लेल एक सँ दू टा धरि मैथिली कथाक अनुवाद हम क' सकब। से कथाक नाम लिखि पठाउ।

आँखि मे ढेर तकलीफ अछि। कोनो काज नहि क' पाबि रहल छी।'

ई लेख हुनक रचना प्रक्रिया पर छल आ कथा छल—दहाइत चुट्टी। ई दुनू सामग्री हमरा 15 मार्च कें भेटि गेल छल। कोनो-कोनो रचनाक जीवन अद्भुत होइत अछि। रचना-प्रक्रिया पर हुनक लेख हम तीन-चारि बर्खक बाद 'संकल्प' मे छापि सकलहुँ आ हुनक कथा 'दहाइत चुट्टी' अपन लेखन-कालक सैंतीस बर्खक बाद भारती-मंडन, अंक—9 मे आबि सकल। आइ अपने हमरा अजगुत लगैत अछि। ई हुनक पहिल कथा छल।

21 मार्च 1989क पत्र मे लिखलनि—'रचना-प्रक्रिया वला लेख पठओला पर विचारैत छलहुँ जे लेख अगुताइ मे आ कुंठित मनोदशा मे लिखा गेल छल।

मेला मे लेखक-सम्मेलन होयबाक बात सुनि प्रसन्नता भेल अछि। नवका लोक सभ केँ पूछू जे की कर' चाहैत छथि नवतूर। ओना आयोजक (पाइ देनिहार सभ) तमाशा देख' चाहैत अछि। तमाशा दूए टा होइत अछि—नाटक आ कवि-सम्मेलन। पटनाक नाटक संस्था सभ केँ सेहो पूछू। नाटक पर आलेख, परिचर्चा, कर्मशाला, नाटक-मंचन सभ क' सकैत छी। तहिना कवितो पर किछु कयल जा सकैछ। कथा आ उपन्यास पर बात करब, तैयो एक राति नाटक आ एक राति कवि-सम्मेलन करब जरूरी भ' जायत।

आँखिक हालति मे सुधार अछि। पूरा ठीक नहि भेल अछि। बाध मे रबीक फसिल कटि रहल अछि। प्राय: ताही सँ सुधार अछि। एक डाक्टरक मतें फूलक पराग-कण सभक एलर्जी सँ आँखि मे पीड़ा बढ़ि जाइत अछि। एहि निष्कर्ष केँ मानबाक कारण अछि। प्रत्येक बर्ख फरवरी आ मार्च मे आँखिक पीड़ा निश्चित रूपें बढ़ि जाइत अछि।'

मेला मे, माने सुपौलक राष्ट्रीय सार्वजनिक मेला मे, पहिने प्रत्येक वर्ष सांस्कृतिक कार्यक्रम होइत छल, से किसुन जीक बाद लगभग बन्न भ' गेल छल। हम तकरा फेर सँ जीवित कर' चाहैत रही आ मेला मे द्विदिवसीय कार्यक्रम कर' चाहैत रही आ एहि प्रसंग जीवकांत सँ आयोजनक परामर्श लेब' चाहैत रही। से ओ लिखि पठौलनि।

आँखिक पीड़ाक बढ़ि जयबाक कारण वैज्ञानिक छल आ एहि सँ हमहूँ सहमत रही।

'कारखाना'क मैथिली कथा पर केन्द्रित अंक लेल हम हुनका प्रो. मायानंद मिश्र, प्रभास कुमार चौधरी आ धूमकेतुक कथा अनुवाद क' देबाक अनुरोध कयने रहियनि। ओ एहि बीच दू गोट कथाक अनुवाद क' पठाइयो देलनि आ तकर सूचना अपन 2 अप्रील 1989क पत्र मे देलनि—''अगुरवान'क पाछाँ लगले 'पिता'क अनुवाद अहाँ केँ पठा देने छी। भेटल होअय, तँ लिखब। एकदम बैसारी अछि, किछु लिखबा लेल सोझाँ मे नहि अछि।' ओ 4 अप्रील 1989क पत्र मे लिखलनि—'किसुन जी पर पोथी छपबा सँ विशेष जरूरी अछि अहाँ अपन कविता-संग्रह वा आन कोनो पोथी छापि ली।' किसुन जीक किछु रचना सभ यत्र-तत्र छल आ हुनका पर आन-आन लेखकक बहुत रास लेख आ संस्मरण यत्र-तत्र प्रकाशित छल। हम सभ केँ एकत्र क' एक टा पुस्तक रूप मे प्रकाशित कर' चाहैत रही। अपन ओहि पत्रक संग डा. नवीन कुमार दासक एक विलक्षण कविता 'दस्तावेज' हुनक अवलोकनार्थ पठौने छलहुँ आ ताहि पर हुनक अभिमत आमंत्रित कयने छलहुँ। ओ 8 अप्रील 1989क पत्र मे लिखलनि—'किसुन जी पर सामग्री बहुत छिड़िआयल अछि। ओहि

पर पोथी आबय, से नीक। मुदा, ओहू सँ बेसी जरूरी अछि जे अहाँक पोथी आबय।

साहित्य अकादेमीक योजनाक अंतर्गत किसुन जीक जीवन आ कृतित्व पर जे पोथी आब' लेल छल, ताहि योजनाक की भेल? ओहो योजना बेसी महत्त्वपूर्ण छल। ओ योजना पूरा होइत, तँ अहाँक प्रस्तावित पोथी सँ बेसी उपयोगी होइत।

किसुन जी पर डा. रामदेव झा, कुलानंद मिश्र, तारानंद वियोगी, देवशंकर नवीन, डा. धीरेंद्र सँ सेहो लिखा सकैत छी।

डा. नवीन कुमार दासक कविता 'दस्तावेज' भेटल। पढ़लहुँ। देशक बहुविध विसंगति सभ केँ रेखांकित करैत छथि। बड़ नव दृष्टि छनि। नव प्रतिभा मे येह विशेषता होइत छैक। नव दृष्टिकोण देबा मे ओ सफल भेल छथि। नव भेला सँ भदेस होयबाक संभावना रहैत छैक, सेहो दोष एहि मे नहि अछि।'

हम किसुन जी पर पोथी चाहैत रही, जीवकांत हमर पोथीक प्रकाशन चाहैत रहथि। मुदा हम हुनका फेर किसुन जी पर पोथी लेल लिखलियनि तँ ओ जेना आजिज भ' क' अपन अगिला पत्र 15 अप्रील 1989 केँ लिखलनि—'डा. नवीनक कविता हमरो नीक लागल अछि। ओकरा कोनो नीक पत्रिका मे छपबाओल जाय। कविताक प्रति हम एहि पत्रक संग घुरा रहल छी।

किसुन जी पर पोथी छापबे अहाँ केँ प्रिय अछि, तँ छापू। ओना मनुक्ख केँ वर्त्तमान आ भविष्य केँ बेसी महत्त्व देबाक चाही। किसुन जी पर इतिहास-लेखको लोकनि सँ लिखबाउ, जेना डा. जयकांत मिश्र, डा. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' इत्यादि।

माया बाबूक कथा 'ट्रांसफर' (30 पेज) आ 'रंग उड़ल मुरुत' (15 पेज) मे सँ कोनो एक कथाक अनुवाद कर' कहैत छी अहाँ। अहीं बताउ जे ककर अनुवाद कयल जाय? कथाक आकार देखि क' मोन छोट भ' जाइत अछि। ओना, अनुवाद करबा सँ पूर्व हम दुनू कथा पढ़ि अनुवाद लेल छाँटबाक निर्णय करब। निश्चये आब ई अनुवाद हम मइ मे करब।

28 केँ राँची मे विद्यापति पर्व छैक। विचार-गोष्ठी लेल आलेख हम डाक मे छोड़ि चुकल छी। शारदा बाबूक दोसर पत्र आयल अछि जे हम अवस्स जाइ। देखी, जा पबैत छी की नहि? ओना स्वास्थ्यक आधार पर पत्नी एखनो धरि कतहु बाहर जयबा मे सहमति नहि दैत छथि।'

ओहि दिन मे डा. नवीन कुमार दास अत्यंत सक्रिय छलाह। हमर सभक साहित्यिक सान्ध्य-गोष्ठी हुनके ओतय जमैत छल। सुपौलक अविस्मरणीय साहित्यिक इतिहासक पृष्ठ थिक ओ कालखंड। नवीन जीक सक्रियता आ साहित्यक प्रति समर्पण-भाव विरल छल। अनेक लेखकक अबरजात छल हुनका ओतय। हिंदीक अशोक अशु जेना एक टा संपूर्ण जीवन गमा क' जागल रहथि एहि गोष्ठी लेल।

प्रतिदिन संध्या हम सभ एकट्ठा होइ आ नव-नव रचना पर बात करी। सुनी आ सुनाबी। अशोक अशु नव उमंग आ नव जोश मे जेना आबि गेल रहथि। हुनक उत्साह देखबा योग्य छल आ ताहि मे नवीन जीक जोग। ओह! समय कोना ससरि जाइत अछि हाथ सँ... लगैत अछि जे ओ सभ काल्हुक घटना होइ।

एहि बीच बाबूजी सँ जेठ बहिन, हमर पिसी, जनिका हमसभ 'दीदी' कहैत रहियनि, अत्यंत अस्वस्थ भ' गेलीह। बाबूजी सँ दू-तीन बर्खक जेठ छलि ओ। संपूर्ण जीवन हमरे परिवार मे समर्पित क' देने छलीह ओ। बाल-विधवा छलीह, नि:संतान। ओ जतबे मनोयोग सँ अपन बुच्ची (प्रो. मायानंद मिश्र) केँ पोसने छलीह, ततबे मनोयोग सँ हमरो सभ केँ। अनेक अर्थ मे ओ माताराम सँ बेसी हमर सभक चेष्टा मे आ देखरेख मे रहैत छलीह। ओ हमरा अत्यधिक स्नेह करैत छलीह। हम बी.ए. मे पढ़ैत काल धरि दीदी-ए लग सूतैत रही। दीदीक कोरा मे, हुनक कात मे सुतबाक आ हुनक सान्निध्य मे रहबाक एक टा भिन्न प्रकारक सुख छलैक, विरल आ विलक्षण सुख... किछु ममत्व, किछु स्नेह, किछु नेह-छोह केँ शब्द मे बान्हल नहि जा सकैछ, ओ शब्दक सीमा तोड़ि क' बेर-बेर हाथ सँ पिछड़ि जाइत छैक। दीदी कथा-पिहानीक भंडार छलीह, प्रतिदिन सुतैत काल ओ हमरा सभ केँ विभिन्न कथा सुनबैत छलीह। की करी, की नहि, से बुझबैत रहैत छलीह। हुनक संपूर्ण जीवन नियमित रहलनि, समयक पक्का, एक्कोरत्ती एम्हर-ओम्हर नहि। अनुभवक आँखि कतेक ठोस आ पारदर्शी होइत छैक, से आब दीदीक स्मरण करैत, बुझाइत अछि।

किछु बीति जाओ, दीदी नौ बजे राति धरि अपन ओछाइन पर चलि जाइत छलीह आ ठीक चारि बजे भोर उठि जाइत छलीह। आधा घंटा धरि ओछाइन पर बैसले भजन गबैत छलीह। हुनक बहुत भजन तँ आब मोन नहि अछि मुदा एक-दू टा भजन—'देखा रे एक बाला योगी मेरे द्वार पर आया है...'क अतिरिक्त मैथिलीक भजन ओ नित्तह गबैत छलीह। स्वाभाविक रूपें हम सभ ओतेक भोर मे दीदीक भजन सँ कुड़कुड़ाइत रही, निन्न टूटि जयबाक कारणे। मुदा दीदी नित्यक्रिया सँ निवृत्त भ' हमरा सभ केँ उठाइये दैत छलीह। तकरा बाद दीदी घर-आँगनक काज मे जुटि जाइत छलीह।

हुनका अनटेट्टल बात नहि सोहाइत रहनि। ओ जे उचित बूझैत छलीह, चाहे अहाँ केओ होइ, ओ मुहें पर कहि दैत छलीह। आब अहाँ केँ जेहन लागय। रौब-दाब हुनक एहन जे घर तँ घर, टोलो-समाजक लोक हुनक धाक मानैत छल। स्मरणशक्ति एहन, जे सभक सात पुरखा धरिक नाम हुनक जीहे पर रहैत छलनि। हमर सभ भाइक दोस्त-महिम जे आबय, तकर दादे लग सँ ओ गप करैत रहथि। कतेक लोक केँ जनैत-चिन्हैत रहथिन ओ, से कहब मुश्किल छल। आब अफसोच होइत अछि जे हुनक कहल कथा सभ केँ किएक ने लिपिबद्ध क' लेलहुँ...। आब

किछु नहि कयल जा सकैत अछि।

ओ अपन नियमित जीवन आ नियमित चर्याक कारणे कहियो अस्वस्थ नहि भेलीह। घर-आँगनक अतिरिक्त हमर सभक बाध-बोन सभ टा वैह करैत रहलीह जीवन भरि। हुनका संग धनकटनी मे बाध जाइ, लाइ-मुरही खाइ, मीठा पान खाइ आ साँझ मे दुनू गोटे गाम पर आबी।

ओ कहियो काल अपन सासुर रसियारी सेहो जाइत छलीह। प्रसिद्ध विद्वान डा. लक्ष्मण झा हुनक देओर रहथिन। डा. लक्ष्मण झा दू बेर हमरा ओतय दीदी सँ भेंट करबा लेल आयल रहथि। ओ किएक विवाह नहि कयलनि, तकरो कथा दीदी हमरा सभ केँ सुनौने रहथि। कतेक रास स्मृति दीदीक संग जुड़ल अछि, कतेक रास तीत-मीठ अनुभव...।

से दीदी बीमार भ' गेलीह अकस्मात। अनेक डाक्टर सँ हुनका देखाओल आ विधिवत चिकित्सा आरंभ कयल। दीदी कहियो दबाइ नहि खयने छलीह, से भूजा जकाँ दबाइ फँकैत रहलीह आ दिनानुदिन हुनक स्वास्थ्य खसले जानि। सुपौल मे जे अधिकतम संभव छल से सभ कयल गेलनि हुनक। मुदा अवश्यम्भावी केँ के रोकि सकैत अछि। अंतत: दू मास बीमार रहलाक पछाति ओ 18 जून 1989 केँ हमरा सभ केँ बिलखैत छोड़ि विदा भ' गेलीह। बाबूजीक मृत्युक ठीक उन्नैस बर्ख तीन दिनक बाद हुनक मृत्यु भेल रहनि। जूने मे बाबूजीक मृत्यु भेल रहनि, जूने मे दीदीक भेलनि। अद्भुत सृष्टि-चक्र थिक। दीदी केँ आगि हमहीं देलियनि, कर्त्ता हमहीं बनल रही।

जीवकांत केँ बूझल नहि रहनि जे एहि सँ पूर्व हम अपन एक पित्ती आ अपन नाना केँ सेहो आगि देने रही आ कर्त्ता बनल रही। हुनका दीदीक मृत्युक अवसाद भरल सूचना हम देलियनि तँ ओ 26 जून 1989क पत्र मे हमरा लिखलनि—'अहाँक पत्र बहुत दिन पर आयल। अहाँक पिसीक देहांत भेल अछि। हमरो ओ किछु मोन पड़ैत छथि। '67 मे अहाँक पिताक संग अहाँक निवास पर एक साँझ खयबाक संयोग भेल छल। अहाँक पिताक मृत्युक बाद ओ अंशत: अहाँक पिताक आंशिक रूपें स्थानापन्न भेल होयतीह। जे स्नेह आ प्रेरणा देने होयतीह, से अपूरणीय।

हमरा अटकरें अहाँ पहिले खेप कोनो मृतकक कर्त्ता भेल छी। जँ ई सत्य तँ तत्काल अहाँ एक विचित्र अनुभव मे होयब। निर्वेद आ आत्म-दानक भावना सँ भरल। कदाचित श्राद्ध-कर्म मे पारम्परिक कर्मकांड पर सर्वाधिक आस्था निर्मित होइत छैक।'

एकर बादक अनेक पत्र मे ओ अपन भागिन रणजीतक विषय मे लिखैत रहलाह। रणजीत ओहि समय मैट्रिक कयने रहथि आ कोनो रोजगार वा आगाँक पढ़ाइ

लेल सोचि रहल छलाह। रणजीतक गाम अभुआड़—सुपौल सँ बारह-तेरह किलोमीटर उत्तर। रणजीत लेल जीवकांत हमरा निरंतर लिखैत रहलाह, रणजीतक प्रति हुनक चिंता हमरो चिंतित करैत रहल। हम तत्काल डा. शिवेंद्र दास सँ गप कयल। हुनका क्लिनिक पर ओ कंपाउण्डरीक काज करैत पढ़ियो सकैत रहथि। मुदा, एक टा असुविधा रहैक से ई जे कोनो चिकित्सक ओतय कम्पाउण्डर कैँ भरि दिन तँ रहइये पड़ैत छैक आ आवश्यकता भेला पर रातियो मे ड्यूटी करय पड़ैत छैक आ ताहू मे डा. शिवेंद्र दास सन चिकित्सक ओतय तँ बेसी इमरजेन्सी-ए रोगी आ इमरजेन्सी-ए चिकित्सा। एहि दशा मे रणजीतक कॉलेजक पढ़ाइ बाधित होइत छल। मुदा हम सभ परस्पर रंजीत लेल समस्याक समाधान करैत रहि गेलहुँ मुदा रणजीत हमरा सँ भेंटे ने करथि। भेंट भेलाह बहुत बाद मे, तावत ओ कॉलेज मे अपन नाम लिखबा लेने रहथि। रणजीत कैँ सहायता भेटनि, रणजीत सुख सँ रहथि—ताहि चिंता मे विकल जीवकांतक अनेक पत्र हमरा भेटल। एहि प्रसंग हुनक पहिल पत्र 19 अगस्त 1989क लिखल हमरा भेटल—'अघुआढ़क हमर जेठका भागिन रणजीत अछि, एहि बेर मैट्रिक कयलक अछि। पढ़बा मे कमजोर अछि। आगाँ पढ़य, से हम चाहैत छी। ओकर बाप तेसराँ मरि गेलथिन। अभिभावक नहि छैक। खर्चाक निश्चिते अभाव छैक। पढ़त, तँ सुपौले मे आइ.ए. मे पढ़त। ओकर एहि आयोजन मे सहयोग लेल लिखैत छी। एहि ठाम सँ अघुआढ़ की सुपौल जायब कठिन लगैत अछि। तें ई पत्र लिखैत छी। धीर जी कैँ सेहो पत्र लिखबाक इच्छा करैत छी। एहि ठाम सँ ओहि बच्चा लेल हम की सभ क' सकैत छिऐक? हमर की सभ कयला सँ ओकर पढ़ाइ सुनिश्चित भ' जयतैक? सैह विचार अहाँ सँ हम पुछैत छी।'

राइटर्स कोआपरेटिवक बात ओ फेर अपन पत्र मे उठौलनि। मैथिली पत्र-पत्रिकाक स्थिति पर सेहो बात कयलनि। अपन समकालीन जीवन-स्थिति कैँ देखैत रहब आ तकरा पर अपन टिप्पणी दैत रहब हुनक विशिष्टता थिक।

ओही समय मे एक टा साझी कविता-संग्रहक बात बहुत जोर पर छल आ ताहि लेल हमहूँ बहुत व्यायाम कयने छलहुँ। ओ मूलतः तकर विरुद्ध छलाह। हुनक विरोधक बहुत सार्थक कारण सभ छल। ओ 23 अगस्त 1989क पत्र मे एकर सभक चर्चा करैत लिखैत छथि—'राइटर्स कोआपरेटिव सोसाइटी सहरसा मे खोलबाक बात सोचू। मराठी आ मलयालम मे एहि सँ बहुत लाभ उठाओल गेल अछि। पोथी आ पत्रिका छपबा लेल सहकारी ऋण आ बेचि क' ऋणक शोध।

साझी संकलन मे बहुत झंझट। क्यो एक गोटे बहुत समय आ संयोजकत्व देअय, तँ ई संभव छैक। मुदा, से पात्रता नारायणजी मे नहि छनि। कदाचित हमरो मे नहि अछि।

मैथिलीक पोथी आ पत्रिका बेचब हवाक विरुद्ध चलब सन भ' गेल छैक। ओना साहित्य जीवन सँ कटल वस्तु भ' गेल अछि। हिंदी मे साहित्यिक पोथी आ पत्रिकाक ग्राहक नहि अछि। तथापि फोर्स्ड सेल कर' पड़ैत छैक। हमहूँ एहि ठाम वैदेहीक अंक कैँ फोर्स्ड सेल मे दैत छी।'

31 अगस्त 1989क पत्र मे फेर ओ लिखैत छथि—'अहाँ सभक कविता-संग्रह, साझिए किएक नहि, आबि जइतय, तँ एक टा नीक बात होइतय। मुदा, हम एहि बात कैँ गंभीरता सँ ल' नहि रहल छी। हमरा एहेन काज मे पड़ब अप्रिय लगैत अछि। एहि लेल अहाँ सभ स्वयं सक्षम छी।

पोथी लिखबा लेल (जेना उपन्यास) एखन धरि व्यग्रता नहि उत्पन्न भेल अछि। समय काटि रहल छी। समय काटब नीक लगैत अछि।

रणजीत (अघुआढ़) भेंट करय, तँ ओकर सहायता क' देबैक। पढ़बा मे सेहो कमजोर (खूब कमजोर) छैक। कोनो पार्ट-टाइम काज करय, किछु नगद कमाय, सेहो जरूरी छैक। एक दिन मोन भेल जे ओ कोनो डाक्टर लग रहि कम्पाउण्डरक काज सीखि लितय, तँ एक टा लूरि आ एक टा आमदनीक आशा भ' जइतैक। ओना, की संभव छैक, से हमरा चाहला सँ होब' बला नहि छैक।

अपन व्यर्थता-बोधक एहि कालखंड मे अपन कोनो पोथी छापब, ओहि लेल पाइक ओरिआओन करब कोनो नीक बात नहि लगैत अछि।'

एहि बीच हम 'कारखाना' लेल आ अन्य हिंदी पत्रिका लेल जीवकांतक दू-तीन कथाक अनुवाद कयलहुँ। तकर सूचना हुनका देलियनि। राइटर्स कोआपरेटिव सोसायटी लेल ओ निरंतर प्रयत्नशील रहलाह मुदा ओहो अंततः संभव नहि भ' सकल। मैथिली मे एहि प्रकारक आयोजन करब वास्तविक अर्थ मे कठिन अछि। सभ सभक बाटे तकैत रहैत अछि आ समय ससरि जाइछ। ओ 3 सितंबर 1989क पत्र मे लिखलनि—'वस्तु, बघजर आ मजबा—एहि तीन कथाक अनुवाद अहाँ लग उपलब्ध अछि। एहि मे अहाँ कैँ कोन कथा नीक लगैत अछि? हमरा 'मजबा' कहियो खूब नीक नहि लागल। 'बघजर' नीक लागल छल। 'वस्तु' ओहू सँ नीक लागल छल। तें 'वस्तु'-ए कैँ देल जाय। कारखाना-4 आयल अछि। ओहि मे घोषित अछि जे कारखाना-7 मे मैथिली कथा सभ आओत। एकर अर्थ भेल जे कारखाना-7 कहियो 90क अंत धरि आओत।

राइटर्स कोआपरेटिव सोसाइटी जँ पटना, दरभंगा आ सहरसा मे खुजि जाय, तँ पत्रिका आ पोथीक मामिला मे हमरा लोकनि निश्चिंत भ' जायब। नेतृत्व प्रदान करबा लेल लोक उपलब्ध नहि छैक, तें ई संकट अछि।

रणजीत (अघुआढ़) भेंट करय, तँ ओकर मदति करबैक। कोनो पार्ट टाइम

काज भेटि जाइक आ कालेजो मे पढ़य, एहि तरहें ओकरा लेल सोचल जाय।

कविताक साझी संकलनक लेल अहाँ हमर उत्सुकताक बात बुझिए गेल छी। नारायणजी एखन धरि एहि बात केँ जिआ क' रखने छथि। ओहो दरभंगा-पटना दौड़ करबा लेल तैयार नहि छथि आ ने हुनका प्रेसक काजक कोनो अनुभव छनि। एहि आइडिया केँ अहाँ सन लोकक सक्रियता भेटैक, तँ ई बात मेटेरियलाइज्ड क' सकैत अछि।'

फेर ओ कविताक साझी संकलनक बात केँ एक आधार प्रदान करबाक लेल उत्सुको बुझाइत छथि। 10 सितंबर 1989क एक पत्र मे ओ लिखैत छथि—'नारायणजी एक गोट सहयोगी काव्य-संकलन बहार कर' चाहैत छथि। सहयोगी चाहियनि। रचनाक सहयोग आ प्रकाशन व्ययक सहयोग। जेना एक फर्मा छपबा लेल रचना आ पाइ देल जाय। तीन गोटे एहि तरहें तैयार छथि—शिवशंकर श्रीनिवास आ अशोक। अहाँक नाम संभावित अछि, तारानंद वियोगीक नाम संभावित अछि। अपन अभिमत पठाबी। तारानंद वियोगी एखन कत' छथि ? हुनका जमालपुर लिखल जाय कि महिषी लिखल जाय ? अहूँ किछु लिखियनि, तँ एहि बातक चर्चा क' दियनि। जे किछु उत्तर देथि, से हमरो सूचित करी जे एहि काज मे आगाँ गति आबय।' साझी संकलनक बात बहुत आगाँ धरि बढ़ल। कवि लोकनिक कविता आ आत्मपरिचय सेहो मँगा लेल गेल छल। सभक प्रेस-कॉपी तैयार भेल मुदा ई संकलन छपि नहि सकल।

जीवकांतक भागिन रणजीत लेल हम जतय-ततय बात कयल। कोनो पार्ट टाइम काज वा चिकित्सकक ओतय कम्पाउण्डरीक काज। शिवेंद्र जी सँ गप-शप कयल, ओ तैयार भेलाह।

'कारखाना'क मैथिली अंक लेल तारानंद वियोगीक आग्रहें हम बहुत सक्रिय छलहुँ। रमेश नीलकमलक पत्र सेहो एहि प्रसंग अबैत रहैत छल। जीवकांत 14 सितंबर 1989क पत्र मे एहि सभक उल्लेख करैत लिखलनि—'रणजीत लेल अहाँक दिलचस्पीक हेतु अहाँक प्रशंसा करैत छी। मुदा, रणजीत से भीरू आ संकोची छथि, जे एकर लाभ उठा सकताह, कि नहि, ताहि लेल अनुमान टा क' सकैत छी। डा. शिवेंद्र दासक पत्राचारक पता की छनि ?

एगारह-बारह सितंबर केँ वीरपुर मे रही। रणजीत जँ कोनो काजक बात लिखने रहितथि, तँ वीरपुर सँ अघुआढ़ आ सुपौल धरि जयबाक मोन बना क' गेल रही।

'कारखाना'क मैथिली अंकक निश्चये प्रतीक्षा अछि। मोहन भारद्वाजक लेख भेटि जाय, तँ ठीक, नहियो भेटय, तँ ठीक। बहुत बेसी आग्रहशील होयब, दुख आ चिंताक कारण होइत अछि।'

21 सितंबर 1989 मे ओ रणजीतक विषय मे नव सूचना दैत लिखलनि—

'रणजीत सुपौल मे आइ.ए. मे नाम लिखओलक। से पत्र ओ लिखलक अछि। प्रो. धीरेंद्र नारायण झा 'धीर' सँ ओ दू बेर भेंट करबाक निष्फल प्रयास कयलक अछि। आश्चर्य जे अहाँ सँ भेंट करबाक प्रयास नहि कयलक अछि।'

एहि बीच डा. शिवेंद्र दास केँ जीवकांत पत्र लिखलनि आ तकर उत्तरो शिवेंद्र जी पठौलनि। जीवकांत तकर चर्च 5 अक्तूबर 1989क पत्र मे करैत छथि—'डा. शिवेंद्र दासक सहयोग-भावना सँ आभारी भेल छी। आब रणजीत जतबा जे सहयोग लेअय आ जतबा जे भीरुताक त्याग करय।' फेर ओ 7 अक्तूबर 1989क पत्र मे लिखलनि—'दशमी मे रणजीत अघुआढ़ सँ 5.10 केँ एहिठाम आयल अछि। ओकरा मोन मे छैक जे ओ नित्य अघुआढ़ सँ सुपौल आयब-जायब करय। हम कहैत छिऐक जे ओ सुपौल मे डेरा राखय।

ओ कहैत अछि जे ओ एक दिन अहाँ सँ भेंट करय सुपौल गेल छल, मुदा ओकरा बुतें अहाँक निवास ताकल नहि भेलैक।

ओकरा हम डेरा द' अहाँ सँ डाक्टरक संग काज करबा लेल आ कालेज मे पढ़बा लेल कहि रहल छिऐक।'

एम्हर शिवेंद्र जी सँ रणजीत एक दिन आबि क' भेंट कयलक। शिवेंद्र जी कम्पाउण्डरक ड्यूटी रणजीत केँ बतौलनि, मुदा से अति रहैक। 24 अक्तूबर 1989क एक पत्र मे जीवकांत एकर उल्लेख करैत लिखलनि—'शिवेंद्र जी प्राय: रणजीत केँ कहलथिन अछि जे ओकरा भोर छओ बजे सँ साँझ आठ बजे धरि काज कर' पड़तैक, ताहि सँ ओकरा छगुनता लागल छैक।' सत्य तँ ई थिक जे शिवेंद्र जी नौ-साढ़े नौ सँ पहिने भोर मे ओछाइन नहि छोड़ैत छथि से जाड़ रहओ कि गरमी। मुदा ड्यूटी तँ क्लिनिक केर छल। 30 अक्तूबर 1989क पत्र मे ओ लिखलनि—'शिवेंद्र जी केँ हमर पत्रक स्पष्टवादिता केहेन लागल होयतनि, से अनुमान करब कठिन अछि। अहाँ लोकनिक पीढ़ी लेल रचना-धर्म बहुत कठिन भेल अछि। हमरा सभक पीढ़ी लेल लेखन एतेक कठिन नहि छल। ओ लेखन आक्रोश धरि रहि गेल। आजुक पीढ़ी संघर्षक बात करैत अछि। मुदा संघर्षक कमान (कमांड) ओ ककरा पर छोड़त ? अनका पर छोड़त, तँ ई प्रस्ताव देबाक ओकरा कतेक अधिकार छैक ?' शिवेंद्र जी केँ जीवकांतक पत्र भेटल रहनि।

हुनक 1 नवंबर 1989क एक पत्र हमरा भेटल, जे एना छल—'हरेकृष्ण झा, कोइलख, मधुबनीक खोज-पुछारि हमरा सँ कतोक गोटा करैत छथि। हमरा कोनो पता नहि। ने चिट्ठी, ने भेंट-घाँट, ने पत्रिका मे दर्शन। अहाँ हिनका सँ पत्राचार क' हिनका सँ संपर्क जोड़ी, से आग्रह।

भुवनेश्वर पाथेय, जनकपुरधाम-14, नेपाल सेहो रेणुजी (रमानंद रेणु) जकाँ कुंठित छथि आ जे उपेक्षित अनुभव करैत छथि। हिनको सँ संपर्क सूत्र जोड़ल जाय।

ईहो आग्रह।'

कवि हरेकृष्ण झाक विषय मे जीवकांत केँ एहि सँ पूर्व किछु नहि बूझल रहनि। ओ हमरा सँ अनुरोध कयलनि जे हरेकृष्ण सँ हम पत्राचार करी। ठीक तहिना भुवनेश्वर पाथेय सँ सेहो संपर्क लेल कहैत छथि। हुनक दृष्टि सभतरि जाइत छनि आ कोनो लेखक सँ संवाद बनयबाक लेल, संबंध बढ़यबाक लेल हुनक प्रेरणा-प्रोत्साहन महत्त्वपूर्ण थिक। उपेक्षाक दंश झेलैत कवि-कथाकार भुवनेश्वर पाथेय लेल हुनक मोन विकल छनि। 2 नवंबर 1989क एक पत्र मे ओ लिखैत छथि—'रणजीतक चिंता बनल अछि। एक टा सूचनाक अनुसार डा. शिवेंद्र जी ओकरा कहलथिन जे ओकरा भोर सँ साँझ धरि क्लिनिक पर काज कर' पड़तैक। तखन ओ क्लास कोना क' पाओत?

ओकरा मदतिक जरूरति छैक। तें ई योजना मन मे आनल। ओ ओझरा जाय आ किछुओ ने क' सकय, तँ बेर्थ ओकरा कुंठित आ निराश करबा मे की लाभ? तखन तँ ओ अपने योजनाक अनुसार चलय आ संयोग आ भाग्य पर निर्भर भ' जाय...

हम हरेकृष्ण झा केँ एक पत्र देल अछि जे ओ हमरा सँ संपर्क आ संवाद स्थापित करथि। अहूँ अपना दिस सँ एहि दिशा मे प्रयत्न करी।' 5 नवंबर 1989क पत्र मे ओ रणजीत-प्रसंग पुनः लिखैत छथि—'रणजीत जयताह। हुनका ढेर समस्या छनि। सभ सँ पैघ समस्या छनि जे टाका नहि छनि। एखन हमहूँ हुनका आर्थिक मदति करबा मे क्षम नहि छी। ओकरा लिखबा मे बड़ अशुद्धि होइत छैक। तकरो सभ मे ओकरा मेहनति कर' पड़तैक आ अहाँ सभ केँ मार्गदर्शन कर' पड़त।

परसू शिवशंकर श्रीनिवास आ प्रो. रमेश झा एहि ठाम आयल छलाह। विद्यानंद झा आणन्द सँ अपन पहिल मैथिली कथाक रफ पठओलनि अछि।' नव पीढ़ीक समस्त कवि-लेखकक प्रति हुनक अकुंठ स्नेह आह्लादित करैत अछि। ओ एक-एक समाचार आ घटनाक ध्यान रखैत छथि आ सभ केँ समान रूपें प्रेरित-प्रोत्साहित करैत छथि। नव पीढ़ीक अवांछित आतुरताक प्रति सेहो ओ सावधान करैत छथि। 9 नवंबर 1989क पत्र मे ओ प्रकारांतरें एकरो चर्च करैत छथि—'रचना प्रक्रिया वला लेख कीर्त्तिनारायण मिश्र अहाँ केँ पठा देने छथि। से ओ लिखने छलाह। पछिला पीढ़ीक सभ लेखक सँ ई लेख लिखबा लेब, तँ ई एक टा नीक काज होयत।

नवका पीढ़ी एक टा कविता अथवा एक टा कथा लिखि समालोचक आ इतिहासकार सँ मान्यता आ प्रशस्ति पयबा लेल आतुर भ' जाइत अछि। ओ एक दोसराक चर्चा नहि कर'-सुन' चाहैत अछि। ओ मात्र अपने टा गुणगान सुन' चाहैत अछि। ई प्रवृत्ति बड़ आत्मघाती अछि।'

रचना-प्रक्रिया बला लेख लेल हम अनेक प्रयास कयलहुँ मुदा एहि दिशा मे हमरा अत्यल्प सफलता भेटल। रचना-प्रक्रिया बला लेखादिक उपयोग हम सुपौल

सँ प्रकाशित 'संकल्प' नामक पत्रिका मे कयल।

22 नवंबर 1989क पत्र मे ओ लिखलनि अछि—'कीर्त्तिनारायण मिश्र एक गोट मोट लिफाफ पठओलनि अछि। एहि मे फोटो स्टेट प्रति मे हिंदी कविता सभ अछि। किछु प्रकाशित। किछु प्रकाशन लेल प्रेषित। एक-दू दिन मे ई लिफाफ हम अहाँ केँ पठा देब। कविता सभ मे बहुत नवीनता आ ऊर्जा अछि। पढ़बा मे नीक लागल अछि।' लगले 23 नवंबर 1989क एक पत्र मे ओ लिखलनि—'कीर्त्तिनारायणक कविता दू दिन पहिने डाक मे आयल छल। ओकरा पढ़ि हम यथानिर्देश अहाँक पता पर छोड़ि रहल छी। भेटि जाय, तँ सूचना पठाबी। ड्योढ़ आ चितावालसा दुनू ठाम सूचना पठाबी।

'पूर्वग्रह' संग एक कविता पुस्तिका अयलैक अछि—'उर्वर प्रदेश'। एहि मे कवि लोकनिक संयम आ शब्दक मितव्यय ध्यान आकृष्ट करैत अछि। हम आ नारायणजी एहि पर गप करैत निष्कर्ष बहार कयल जे मैथिली कविता एखन हिंदी कविता सँ बहुत पछुआ गेल अछि। शब्दक मितव्यय मे आ अभिव्यक्तिक संयम मे एखन सभ कवि मे केदार कानन सभ सँ सही कवि छथि। अहाँ एक टा अपन संग्रह छपाउ।' जीवकांत आ नारायणजीक ई महानता थिकनि जे ओ लोकनि हमरा कविताक प्रति एहन दृष्टिकोण रखैत छथि। मुदा, हम अपना केँ तेहन कवि मे नहि मानैत छी। संपूर्ण जीवन कोनो कवि सीखबा मे लागल रहैत अछि, हमहूँ तेहने कविता-छात्र थिकहुँ। 3 दिसंबर 1989क पत्र मे ओ सूचित करैत छथि—'दीबा बले सारी रात'क देखाउँसे पहिल मैथिली कथा-गोष्ठी कटिहार मे कथाकार अशोकक डेरा पर 24.12 केँ होयत। एकर निर्णय हमरा लोकनि 1.12 केँ लोहना मे लेल। एक केँ 'किरण-जयंती जागरण दिवस'क रूप मे मनाओल गेल छल।

एहने गोष्ठी सुपौल, जनकपुर, बोकारो, मुजफ्फरपुर, पटना, ड्योढ़ मे करबाक विचार अछि। आश्चर्यक बात हमरा लेल ई अछि जे एहेन गोष्ठी मधुबनी आ दरभंगा मे करबा योग्य पात्र नहि भेटैत अछि।' 11 दिसंबर 1989क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'मिथिला मिहिरक एक अंक विद्यापति पर्व पर बहार भेल छल। आगाँ बहरयबाक एखन कोनो संभावना नहि अछि। पूरा प्रेस बारह आना डूबि चुकल अछि आ प्रतिदिन आरो बेसी डुबैत जा रहल अछि।

हरेकृष्ण झाक पत्र आयल अछि। एम्हर ओ अनेक मास सँ 'काफी अस्वस्थ' छलाह, से ओ लिखैत छथि। कन्यादानक चिंता सँ बहुत दुखी छथि।

सुपौल मे कथा गोष्ठी करबाउ। 'दीबा जले सारी रात'क ढंग पर।' 15 दिसंबर 1989क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'कथा गोष्ठी, की आनो एहने साहित्यिक आ सामाजिक आयोजन जाहि मे आर्थिक लाभक कोनो गुंजाइश नहि छैक, चलायब

बड़ कठिन छैक। पूरा समाजक व्यवसायीकरण भ' गेल अछि। मुदा घबड़यबाक बात नहि छैक। एखनो ढेर लोक अछि जे एहि प्रकारक अनार्थिक चेष्टा सभ मे लागल अछि।'

हरेकृष्ण झा सँ हुनक संपर्क आ संवाद भ' गेलनि। 'काफी अस्वस्थ' कैँ ओ रेखांकित कयलनि। अपन बहिनक कन्यादान सँ ओ ठीके बहुत चिंतित छलाह, जे बाद मे विद्यानंद झाक संग संपन्न भेलनि। विद्यानंद झा आब मैथिलीक परिचित कवि मे सँ एक छथि।

कटिहार बला कथा गोष्ठी अशोक जीक संग भेल पारिवारिक दुर्घटनाक कारणे संपन्न नहि भ' सकल। ओ आयोजन तत्काल स्थगित क' देल गेल। जे बाद मे प्रभास कुमार चौधरी अपन संयोजकत्व मे मुजफ्फरपुर मे आयोजित कयलनि।

कथा-गोष्ठी अथवा आन साहित्यिक-सांस्कृतिक आयोजन आइयो होइत अछि आ होइते रहैत अछि। ई होइते रहत। बहुत रास लोक ठीके एहन अछि अपन समाज मे जे एहि प्रकारक अनार्थिक चेष्टा मे लागल रहैत छथि। एहन आयोजन सभ नहि होइ तँ साहित्यक गति अवरुद्ध भ' जेतैक, साहित्यिक ऊर्जा आ त्वरा मे कमी भ' जेतैक। एहन प्रयास प्रत्येक साहित्य मे अनवरत होइत रहैत छैक। एहने आयोजन सभ साहित्य मे जीवंतता बनौने रहैत अछि।

1990 मे ओ हमरा चौहत्तरि गोट पत्र लिखलनि, ताहि मे सँ किछु पत्र नितांत वैयक्तिक आ सूचनात्मक अछि। 1 जनवरी 1990क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'प्रभास जी ड्योढ़ अयबाक मौखिक समाद पठओलनि अछि। ओ 10 आ 14 जनवरीक बीच कोनो दिन एहि ठाम अओताह। मुजफ्फरपुर मे कथागोष्ठी जनवरी मे होअय, से प्रस्ताव ओ मानि लेने छथि। प्राय: ओही क्रम मे बात आ योजनाक रूपरेखा पर विचार करबा लेल ओ अओताह।

कथागोष्ठीक स्थगनक समाचार अहाँ कैँ भेटि गेल आ कटिहारक व्यर्थ यात्रा सँ अहाँ सभ बचि गेलहुँ, से सुखद बात थिक।

कोल्डवेभ धनकटनी आ टलछरी कैँ बाधित कयलक अछि।'

कटिहार जयबा लेल सुपौल सँ हमरा लोकनि गाड़ीक व्यवस्था क' लेने छलहुँ। मुदा, ई आयोजन स्थगित भ' गेल छल। अगिला कथागोष्ठी प्रभास जी मुजफ्फरपुर मे कर' चाहैत रहथि। एकरा अतिरिक्त ओहि समयक साहित्यिक क्रियाकलाप सँ संबंधित हुनक 7 जनवरी 1990क पत्रक अवलोकन करी—'मोहन भारद्वाज वर्ष भरिक मैथिली कथा मे श्रेष्ठ कथा पर पुरस्कार देबा पर विचार क' रहल छथि। वर्षक श्रेष्ठ कविता पर तहिना पुरस्कारक आयोजन क्यो करथि, तँ नीक।

विनोद जी रहिका सँ 1980क दशकक श्रेष्ठ कथा सभक एक संग्रह बहार

करबा लेल छथि।

प्रभास जी एहि सप्ताह ड्योढ़ आब' लेल छथि।

समकालीन भारतीय साहित्य अंक 27 मे सुरेश जोशी (गुजराती)क एक कविता आयल छल जे भाखा (अक्तूबर-नवंबर 1989)क अंक मे प्रकाशित सुकांत सोमक कविता सँ मिलैत अछि।'

सुकांत सोमक कविता एही गुजराती कविताक भावानुवाद जकाँ लगैत छल। मैथिली मे एकर हल्ला बहुत भेलैक। हमरा सर्वप्रथम ई सूचना नारायणजी देलनि। हमहूँ सभ ई सुनि आ देखि छगुंता मे पड़लहुँ। सुकांत सोम सन तेजस्वी कविक ई घटना विश्वसनीय नहि लगैत छल।

समकालीन भारतीय साहित्य, अंक 27 (जनवरी-मार्च 1987)क पृष्ठ संख्या 55 पर गुजराती कवि सुरेश जोशी (अनुवाद—प्रा.आर.आर. सिंह)क कविताक शीर्षक छल 'कवि का वसीयतनामा' एतय ओहि कविता कैँ उद्धृत कयल जाइत अछि—

शायद मैं कल न रहूँ—
कल यदि सूर्य उगे, तो कहना कि
मेरी बंद हुई आँख में
एक आँसू सुखाना बाकी है।
कल यदि पवन बहे, तो कहना कि
किशोर वय में एक कन्या के
चुराए हुए स्मित का पक्व-फल
अभी मेरी डाल से गिराना बाकी है।
कल यदि समुद्र छलके, तो कहना कि
मेरे हृदय में चट्टान बन चुके,
कठोर ईश्वर को, चकनाचूर करना बाकी है।
कल यदि चन्द्र उगे, तो कहना कि
उसके काँटे में फँसकर,
बाहर भाग जाने के लिए—
एक मछली अभी भी, मेरे अंदर तड़प रही है।
कल यदि अग्नि प्रगटित हो, तो कहना कि
मेरी विरही छाया की चिता
अभी भी जलानी बाकी है
शायद कल मैं न रहूँ।

आब 'भाखा' (अक्तूबर-नवंबर 1989)क पृष्ठ संख्या 27 पर प्रकाशित सुकान्त सोमक दू टा कविता मे एक कविताक शीर्षक थिक—'अहाँ नहि, हम पुछबै'। एकरा देखल जाय।

कात्हि भोरुका किरिनक संग
सुरुज केँ अहाँ कहबै—
हमर बंद आँखिक पीपनीक छोर पर
एक बून्न नोर अदौ सँ
ओहिना छल-छल करैए
कात्हि जँ पछबा लपटै
अहाँ कहबै
शैशवक सहयात्री सुकुमारिक उधार
मुस्कान एखनो हमर ठोर पर
ओहिना पसरल अछि
कात्हि जँ सागर उत्फाल भ' जाए
अहाँ कहबै
हमर अंतरममे बैसल कालकूट
ईश्वर एखनो ओहिना पलथी मारने अछि
कात्हि जखन चान हुलकी मारै
अहाँ कहबै
हमर ऐकांतिक गुफा मे एखनो
अपस्यांत अछि एक टा मत्स्य कन्या
ओकरे किरण-पथ पर दौड़' लेल
कात्हि आगि जरतै तँ
अहाँ चुप्पे रहब, कि
नवासियोक वसंत मे
हमर कवि एखनधरि कहाँ लहरल-ए
कते दिन आ लगतै

ओहि समय मे कथाकार रमेश सहरसा मे पदस्थापित छलाह। 'मैथिली सृजन' नामक संस्था सक्रिय छल। रमेश एक टा पत्र तैयार कयलनि जे भरिसक चारि पृष्ठक छल। संपूर्ण पत्र मे सुकांत सोमक विरोध कयल गेल छल आ प्रस्तावित छल जे ओहि पत्र केँ भाखा संपादकक अतिरिक्त अन्य लेखक आ संपादक केँ पठाओल जायत। ओहि पत्रक समर्थन मे बहुत गोटे हस्ताक्षर कयने छलाह मुदा जखन

महाप्रकाश आ सुभाष चंद्र यादव केँ पता लगलनि तँ ओ दुनू गोटे अड़ि गेलाह जे एहि प्रकरण केँ एतहि समाप्त कयल जाय। अन्ततः महाप्रकाश आ सुभाष भाइक अनुरोध पर सभ किछु शिथिल भ' गेल छल।

21 जनवरी केँ मुजफ्फरपुर मे सफलतापूर्वक कथा-गोष्ठी संपन्न भेल। आयोजक छलाह प्रभास कुमार चौधरी। एहि कथा-गोष्ठीक संक्षिप्त रपट जीवकांत 26 जनवरी 1990क पत्र मे एहि तरहें लिखलनि—'एकैस जनवरी केँ मुजफ्फरपुर मे कथा-गोष्ठी भेल। सफल भेल। अध्यक्षता कयलनि रमानंद रेणु, संचालन कयलनि प्रभास कुमार चौधरी। कथा पढ़लनि प्रो. रमेश झा, विभूति आनंद, प्रो. शिवशंकर श्रीनिवास, अशोक, सियाराम झा 'सरस'। हम चारि बर्ख पूर्व लिखल कथा—'अन्हरिया पक्खक चान' केँ स्मरण-शक्ति सँ कहल। प्रभास अपन टटका लिखल कथा आ आरंभ कयल जाइत उपन्यासक आरंभिक अंश पढ़लनि। छओ बजे साँझ मे गोष्ठी शुरू भेल आ अगिला भोर मे सात बजे समाप्त भेल। आलोचक लोकनि मे छलाह मोहन भारद्वाज, भीमनाथ झा आ रमानंद झा 'रमण'। रमण कथाकार शैलेन्द्र आनंद पर, हुनक कथा पर, लेख पढ़लनि। क्यो एक पल लेल अलसायल नहि। प्रभास बहुत प्रसन्न छलाह। भोर मे जगरना सँ सभक चेहरा पर भाँख लोटाइत छल, मुदा एक उद्देश्यक पूर्त्ति करबाक प्रफुल्लता सभक आकृति पर बड़ देखार छलैक।

नवतूरक लोक केँ बेसी सँ बेसी सम्मिलित होयबाक चाही। जनकपुर आ सुपौल-सहरसा सँ ककरो नहि अयला सँ बेसी निराशा भेल। ओना दरभंगो सँ सोमदेव, हंसराज आ मधुबनी सँ धूमकेतु इत्यादि मित्र लोकनिक नहि अयबाक कचोट रहल।

अगिला रैली अप्रैलक उत्तरार्ध मे करबाक अछि। ई रैली ड्योढ़ मे होयत।'

कथा-रैली धीरे-धीरे एक आन्दोलनक रूप पकड़ने जा रहल छल। ई पहिल कथा-रैली छल, जाहि मे उपस्थित कथाकार आ आलोचकक चेहरा पर संतोषक दीप्ति छलैक आ अकुंठ उल्लास पसरल छलैक।

एही वर्ष सँ साहित्य अकादेमी स्वीकृत बाइसो भाषा मे अनुवाद-पुरस्कार आरंभ कयलक। एकर सूचना दैत ओ अपन चिंता 18 फरवरी 1990क पत्र मे व्यक्त करैत छथि—'साहित्य अकादेमी अनुवाद ग्रंथ पर सभ भाषा मे पुरस्कार देत। पुरस्कार दस हजार टाकाक होयत। मैथिली मे एहू मे दिक्कत होयत। ने क्यो अनुवाद करैत अछि आ ने क्यो ओकर प्रकाशक अछि। तथापि हमरा सभ केँ पोथी सभक अनुवाद करबा लेल योजना बनयबाक चाही।

पं. यागेश्वर झा, पंचगछियाक कृतित्व पर हमर लेख कर्णामृत (शारदीय अंक) मे आयल अछि।

रामानुग्रह बाबू लग भागवतक मैथिली अनुवाद कयल छनि। प्रकाशित करथि।'

हमर उपनयन-संस्कार 1966 मे भेल छल। यैह पंडित यागेश्वर झा हमर गुरु भेल रहथि। ओहो मैथिली मे अत्यंत उपेक्षित रहलाह। हुनक कृति पर जीवकांतक दृष्टि गेलनि आ ओ ताहि पर लिखलनि, एहि सँ हमरा अतीव प्रसन्नता भेल छल।

1 मार्च 1990क पत्र मे ओ लिखलनि—'माटी के लोग सोने की नैया'क अनुवाद शुरू करू। विनोद भारती ओहि दिन मधुबनी मे कहलनि जे ओ 'दू कुहेसक बाट'क अंग्रेजी मे अनुवाद करबाक बात सोचलनि अछि।

रामानुग्रह बाबूक 'भागवत'क पांडुलिपि उपराब'क प्रयास करू। छपि जायब आवश्यक अछि।

सत्य ईहो अछि जे 88-89 मे हमर सृजनात्मक ऊर्जा बहुत घटल अछि, कही तँ, समाप्तप्राय अछि। तें लिखबाक इच्छा होइतो लिखबा लेल बैसल नहि पार लगैत अछि।

पूरा-पूरी दू बर्ख भेल अछि, एहि बीच मे एको टा कथा नहि लिखल अछि। एहि बीच रोज चिट्ठी लिखबाक अतिरिक्त आर कोनो लेखन नहि कयल अछि।'

'माटी के लोग सोने की नैया' हमरा शुरूहे सँ आकर्षित करैत छल आ दोसर बात जे साहित्य अकादेमी बला अनुवाद पुरस्कारक प्रसंग जीवकांतक प्रेरणा-प्रोत्साहन एहि दिशा मे सहायक भेल छल। मुदा, ओ अनुवाद नहि क' सकलहुँ। योजना तँ बहुत बनैत अछि, मुदा ओहि मे किछुए क्रियान्वित भ' पबैत छल, ताहि मे एक ईहो योजना छल।

रामानुग्रह झा 'भागवत कथा'क विशिष्ट अनुवाद कयने रहथि। एतबे नहि ओ 'काव्य बिम्ब' पर सेहो एक टा पोथी लिखि रहल छलाह। हम आ कलानंद भट्ट अनेक साँझ हुनक श्रोता बनल रही। हुनक सभ टा लेखन एखनो छिड़िआयल छल आ हमरा सभ हुनका पर निरंतर दवाब बनौने रहैत छलहुँ जे ओ पोथी प्रकाशनक विषय मे सोचथि मुदा ताधरि ठीके विलम्ब भ' गेल छल। ओ शिक्षक संघक राजनीतिक अंध-गली मे बौआ रहल छलाह आ ओहि अंध-गली सँ बहरयबाक कोनो बाट ओ ताकि नहि सकलाह मृत्युपर्यंत।

जीवकांत 6 अप्रील 1990क पत्र मे लिखैत छथि—'8.4 केँ दरभंगा मे 'समकालीन कविता' पर सेमिनार मे भाग लेब। 9.4 केँ लोहना मे एक कार्यक्रम अछि। 18.4 केँ आनंद मोहन जीक ओतय विवाह मे बरियाती पुरबाक नोंत अछि। 29.4 कथा-रैलीक आयोजन अछि। अर्थात बेजाय व्यस्तता नहि।

सहरसा सँ पत्रिका बहार करबाक बात नीक अछि। अहाँ लोकनि केँ ड्योढ़क कथा-रैलीक पत्र भेटि गेल अछि आ अहाँ लोकनि ड्योढ़ आबि रहल छी, से बहुत प्रसन्नताक बात थिक हमरा लेल।

अहाँक बदली आ अहाँक अफसर अहाँ लेल असुविधाजनक अछि, ई कोनो आश्चर्यक बात नहि थिक। जे नोकरी करैत अछि, प्रायः एहने परिस्थिति मे करैत अछि। अहूँ नोकरी केँ निमाहि लेब। हमरो लोकनि गलत अफसरक अधीन जीवन कटैत रहलहुँ अछि। जीवन अपन संपूर्णता मे सुस्वादु नहि होइत अछि। तथापि जीवन अपन ऊर्जाक बलें अपन उल्लास आ जिजीविषा केँ बचाक' रखने रहैत अछि।'

जीवकांत निरंतर व्यस्त रहैत छथि। अपन लेखन मे वा कोनो साहित्यिक आयोजन मे। से उपरोक्त पत्रक समाचार सँ प्रकट होइत अछि।

सहरसा सँ हमरा सभ 'उजास' नाम सँ एक मैथिली पत्रिकाक आयोजन कयने रही। सभतरि रचना सभ लेल अनुरोध पत्र पठाओल गेल छल। सहरसा मे 'उजास' पत्रिकाक केन्द्र मे रहथि डा. शिवेंद्र दास। तैयारी युद्ध-स्तर पर चलि रहल छल, प्रचार-प्रसार आ व्यक्तिगत आर्थिक सहयोग सेहो शुरू भेल छल। मुदा, ई गर्भे मे रहि गेल, बहरा नहि सकल।

हम ओहि समय मे छओ मासक प्रतिनियोजन पर त्रिवेणीगंज मे अपन योगदान कयने रही। ओहि ठामक अनुभव हमर नीक नहि छल। तत्कालीन परियोजना पदाधिकारी जे एक महिला छलीह, से हमरा बहुत तंग करैत छलीह। बात-बात मे अनेरुआ आ फालतू काज सभ मे ओझराबय वाली, तमसाहि आ झनकाहि। ओकरा सँ स्वभावतः हमरा पटैत नहि छल, तकरे चर्चा हम अपन पत्र मे कयने रहियनि जीवकांत सँ। ओ जे लिखलनि से ठीके सत्य छल।

ड्योढ़ कथा-रैली मे तैयार रहितो हम नहि जा सकलहुँ। जीवकांत केँ हमरा पर पूर्ण भरोस रहनि जे हम एहि रैली मे अवश्य भाग लेब मुदा से संभव नहि भ' सकल छल। हमरा सँ भेंट करय हमर माम शिवजी चौधरी सेहो खजुरा (मातृक) सँ ड्योढ़ आबि गेल रहथि—जखन कि साहित्य सँ हुनका दूर-दूर धरि कोनो रुचि नहि रहनि। मुदा, हमरा सँ भेंट करबाक लालसा हुनका भरि राति जगौने रहलनि आ ओ अनिच्छापूर्वक, हमर बाट तकैत, मैथिली कथा केँ ओहि राति अंगेजने हेताह। जीवकांत वास्तविक अर्थ मे दुखी भेलाह। ओ ड्योढ़ कथा-रैलीक विषय मे संक्षिप्त रपट 10 मइ 1990क पत्र मे लिखि पठौलनि—'ढेर लोक नहि अयलाह। लगे मे छलाह मोहन भारद्वाज। व्यस्तताक ब्याजें नहि अयलाह। कथा-रैली भेल। अध्यक्षता कयलनि प्रभास जी। भीम भाइ, डा. रमानंद झा 'रमण', प्रो. रमाकांत मिश्र आलोचन कयलनि। तारानंद, देवशंकर नवीन, नवीन चौधरी, अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास आयल रहथि। कीर्त्तिनारायण मिश्र एहि मे सम्मिलित भेलाह। जनकपुर सँ भुवनेश्वर पाथेय, धिमिरे आयल छलाह। प्रो. कृष्णकांत मिश्र आयल छलाह। हम, रमानंद रेणु आ प्रभास जी कथापाठ नहि कयल। हमरा लोकनि केँ नव कथा लिखल नहि छल। एकैस गोट कथा पढ़ल गेल, ताहि पर गप भेल।

तारानंद वियोगी लघुकथा मे अपन जगह पैघ बनओलनि। सरस आ रमेशक कथा नीक लागल। कवि प्रदीप मैथिलीपुत्र अपन पहिल कथा पढ़लनि। सहरसा-सुपौल सँ ककरो नहि अयला सँ उदासी कटैत रहल।' ड्योढ़क कथा-रैली सफल रहल। हुनक दृष्टि कतेक स्फीत आ उदार छनि, से एहि पत्र सँ ज्ञात होइत अछि। तारानंद वियोगी ओही समय मे धुरझार लघुकथा लिखैत छलाह आ लघुकथा मे अपन एक विशिष्ट स्थान बनओलनि। सियाराम झा 'सरस' मूलतः गीत लिखैत छलाह से आब कथा लिखय लगलाह आ नीक-नीक कथा कथा गोष्ठीक माध्यमे हुनक आयल। रमेश तँ मूलतः कथाकार छथिये। प्रदीप मैथिलीपुत्र पहिल बेर कथा लिखलनि, तकर चर्चा जीवकांत सेहो करैत छथि।

15 जून 1990क एक पत्र मे ओ कहैत छथि—'डा. रमानंद झा 'रमण' 'आठम दशकक मैथिली कथा ओ कथाकार' एहि शीर्षक सँ आलोचना-पोथी तैयार क' रहलाह अछि। हिनक योजना नीक लागल अछि। युवा कथाकार लोकनि एहि सँ उत्साहित भेल अनुभव करताह।

भीम भाइ लिखैत छथि जे अगिला कथा रैली दरभंगा मे सात जुलाइ केँ होयत।

वीरपुर आयब संभव नहि भेल। छोट बेटा सेहो वीरपुर जयबाक मोन बनओने छलाह, मुदा आब ओहो एकरा स्थगित करैत छथि आ रक्सौल जयबाक सोचि रहल छथि।

ड्योढ़ सँ वीरपुर धरिक यात्रा बहुत कष्टकर अछि। यात्रा एखन रेल मे, बस मे बहुत धैर्य आ साहसक अपेक्षा रखैत अछि। तें हम कम सँ कम यात्रा करब अपन जीबाक ढंग मे रखने छी।

जूनक पहिल सप्ताह मे हम दू गोट कथा दू बर्खक बाद लिखल अछि। जीवनक उत्तरार्द्ध मे लेखक भदेस लिखैत अछि, सेहो खतरा बनल अछि।

प्रो. रमेश झा बी.डी.ओ. बला ट्रेनिंग मे मोतिहारी जा रहलाह अछि। यात्री जीक इंटर्भ्यू दैनिक नवभारत टाइम्स मे आयल छल, से पढ़ने छलहुँ। यात्री जी फड़िछा क' कहैत छथि जे मैथिली लेखक केँ हिंदी मे लिखबाक चाही। ओ कहैत छथि जे हिंदी मे लिखबा सँ मैथिली लेखक डेराइत छथि। ओ ईहो कहैत छथि जे मैथिली आब लेखनक भाषा नहि रहि गेल अछि, इत्यादि...।'

रमण जी 'आठम दशकक मैथिली कथा ओ कथाकार' पर पोथी तँ तैयार नहि क' सकलाह मुदा एहि लाथें आठम दशकक किछु कथाकार पर ओ लेख अवश्य लिखलनि, जे विभिन्न पत्र-पत्रिकादि मे प्रकाशित भेल।

ओहि समय बीरपुरक सेंट्रल बैंक मे जीवकांतक जेठ बेटा अरुण जी कार्यरत छलाह। छोट बेटा वरुण जी रक्सौलक भारतीय जीवन बीमा निगम मे। जीवकांत

सपरिवार बीरपुर जाइत-अबैत रहैत छलाह। ई यात्रा स्थगित भ' गेल छल। रेल मे आ बस मे भीड़ आ धक्कमधुक्कीक अतिरिक्त बिहारक एहि भू-भागक सड़क पयरे चलबा जोगर नहि अछि, तें धैर्य आ साहस एम्हरुका यात्रा मे ठीके आवश्यक होइत अछि।

जूनक पहिल सप्ताह मे ओ दू गोट कथा लिखलनि मुदा एक आतंक हुनका मोन मे उपजलनि जे जीवनक उत्तरार्द्ध मे लेखक भदेस लिखैत अछि—जखन कि हुनका संग ई बात लागू नहि होइत अछि।

प्रो. रमेश आब उप समाहर्त्ता भ' गेल रहथि आ ट्रेनिंग मे मोतिहारी गेलाह।

यात्री जीक साक्षात्कार ओहि समय मे मैथिली मे बहुत हलचल मचौने छल। ओ अपन साक्षात्कार मे कहलनि जे मैथिली लेखनक भाषा नहि रहल मुदा हुनक ई कथन मिथ्या भेलनि। असंभव थिक हुनक ई टिप्पणी। मैथिली केँ एहि भाषाक कवि-लेखक जिआ क' रखने छथि आ अंतिम दम धरि ई लेखनक भाषा बनल रहत। 5 जुलाइ 1990क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'समकालीन परिभाषा' केँ हम अहाँक पता पठओने छिऐक। ओ पत्रोत्तर नहि देलक अछि। संभव अछि जे अहूँ केँ नहि लिखने होअय। ओ मैथिली अंक लेल मैथिलीक संपादक प्रायः नहि बनाओत। ओ हमरा जे चिट्ठी लिखने अछि, ताहि मे रचना माँगि आर कोनो प्रस्ताव नहि दैत अछि।

'प्राची' साहित्य अकादेमी कलकत्ता शाखा कार्यालय प्रकाशित कयलक अछि। एकर एक प्रति पयबा लेल हम अकादेमीक कलकत्ता आ दिल्ली दुनू कार्यालय केँ पुछारि कयलिऐक अछि। पोथी हम भीम भाइक डेरा पर देखल। एक टा आर उकठाह काज ई कयलक अछि। आन बेर अकादेमी कोनो संग्रह करैत छल, तँ पोथीक लेखकीय प्रति आ रचना लेल एक टा मानद राशि पठा दैत छल। एहि बेर दुनू मे सँ कोनो चीज नहि पठओलक अछि। सुनैत छी जे अनुवादक लोकनि केँ ओ मानद राशि पठा देलकनि अछि। हम एहि लेल सुमन जी केँ पत्र देल अछि। सुमन जी प्राची मे मैथिली भाषाक संपादक छथि।

हम अपन कविता सभक संग्रह लेल प्रेस कॉपी तैयार क' रहल छी। किछु कविताक प्रेस कॉपी अहाँ तैयार क' पठा देनहि छी, तकरो उपयोग क' रहल छी। खर्चा लेल सोचैत छी जे कम सँ कम पाइ एहि मे दूरि करी।

7 केँ दरभंगा जयबाक सोचने छी।'

'समकालीन परिभाषा' सीतामढ़ी सँ प्रकाशित होइत छल। संपादक छलाह ऋषिकेश आ राकेश रेणु। हिंदीक ई पत्रिका एक संपूर्ण अंक मैथिली पर केन्द्रित करय चाहैत छल। एहि पत्रिकाक संपादक केँ सर्वप्रथम जीवकांत सँ संपर्क भेलनि। फेर जीवकांत ऋषिकेश केँ अनेक पत्र देलनि आ ऋषिकेश सब सँ संपर्क करय

लगलाह। 'समकालीन परिभाषा'क एक अंक मैथिली साहित्य पर केन्द्रित आयल, जे खूब चर्चित भेल। ओहि मे नारायणजी, डा. शिवेंद्र दास, जीवकांत आ हमर अनुवाद बेसी आयल। ई अंक समकालीन मैथिली साहित्य केँ लगभग प्रतिनिधित्व करैत छल।

'प्राची' लेल जीवकांतक सोचल गेल बात सही थिक। एहि लेल अकादेमीक दुनू कार्यालय सहित ओ मैथिली प्रभागक संपादक प्रो. सुरेंद्र झा 'सुमन' केँ पत्र लिखलनि।

अपन नव कविता संग्रह लेल ओ तैयारी मे छलाह। प्रेस कॉपी तैयार क' रहल छलाह। 17 जुलाइ 1990क पत्र मे एकरा ओ प्रकट कयलनि—'अपन नव कविता संग्रहक नाम देबाक मोन अछि—'धार नहि होइछ मुक्त।' एहि नामक एक गोट कवितो एहि मे देबाक अछि।

उजास-I आ उजास-IIक डमी नीक लागल अछि। एहि सँ पूर्व हम उजास लेल पाँच गोट कवितो पठा चुकल छी।' लगले 19 जुलाइ 1990 केँ ओ लिखैत छथि—'हम आ नारायणजी उजास लेल पाँच-पाँच टा कविता पठा चुकल छी। उजासक डमी हम घुरा चुकल छी। कीर्त्ति भाइ, भीम भाइ आ अहाँ पर लघु टिप्पणी एहि संग जाइत अछि। भेटय तँ लिखब।

समकालीन परिभाषा लेल कविताक चयन आ अनुवाद नारायणजी क' रहलाह अछि। अहाँ एहि लेल चारि-पाँच गोट कथाक चयन आ अनुवाद करू।' 24 जुलाइ 1990क एक पत्र मे ओ लिखलनि—'कवि लोकनि पर टिप्पणी डाक मे छोड़ल जा चुकल अछि।

पोथी बनारस मे छापब। भदवारिक बाद पोथी छपबा लेल गाम छोड़ब।

तैंतीस बर्ख बितला पर नोकरी सँ रिटायर करबाक बात बहुत चर्चा मे अछि। एहि आधार पर हमर 33 बर्ख 10 नवंबर '90 केँ पुरैत अछि।' 26 जुलाइ 1990क पत्र मे ओ लिखलनि—'जे कवि पत्रोत्तर नहि दैत छथि, कविता नहि पठबैत छथि, हुनक पूर्व प्रकाशित कविता छापि लिअ'। आ, तकर सूचना हुनका द' दियनु।

मैथिलीक पाँच गोट कथा बीछू आ समकालीन परिभाषा लेल ओकरा सभक अनुवाद करू। ऋषिकेश केँ प्राय: ई पता नहि होयतनि जे मैथिली अंक लेल ककरा सँ कोन काज कराओल जाय।' 29 जुलाइ 1990क पत्र मे ओ हमरा लिखलनि—'अहाँक 24.7क पत्र आयल अछि। सुपौलक सेमिनारक फोटो भेटल। प्रसन्नता भेल। एहि फोटोक कोनो प्रति हमरा लग नहि छल। ई फोटो '67ई. मे आर्यावर्त आ इंडियन नेशन मे प्रकाशित भेल देखने रही।

कविता संग्रह लेल कविता बेरायब आ ओकरा क्रम प्रदान करब कठिन अछि। मुदा, एहि मे लागल छी। अगुताइ नहि अछि। कतहु बहरायब, से भदबारिक बादे।'

2 अगस्त 1990क पत्र मे ओ लिखलनि—'विपक्ष' लेल फणीश्वरनाथ रेणु पर लिखब संभव नहि अछि।

अहाँ केँ 'उजास'क प्रसंग मे लेखक लोकनिक पत्रोत्तर नहि अबैत अछि। एहि मे हमरा आश्चर्य नहि लगैत अछि।'

ई समय छल जखन 'उजास' नामक पत्रिकाक प्रकाशन अपन उठान पर छल। पत्रिका लेल, ओकरा रचना लेल जतय-ततय लिखल जा रहल छल। उजास-I समकालीन कविता पर केन्द्रित करबाक विचार छल। कवि लोकनिक कविता आ ताहि पर कोनो दोसर लेखकक टिप्पणी। अनेक रचनाकार सहयोग कयलनि, अनेक पत्रक उत्तरो नहि देलनि। उजास-II समकालीन मैथिली कथा पर केन्द्रित छल आ एहू लेल कथाकार लोकनि सँ निरंतर संपर्क कयल गेल छल। 'उजास' डा. शिवेंद्र दासक संग सहरसाक गंगजला चौक सँ परसरमा आ तकरा बाद सुपौल आयल छल। माने शिवेंद्र जी सहरसा सँ पहिल खेप परसरमा, सुपौल सँ मात्र 10-12 किलोमीटर पर बसल ई गाम, अनेक दृष्टियें महत्त्वपूर्ण अछि, आयल रहथि। परसरमा मे लगभग एक बर्ख ओ प्रैक्टिस कयलनि आ बेस यशस्वी भेलाह। तकरा बाद, अपन छोट बेटीक जन्मकाल मे डा. नवीन कुमार दास आ डा. अशोक कुमार वर्माक प्रयासें सुपौल आबि गेलाह। 'उजास'क सभ टा कार्य-योजना मूलत: हुनके मस्तिष्कक उपज छलनि। एकरे डमी हम जीवकांत केँ पठौने रहियनि। एकर ओ प्रशंसा कयने छलाह। मुदा, अनेक कारणे 'उजास' नहि छपि सकल मुदा रचना सभ हमरा लग एकट्ठा छल, जकर उपयोग कालांतर मे हम डा. नवीन कुमार दासक सहयोगें 'संकल्प' मे क' सकलहुँ।

'समकालीन परिभाषा' क काज एही समय चरम पर छल। काज सभ एम्हर हम आ ओम्हर नारायणजी क' रहल छलाह। किछु अन्यो मित्र लोकनि एहि काज मे सहायक सिद्ध भ' रहल छलाह।

एही समय हम 'विपक्ष' सँ जुड़लहुँ। एकर संपादक भारत यायावर हमरा अनुरोध कयलनि जे रेणु फणीश्वरनाथ जें कि मिथिलांचलक छथि, मैथिली मे हुनक अवदान सेहो छनि तें मैथिलीक लेखक रेणुक बारे मे की आ कोना सोचैत छथि, जँ ई नहि हो तँ रेणुक कृति-केन्द्रित लेख व हुनका पर कोनो संस्मरण—'विपक्ष' लेल पठाबी। एहि लेल हम प्रयास शुरू कयल आ एहि मे बहुत सफल रहलहुँ। फणीश्वरनाथ रेणु पर केन्द्रित ई पत्रिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण सिद्ध भेल। मैथिलीक अनेक लेखकक सहभागिता एहि अंक मे रहल। जाहि मे प्रमुख छलाह भारतीभक्त, मायानंद मिश्र, प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन, डा. महेंद्र, महाप्रकाश, डा. नवीन कुमार दास, राम चैतन्य धीरज आ हम। 'विपक्ष'क ई अंक बाद मे पोथी रूप मे 'मृदंगिये का मर्म' नाम सँ सेहो आयल, जे वाणी प्रकाशन प्रकाशित कयने छल।

जीवकांत अपन नव कविता संग्रह लेल मोन बना रहल छलाह। ओ एहि पोथी केँ बनारस मे छपाब' चाहैत छलाह। हुनक कोनो भातिजक ससुर ओतय रहैत छलाह, हुनके सौजन्य सँ।

24 जुलाइक पत्रक संग हुनका हम सुपौल मे भेल मैथिलीक नवकविता सेमिनार : 1967क दुर्लभ फोटो पठौने रहियनि, जे हुनका लग नहि रहनि।

ओ आब अवकाश प्राप्त करताह, तकर सूचना सेहो देलनि, जे तखन बहुत चर्चा मे छल। 13 अगस्त 1990क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'शिवशंकर श्रीनिवास सेहो अपन कथा-संग्रह छपबाक विचार करैत छथि। हमरा पुछैत छथि जे इलाहाबाद मे छपाइक की दर छैक? इलाहाबाद मे अहाँक कोन संपर्क अछि?

एहि दुनू विषय मे मार्गदर्शन करू। बनारस मे हमर एक भातिजक ससुर काज करैत छथि। वैह बनारस मे पोथी छपयबाक प्रस्ताव देलनि। कहने छलियनि जे बनारस पहुँचि चिट्ठी देबा लेल। एखन धरि ओ चिट्ठी नहि देलनि अछि।

रेल-बस-डाक-अखबार बन्न अछि। चिट्ठी लिखि रखने जाइ छी। कैथिनियाँ, झंझारपुर मे एक गोट खून भेल अछि। अनिश्चयक वातावरण मे बहार होयब ठीक नहि लगैत अछि। स्कूल अनिश्चित काल लेल बन्न अछि।

'धार नहि होइछ मुक्त'क कभर डिजाइन पठयबाक बात अहाँ लिखने रही। भ' सकय, तँ बनाउ आ पठाउ।'

22 जुलाइ 1990क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'ऋषिकेश अहाँक पत्रोत्तर आ सहयोगक आश्वासनक चर्चा कयलनि अछि। सहयोगक आश्वासन शिवशंकर श्रीनिवास सेहो देलथिन अछि। आर गोटे निश्चल आ निर्वाक।

20 सँ रेल आ डाक चालू भेल अछि। दस दिन सभ किछु बन्न छल।'

29 अगस्त 1990क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'अहाँक तीन पत्र एक संग काल्हि भेटल। आरक्षण-विरोधी उत्तेजनाक कारणे सकरी सँ निर्मली धरि गाड़ी चलब 10 सँ 20 अगस्त धरि बन्न रहल आ तें डाक-सेवा सेहो मृत भेल छल। डाकक दुर्गतिक एक टा ई देखार कारण। झंझारपुर मे एक छात्रक हत्या भेला सँ ई क्षेत्र संवेदनशील बूझल जा रहल अछि। मधुबनी जिलाक बेनीपट्टी आ मधुबनी सब-डिवीजनक हाइ स्कूल सभ केँ 22.8 सँ खोलबाक आदेश निर्गत भेल अछि, मुदा झंझारपुर सब-डिवीजनक हाइ स्कूल सभ एखनो बन्न अछि। तें निट्ठाह बैसारी मे छी। भरि दिन सुतल रहैत छी।

'बघजर'क अनुवाद अहाँ लोकनि 'तन्द्रा' करैत छी, चलि सकैत अछि, मुदा ओकर अर्थ भेल 'बाघक डर।' 'तन्द्रा' केँ उर्दू मे खुमार आ अंग्रेजी मे हैंग ओभर कहल जा सकैत छैक। 'बघजर लागब' मोहाबरा छैक, तकर अर्थ होयतैक डेरा

जायब। बाघ सँ नजरि मिलैत देरी शिकार निश्चल आ सुन्न भ' जाइत अछि। अहाँ केँ नीक लागल, 'तन्द्रा'। 'तन्द्रा' चलि सकैत अछि।

फणीश्वरनाथ रेणु पर लेख लिखबाक हमर मोन नहि बनैत अछि। हुनक पोथियो सभ पढना ढेर दिन भेल आ हमरा लग हुनक कोनो पोथियो उपलब्ध नहि अछि। तें क्षमा कयल जाय।

माया बाबूक कथा सभक अनुवाद करबाक अहाँक योजना नीक अछि। जँ ओ प्रकाशित होअय, तँ बहुत प्रसन्नताक बात होयत।

'वैदेही' केँ बेचू। जनता मे मैथिली केँ नहि ल' जायब, तँ आर प्राण-संकट उत्पन्न होयत। हमरा लग जखन वैदेहीक पैकट अबैत अछि, तँ ओकरा टहलबा काल अपना संग बाजार मे ल' जाइत छी। पढ़ल आ अपेक्षित लोक सभ सँ मैथिलीक नाम पर दू गोट टाका चंदा मँगैत छी, पाइ भेटि गेला पर ओकरा हाथ मे वैदेहीक एक प्रति पकड़ा दैत छी। आब कह' नहि पड़ैत अछि। आब बीस प्रति एक घंटा मे बेचि ओकर दाम अगिला दिन मनीआर्डर सँ पठा दैत छिऐक।

पत्रिका नहि अछि, पत्रिका नहि बिकाइत अछि। पोथी नहि अछि, पोथी बिकाइत नहि अछि। तखन, हमरा सभ केँ किछु लिखिये क' की होयत? एखनो किछु लिखैत छी, तँ कोना आ कत' छपत, से चिंतित करैत अछि। एक टा ईहो कारण जे लिखबा लेल बैसबाक इच्छा नहि होइत अछि।

वैदेही बेचू। कर्णामृत बेचू। आँजुर बेचू। मैथिली अकादेमी पत्रिका बेचू। पाठक बनायब, ग्राहक बनायब बड़ जरूरी छैक।'

30 अगस्त 1990क पत्र मे लिखलनि—'फणीश्वरनाथ रेणु, जें की मैथिली लेखक लोकनि सँ पूर्णतः असंपर्कित भ' गेल छलाह, तें हमरा सन मैथिली लेखक हुनका ओहिना जनैत छल जहिना हिंदीक निर्मल वर्मा आ उर्दूक कोनो लेखक केँ जनैत छल। तें मैथिली लेखक केँ फणीश्वरनाथ रेणु पर लिखब कठिन लगैत छैक। कठिने नहि अबूह।' 10 सितंबर 1990क एक पत्र मे लिखैत छथि—'ऋषिकेश केँ अहाँक पठाओल अनुवाद सभ भेटि गेल छैक, से ओ लिखैत छथि। अहाँक एहि सहयोग लेल हमहूँ अहाँक आभारी भेल छी।

अनेक लेखक मित्र लोकनि हमर आ ऋषिकेशक पत्र पर पाषाण भेल निष्क्रिय रहलाह।

6 सँ 9 धरि कोशीक पूब रही। यात्राक अव्यवस्थाक डरें सुपौल दिस अयबाक मोन रहैतो डेग नहि उठल।

दशमी मे परिवारक बेदरा सभ गाम अबैत छथि, से प्रतीक्षा उत्फुल्ल करैत अछि।'

एहि समय मे 'पहल' इलाहाबादक जय हनुमान प्रिंटिंग प्रेस मे छपैत छल। हमरा ओहि प्रेस सँ थोड़-बहुत संपर्क छल। ओतय सँ हम पत्राचार कए छपाइक दर मँगौने रही। सैह बाद मे हम हुनका सूचित कयने रहियनि। डा. शिवशंकर श्रीनिवास सेहो अपन कथा-संग्रह लेल सोचि रहल छलाह। बनारस बला जोगार संभव नहि भ' रहल छलनि, जकर ओ प्रतीक्षा करैत छलाह।

एक तँ आरक्षण-विरोधी परिवेश मे सौंसे भारत जरि रहल छल, सभ किछु अस्त-व्यस्त आ त्रासदपूर्ण छल। कखन की भ' जायत, तकर कोनो ठेकान नहि। कतहु रेल बंद, कतहु बस बंद, अत्यंत अराजक वातावरण। एहि अराजकता मे की भ' सकैत छल?

मुदा, हुनक कविता-संग्रह लेल हम सुस्मिता सँ किछु स्केच बनबाओल आ जीवकांत केँ पठाओल। ई सभ टा अलग-अलग स्केच छल आ अपन कल्पना सँ बनाओल गेल छल। बाद मे सुस्मिताक अनेक स्केच मैथिलीक पोथी-पत्रिका मे आयल आ प्रशंसित भेल।

'बघजर' जीवकांतक कथा थिक। एकर अनुवाद हम सभ कयल 'तन्द्रा'। ई गलत अनुवाद छल। मुदा, ओ हमरा सभक, माने हमर आ डा. शिवेंद्र दासक मोन रखबाक लेल, एहि अनुवाद केँ स्वीकार कयलनि। मुदा 'बघजर'क संपूर्ण व्याख्या अपन पत्र मे कयलनि—ताहि सँ असहमत हेबाक कोनो गुंजाइश नहि बचैत छल।

फणीश्वरनाथ रेणु पर 'विपक्ष'क एक संपूर्ण अंक एकाग्र होयबाक छलैक। तकरा अतिरिक्त फणीश्वर नाथ रेणुक रचना प्रकाशनक आ हुनक हेरायल-भोतिआयल रचना सभ केँ ताकि एकट्ठा करबाक प्रसंग 11 अक्टूबर 1990क एक पत्र मे भारत यायावर बोकारो सँ हमरा लिखलनि—'पटना से सोशलिस्ट पार्टी का मुख-पत्र साप्ताहिक 'जनता' का प्रकाशन होता था। इसमें 1946 से 53 तक रेणु के कथा-रिपोर्ताज, कहानियाँ, निबंध आदि बीस-पच्चीस की संख्या में छपे थे, इनमें अब तक सिर्फ तीन ही उपलब्ध हो पाए हैं।

1950 में डा. केसरी कुमार के संपादन में 'प्रतिनिधि कहानियाँ' पुस्तक छपी थी। इसमें रेणु की 'कोसी डायन' संकलित है। इस पुस्तक का भी पता लगाएँगे।

पटने से कहानी प्रधान पत्रिका 'कहानियाँ' (मासिक) का प्रकाशन 1955-56 के लगभग होता था। इसमें भी रेणु जी की तीन-चार कहानियाँ छपी थीं। इसके अलावा 1958 से 65 के बीच में 'योगी', 'उत्तर बिहार', 'हुंकार' आदि साप्ताहिक पत्रों में भी रचनाएँ छपी हैं।

रेणु वाले अंक को मैं चार-पाँच सौ पृष्ठों में निकालना चाहता हूँ—पुस्तक रूप में। इसलिए और रचनाओं की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। आपके जैसे सहयोगी-मित्र

को पाकर इतना खुश हैं और इतनी ऊर्जा अनुभव कर रहा हूँ कि व्यक्त करना मुश्किल है। आज राज मोहन झाजी से भेंट हुई और आपके विषय में बातें हुईं। उन्होंने बताया कि 'उजास' के लिए पत्र भेजने के बाद आपने पत्र लिखना बंद कर दिया है। वे इस बात पर दुखी भी थे। उनका अगले महीने तक बोकारो से स्थानांतरण भी हो जाएगा। पदोन्नति भी उनकी हुई है।'

तहिना फेर 1 नवंबर 1990 केँ बोकारो सँ ओ लिखलनि—'डा. नवीन कुमार दास जी से आप रेणु जी पर संस्मरण अवश्य ही लिखवाएँ। मैं भी उन्हें एक पत्र लिख रहा हूँ। ...रामानंद रेणु जी का संपर्क भी फणीश्वर नाथ रेणु से अवश्य रहा होगा। वे मैथिली के साथ हिंदी में भी लिखते रहे हैं। उनसे भी संस्मरण लिखवाया जा सकता है। मुझे पूर्णिया के एक व्यक्ति ने बताया था कि शायद 'नवनीत' या 'भारती' पत्रिका में फणीश्वर नाथ रेणु की एक कविता छपी थी, उसी अंक में रमानंद रेणु जी की रचना भी थी। वह कविता मुझे नहीं मिल पायी।

'जनता' में 1946 से 53 तक के अंकों में रेणु जी की कई रचनाएँ प्रकाशित हुईं—'जै गंगा', 'डायन कोसी', 'हड्डियों का पुल', 'एक-टू आस्ते-आस्ते', 'घोड़े की टाप पर लोहे की रामधुन', 'खंडहर', 'सरहद के उस पार', नेपाल पर 'हिल रहा हिमालय' (कई किस्तों में, 1951), 'हड्डियों की सड़क' आदि-आदि रचनाएँ। 'जै गंगा' 1946 या 1947 में प्रकाशित हुई थी एवं 'कोसी डायन' या 'डायन कोसी' 26 जनवरी 1948 के अंक में संभवत:। 'डायन कोसी' को बाद में डा. केसरी कुमार ने 1950 में प्रकाशित 'प्रातनिधि कहानियाँ' पुस्तक में संकलित भी किया था। वह पुस्तक अब भी छपती है, लेकिन डा. केसरी कुमार ने 'कोसी डायन' को बाद के संस्करणों में निकाल दिया।

मैं 'जनता' की फाइल की तलाश में जनता प्रेस गया था। वहाँ ज्ञात हुआ कि अब उसकी फाइल वहाँ नहीं है। शायद आप कोशिश करें तो कहीं से उपलब्ध हो जाये या उमा बाबू ही बता सकते हों कि वह कहाँ उपलब्ध होगी।

इसके अलावे रेणु जी जनता प्रेस से ही 'नया कदम' नामक हिंदी एवं नेपाली में एक साप्ताहिक का संपादन-प्रकाशन नेपाली कांग्रेस के लिए 1952 में करते थे, उसकी सभी रचनाएँ उन्हीं की लिखी होती थीं। 1949-50 में वे पूर्णिया से 'नई दिशा' साप्ताहिक पत्र निकालते थे। उसकी भी अधिकांश रचनाएँ उन्हीं की लिखी होती थी।

इन पत्रों के अलावा पटना से प्रकाशित साप्ताहिक 'आवाज' में भी वे रिपोर्ताज लिखते थे। पटना से छठे दशक में गुरु उप्पल के संपादन में 'कहानियाँ' मासिक पत्रिका निकलती थी। इसमें चार-पाँच कहानियाँ रेणु जी की छपी थीं। इन पत्रों के

अलावा पटना के अन्य साप्ताहिक पत्रों में भी उनकी रचनाएँ छपती थीं। 'योगी', 'उत्तर बिहार', 'नवशक्ति' आदि में।

रेणु जी की प्रारंभिक कहानियाँ साप्ताहिक 'विश्वमित्र' में छपी थीं। उनमें अधिकांश मुझे मिल गयी हैं। 1946 के जून से 47 के जून तक के अंक मुझे नहीं मिल पाए हैं। कलकत्ता के मासिक 'विनोद' पत्रिका में भी कुछ कहानियाँ छपी थीं, जो उपलब्ध नहीं हुई हैं।

ये कुछ पत्र-पत्रिकाएँ हैं, जिनमें रेणु जी की असंकलित रचनाएँ हैं। 'फणीश्वर नाथ रेणु रचनावली' बहुत शीघ्र ही प्रकाशित होने को है। यदि ये रचनाएँ मिल जाएँ और इस पुनीत कार्य में आप सहयोग करें तो यह पूरे हिंदी साहित्य के लिए बड़ा ही उपकार होगा।

नवंबर में आप कब पटना जाने वाले हैं? आप पटना में कब से कब तक और कहाँ ठहरेंगे, यदि लिख भेजें तो मैं भी उसी समय पटना आने की कोशिश करूँगा।

'विपक्ष' के रेणु अंक में आपका नाम सहयोगी के रूप में प्रकाशित कर रहा हूँ।

देश की अराजक और रचनाविरोधी गतिविधियों से इन दिनों बेहद तनावग्रस्त मन:स्थिति में जी रहा हूँ।'

—भारत यायावर

भाइ भारत यायावर हमरा मैथिली लेखक लोकनि सँ रेणु जी पर लिखयबाक भार देने रहथि। रेणु जी आरंभ मे, प्रो. मायानंद मिश्र सँ प्रेरित भ' मैथिली मे पहिल कथा लिखने रहथि। तकर शीर्षक देलनि प्रो. मायानंद मिश्र—नेपथ्यक अभिनेता। अपना ढंगक अद्‌भुत कथा छल ई जे 'अभिव्यंजना' मे छपल छल। दोसर बात जे ओ खाँटी मैथिल छलाह आ मैथिली मे बजैत छलाह। यात्री जीक नामे हुनक किछु पत्र मैथिली मे उपलब्ध अछि। तें भारत यायावरक एहि आग्रहक रक्षार्थ हम मैथिलीक लेखक लोकनि सँ निरंतर अनुरोध क' रहल छलहुँ जे ओ सभ फणीश्वरनाथ रेणु पर लिखथि। एहि अभियान मे हमरा बेस सफलता भेटल आ रेणु जी पर अनेक लेख प्राप्त भेल, जे 'विपक्ष'क रेणु-अंक मे प्रकाशित भेल।

प्रो. मायानंद मिश्रक राजनीतिक व्यंग्य कथा सभक हम अनुवाद करय चाहैत रही। ई मैथिली मे अपना ढंगक विरल कथा सभ थिक। जाहि तन्मयताक संग कथाकार मायानंद मिश्र राजनीतिक भयावहता कें, जनविरोधी रवैयाक राजनीति आ ओकर छद्‌म कें एहि कथा सभ मे उद्‌घाटित करैत छथि, से मैथिली कथा कें एक टा व्यापकता आ एक नव आयाम प्रदान करैत अछि। मैथिली मे एहन तरहक कथाक

अभाव सेहो अछि। तें हम एहि कथा सभक अनुवाद हिंदी मे करय चाहैत रही। मुदा, आन अनेक योजना जकाँ हमर ई योजना क्रियान्वित नहि भ' सकल छल।

मैथिलीक पोथी आ पत्रिकाक विषय मे जीवकांतक चिंता आ चिंतन सार्थक छनि। ओ 'वैदेही' कोना बेचैत रहथि आ कोना पाठक-वर्गक निर्माण करैत रहथि, तकर एक रोचक आ प्रेरक दृष्टांत अपन पत्र मे दैत छथि। लेखक लेल पाठकक होयब प्राथमिक बात थिक। आखिर लेखक लिखैत ककरा लेल अछि? निश्चित पाठके लेल। जँ पाठक नहि हो तँ लेखनक कोनो अर्थ नहि भ' सकैत अछि। ओ अपना परिसर मे पाठक-वर्गक एक टा पैघ समूहक निर्माण कयलनि आ तकरा परिष्कृत-संस्कारित करबाक काज सेहो कयलनि आ ताहू सँ महत्त्वपूर्ण थिक जे ओ हमरो एहि दिशा मे काज करबाक लेल प्रोत्साहित कयलनि। सभ पत्रिकाक प्रति हुनक समान भाव रहलनि, से निश्चित रूपें हुनक विरल मैथिली-प्रेमक उदाहरण थिक। ओ मैथिलीक पाठक आ ग्राहक बनायब अत्यंत आवश्यक मानैत छथि।

अपन पत्र मे मैथिली लेखकक निष्क्रियता पर सेहो गप करैत छथि। एकर एक व्यापक अनुभव जीवकांत कें छनि। एम्हर आबि एहन अनुभव सँ हमरो साक्षात्कार होइत रहल अछि आ मैथिलीक अनेक संपादक एहि अनुभव सँ अपरिचित नहि छथि।

हुनक पारिवारिक दायित्व आ पारिवारिक दुनिया केहन नेह-छोह सँ भरल छनि जे दशमी मे हुनक पौत्र-पौत्री गाम आब' बला छनि आ ई समाचार वा ई प्रतीक्षा हुनका उत्फुल्ल कयने छनि।

13 सितंबर 1990क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'10 सितंबरक लिखल अहाँक पत्र आ 'धार नहि होइछ मुक्त'क सात गोट डिजाइन प्राप्त भेल अछि। नारायणजीक नामे पत्र सेहो भेटल अछि जे हुनका उपलब्ध करयबाक व्यवस्था कयल अछि।

काल्हि जनकपुर सँ भुवनेश्वर पाथेय पत्र द्वारा सूचित कयलनि अछि जे प्रो. धीरेंद्र बहुत बीमार भ' गेल छथि आ डाक्टर हुनका बेड-रेस्टक सलाह देने छथि। अक्तूबर मे ओ कथा रैली आयोजित करबा लेल छलाह। जनकपुरक संस्था ओकर आयोजन करबा लेल वृत्त अछि, मुदा ओ आरूढ़ छथि जे ओ कथा-रैली वैयक्तिक स्तर पर करताह आ तें संस्था कें एकर भार नहि देताह।

अहाँक विचार बहुत व्यावहारिक बुझायल अछि, तें हम ऋषिकेश कें लिखि देल अछि जे ओ पहिने रचना सभ कें चुनथि आ चुनले रचनाक अनुवाद-अधिकार आ प्रकाशन-अधिकार उपलब्ध करयबा लेल अनुवादक लोकनि कें प्रस्ताव पठाबथि।

नारायणजी हमर सन्निधि मे छथि। अहूँ हमर सन्निधि मे छी। नारायणजी हमर संपर्क मे रहलो उत्तर बहुत लाभ मे नहि छथि, तकर कुंठा ओ अपन कथा 'पान' मे लिखने छथि। एहि कथा कें ओ बहुत निर्मम आ वस्तुनिष्ठ भ' लिखने छथि।

एहि कथा पर प्रभास जी हुनका साधुवाद देने रहथिन आ नवीन चौधरी हुनका कहलथिन जे हुनका एतेक निर्मम आ कृतघ्न नहि होयबाक चाही। 'पान' कथा एखनधरि अप्रकाशित अछि। ओकरा मँगा क' पढ़ी आ कोनो मैथिली पत्रिका मे प्रकाशित करबाउ। अहाँ सहयोग देबा लेल सतत तैयार रहैत छी आ लगातार लिखैत जयबाक अहाँ मे अजस्र ऊर्जा अछि, से ईर्ष्या आ प्रशंसाक बात थिक। आब किछु दिन विश्राम करू।

हमहूँ शिवशंकर श्रीनिवासक कथा संग्रहक भूमिका लिखि देल अछि। आब नवकविता पर अध्यक्षीय भाषण लेल लेख तैयार करब। व्यस्त आ नीकें छी।'

14 सितंबर 1990क पत्र मे ओ लिखलनि—'नारायण जी कैँ अहाँक लिखल चिट्ठी भेटि गेल छनि। हुनका हम 'पान' कथा उतारि क' अहाँ कैँ आ 'कर्णामृत' कैँ पठयबा लेल कहि देल अछि।

'धार नहि होइछ मुक्त'क कवर डिजाइन भेटि गेल अछि। स्केचिंग करबा लेल हम अहाँक पत्नीक प्रति आभारी भेल छी। आशा अछि, ओहि मे सँ कोनो डिजाइनक हम उपयोग करब।

चेतना समिति सँ स्मारिका लेल रचनाक माँग भेल अछि। ओहि सँ पूर्व कृष्णकांत बाबूक लेखक सम्मेलन लेल नवकविता पर एक लेख लिखब। लेख मे प्रवृत्ति सभक चर्चा करब, कवि सभक आ रचना सभक नाम लेबा मे उत्सुकता नहि देखायब।' 16 सितंबर 1990क पत्र मे ओ लिखलनि—'मैथिली लेखक सम्मेलन लेल एहि दशकक कविता पर एक छोट-सन टिप्पणी लिखि लेल अछि।

पंडित गोविंद झा जी नाटक पर एक सूचनात्मक लेख 'समकालीन परिभाषा' कैँ पठा देलनि अछि। ढेर लोक छथि जे आग्रहो कयला पर टस सँ मस नहि भेलाह।

पंचानन मिश्र, शरदिन्दु कुमार चौधरी आ चंद्रेश कैँ स्मारिका लेल रचना पठओने छी।'

22 सितंबर 1990क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'भीम भाइ दू मास सँ निराश आ कुंठित भेल बौक रहलाह अछि। अपन निराशा कैँ व्याख्यायित करब संभव नहि छनि।

अहीं जकाँ हमरो अनकर फरमाइश पुरबा मे आलस नहि होइत अछि। तें हमरा सभ अपना मोनक बात लिखबाक योजना बनाबी आ किछु बेसी महत्त्वपूर्ण वस्तु भाषा आ साहित्य कैँ प्रदान करी।'

24 सितंबर 1990क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'अहाँक तीन गोट (दू लिफाफ, एक पोस्टकार्ड) आजुक डाक मे भेटल अछि। अहाँक बीमारीक चिंता भेल अछि। एक मास लिखबा सँ परहेज करू। अहाँ कैँ पत्रो बहुत लिखबाक दिनचर्या बनि गेल अछि। पत्र लिखब घटाउ।

हमरो संग पत्र लिखबाक अभ्यास एक 'सनक' जकाँ विकसित भेल अछि। एकरा हमहूँ घटाब' चाहैत छी। अहूँ घटाउ। रोग नहि बनयबाक चाही, नीको वस्तु कैँ। नीको वस्तु सँ रोगी नहि बनबाक चाही।

शिवशंकर जी लिखैत छथि जे प्रो. धीरेंद्र जीक मानसिक रोग बढ़ि गेल छनि। ईहो चिंताक बात। हमरा लोकनि मे अनेक लोक मानसिक रोगी छथि, सेहो बात दुख दैत अछि।

नारायणजीक कथा 'पान' सुनि क' हमरा एको पाइ क्लेश नहि भेल अछि। नारायणजी सँ हमर संपर्क एखनो सामान्य आ मधुर अछि।

अहाँ हमरा पितृवत् मानैत छी, से बोध हमरो अछि। ई बात हमरा लेल आनंद आ गौरवक विषय थिक। ई बात फराक छैक जे हम एहि दायित्वक निर्वाहक कोनो अवसर नहि पाओल अछि। हमरा सन साधारण लोक सँ, जे घोर आत्म-केन्द्रित आ आत्मलिप्त अछि, तकरा सँ कोनो उपकारक संभावना सेहो कम अछि।

अहाँ शीघ्र स्वस्थ भ' सामान्य दिनचर्या मे लागि जाइ, तकर इच्छा प्रबल अछि।'

महत्त्वपूर्ण अछि जीवकांतक 'कंसर्न'। ओ मैथिलीक लेखक सँ कतेक जुड़ाव चेतनाक स्तर पर आ भावनाक स्तर पर रखैत छथि से अनुभव करबाक वस्तु थिक। प्रो. धीरेंद्र जनकपुर मे अस्वस्थ छथि। ई एक टा समाचार थिक जे कथाकार भुवनेश्वर पाथेय हुनका सूचित करैत छनि। ठीक तहिना कथाकार डा. शिवशंकर श्रीनिवास सेहो धीरेंद्र जीक अस्वस्थताक सूचना हुनका दैत छनि आ जीवकांत एहि सँ विचलित आ बेचैन भ' जाइत छथि। सम्वेदनाक ई गहन प्रसार जीवकांत कैँ महत्त्वपूर्ण बनबैत छनि। दोसर, हुनक पत्र सँ प्रो. धीरेंद्रक स्वाभिमानक एक पक्षक, गंभीर पक्षक, उद्घाटन सेहो होइत अछि। ओ कथा-रैली आयोजित करय चाहैत छथि मुदा ताहि मे संस्थाक मदति नहि लेब' चाहैत छथि, ओ रैलीक आयोजन वैयक्तिके स्तर पर करबा लेल कटिबद्ध छथि।

'समकालीन परिभाषा'क प्रश्न पर हम जीवकांत कैँ मात्र एक टा प्रसंग लिखि पठौलियनि, तकरा ओ व्यावहारिक मानलनि आ तदनुरूपे ओ परिभाषाक संपादक ऋषिकेश कैँ लिखि पठौलनि। ई बात बेसी व्यावहारिक छल। चयनिते रचनाक उपयोग कयला सँ समयक बचत आ रचना प्राप्त करबाक तनाओ कैँ कम कयल जा सकैत अछि।

तकरा बाद ओ नारायणजीक कथा 'पान'क चर्चा करैत छथि। 'पान' कथाक पाठ नारायणजी ड्योढ़क कथा-रैली मे कयने रहथि। ई कथा मूलतः जीवकांत पर लिखल गेल छल, माने कथा अपन संपूर्णता मे कतहु ने कतहु जीवकांतक व्यक्तित्व

सँ जुड़ैत छल। मुदा, दोसर दिस जीवकांत एहि कथा केँ प्रोत्साहित करैत छथि आ कतहु प्रकाशनार्थो पठब' चाहैत छथि। ई कथा हमरो पढ़बाक लेल कहैत छथि। मुदा, जीवकांत एहि सभ सँ बहुत उपरक लेखक छथि। व्यापक जीवनानुभवक कारणे ओ स्वयं एहि कथा केँ सुनलनि आ अनको पढ़बाक अनुरोध करैत छथि। राग-द्वेष, ईर्ष्या-आमर्ष सँ दूर जीवकांत एहि कथा केँ कथेक दृष्टियें देखैत छथि आ तकर समर्थन सेहो करैत छथि। नारायणजी सँ हुनक संबंध पूर्ववत छनि आ संबंध मे कथाक कारणे कोनो मलिनता उत्पन्न नहि भेलनि—ई हुनक पैघत्व थिकनि।

ओ एहि बीच कथाकार शिवशंकर श्रीनिवासक कथासंग्रहक भूमिका लिखलनि, प्रो. कृष्णकांत मिश्र द्वारा आयोजित मैथिली लेखक सम्मेलन लेल नवकविता पर एक लेख लिखलनि, पंचानन मिश्र केँ हजारीबाग, शरदिन्दु चौधरी केँ पटना आ चंद्रेश केँ दरभंगाक स्मारिका लेल सेहो ओ रचना पठा देलनि।

फेर ओ समकालीन परिभाषाक चर्च करैत छथि जे पंडित गोविंद झा जी मैथिली नाटक पर एक छोट टिप्पणी संपादक ऋषिकेश केँ पठा देलनि—आन लेखक सभ पत्र सभ पर कोनो प्रतिक्रिया नहि व्यक्त क' चुप भेल बैसल रहलाह।

तहिना भीमनाथ झा समकालीन परिस्थितिक कारणे दू मास सँ बौक बनल रहलाह। एही जबदाह स्थितिक व्याख्या करब, बौक आ कुंठित किएक बनल रहलाह, एकरा परिभाषित करब हुनका सँ संभव नहि भेलनि। हरेक लेखक संग किछु ने किछु विपरीत परिस्थिति मे जीबाक आ रहबाक विवशता रहैत छैक आ ओ बौक आ कुंठित बनौने रहैत छैक—एकरो चिंता जीवकांत केँ गंभीरता सँ छनि।

पत्र-लेखनक अधिकताक विषय मे हुनक टिप्पणी सार्थक आ महत्त्वपूर्ण थिक। पत्र हमहूँ बेस लिखैत छी, एम्हरे आबि क' थोड़ेक कम कयल अछि—कारण, आब घर-घर दूरभाषक सुविधा भ' गेल अछि। जीवकांत तँ लिक्खाड़ लेखक छथि। मैथिली साहित्य मे हुनका सँ बेसी पत्र लिख' बला कोनो दोसर लेखक नहि छथि। ई हमर अनुमान थिक आ प्रायः ई यथार्थे थिक। एहि मे समय आ श्रम दुनू लगैत छैक आ किछु बेसीये लगैत छैक।

बाबूजीक संग हुनक संबंध बहुत दिन धरि रहलनि। ओ एक खेप डेओढ़ सेहो गेल रहथि। आ ओतय दू दिन रहि क' जीवकांत संग विचार-विमर्श कयने रहथि। स्नेह आ प्रेम मे दिनानुदिन प्रगाढ़ता होइत गेलनि आ से यावज्जीवन कायम रहलनि। हमरा मोन अछि प्रायः तीन दिनक अंतराल पर, माने सप्ताह मे दू टा पत्र ओहि समय बाबूजीक नामे जीवकांतक अबैत रहनि आ तहिना बाबूजी सेहो लिखैत रहलाह। ओ पत्र सभ समकालीन साहित्यक विरल दस्तावेज थिक। स्वाभाविक छल हमरा लेल जे हम जीवकांत केँ पितृतुल्य मानैत रहलहुँ अछि आ तेहने संबंध हुनका संग हम

राखने छी। ओ अपना केँ आत्मकेन्द्रित आ आत्मलिप्त मानैत छथि, जखन कि ओ एहन किन्हु नहि छथि। ई हुनक व्यक्तित्व विराटता थिकनि।

ओ 6 अक्तूबर 1990क पत्र मे लिखैत छथि—'कारखाना-संपादकक पत्रक फोटो प्रति भेटल अछि। कथा आ कथाकारक जे क्रम अहाँ प्रस्तावित करैत छी, से ठीके अछि।

रमेश नीलकमल पोथी-पत्रिकाक वितरणक जे योजना अहाँ केँ पठओलनि अछि, तकर दू गोट अभिप्राय हमरा बुझाइत अछि। एक तँ हुनका विज्ञापन चाहियनि, आ दोसर जे पोथी-पत्रिकाक बिक्रीक व्यवस्था लेल व्यवसायी चाही। प्रायः ई दुनू काज मे अहाँ बड़ थोड़ सहयोग क' पयबनि। ओ अपनहि विज्ञापनो ताकि लेताह आ व्यवसायक जोगाड़ो बैसा लेताह।

ओ अहाँक फोटो मँगैत छथि, तँ से पठाउ। हम अन्दाज करैत छी जे ओ ओहि फोटोक उपयोग फूहड़ ढंग सँ नहि करताह। तें फोटो पठयबा मे हर्ज नहि।

प्रो. कृष्णकांत मिश्रक लेखक-सम्मेलनक आयोजन मे राज मोहन भाइ कथा-विभागक सभापति मनोनीत भेल छथि, से भीम भाइ लिखैत छथि। नवकविता विभागक अध्यक्षीय भाषण हम पठा देल अछि। कीर्त्तिनारायण जी लिखैत छथि जे हुनको सँ अध्यक्षीय भाषण लिखयबाक प्रस्ताव दोसर बेर पठाओल गेल अछि। एहि सम्मेलनक अटकर लगायब बहुत कठिन अछि।

वैदेही समितिक लेखक-सम्मेलन लेल अहाँ दू गोट कविता हमरा पता पर पठाउ। कुमार पवनक पता पठाउ।'

10 अक्तूबर 1990क पत्र मे ओ पुनः लिखैत छथि—'कारखाना' बला पोथीक नाम 'मिथिला' वा 'मिथि' नहि ठीक। कोनो अन्य नाम सोचू। ओना नाम राखब बहुत कठिन।

मैथिली की कहानियाँ
कोसी के आर-पार
विद्यापति के देश की कहानियाँ, इत्यादि...'

11 अक्तूबर 1990क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'राज मोहन जीक पत्र बहुत दिन पर आयल अछि। ओ 'उजास'क प्रकाशनक विलम्ब केँ निराशावादी दृष्टि सँ देखैत छथि।

भीम भाइ बहुत पस्तीक अनुभव क' रहल छथि। ओ वैदेही समितिक लेखक-सम्मेलनक आयोजन केँ बहुत अविश्वासक दृष्टि सँ देखैत छथि।

आरक्षण आ अयोध्या मंदिरक हल्लाक कारणे हम अपन कविता-पोथी छपबा लेल बहराइत नहि छी।'

17 अक्तूबर 1990क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'अहाँक पत्र डा. शिवेंद्रक पत्र संग भेटल अछि। शिवेंद्र जी केँ कविता पठयबा लेल लिखि देल अछि।

'समकालीन परिभाषा'क नव सूचना नहि अछि। रचना सभक जोगाड़ धरा देलाक बाद ऋषिकेश प्राय: प्रकाशन मे प्रवृत्त भेल छथि। एम्हर हुनक कोनो पत्र नहि आयल अछि। तें किछु नव कहबाक स्थिति मे नहि छी।

'कारखाना'क बारे मे अहाँक जे अभिमत अछि, से हमरा युक्तिसंगत लगैत अछि।

वैदेही समिति लेल कविता पठयबाक आग्रह डा. महेंद्र झा, प्रो. ललितेश मिश्र केँ पठाओल अछि।'

17 अक्तूबर 1990क पत्र मे (एहि तिथि केँ ओ दू गोट पत्र लिखलनि) पुन: लिखैत छथि—'दू गोट अहाँक, दू गोट सुस्मिता पाठकक कविता भेटल अछि। हरेकृष्ण, महाप्रकाश केँ कविता पठयबाक पत्र गेल अछि। शिवेंद्र जी आ प्रो. ललितेश मिश्र केँ ओ प्रो. महेंद्र केँ सेहो। अन्य केँ जें कि पत्र देबाक समय नहि अछि, अहाँ हिनका सभ केँ आग्रह (हमरा दिस सँ) करी जे कविता अहाँ केँ देथि आ हमरा पता पर पठयबाक कष्ट करी।'

25 अक्तूबर 1990क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'वैदेही समिति अपन आयोजन लेल एखन बहुत सक्रिय अछि, कृष्णकांत बाबूक पत्र आयल अछि। अपन आ सुस्मिता जीक बायो-डाटा पठाबी। कविताक संग छपत।

कुमार पवन, डा. महेंद्र, प्रो. ललितेश मिश्र, डा. शिवेंद्र केँ कविता पठयबा लेल लिखने छियनि। प्रो. मायानंद मिश्र, महाप्रकाश केँ बहुत पहिनहि लिखने छियनि। हिनका सभक कविताक भेटबाक बाट तकैत छी।'

31 अक्तूबर 1990क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'एहि सँ पूर्व डा. शिवेंद्रक पता पर अहाँ केँ पत्र देने छी। भेटल होयत। तारानंद वियोगी लिखलनि अछि जे 'उजास'क बकियौता काज ओ क' देलनि अछि। से सूचना प्रिय लागल अछि।

पटना आ दरभंगाक विद्यापति पर्व एहि वातावरण मे कोना होयत, से चिंता अछि।'

1 नवंबर 1990क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'डा. महेंद्र, डा. शिवेंद्र आ प्रो. ललितेश मिश्रक कविता सभ भेटल अछि। हिनका लोकनिक फोटो आ बायो-डाटा सेहो चाही।

कृष्णकांत बाबू कविता सभ पर अनुशंसा सेहो चाहैत छथि। एकर आग्रह लगातार आबि रहल अछि। लिखबाक मोन नहि छल। आब मोन बना रहल छी। मैथिली युवा-लेखन पर एक फूट टिप्पणी सेहो मँगैत छथि।

आइ विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा मे कवि सम्मेलन छैक। वातावरणक तनाओक कारणे नहि जाइत छी। राज मोहन जी लिखैत छथि जे हम 2 आ 3 केँ पटना जाइ। सेहो जायब स्थगित करैत छी।

आब वैदेही समितिक काज पूरा क' पठा देब, तखने कोनो काज करब। अहाँ किछु आर कविक जेना महाप्रकाश आ डा. कुमार पवनक कविता पठाउ।'

4 नवंबर 1990क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'अहाँक पठाओल रजिस्टर्ड डाक मे महाप्रकाश, डा. शिवेंद्र आ कुमार पवनक कविता भेटल अछि। हरेकृष्ण जीक कविता नहि भेटत, से मानि क' चलि रहल छी। ओ साधारणत: पत्रक उत्तर नहि दैत छथि। तें हुनका अनुमति लेल लिखब हम बेकार बुझैत छी।

पटना मे 3 नवंबर केँ कथा गोष्ठीक आयोजनक पत्र हमरा संयोग सँ 3 नवंबर केँ अपराह्न मे प्राप्त भेल। ओहुना दंगाक दहशति मे पटना नहि गेलहुँ। दरभंगोक आयोजन मे सम्मिलित नहि भेलहुँ। दू दिन मे कविता सभ कृष्णकांत बाबू केँ पठा जान हल्लुक करब।'

10 नवंबर 1990क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'अहाँक पत्र आ अहाँक पठाओल चंद्रशेखरक कविता भेटल। आब कोनो कविता नहि पठाबी।

कुमार पवनक कोनो पत्र अथवा कविता नहि भेटल अछि। आ ने आब आगाँ कोनो कविताक प्रतीक्षा हम क' रहल छी।

युवा लेखन पर दू पृष्ठक टिप्पणी हम लिखल अछि, से शुद्ध सैद्धांतिक चर्चा अछि। ओकर लेखन कार्बन लगा क' नहि कयल अछि। तें कार्बन प्रति नहि पठा रहल छी।

हम 11 नवंबर 1957 सँ एहि नोकरी मे छी, आइ हमरा नोकरी करैत 33 बर्ख पूरा होइत अछि। आइ दरभंगा जा कविता सभ वैदेही समिति केँ देबाक अछि।

बामा ठेहुन बहुत कचकैत अछि। दवाइ रगड़लो सँ कोनो अंतर नहि। चलबा मे स्वाभाविके बहुत कष्ट अछि।

गाम पर बच्चा सभ वातावरण केँ आनंदमय आ सक्रिय बनओने अछि।'

11 नवंबर 1990क पत्र मे लिखैत छथि—'काल्हि दरभंगा मे रही। कृष्णकांत बाबू केँ 20 गोट कविक कविता मुद्रणार्थ द' देल। हल्लुक भेल अनुभव करैत छी।

काल्हि दरभंगा मे बामा ठेहुनक दर्द लेल एक टा नी कैप लेल जे आइ सँ पहीरि रहल छी।

प्रो. मायानंद मिश्र आ धीरजक कविता पठा सकी तँ पठाउ।'

17 नवंबर 1990क पत्र मे लिखलनि—'लहसुन खायब एक मास सँ शुरू कयल अछि। एखन कोनो लाभ नहि अछि। नेंगरा क' चलैत छी। आर असुविधा सभ अछि, जे-से...

विभूति आनंद कें पीएच.डी. भेटबाक समाचार सँ प्रसन्नता आ संतोषक अनुभव भेल अछि। अशोक कटिहार सँ दू गोट कविता पठओलनि अछि।'

23 नवंबर 1990क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'अहाँक पठाओल भाइ प्रो. मायानंद मिश्र एवं धीरजक कविता भेटल।' 25 नवंबर 1990क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'उजास' लेल शिवेंद्र पर एक टिप्पणी लिखल अछि जे पठा रहल छी। शिवेंद्र पर एक टिप्पणी एहि सँ पहिनहु लिखने छी जे वैदेही समिति कें पठा चुकल छी। योजना कार्यान्वित भेला पर ओ समाजक समक्ष आओत।

एहि टिप्पणीक लिखबा सँ पूर्व आइ कविवर सीताराम झा पर एक टिप्पणी लिखल अछि। कविवरक पुत्र विश्वनाथ झा 'विषपायी' कविवरक जन्म शतवार्षिकी (जन्म 16.01.1891)क अवसर पर स्मारिका प्रकाशन कर' चाहैत छथि।

हम बहुत स्वस्थ नहि छी। एक टा भातिज (12 वर्ष)क चिकित्सार्थ पटना गेल रही। हार्ट डिजीज छनि। ज्वर भेल। मनोबल नीचाँ भेल अछि।' फेर 5 दिसंबर 1990क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'अहाँक पत्र आयल। डा. शिवेंद्रक दस्ती चिट्ठी आ दवाइक गोटी सभ आयल। अहाँ सभक सद्भाव लेल अनुगृहीत छी। सुपौल आयब एखन दू मास (कम सँ कम) संभव नहि अछि। हमर जेठ भातिज चि. गोविंद कें नवकांत बाबू आ अरुण बाबू दिल्ली दवाइ कराब' ल' जाय चाहैत छथि।

दरभंगाक डाक्टर सभ गोविंदक हार्ट मे एक गोट भाल्भ बदलबाक बात कहैत छनि। स्वाभाविक अछि जे एखन हमर परिवार अस्त-व्यस्त भेल अछि।

हमर ठेहुन से हमरा कतहु अयबा-जयबा योग्य नहि रखने अछि। सहस्रपाक तेलक मालिश सँ लाभ भेल अछि।

डा. शिवेंद्र जीक नुस्खा अयबा सँ पहिनहि एनालजेसिक गोटी खा क' हम अपन पेट खराब क' लेने छलहुँ, तें ओ नुस्खा नहि चलाओल। ओहुना दिसंबर मास आ तकर अंतिम सप्ताह हमरा पेटक अल्सर लेल घातक सिद्ध भेल अछि। तीन बेर हॉस्पिटलाइज एहि कारणे भेल छी, से सभ बेर दिसंबरक अंतिम सप्ताह मे।'

12 दिसंबर 1990क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'अहाँक, आ शिवेंद्रक पत्र आ हरेकृष्ण, महाप्रकाश आ कुलानंद जीक कविता भेटल अछि।

समकालीन परिभाषा भेटि गेल अछि।

लगातार लिखैत रहबाक आदति छोड़ू। जखन बुझाय जे थाकि गेलहुँ, तँ लिखब बन्न क' देल करू। लगातार बैसने हमरा पेप्टिक अल्सर भेल छल आ आब रूमेटिज्म धयलक अछि। प्रकृतिक चेतावनी कें कखनो नहि अनठाबी।'

16 दिसंबर 1990क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'अहाँक पठाओल तीनू कविक कविता पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखि देल अछि आ से एकरा संग पठा रहल छी।

प्रभास कें साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटला सँ प्रसन्नता भेल अछि। 'समकालीन परिभाषा' भेटल अछि। अंक नीक लागल अछि, मुदा ओकर कोनो प्रतिक्रिया पत्रिका कें पठायब हमरा नीक नहि लगैत अछि। प्रतिक्रिया पठायब ओकर काज थिकैक जे एहि टीम सँ बाहरक छल।

उपेन्द्र दोषीक पोथी अयबाक चाही। हुनक कथा सभ वला मैथिली पत्रिका सभक अंक हमरा लग उपलब्ध नहि अछि। साधारणत: हम कोनो पत्रिकाक अंक सभ जोगि क' रखबाक शुरूहे सँ आदति नहि बनओने छी।

अहाँ प्रसन्न होयब। दिन-राति लगातार लेखन कें, ओकर गति कें, ओकर समय-सीमा कें घटाउ।'

17 दिसंबर 1990क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'मुसलमान' कविताक चर्चा नवभारत टाइम्स मे पढ़ने छी। पूरा कविता नहि पढ़ने छी। तें ओहि कविता पर डा. शिवेंद्र दास कें किछु लिखि क' पठायब संभव नहि भेल। ओ अपन पछिला पत्र मे एकरा विषय मे चर्चा कयने छलाह।' फेर 26 दिसंबर 1990क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'25/12 कें हमर छोट भाइ आ जेठ बेटा हमरा भातिज कें दिल्ली ल' जयबा लेल वैशाली एक्सप्रेस समस्तीपुर मे पकड़लनि। एखन हिनका लोकनि पर ध्यान अछि। चिंता अछि।

अहाँ मौलिक लेखन लेल समय बहार करू। पत्रिका सभ लेल सामग्री तैयार करबा मे सीमित श्रम करू।'

30 दिसंबर 1990क पत्र मे ओ सूचित करैत छथि—'सरस जी, मोहन भारद्वाज इत्यादि वैदेही कें विरोध पत्र देलनि अछि। तकर बाद ई लोकनि वैदेहीक बहिष्कार करबाक निर्णय ल' लेलनि अछि।'

रमेश नीलकमल व्यावसायिक दृष्टिक लोक छलाह। ओ लेखको बुढ़ारी मे आबि क' बनल रहथि, ताहि मे डा. तारानंद वियोगीक सहयोग सर्वोपरि। 'कारखाना'क मैथिली कथा अंक लेल ओ एक व्यावसायिक प्रस्ताव हमरा पठौने रहथि, जकर सूचना हम जीवकांत कें देने रहियनि। सुपौल जेहन कस्बानुमा शहर अछि, एतय एहि प्रकारक विज्ञापन भेटब दुर्लभ थिक। तें एहन कोनो प्रकारक मदति हम पत्रिका लेल नहि क' सकैत छलहुँ। हँ, रमेश नीलकमल हमर विस्तृत परिचय आ फोटो मँगने रहथि। अपन परिचय अपने की लिखू, हम असमंजस मे छलहुँ। परिचय लिखलनि मैथिलीक ख्यात कवि आ चिंतक महाप्रकाश। ओ हमरा विषय मे थोड़ेक बेसीए लिखि देलनि। ओ लिखलनि—'समझ पैनापन और दूरदृष्टि वाले केदार कानन के व्यक्तित्व में स्नेह और करुणा का विलक्षण सामंजस्य है। साहित्य के प्रति अपने कर्त्तव्य की समझ और सहज अनुराग इन्हें घुट्टी में मिली है। अतएव लेखन और

उसके विविध आयामों को लेकर समय-समय पर आन्दोलननुमा बहस के जरिये सवालों के मूल तक पहुँचने की, युवा-लेखकों में सर्वाधिक चेष्टा केदार कानन की रही है। कवि केदार कानन का सर्वाधिक मुखर रूप आन्दोलन की हद तक सरोकारों से जुड़ना है। विश्व की किसी भी उन्नत भाषा के समकक्ष अपने आदि समय से ही मैथिली में कालजयी रचनाएँ होती रही हैं। इतनी प्राचीन भाषा-साहित्य को, इस भूमिखंड को, कितनी विपरीत परिस्थितियों से गुजरना पड़ा कि आज मैथिली भाषा को संविधान की अष्टम अनुसूची में जगह मिले, इसके लिए भी किसी कारगर आन्दोलन की प्रतीक्षा है। आजादी के प्राय: आधी सदी बीतते भी भारत का एक बड़ा हिस्सा मैथिली भाषा-साहित्य से अनजान है।

केदार कानन साहित्य की इस कमी को बेहद तल्खी से महसूसते हैं। मैथिली भाषा-साहित्य के कतिपय विधाओं को भारतीय स्तर पर एक्सपोजर देने का समूहगत और कभी-कभी एकल प्रयास भी इन्होंने अंजाम दिये हैं। 'पहल' पुस्तिका में पहली बार समकालीन मैथिली कविताओं की उपस्थिति केदार कानन की दृष्टि, श्रम और सोच का सार्थक प्रमाण है। ऐसा नहीं कि मैथिली कहानियाँ अन्य भारतीय भाषाओं में नही आई, किंतु यह भी सच है कि एक साथ एक से अधिक रंगों और आयामों के साथ मैथिली कहानियाँ वृहत्तर फलक पर नहीं आईं, कमलेश्वर के जमाने की एक 'सारिका' को छोड़कर।

केदार कानन मूलत: एक कवि हैं। उनका स्वसृजन उनकी कविताओं में ही रंगोन्मेषित हुआ है। साहित्य की अन्य विधाओं पर इस लगन और वैज्ञानिक दृष्टि से काम की महत्ता जनवादी सरोकारों से जुड़े केदार कानन की रचनाधर्मिता की सार्थक और क्रियात्मक उपलब्धि है।' 20 अक्तूबर 1990 केँ कवि महाप्रकाश अपन ई टिप्पणी लिखि हमरा पठा देलनि जकर आंशिक उपयोग रमेश नीलकमल अपन संपादकीय मे अत्यंत चतुरताक संग क' लेलनि। ओ हमर फोटो सेहो मँगौलनि जकर उपयोग ओ नहि कयलनि।

एही 'कारखाना'क पुस्तक रूप 'कोसी के आर पार' नाम सँ आयल छल आ ई नाम जीवकांतेक देल रहनि। एहि तरहें एक भव्य पोथीक प्रकाशन संभव भ' सकल। मित्र तारानंद वियोगीक सहयोग अद्वितीय छल।

एम्हर दरभंगा मे प्रो. कृष्णकांत मिश्र लेखक-सम्मेलन करबा रहल छलाह। कथा-विभागक सभापति प्रख्यात कथाकार राज मोहन झा रहथि आ कविता विभागक सभापति जीवकांत केँ बनाओल गेल रहनि। मुदा, कीर्त्तिनारायण मिश्र केँ सेहो सभापति लेल हकार द' देल गेल रहनि।

अपन आरंभिक काल मे वैदेही 'रचना संग्रह'क एक टा महत्त्वपूर्ण प्रकाशन-

परंपराक सूत्रपात कयने छल आ स्वाभाविके जे एहि मे प्रो. कृष्णकांत मिश्रक योगदान सर्वाधिक छलनि। 'वैदेही' अपना समयक महत्त्वपूर्ण पत्रिका छल आ ललित, राजकमल, सोमदेव, धीरेंद्र, मायानंद आदिक महत्त्वपूर्ण रचना सभ एहि पत्रिका द्वारा प्रकाशित भेल छल। 'वैदेही समिति' अनेक काजक सफलतापूर्वक संचालन-आयोजन कयने छल। एहने एक आयोजन मैथिली लेखक-सम्मेलनक छल आ प्रो. कृष्णकांते बाबू एकर मूल मे रहथि।

एहि सम्मेलनक अवसर पर 'रचना संग्रह' लेल आधुनिक मैथिली कवि लोकनिक कविता सभ जीवकांत द्वारा मँगाओल गेल छल। जीवकांत एम्हरका कवि सभ सँ कविता उपरयबाक भार हमरा द' देने रहथि। कविताक संग फोटो आ बायोडाटाक अलावा जीवकांत किछु कवि सभ पर अपन टिप्पणी सेहो लिखने रहथि। ओ एहि सभ आयोजन मे अत्यधिक व्यस्त रहलाह। मुदा, अंतत: एहन कोनो पोथी 'वैदेही समिति' सँ नहि बहरा सकल।

मैथिली मे एहन-एहन अनेक आयोजन वा आयोजनक सूरसार तँ होइत अछि मुदा ओ सफल नहियो भ' पबैत अछि, तें भीमनाथ झा एहि समस्त आयोजन केँ अविश्वासक दृष्टि सँ देखैत रहथि।

'उजास' केँ एही अविश्वासक दृष्टि सँ देखि रहल छलाह कथाकार राज मोहन झा। बात स्वाभाविक छल। कोनो पत्रिका लेल रचनादिक संगोर क' लेल जाय आ ओ पत्रिका बर्खक बर्ख धरि अन्हारे मे गोंतल रहि जाय तँ अविश्वास ककरो भ' सकैत अछि। हमहूँ सब पत्रिका प्रकाशन लेल बहुत आश्वस्त नहि भ' पबैत रही। आ साहित्यिक क्षेत्र मे 'उजास'क अनिश्चितताक कारणे मूड़ी गोंतने रही।

एहि बीच ओ दरभंगा जा क' कवि लोकनिक कविता, फोटो आ बायोडाटा प्रो. कृष्णकांत मिश्र केँ प्रकाशनार्थ द' अयलाह आ अपना केँ हल्लुक अनुभव कयलनि। बामा ठेहुन मे दर्द सेहो रहनि तँ ओत्तहि नी कैप कीनलनि आ पहीरि लेलनि। एहि दर्द लेल ओ लहसुन सेहो खायब शुरू क' देने रहथि।

विभूति आनंद केँ पीएच.डी. डिग्री भेटि गेलनि, तकर प्रसन्नता सँ ओ अभिभूत भेलाह। मैथिलीक एक-एक गतिविधि पर हुनक तीक्ष्ण दृष्टि रहैत छनि।

अपन पारिवारिक समस्या सँ ओ आक्रांत आ मर्माहत रहथि एहि बीच। हुनक अनुज नवकांत जीक सुपुत्र गोविंदक हृदय मे किछु गड़बड़ी भ' गेल रहनि आ हुनका ल'क' नवकांत जी आ जीवकांतक जेठ पुत्र अरुण जी दिल्ली चिकित्सार्थ गेल रहथि। परिवार भरि मे एक टा उदासी आ आशंकाक गहन छाहरि व्याप्त भ' गेल रहनि।

ठेहुनक दर्द लेल डा. शिवेंद्र जी हुनका थोड़ेक दवाइ पठौने रहथि मुदा अपन गैस्ट्रिक ट्रॉबुलक कारणे एहि दवाइ सभक उपयोग ओ नहि कयलनि।

प्रभास कुमार चौधरी एही वर्ष साहित्य अकादेमी सँ सम्मानित भेलाह से सभ तरि प्रसन्नताक लहरि छल।

अनेक प्रतीक्षाक बाद 'समकालीन परिभाषा'क मैथिली अंक प्रकाशित भेल आ सभतरि पहुँचल। समकालीन परिभाषाक एहि अंकक बेस चर्चा भेलैक। एकर विशद चर्चा डा. तारानंद वियोगी अपन एक छोट टिप्पणी मे कयने रहथि, जे एतय प्रस्तुत करबाक अपन लोभ संवरण नहि क' पाबि रहल छी।

ओ अपन टिप्पणी 'समकालीन परिभाषा और मैथिली साहित्य' मे लिखने रहथि—'आलोचना' में लिखते हुए शिवदान सिंह चौहान ने जब कहा था कि मैथिली जैसी क्षेत्रीय भाषाओं के विकास से ही हिंदी विकसित होगी, तब हिंदी के अधिसंख्य आलोचकों ने चौहान जी के इस कथन का निहितार्थ नहीं समझा था और इस बात को लेकर काफी विवाद हुआ था।

मैथिली साहित्य भारतीयता की अवधारणा को किस हद तक पुष्ट करता है और उन संदर्भों को गहराई से उकेरता है जो नए समाज के संगठन के सरंजाम जुटाने से जुड़े हुए हैं, यह कई प्रसंगों से समझा जा सकता है और इसे समझने की एक तात्कालिक परिणति है—सीतामढ़ी से प्रकाशित हिंदी त्रैमासिक 'समकालीन परिभाषा' का मैथिली साहित्य पर केन्द्रित अंक।

हिंदी में अनूदित मैथिली की इन रचनाओं से गुजरते हुए शिवदान सिंह चौहान के कथन का तात्पर्य समझा जा सकता है और बहुत सहजता से रवीन्द्रनाथ टैगोर की उस उक्ति को याद किया जा सकता है कि हमारी भारतमाता कई-कई भाषाओं में एक ही बात बोलती है।

लेकिन इसी एक बात को इस अंक की एकमात्र सार्थकता नहीं माना जा सकता। इस अंक की रचनाएँ यह भी बड़ी स्पष्टता से दिखाती है कि अन्य भारतीय साहित्यों से मैथिली साहित्य किस स्तर पर अलग है और इसकी निजता और मौलिकता क्या है? रचनाधर्मिता के आधार पर भी और उनके सरोकारों के आधार पर भी। चूँकि हिंदी पाठकों तक मैथिली रचनाओं को पहुँचाने की पहल इससे पहले भी समय-समय पर सारिका, पहल, साम्य आदि कई-कई पत्रिकाएँ करती आयी हैं, समकालीन परिभाषा के इस अंक को देखकर मैथिली साहित्य की अद्यतन रचनाशीलता से परिचित हुआ जा सकता है।

'समकालीन परिभाषा' के संपादक ॠषिकेश इस अर्थ में जरूर विशिष्ट कहे जाएंगे कि उन्होंने अंक का संयोजन बड़ी सूझबूझ और महीनी से की है और रचना-चयन में यह अद्‌भुत समझदारी दिखाया है कि समकालीन साहित्य-परिदृश्य को देखते हुए इसके ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से भी सहज ही परिचित हुआ जा सकता है।

इस अंक को देखकर केदार कानन, नारायणजी, शिवशंकर श्रीनिवास जैसे मैथिली के प्रतिभाशाली युवालेखकों की प्रतिबद्धता को भी समझा जा सकता है, जो हिंदी के पाठकों तक मैथिली साहित्य को पहुँचाने के स्तुत्य प्रयास से जुड़े हुए हैं।

इस अंक में समकालीन मैथिली से परिचित कराती तेरह कहानियाँ, 10 कवियों की कविताएँ, चार आलोचनात्मक आलेख तथा दो समीक्षाएँ शामिल की गई हैं। तय है कि मैथिली साहित्य इतने तक ही नहीं है। 'सब कुछ' में से थोड़ा कुछ, जो कि 'सब कुछ' का प्रतिनिधित्व कर रहा हो, चुनने की कोशिश इस अंक में की है। चयन की इस दृष्टि से काफी हद तक सहमत हुआ जा सकता है। हाँ, पूर्ण संतुष्ट कतई नहीं हुआ जा सकता, क्योंकि आखिरकार यह किसी एक व्यक्ति की चयन-दृष्टि से संयोजित है और इस कारण इसकी सीमाएँ हैं, तय है कि किसी एक की पसंद हर किसी की पसंद नहीं बन सकती।

मैथिली गद्य और कहानी पर कुलानंद मिश्र, कविता पर डा. भीमनाथ झा व मोहन भारद्वाज तथा नाटक पर पंडित गोविंद झा के आलेख अपने-अपने क्षेत्रों की समकालीन गतिविधियों का मूल्यांकन करते हैं, यूँ इनकी सीमाएँ भी हैं और इनके पूर्वग्रह भी।

मैथिली की तेरह कहानियों में गाँव और गँवई सरोकारों को बड़ी खूबी से देखा जा सकता है। वैसे शहरी संस्कार, राजनीतिक दुराचारों तथा व्यक्ति-कुंठाओं को रेखांकित करती कहानियाँ भी यहाँ संकलित की गई हैं।

मैथिली के दो महत्त्वपूर्ण उपन्यासों—पृथ्वीपुत्र तथा मंत्रपुत्र पर आखिर में दो समीक्षाएँ भी दी गई हैं। इसमें मंत्रपुत्र की समीक्षा डा. महेंद्र ने की है, जो महत्त्वपूर्ण है।

अंक के संयोजन में अनेक कमियाँ खोज निकाली जा सकती हैं। अनुवाद की त्रुटियाँ भी सामने लाई जा सकती हैं। लेकिन कुल मिलाकर मैथिली के समकालीन परिदृश्य के संदर्भ में इस अंक का महत्त्व असंदिग्ध है। हिंदी के विशाल पाठकवर्ग में इसका व्यापक स्वागत होगा, यह उम्मीद की जानी चाहिए।'

डा. तारानंद वियोगीक ई टिप्पणी 'समकालीन परिभाषा'क मैथिली अंक पर समीचीन अछि मुदा संयोगवश ई कतहु प्रकाशित नहि भ' सकल। वियोगीक ई टिप्पणी प्रकाशित नहियो भेल तइयो वियोगी अपन टिप्पणी मे जे लिखलनि से धरि सत्य थिक। जीवकांत जानि-बूझि क' एहि अंक पर टिप्पणी नहि कयलनि, किएक तँ एकर आयोजन-संयोजन मे ओ सर्वाधिक सक्रिय छलाह।

उपेन्द्र दोषीक कथा-संग्रह लेल अनेक लेखक जकाँ जीवकांत सेहो चिंतित रहथि मुदा, हुनका संग सभ सँ पैघ ट्रैजिडी ई छनि जे कोनो पुरान चीज हुनका लग

उपलब्धे नहि छनि। पढ़ि क' ओ जोगबैत नहि छथि अपितु पढ़ि क' बिलहैत जाइत छथि।

ओहि समय मे, 'आलोचना'क एक टा अंक मे देवी प्रसाद मिश्रक कविता 'मुसलमान' प्रकाशित भेल रहैक। ई कविता प्रकाशित होइते अत्यंत चर्चित भेल आ अनेक प्रतिक्रिया सभ पत्र-पत्रिका आ अखबार सभ मे आयल। एही कविता पर डा. शिवेंद्र दास जीवकांत सँ हुनक टिप्पणीक अपेक्षा कयने रहथि मुदा तावत जीवकांत ओ कविता नहि पढ़ने रहथि। तें ओ कोनो टिप्पणी नहि पठा सकलाह।

दरभंगाक प्रो. रमेशचंद्र झा 'वैदेही' आ 'मिथिलांचल संपर्क' मे प्रो. रमाकांत मिश्र पर असंसदीय भाषाक प्रयोग कयने रहथि—हुनक एहि टिप्पणी सँ रमाकांत मिश्र तँ आहत भेबे कयलाह, मैथिलीक अनेक लेखक एहि सँ अपना केँ आहत आ अपमानित अनुभव कयलनि। तें ओहि समय मे अनेक लेखक 'वैदेही'क बहिष्कार करबाक निर्णय लेने रहथि।

ओ टिप्पणी 'वैदेही' 1990क एनुअल अंक मे पृष्ठ 137 पर 'पाठकीय' मे एहि तरहें प्रकाशित भेल छल—

'संस्कृत मे चोरक हेतु 'चौर:' आ 'चोर:' शब्द अछि जे 'चूर' धातु सँ बनल अछि, जकर अर्थ गतिशीलता आ चंचलता सँ होइछ। प्रो. रमाकांत मिश्र मे गतिशीलता पाओल जाइछ। ई पहिने प्रो. हंसराजक प्रकाशित 'सोनामाटि' कथानक चोरी कय अपन नाम सँ 'पुष्पांजलि' मे नानीक खिस्सा क' प्रकाशित कैलनि। ई अपना केँ बहुत तेज बुझैत छथि से सरिपहुँ ई चौर्य कार्य मे निष्णात छथि। हम सभ आशा करैत छी जे ओ दिन दूर नहि जखन 'पटनियाँ' पुन: मत मतांतर मे लिखता जे प्रो. रमाकांत मिश्र गोर्की वा मोपासा वा चेखवक कोनो कथाक अनुवाद कए अपना नाम सँ प्रकाशित केलनि अछि। तें हमर ई विशेष आग्रह जे पटनियाँ जी अहि बात पर पूर्णतया सतर्क रहथि नहि त चौर्यकलाक भंडाफोड़ नहि भ' सकत। कलाक बहुत भेद अछि जाहिमे चौर्यकला हालेक विधा छी जकर जन्मदाता मैथिली साहित्य मध्य प्रो. रमाकांत मिश्र छथि। डरक बात अछि जे ई साहित्यिक महामारी छूतक बीमरी अन्य रचनाकारा मे नहि पसरि जाय। सभ कला मे आनंद भेटैछ मुदा सभ सँ बेसी चौर्यकला मे भेटैछ। किछु गोटे जन्म सँ साहित्यकार होइछ, किछु गोटे अध्यवसायसँ रचना धार्मिक गुण बोझ जकाँ लादि देल जाइछ। प्रो. रमाकांत मिश्र तेसर वर्गक घटिया आ चोर रचनाकार छथि। ओना 'चोर' शब्दक संग 'रचनाकार' जोड़ब रचनाकार शब्द संग बलात्कार बुझना जाइछ किएक तँ रचनाकार चोर नहि भ' सकैछ। हँ, अपन पूर्ववर्त्ती वा समकालीन लेखकक रचना सँ उद्धरण लेल जा सकैछ मुदा सरपट्टे मूल रचनाकारक नाम हटा कय अपन नाम छापि दी, से सरासर अन्याय छी। बुझना

जाइछ जे प्रो. रमाकांत मिश्र सर्व सोंख छथि। सगस्त मैथिली साहित्यकार, पत्रकार ओ चिंतक सँ साग्रह निवेदन जे एहन चोर लेखक सँ मैथिली भाषा केँ बचैबाक लेल 'ब्लैक लिस्टेड' क' देल जाइन। आशा अछि हमर एहि मत सँ मैथिलीक विशाल पाठकवर्ग आ सुधी लेखक पूर्णत: सहमत हेताह।

रमेशचंद्र झा, व्याख्याता
एम.एल.एस.एम., दरभंगा

1991 मे ओ हमरा लगभग 95 गोट पत्र लिखलनि। 5 जनवरी 1991क पत्र मे ओ वैदेही-बहिष्कारक प्रसंग हमरा जनतब दैत छथि जे—'बारह गोट लेखक संयुक्त पत्र वैदेही केँ देलनि अछि जे जँ प्रो. रमेशचंद्र झा प्रो. रमाकांत मिश्रक विरुद्ध भाषा लेल क्षमा-याचना नहि करताह तँ लेखक लोकनि वैदेहीक बहिष्कार करताह।

भीम भाइ 'मैथिली आलोचना' नामक छह-मासिक पत्र बहार करताह। दू सय टाका प्रति अंक सहयोग राशि लेताह। दरभंगा मे पन्द्रह गोट सहयोगी सहयोग राशि देब गछलथिन अछि। हमरा आ नारायणजी लग सहयोग राशि देबाक प्रस्ताव पठओलनि अछि। संपादन चक्रानुक्रमे। पहिल अंकक संपादन मोहन भारद्वाज करताह।

धान-नार बहुत नष्ट भेल अछि। बरखा बहुत भेला सँ ई दुर्गति।'

6 जनवरी 1991क पत्र मे लिखलनि—'5 जनवरीक साँझ मे दिल्ली सँ बच्चा लोकनि घुरलाह अछि। आब फेर जुलाइ 91 मे देखयबाक होयतनि। हिनका सभक अयला सँ मोनक चिंता समाप्त भेल अछि।

नवभारत टाइम्स मे 'बघजर' आबि रहल अछि। प्रेस कॉपी अहाँक आ अनुवाद विभा रानीक अछि।' 11 जनवरी 1991क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'प्रो. रमेशचंद्र झा वैदेही मे प्रो. रमाकांत मिश्रक विरुद्ध असंसदीय भाषाक प्रयोग कयलनि अछि, ताहि लेल ओ लिखित क्षमा-याचना करथि, नहि तँ मैथिलीक लेखक लोकनि वैदेहीक सभ प्रकारें बहिष्कार करताह।

के. नागभूषणम महोदय केँ अहाँक पठाओल कथा सभ आ 'समकालीन परिभाषा'क मैथिली अंक भेटि गेलनि अछि।'

13 जनवरी 1991क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'प्रो. रमेशचंद्र झा प्रो. रमाकांत मिश्रक विरुद्ध वैदेही मे दू बेर आ 'मिथिलांचल संपर्क' मे एक बेर टिप्पणी क' चुकल छथि।

राज मोहन जी केँ 'परिभाषा'क प्रति नहि भेटलनि अछि। एकर अर्थ जे परिभाषाक लेखकीय प्रति नहि पठाओल गेल अछि।'

17 जनवरी 1991क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'उजास' कोन प्रेस मे छपबा

लेल देल अछि। जाड़ घटैत अछि, तँ हमहूँ अपन पोथी प्रेस मे देब' चाहैत छी।'

फेर 29 जनवरी 1991क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'अहाँक 24 जनवरीक दीर्घ पत्र आ नवीन जीक कविता सभ रजिस्टर्ड डाक सँ भेटल अछि। कविता सभ निचैन सँ पढ़ब। नारायणजी केँ सेहो ई कविता सभ पढ़ायब।'

मैथिलीक अनेक लेखक वैदेही-बहिष्कारक बात कयलनि। प्रो. रमेशचंद्र झा 'वैदेही'क 1990, एनुअल अंक मे प्रो. रमाकांत मिश्रक विरुद्ध टिप्पणी कयलनि। एहि टिप्पणी सँ एक टा लेखक वर्ग स्वयं केँ आहत अनुभव कयलनि आ विरोध प्रकट कयलनि।

भीमनाथ झा जाहि छमाही 'मैथिली आलोचना' पत्रिकाक सूरसार कयलनि ओ पटना सँ मोहन भारद्वाजक संपादन मे बहरायल। आलोचना सँ संबंधित सभ टा आलेख छल ओहि पत्रिका मे। मुदा, दुखद जे एकर एकमात्र अंक बहरा सकल।

दिल्ली मे चिकित्सार्थ गेल हुनक भातिज सकुशल घुरलाह तँ जीवकांत केँ अतिशय प्रसन्नता भेलनि। स्वभावत: हुनक मोन एहि बीच निरंतर दिल्ली मे लटकल रहनि।

के. नागभूषणम सँ ओहि समय पत्राचार भेल छल। दक्षिण भारतीय लेखक के. नागभूषणम हमरा निरंतर हिंदी मे लिखैत छलाह। टूटल-फूटल हिंदी। हुनका हम 'विपुला' लेल मैथिलीक किछु कथाक हिंदी अनुवाद कए, एक प्रति 'समकालीन परिभाषा'क मैथिली अंक सेहो पठा देलियनि।

जीवकांत 'उजास' लेल हमरा पूछि रहल छलाह। मुदा 'उजास' गर्भे मे रहि गेल, सभ टा इच्छा-आकांक्षा ध्वस्त भ' गेल। अनेक प्रयासक अछैतहु 'उजास' बहरा नहि सकल आ 'उजास' लेल आयल रचना सभ प्रकाशनक बाटे तकैत रहि गेल। 'उजास'क बाद ओ अपन कविता संग्रह प्रेस मे देब' चाहैत छलाह।

'उजास' एहन तन्नुक आ संवेदनशील बिन्दु छल, जतय हमरा पराजित होम' पड़ल। हमर एहि पराजयक पाछाँ छलाह डा. शिवेंद्र दास। ओ ओहि समय सहरसा सँ सुपौल आबि गेल रहथि, आ हुनक अनेक योजना मे एक योजना 'उजास'क सेहो छलनि। मैथिलीक एहि काज लेल हम अपना केँ समर्पित क' देने छलहुँ।

जे नहि भेल, से नहि भेल। हम 24 जनवरी 1991क एक दीर्घ पत्र मे 'उजास' नहि प्रकाशित होयबाक कथा-व्यथा जीवकांत केँ लिखि पठौलियनि आ ओहि पत्रक संग डा. नवीन कुमार दासक टटका लिखल उन्नैस गोट कविता अवलोकनार्थ पठा देलियनि, जे हुनका भेटि गेल रहनि।

डा. नवीन कुमार दास एही समय मे उद्धारक भ' प्रकट भेल छलाह। साहित्य सँ हुनक रुचि प्रारंभे सँ रहनि। हमरा सँ दू बर्ख सीनियर रहथि आ पटनाक साहित्यिक

माहौल सँ परिचित रहथि। अपन एम.बी.बी.एस. (पटना) काल मे कॉलेजक 'लिटरेरी क्लब'क सचिव सेहो रहथि। बाल्यावस्था मे फणीश्वरनाथ रेणु सँ सेहो अपन पिताक कारणे संपर्क रहनि। रेणु जी आ नवीन जी एक्के परिसर-परिवेशक लोक। सुपौल नवीन जीक सासुर छियनि आ एत्तहि ओ बसि गेलाह। साहित्यिक संस्कार एहन जे घंटो धैर्यपूर्वक साहित्यिक गप सुनैत रहैत छलाह आ ताहि मे अपन विमर्श सँ योगदान करैत छलाह। अत्यंत प्रखर मेधाक नवीन जी 'संकल्प' केँ पुनर्जीवन प्रदान करबाक बात कहलनि तँ जेना हमरो भीतर अजस्र ऊर्जाक संचार भेल।

नवीन जी ओहि समय कविता मे डूबल रहथि। साहित्यक रस मे आकंठ मग्न रहथि। खूब कविता लिखथि आ सुनबथि। कविता सभ हमरो आकर्षित करय। मोन केँ बान्हय। इच्छा भेल जे नवीन जीक कविता सँ जीवकांत किएक नहि परिचित होथि। तें पत्रक संग नवीन जीक उन्नैस गोट कविता हुनका पढ़बाक लेल पठा देलियनि।

मुदा, ओहि समय जीवकांत अपन छोट बेटा वरुण जीक विवाह मे व्यस्त रहथि। 4 फरवरी 1991क पत्र मे एकर उल्लेख करैत ओ लिखलनि—'द्वितीय पुत्र चि. बी. झाक विवाह ननौर (झंझारपुर) चारि मार्च केँ होयतनि। एहि मे व्यस्त छी।

डा. नवीन दास जीक कविता सभ नारायणजी केँ पढ़बा लेल देल अछि। हम नहि पढ़ि पओलहुँ अछि।

मार्चक पहिल सप्ताह मे कटिहार मे कथागोष्ठी आयोजित होइत अछि। एहू मे भाग लेब कठिन अछि।

प्रदीप बिहारीक प्रेस मे अपन कविता संग्रह छपबा लेल दिऐक? अहाँक की विचार?'

7 फरवरी 1991क पत्र मे ओ लिखलनि—'हमर कविता पोथीक प्रकाशन मे अहाँ किसुन संकल्प लोकक बैनर लगायब, से प्रस्ताव नीक लागल अछि। मुदा, अहाँ एकरा कोन ठाम छपायब, से स्पष्ट नहि कयल अछि। से स्पष्ट करी।

एहि पोथी छपबा लेल हम प्रदीप बिहारीक प्रेस उपयोग करबा लेल हुनको लिखल अछि। एम्हरे लिखल अछि, तें तकर उत्तर प्रतीक्षित अछि।

चंद्रेश आ भीम भाइ सहयोग करताह, जँ दरभंगाक प्रेस मे पोथी दिऐक। दरभंगा मे नहि छाप' चाहैत छी। अपने दौड़-बरहा सँ बाँच' चाहैत छी, तें किछु अनावश्यक विलम्ब होइत अछि।

डा. नवीन दास जीक कविता पढ़बाक प्रयास मे छी।'

9 फरवरी 1991क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'काल्हि डा. नवीनक उनैसो गोट कविता एक बैसार मे पढ़ि गेलहुँ। कविता सभ आराम सँ पढ़ि गेलहुँ। एकर एक आर

अर्थ अछि जे कविता सभ पठनीय अछि। दू टा बात एहि कविता सभ केँ अपन समकालीन लेखन सँ विशिष्ट बनबैत अछि। पहिल जे कोसी परिसरक ग्रामीण समाजक बहुत साफ चित्र अबैत अछि, तथापि ई अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जुड़ैत अछि, आ दोसर जे एहि सभ मे एक अद्‌भुत आशावाद आ जीवनक प्रति असीम लालसा आ धैर्य अछि जे मरणो मे भारतीय आ मैथिल समाज केँ जिआ क' रखने अछि।

एक टा चिकित्सा-वैज्ञानिक दृष्टि सेहो अछि जे एहि कविता मे नवीनता आ नव आस्वाद भरने अछि। तें लगैत अछि जे एहि कविता सभ केँ छोट संग्रह मे छापि क' प्रचारित कयला सँ कवि केँ प्रतिष्ठा देआओल जा सकैत अछि।

शीर्षक देबाक काज कविक काज थिक। नाम राखब एक क्लेशजनक प्रक्रिया छैक, जाहि क्लेश सँ रचनाकार केँ अनिवार्य रूपें गुजर' पड़ैत छैक।

अपन कविता संग्रह छपबा लेल हम अहाँ केँ द' सकैत छी। फरवरी आ 15 मार्च धरि व्यस्त छी। तकर बादे एकर प्रयास करब।'

13 फरवरी 1991क पत्र मे लिखलनि—'धार नहि होइछ मुक्त' अहाँ केँ छपबा लेल देब। नारायणजी 40 पृष्ठक पोथी छपओताह। ओहो अहाँ केँ छपबा लेल देताह।

भूमिका नहि देबैक। कभरक अंतिम पृष्ठ पर एक पैराग्राफ हमर व्यक्तित्व (कवित्व पर नहि) पर अहाँ लिखि क' द' सकैत छिऐक। संकल्प-3 लेल हमरा कोनो भार नहि दिअ'। थाकि गेल छी। छओ मास सँ कविता-कथा नहि लिखल अछि।

नारायणजी डा. नवीनक कविता सभ पढ़ि गेल छथि। प्रशंसा करैत छथि। पांडुलिपि डाक सँ पठा दी?'

12 मार्च 1991क पत्र मे ओ लिखलनि—'धार नहि होइछ मुक्त'क पांडुलिपि आ साधारण कभर लेल अहींक पठाओल डिजाइन पठा रहल छी। तत्काल अढ़ाइ हजारक बैंक ड्राफ्ट पठा रहल छी। पोथी अहाँ अपना जूति सँ, अपन इच्छाक अनुरूप छापी। पाइ जे लागय, से लिखब। पाइ हम अप्रैल मे डाक सँ पठा देब। एहि लेल अहाँ अनुमान सँ धनराशिक सूचना पठायब। पोथी शीघ्र बहरा जाय, से ध्यान राखब।

प्राय: छियासठि गोट कविता पठा रहल छी। कविताक संख्या घटा सकैत छी। संख्या किन्नहु नहि बढ़ायब।

एक हजार प्रति पोथी छापब।'

14 मार्च 1991क पत्र मे ओ लिखैत छथि—''संकल्प'क अंकक उद्‌घाटनक अवसर पर सुपौल आयब संभव नहि अछि, ताहि लेल क्लेश नहि करी। 'संकल्प'क अंक तैयार भ' गेल होअय, तँ ओकरा कोनो कारणे रोकू जुनि। तुरत रिलीज करू।

नवीन जी केँ शुभकामना निवेदित।'

18 मार्च 1991क पत्र मे ओ लिखलनि—'भाइ चंडेश्वर खाँ सुपौल सँ सकुशल

घुरि अयलाह अछि। हमरा लग कोनो कथा उपलब्ध नहि अछि। तें ओकर प्रतीक्षा नहि करी। हमर लेखन एखन बन्न अछि। लेखन केँ पटरी पर चढ़यबा मे समय लागत।

किछु लिखब, तँ पठयबा मे प्रसन्नता होयत।'

फरवरी आ मार्चक पत्र मे मुख्यत: ओ दू गोट बात पर विशेष ध्यान देलनि अछि। पहिल डा. नवीन कुमार दासक कविता पर ओ अपन एक पत्र मे बहुत उत्साहवर्द्धक टिप्पणी कयलनि आ दोसर अपन कविता संग्रह 'धार नहि होइछ मुक्त'क पांडुलिपि भाइ चण्डेश्वर खाँ द्वारा पठौलनि।

हमर एहि आग्रह पर जे नवीन जीक कविताक शीर्षक जीवकांत स्वयं देथि, ओ स्पष्टत: नकारि देलनि—ई कहैत जे शीर्षक देबाक काज कविक थिक आ नाम रखबाक क्लेशजन्य प्रक्रिया सँ रचनाकार केँ अनिवार्य रूपें गुजर' पड़ैत छैक। कवि नवीन कुमार दासक कविता हुनका प्रभावित कयने रहनि, से हमरा लेल आ कवि लेल सुखद छल।

'धार नहि होइछ मुक्त'क पांडुलिपि भेटल, पांडुलिपिक संग हुनक आवश्यक निर्देश सेहो भेटल। चण्डेश्वर जी अत्यंत आत्मीयताक संग सुपौल आयल छलाह आ एहिठामक साहित्यिक वातावरण मे रमल छलाह।

अनुमोदित डिजाइन हमरा सभ हुनक पोथी मे नहि द' सकलहुँ। ओहि समय मे सँझुका बैसारी होइत छल डा. नवीन जीक क्लिनिक मे। ओतय नाना प्रकारक व्यक्ति अबैत छलाह आ अनेक घंटा धरि हम सभ विचार-विमर्श मे ओझरायल रहैत छलहुँ। ओहिठाम सुपौल नवोदय विद्यालयक एक कला-शिक्षक प्रकाश कुमार सेहो अबैत छलाह। नवीन जी प्रकाश जी केँ पोथीक कवर डिजाइन बनयबाक अनुरोध कयलनि। प्रकाश जी तीन-चारि प्रकारक डिजाइन बनौलनि, ताहि मे सँ एक टा हमरा सभ केँ बेसी जँचल। अंतत: वैह डिजाइन रह' देल गेल।

संकल्प-2 ओहि समय बहार होयबा पर छलै, ताहि अवसर पर हमसभ जीवकांत जी केँ सुपौल अयबाक आमंत्रण देल मुदा ओ नहि आबि सकलाह।

जेना-तेना संकल्प-2 बहरायल। ई अंक समकालीन कविता पर केन्द्रित छल। अगिला पत्र, 3 अप्रैल '91 मे ओ लिखैत छथि—'कल्हुका डाक मे 'संकल्प-2' आयल। प्रसन्नता भेल। काल्हि बेर मे बजार मे 'संकल्प'क किछु प्रति बेचल।

नारायणजी कहैत रहलाह जे पत्रिकाक बदला मे पाइ तँ आयल मुदा पत्रिकाक अंक सभ अपात्र सभक हाथ मे गेल। 'अरसिकेषु कवित्वं निवेदनं मम शिरसि मा लिख मा लिख मा लिख'—मोन पड़ैत अछि।

हमर पितिऔत सुशील बाबू आ हमर जेठ बालक केँ एक-एक प्रति बेचल जाय। एक प्रति हमर छोट बेटा केँ पठाओल जाय आ पूछल जाय जे ओ पाँच प्रति ओहि ठाम बेचि सकताह।'

7 अप्रैल 1991क पत्र मे ओ लिखलनि—'संकल्प' उनटयबाक मोन नहि करैत अछि। ततेक ठाम अपन नाम मुद्रित देखैत छी जे अपनहि ग्लानि होइत अछि। पत्रिकाक एक अलिखित आचार संहिता होइत छैक। संपादक मे जकर नाम जाइक, तकर रचना नहि छापल जाय। एक अंक मे एक व्यक्तिक एक रचना सँ अधिक नहि जाय। इत्यादि। टिप्पणी सभ मे नाम नहि जाइत, तँ नीक छल। एक ठाम उल्लेख रहैत जे फलाँ-फलाँ टिप्पणीक लेखक फलाँ छथि। अस्तु, आब जे भेल, से तँ भैये गेल। आगाँ सँ एहि लेल सावधानी राखी, तँ उत्तम। पहिल आवरण पृष्ठ पर हमर पत्र नहि जयबाक चाहैत छल। ओहि पर कोनो दिवंगत साहित्यकारक विचार छापल जाइत, तँ नीक छल। अस्तु, ई बात सभ तँ भ' गेल अछि।

'संकल्प' आलोचक आ इतिहासकार लोकनि केँ पठओने होयब। किछु आर गोटे केँ पठाबी, से पता दैत छी—पंडित गोविंद झा, विजय विक्रम, पंचानन मिश्र, विनोद भारती।

कथा रैली। कटिहार। 27-28 अप्रैल।

एम्हर कथा-कविता नहि लिखल अछि।

पोथी छापब शुरू क' देने होयब। पाइक अगिला किस्त कहिया धरि पठा दी?

तारानंद वियोगी बी.पी.एस.सी.क तैयारी करैत छथि। अहाँ किएक नहि करैत छी?'

10 अप्रैल 1991क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'कोसी के आर-पार' आ 'कारखाना'क अंक भेटि गेल अछि।' फेर 11 अप्रैल 1991क पत्र मे लिखलनि—'कविवर सीताराम झाक जन्म-शताब्दी बीति रहल अछि। कविवर पर कोनो सामग्री छापू। शेखर जी पर कोनो सामग्री छापू।'

12 अप्रैल 1991क पत्र मे ओ लिखलनि—'डेढ़ हजारक बैंक ड्राफ्ट एहि पत्रक संग पठा रहल छी। भेटबाक सूचना कृपया पठाबी।

'वस्तु' कथाक नीक अनुवाद अहाँ कयलहुँ अछि। एहू लेल धन्यवाद।

कारखाना-10 आ 'कोसी के आर-पार' दुनूक मुद्रण आ प्रस्तुतीकरण नीक लागल अछि।

कथागोष्ठी मे कटिहार जयबाक विचार करैत छी। अहाँ चलैत छी की नहि?'

17 अप्रैल 1991क पत्र मे ओ लिखलनि—'हम पछिला दीर्घ पत्र आगाँ मार्गदर्शन लेल लिखने छी। जे भेल छैक से नीके भेल छैक। तें उदास होयबाक कोनो कारण नहि छैक।

दरभंगा मे किछु लोक असंतुष्ट छथि। जे 'समकालीन परिभाषा', 'कोसी के आर-पार' आ 'संकल्प-2' मे छूटल छथि, जे नवतुरिया छथि, छूटल छथि से अहाँ पर आ हमरा पर 'विशेष प्रसन्न' छथि। नारायणजी कहैत छथि। अहूँ केँ वैह कहताह।

हम आ नारायणजी अहाँ केँ पाइ पठा देने छी। नारायणजी पाँच सय आ हम डेढ़ हजार पठओने छी। भेटि गेल होयत।

27/4 केँ कटिहार जायब। ओत' सँ घुरैत काल सुपौल आबि सकैत छी।

हमरा आशा नहि जे ताधरि कविता-संग्रह बहरा सकत। नहि तँ नीक अवसर छलैक जे पोथीक लोकार्पण कटिहार मे क' देल जाइत।

कटिहार लेल आइ एक गोट कथा लिखल—नहरनी। आत्मविश्वास बढ़ल अछि। एम्हर विश्वासे ने होइत छल जे कथा लिखल होयत।

अहाँक निष्ठा, समर्पण आ खटबाक क्षमताक प्रशंसा करैत छी। स्वास्थ्य बचा क' परिश्रम करू।'

19 अप्रैल 1991क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'धार नहि होइछ मुक्त'क किछु मुद्रित पृष्ठ आ अहाँक 16.4क लिखल पत्र भेटल अछि।

कटिहार जायब। एक गोट कथो लिखल अछि। ओहि ठाम 'धार नहि होइछ मुक्त'क विमोचन होअय, तँ नीक। एहि लेल पचास टा पोथी कटिहार अहाँ लेने आबी।

पोथी अहाँ जेना छपैत छी, से ठीके छपैत छी। एहि पर कोनो टिप्पणी/सुझावक कोनो प्रयोजन नहि बुझैत छी।'

21 अप्रैल 1991क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'मैट्रिक परीक्षा मे कॉपी देखबाक नियुक्ति पत्र आयल अछि। 22 केँ मधुबनी मे कॉपी उठाउ। 23 केँ ओकरा ड्योढ़ मे बाँटू। 30 केँ फेर ड्योढ़ मे जमा कराउ। फेर 4 मइ केँ मधुबनी मे जमा क' आउ। एहना स्थिति मे अधिक सँ अधिक कटिहार जा सकैत छी। कटिहार सँ घुरती काल सुपौल नहि जा सकैत छी। यात्राक धौजनि सहबा योग्य आब स्वास्थ्य नहि अछि।'

जेना-तेना संकल्प-2 बहरा गेल छल। आइ मोन पड़ैत अछि ओ समय। नवीन जीक निष्ठा आ समर्पण। चारि गोट रोगी केँ देखथि आ दौड़ल आबथि सौरभ प्रेस। जतय 'संकल्प' छपैत छल। बैसि क' दुनू गोटे बेरा-बेरी प्रूफ देखी। सौरभ प्रेसक मालिक सूरज भैया नबका टाइप मँगबौने रहथि। चकाचक। कम्पोजिटर सभ मे सलीम मियाँ, शंभू ठाकुर आ विजय श्रीवास्तव। साँझ मे प्रेस मे सभक लेल जलखै अबैत छल—नवीन जी दिस सँ आ सभ क्यो संगहि खाइत आ गपिआइत रही। ई दृश्य बेसी काल पटनाक मुरलीधर प्रेसक स्मरण देआबय। मुरलीधर प्रेसक संस्थापक देवेंद्र झा अत्यंत उदार विचारक छलाह। प्रत्येक साँझ मे मुरलीधर प्रेस मे एहन दृश्य रहैक। हँसी-ठट्ठा, जलखै आ चाह-पान।

'संकल्प' जखन छपल तँ सभ टा कॉपी बाइंडरक ओतय नहि जा क' नवीन जी अपन क्लिनिक बला आवास मे राखलनि। भोकना, ठोकना आ सूइ-धागा। सभ व्यवस्थित। हम दुनू गोटे साँझ मे अपने भिड़ि जाइ आ देखिते-देखिते सय-पचास टा पोथी तैयार क' ली। भोर भेने डिस्पैच करैत रही।

कविता अंक मे जीवकांत जी सँ अनेक कवि पर टिप्पणी मँगबौने रही। जतय-ततय जीवकांत जीक नाम रहनि। आब अपनो बुझाइत अछि। ओहि समय मे तँ नीके लगैत छल। जीवकांत जीक पत्र आ संपादकीय वा पत्रिकाक आचार-संहिताक बात आइ कतेक प्रासंगिक लगैत अछि। जखन ओ लिखलनि तँ आगाँ लेल चेतलहुँ-सीखलहुँ।

अपन पत्र मे ओ अनेक लेखकक नाम आ पता पठौलनि। हम हुनको लोकनि केँ अंक पठौलियनि। विजय विक्रम ओहि समय आई.आई.टी.क प्रतिभा-संपन्न छात्र छलाह आ जीवकांत सँ घनिष्ठ रूपें जुड़ल छलाह।

पत्रिकाक अंक लेल, ओकर प्रसार आ विक्रय लेल सेहो ओ सहायक रहलाह। हुनक पुत्र अरुण जी ओहि समय सुपौलक सेंट्रल बैंक मे पदाधिकारी छलाह। ओहो बहुत सहायक भेलाह।

आगामी कथा-रैलीक आयोजन तिथिक सूचना ओ देलनि। संभावना छल जे जीवकांत ओहि रैली मे औताह। ओ पत्र मे अपन नव कथा लिखबाक सूचना देलनि आ एहि सृजन सँ अपन आत्मविश्वास बढ़बाक बात कहलनि। कटिहार कथागोष्ठी लेल हमहूँ सभ तैयार रही जयबाक लेल मुदा एम्हर जीवकांत जीक कविता संग्रह प्रेसस्थ छल, जकरा चाहैत रही जे कथा गोष्ठी मे लोकार्पित करी। मुदा से भ' नहि सकल आ हमरा लोकनि कटिहार नहि जा सकलहुँ।

'कारखाना' आ 'कोसी के आर पार' हुनका भेटि गेल रहनि आ ओ एहि आयोजन सँ, प्रस्तुतीकरण सँ आ कथानुवाद सँ प्रसन्न भेल रहथि। से हमरो आत्मविश्वास एहि सँ बढ़ल छल।

जमालपुर केन्द्रीय विद्यालय मे रहैत तारानंद बिहार लोक सेवा आयोगक तैयारी मे भिड़ल रहथि, जीवकांत एहि तैयारी लेल हमरो प्रेरित करैत रहलाह। मुदा हम तँ अपन ओही नोकरी सँ तत्काल संतुष्ट रही।

कविवर सीताराम झा जन्मशताब्दी बीति रहल छल आ ओ चाहैत रहथि जे संकल्प मे कविवर पर केन्द्रित कोनो रचना आबय। शेखर जी पर सेहो ओ कोनो रचनाक प्रकाशन लेल व्यग्र रहथि।

एम्हर निरंतर जीवकांत जीक पोथी छपि रहल छलनि। 27 आ 28 अप्रैल केँ जीवकांत जी कटिहार कथा गोष्ठी मे सम्मिलित भेलाह आ ओतय सँ सीधा सुपौल

आबि गेलाह। पोथी तैयारे छल। नवीन जीक क्लिनिक मे एक टा सादा समारोह किसुन संकल्प लोकक दिस सँ आयोजन कयल गेल आ सुपौलक थोड़ेक बुद्धिजीवी केँ आमंत्रित कयल गेल। एहि आयोजनक अध्यक्षता कयलनि प्रख्यात शिक्षक रजनीकांत लाल आ मुख्य अतिथि छलाह जीवकांत। जीवकांत अपन रचना-प्रक्रिया पर विस्तार सँ गप कयलनि आ लगभग अपन दस गोट कविताक पाठ कयलनि। उपस्थित कवि लोकनि सेहो अपन-अपन कविताक पाठ कयलनि। ई आयोजन अत्यंत सफल रहल आ जीवकांत सेहो खूब रमल छलाह। ओ डेढ़ दिन हमर सभक अतिथि रहलाह। समय बेसी नहि रहनि। ओम्हर मैट्रिकक कॉपी जँचाइक व्यस्तता रहनि तें ओ 30 अप्रैलक राति गाम लेल गाड़ी पकड़ि लेलनि। गाम पहुँचैत देरी ओ हमरा 1 मइ 1991 केँ पत्र लिखलनि—'आइ सकुशल गाम पहुँचि गेलहुँ। सकुशल पहुँचलहुँ आ यात्राक झमारक पछातियो स्वस्थ छी, तकर पाछाँ अहाँक (अहाँ सभक) शुभकामनाक पैघ हाथ अछि।

रेणु जीक पोथी पढ़ि क' शीघ्र टिप्पणी पठायब। 'संकल्प'क कथा-आयोजन लेल दुनू प्रश्नावलीक उत्तर सेहो पठायब।' फेर 3 मइ 1991क पत्र मे ओ लिखलनि—'सुपौल सँ घुरला पर अहाँक 21.4 वला अंतर्देशीय भेटल। डाक सँ पोथी पठाओल अछि—विद्यानंद झा, बीरेंद्र मल्लिक, राज मोहन झा, कीर्त्तिनारायण मिश्र, डा. जयकांत मिश्र। नारायणजी दरभंगा जा भीम भाइक डेरा पर हिनका सभ लेल पोथी राखि अओताह—भीमनाथ झा, प्रो. रमेश, शिवशंकर श्रीनिवास, अशोक, प्रो. सुरेंद्र झा सुमन, हरेकृष्ण झा, धूमकेतु, डा. नवीनचंद्र मिश्र, डा. अमरनाथ झा, डा. रामदेव झा, चंद्रेश।

डाकघर मे पोथी जोखबाओल। 70-75 ग्राम छैक। साधारण बुकपोस्ट मे दू टाका लगैत छैक। रजिस्ट्री सँ पठाउ, तँ आठ टाका लगैत छैक। डाक सँ पठायब कठिन छैक।

सुकांत, तारानंद वियोगी, विभूति आनंद, देवशंकर नवीन, प्रदीप बिहारी इत्यादि केँ हाथो हाथ (निचैन सँ, सुविधापूर्वक) पठयबाक अहाँ गर लगायब।

'कवि रेणु कहे' पढ़ि रहल छी। 'संकल्प' लेल कथा पर जे प्रश्नावली अछि, सेहो ध्यान मे अछि।

अहाँ पटना जा थीसिस वला काज संपन्न करू।'

6 मइ 1991क पत्र मे लिखलनि—'पोथी पठयबाक हड़बड़ी नहि अछि। तत्काल कोनो काज नहि अछि।

'कवि रेणु कहे' पर लिखबाक इच्छाक बावजूद लिखब पहाड़ लागि रहल अछि। एखन धरि शुरू नहि कयल अछि।

हमर बला किछु पोथी भिन्न-भिन्न ठाम राखल जाय, से सोचि रहल छी। अहूँ एहि दिशा मे किछु सोचू।

अहाँ पटना आ थीसिस वला काज लेल की सोचि रहल छी?

7 मइ 1991क पत्र मे ओ लिखलनि—'दीपक जी (जगदीप नारायण चौधरी) संकल्प-1क प्रकाशन मे बहुत सक्रिय छलाह। हुनका संकल्प-2 पठा क' हमरा लेल संतोषजनक काज कयल अछि।

तारानंद वियोगी दू गोट प्रश्नावली (संकल्प कथा अंक) निर्गत कयलनि अछि। तकर जवाब जरूरी अछि की? फणीश्वर नाथ रेणु पर लिखब एखन धरि पार नहि लागल अछि।

तीरभुक्ति-4 आयल अछि।

दिल्ली सँ 'मैथिली' (कथा त्रैमासिक) क प्रकाशनक प्रस्ताव राधामाधव भारद्वाज पठओलनि अछि।'

8 मइ 1991क पत्र मे लिखलनि—'डा. राणाक होम्योपैथी दवाइ शुरू करबाक एक सप्ताह पूरा भेल अछि। बाँहिक कनकनी अछि, किछु सुधार बुझाइत अछि। बामा ठेहुनक तकलीफ मे सेहो किछु कमी बुझाइत अछि।

कर्णामृत आ तीरभुक्ति कैँ बुक पोस्ट सँ कविता संग्रह पठाओल अछि।'

9 मइ 1991क पत्र मे ओ लिखलनि—'गंगेश गुंजन सँ संपर्क स्थापित करू। हुनकर कथा अबस्स आबय।

अहाँक पटना जयबाक आ थीसिस वला काज कैँ निर्णायक परिणति देबा मे की बाधा अछि?

अहाँ अपन लेखन आ प्रकाशन लेल सेहो गंभीर होउ।

हमरा एहि गर्मी मे किछु कयल पार नहि लगैत अछि। बरखाक आशा मे लोक अछि। बरखाक कोनो संभावना नहि अछि।

ओम्हरो एहने विकट समय होयत।'

11 मइ 1991क पत्र मे ओ लिखलनि—'गर्मीक कारणे गाम सँ बहराइत नहि छी। गर्मीक कारणे लिखबाक मोन नहि करैत अछि। फणीश्वरनाथ रेणु पर लिखबाक प्रोजेक्ट एखनो अनठायल अछि।

प्रभास जी 8/5 कैँ वाराणसी मे योगदान करबाक लेल हेलिकॉप्टर सँ गेलाह। 'धार नहि होइछ मुक्त' क आवरण मे सुधारक प्रयोजन अछि, ओ से समाद देलनि अछि।

शिवशंकर श्रीनिवास लिखैत छथि—'कटिहार कथागोष्ठी मे साझी संकलन लेल कविता हम ल' गेल रही जे केदार भेटताह तँ हुनका देबनि। से नहि भेने वियोगी

कैँ कविता द' देलियनि। सहयोग राशि एहि मासक अंत तक पठा सकबनि। ई बात सभ केदार कानन कैँ सूचित क' देल जाय। हुनका जँ कविता नहि पहुँचल होइन तँ पुनः हम कविता पठा दीयनि। संकल्प-3 लेल हमरा सँ कथा मँगने छलाह। एक टा कथा पठा देने छियनि। नहि जानि फेर की करै जेताह।'

25 मइ 1991 कैँ ओ लिखलनि—'अनिल ठाकुरक हाथें एक गोट हथौटी चिट्ठी पठओने छी।

मौखिक सूचना अछि जे भाइ मोहन भारद्वाज कैँ हार्ट अटैक भेलनि। शुभकामना पत्र पठाउ।

भाजपाक प्रचार मे एहिठामक नुक्कड़ सभा मे प्रो. सुरेंद्र झा 'सुमन' आयल छलाह।'

'धार नहि होइछ मुक्त' प्रकाशित भेल आ पोथी कैँ यत्र-तत्र लेखक लोकनि धरि पठाओल गेल। किछु पोथी हम अपनो स्तर सँ समीक्षार्थ, अवलोकनार्थ आ विक्रयार्थ पठाओल।

'कवि रेणु कहे' फणीश्वरनाथ रेणुक कविता संग्रह छल, जाहि पर 'विपक्ष' लेल जीवकांत जीक टिप्पणी चाहैत छलहुँ। रेणु जी कवितो लिखैत छलाह, ई बात कमे लोक कैँ बूझल रहैक। ई तँ धन्य कही कवि-संपादक भारत यायावर कैँ जे ओ ताकि-हेरि क' रेणु जीक तमाम कविता उपलब्ध करा प्रकाशित करबौलनि।

1980क आसपास मैथिलीक गीतकार आ सहृदय जगदीप नारायण चौधरी 'दीपक' सुपौलक भारतीय स्टेट बैंक मे शाखा प्रबंधक रहथि। ओ एतय जावत रहलाह, साहित्यिक गतिविधि सँ जुड़ल रहलाह। संकल्प-1 केर प्रकाशन मे ओ सक्रिय छलाह आ अपन शुभकामना सँ हमर उत्साहवर्द्धन कयने रहथि। संकल्प-2क प्रकाशन धरि ओ लहेरियासराय चलि गेल रहथि, जतय हुनका हम पत्रिका पठौने रही आ ओ अत्यंत प्रसन्न भेल रहथि।

जीवकांत सुपौल आयल रहथि तँ हमसभ एतय डा. राणा जी सँ हुनका देखौने रहियनि आ राणा जी मास दिनक दबाइ हुनका देने रहनि, जकर सेवन सँ हुनका लाभ भेल रहनि। डा. राणा होम्योपैथिक चिकित्सक छथि आ एखनो सुपौलक लोहियानगर मे अपन प्रैक्टिस करैत छथि।

प्रभास जीक स्थानांतरण मुजफ्फरपुर सँ वाराणसी भ' गेल रहनि आ ओ योगदान करय गेलाह, तकरो सूचना हमरा जीवकांत देलनि।

संकल्प कथा अंक मे डा. गंगेश गुंजन नहि छूटथि, तकर ध्यान ओ हमरा दिऔलनि।

साझी संकलनक बात एखन हवा मे छल आ हमसभ पूर्ण रूपें ओहि सँ निराश नहि भेल रही। शिवशंकर श्रीनिवास अपन पत्र मे एकर उल्लेख करैत छथि जे ओ जीवकांतक नामे लिखने रहथि। हमरा श्रीनिवासक पत्रक ओ पूरा अंश जीवकांत पठा देलनि जे हमरा सँ सम्बद्ध छल।

मइ 1991 मे प्रखर आलोचक मोहन भारद्वाज केँ 'हार्ट अटैक' भेलनि आ अंततः हुनका दिल्ली बाइपास सर्जरी लेल जाय पड़लनि। ई एक पैघ आघात छल मैथिलीक लेल। हमसभ बहुत चिंतित आ हताश भेल रही आ चिंताकुल मोने हुनका शुभकामना आ सान्त्वनाक पत्र पठौने रहियनि। जीवन मे एक सँ एक घटना घटैत रहैत अछि। ई हमर सभक सौभाग्य जे मोहन भारद्वाज स्वस्थ आ प्रसन्न भ' घुरलाह, जखन कि ओ अत्यधिक निराश भ' गेल रहथि—हुनक ओहि समयक पत्र सभ हुनक एहने मनोदशा-मनोव्यथा केँ व्यक्त करैत अछि, जे स्वाभाविक छल। 12 जून 1991क पत्र मे जीवकांत लिखलनि—'अहाँक पठाओल 'धूप की एक विराट नाव'क एक प्रति भेटल। राणा साहेबक होम्योपैथी दवाइ खायब एखन बन्न कयने छी। बीच मे अंग्रेजी दवाइ खाइत छलहुँ। एक बेर चेक-अप कराब' लेल बाहर जाय चाहैत छी। तकर बादे होम्योपैथी दवाइ शुरू करब।

संकल्पक कथा अंक लेल विचार पत्र दुनूक उत्तर डाक मे छोड़ि देने छी।

पत्र लिखब कम करू।

अहाँ अपन संग्रह सभ आ पोथी छपबा लेल सक्रिय होउ। कोनो लेखक लेल ओकर निजी पोथी उपलब्धि थिक। से अपन उपलब्धि लेल प्रयत्नशील होउ। एहि लेल प्रयत्नशील होयब तँ पत्रलेखनक त्वरा स्वतः घटत।'

23 जून 1991क पत्र लिखलनि—'अहाँक तीन टा पोस्टकार्ड काल्हि भेटल (एहिठाम पोस्टमैन पूरा एक सप्ताह मे एक बेर डाक बँटलनि अछि।) संकल्प विचार पत्र पर आ फणीश्वर नाथ रेणु पर हमर टिप्पणी अहाँ केँ भेटि गेल अछि, एहि सूचना सँ आश्वस्त भेलहुँ।

हमर स्वास्थ्य सामान्य अछि। बहुत चिंताजनक गिरावट नहि अछि। स्थानीय चिकित्सक डा. गोपालचंद्र झा बाहर जा क' मेडिकल चेक-अप करयबाक कोनो आवश्यकता नहि बुझैत छथि, तें बाहर जयबाक आवश्यकता नहि बुझैत छी। ए. झा केँ सेहो कहबनि जे हमरा स्वास्थ्य लेल अनावश्यक चिंता नहि करथि।

पचासक उमेरक बाद शरीरक सभ प्रणाली (सिस्टम) कमजोर होइत छैक, कमजोर होइत जाइत छैक। ताहि सँ व्यक्ति मे हताशा आ आत्मविश्वास मे कमी विकसित होइत छैक, हमरो सैह भ' रहल अछि। हमर आयुवर्ग मे पचास प्रतिशत स्त्री-पुरुष मे एहने रोग सभ छैक, जे वार्धक्यक कारणे छैक, आ तें से सभ ला-

इलाज छैक। पचपन बर्खक आयु अंगरेज सभ अवकाश प्राप्तिक आयु रखने छल। ठीक छैक ई। हमर अवस्था एखन छप्पन अछि।

दिल्ली मे इलाजो करओला सँ हम पचीस बर्खक युवक सन फरहर नहि भ' सकैत छी।

अशोक सुपौल आयल छलाह, से हमरा लेल सुखद सूचना। अशोक अपना पीढ़ी मे सभ सँ कम महत्त्वाकांक्षी लेखक छथि। कविता आ कथा मे जे गंभीरता आ अभिव्यक्तिक अपन शैलीक विकास ओ कयलनि अछि, तकर हम बहुत प्रशंसा करैत छी। अशोक काजक लोक छथि।

शिवशंकर श्रीनिवास केँ 'अदहन'क कथा सभ लेल गौआँ सभ पिटबाक बात करैत छलनि। आब मामिला शांत भेल छनि।

30/6 केँ भाखा टाइम्स 'साबरमती' (बुद्धिधारी सिंह रमाकर) आ 'सामाक पौती' (गोविंद झा) पर परिचर्चा आयोजित करैत अछि।

24/6 केँ भीमनाथ जीक बेटीक विवाह छनि।

11/7 केँ दरभंगा पुअर होम मे उमाकांतक 'यथार्थ' (कथा संग्रह) पर परिचर्चा अछि। कमलेश जी एहि मे भाग लेबा लेल गाम पर आबि नोंत द' गेल छथि।

जुलाइ मे पटना जाक' थीसिस वला काज पूरा करू।

गोविंद बाबू 'धार नहि होइछ मुक्त' पर निम्नलिखित टिप्पणी करैत छथि—'धार नहि होइछ मुक्त' प्राप्त भेल। पढ़ल, एके निःश्वास मे। नव तरहक लागल। लोक कहैत अछि दुर्ज्ञेयता मे गुंजन जी उपर कि अहाँ से कहब कठिन। मुदा एहि खेप मे अहाँ बहुत सुज्ञेय भेल छी। प्रतीक बजैत अछि, चुभैत अछि। कुंठा बढ़ल आ जीवट घटल लागल। बुढ़ारी आबि रहल अछि की?'

27 जून 1991क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'कटिहार कथागोष्ठी मे प्रभास कुमार चौधरी कहने रहथि जे संकल्पक कविता अंक मे गंगेश गुंजन केँ किएक छोड़ि देलियनि।

कोनो संकलन मे छपबा मे बहुत समस्या सभ अबैत छैक, से अहाँ एखन अनुभव करैत होयब। संकलन छपलाक बादो किछु समस्या अबैत छैक। तथापि लोक संकलन बहार करैत रहल अछि। कोनो काज करू, तँ यश-अपयश संग-संग उत्पन्न होइत छैक।

तें संकलनकर्त्ता केँ निष्पक्ष आ निर्मम होयबाक चाही। ओकरा आगाँ गुणवत्ताक अतिरिक्त आर कोनो विचारणीय बात नहि होयबाक चाही।

साहित्य केँ जें कि बढ़यबाक छैक, तें जकरा ककरो मे मौलिक दृष्टि होइक आ ओ दृष्टि फड़िच्छ होइत होइक, तँ तकर सम्मान (पुरना केँ) आ प्रोत्साहन (नवका केँ) आवश्यक छैक।

बाबा केँ अस्सी-पूर्त्ति पर शुभकामना पत्र पठओलियनि अछि।

रामभरोस कापड़ि भ्रमर टेलीफिल्म बनयबाक खयाल सँ नाटक लिखलनि अछि। भ्रमर केँ 'धार नहि होइछ मुक्त'क तीन प्रति (धीरेंद्र आ पाथेय लेल सेहो) भेटि गेल छनि।

प्रदीप बिहारी नेपाल टी.भी. लेल जट-जटिनक कैसेट ल' जा रहल छथि। 'मोटबाह'क पटकथा सेहो तैयार क' ल' जा रहल छथि।

डा. नवीनक पत्र सेहो भेटल अछि।'

हरेकृष्ण झाक कविता संग्रह 'साम्य' (विजय गुप्त, अम्बिकापुर) छपने छल—'धूप की एक विराट नाव।' तकर 10 प्रति हमरा लग आयल छल, जाहि मे सँ एक प्रति हम जीवकांत केँ पठौने रहियनि। हरेकृष्ण झाक ई पहिल संग्रह छल, जकरा व्यापक पाठकीय सराहना भेटलैक। ओना, अखनो ई हुनक पहिले संग्रह थिक, एहि बीच तेरह बर्ख बीति गेल अछि।

पत्र-लेखनक गति घटयबाक निमित्त ओ बेर-बेर हमरा लिखैत रहलाह आ अपन मूल लेखनक प्रति चेष्टाशील होयबाक अनुरोध करैत रहलाह।

एहि बीच ओ 'कवि रेणु कहे' पर टिप्पणी लिखि हमरा पठा देने रहथि, जे विपक्षक आगामी अंक मे आब' बला छल।

अपन स्वास्थ्यक विषय मे ओ गंभीर टिप्पणी करैत छथि। 1991 मे ओ छप्पन बर्खक भेल रहथि आ स्वास्थ्य प्रायः ठीक रहनि। जाहि व्यक्ति संग आत्मीयता रहैत छैक, हुनका जँ कुशक कलेपो लागि जाइत अछि तँ चिंता स्वाभाविक। सुपौल मे हमरा सभक अतिरिक्त हुनक जेठ पुत्र सेहो रहथि ताहि दिन। हमरा सभ हुनका स्वास्थ्य लेल चिंतित रहैत छलहुँ तें ओ पत्र मे अपन स्वास्थ्य पर टिप्पणी कयने रहथि।

कथाकार अशोक ओहि समय कोनो काजें सहरसा आयल छलाह तँ ओ सुपौल सेहो आयल छलाह। दिन भरि हुनका संग भरिपोख गपशप भेल छल आ हम एकर सूचना जीवकांत केँ देने रहियनि तँ प्रत्युत्तर मे अशोक पर एक महत्त्वपूर्ण टिप्पणी पत्र मे ओ लिखि पठौने रहथि। हुनक सुपौल अयनाइ सेहो हुनका सुखद लागल रहनि।

शिवशंकर श्रीनिवासक 'अदहन' मे संग्रहीत कोनो कथा ल' क' हुनक गामक लोक अगिया-बेताल भ' गेल रहनि, से सूचना जीवकांत जी हमरो देलनि।

भीमनाथ जीक बेटीक विवाह 24 जून केँ रहनि, पूअर होम मे उमाकांतक कथा संग्रह पर परिचर्चा आयोजित रहनि, तकर सभक सूचना सँ ओ लैस रहथि।

'संकल्प'क कविता विशेषांक मे गुंजन जी केँ रचना लेल लिखल तँ गेल रहनि, कोनो कारणे ओ समय पर अपन रचना नहि पठा सकल रहथि मुदा प्रभास जी एकर उलहन कटिहार कथागोष्ठी मे जीवकांत केँ देने रहनि। संकलनकर्त्ता केँ केहन होयबाक चाही, ताहू विषय मे ओ सार्थक टिप्पणी करैत छथि। यश-अपयशक बात करैत छथि आ ओ एहि बहन्ने हमरा संतोष सेहो दैत छथि।

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' आ प्रदीप बिहारीक मीडिया प्रेमक विषय मे सेहो हमरा ओ सूचना सँ लैस करैत छथि।

'धार नहि होइछ मुक्त' पर पंडित गोविंद झाक टिप्पणीक प्रसंग एतय हम जीवकांतक एक टा पत्र अवलोकनार्थ द' रहल छी जे ओ कवि नारायणजी केँ 12 अप्रैल 1992 केँ लिखने रहथि। एहि पत्रक माध्यमे जीवकांत आ जीवकांतक काव्यभूमि केँ नीक जकाँ बूझल जा सकैत अछि। ओ लिखैत छथि—

'भाइ नारायणजी,

'धार नहि होइछ मुक्त'क कविता सभ पढ़ि क' पं. गोविंद झाजी पत्र देलनि जे कविता मे पराजय-बोध किएक? ओ आगाँ पुछने रहथि, कदाचित ई बढ़ैत आयुक विकार तँ नहि? तहिना 1987क बाढ़िक पृष्ठभूमि पर लिखल एक कथा, 'हारने हरिनाम' कर्णामृत मे छपल छल। एहि कथा मे जे पराजय-बोध छैक, ताहि पर 'वैदेही' मे 'पटनिया' छद्मनाम सँ कोनो मित्र जबर्दस्त टिप्पणी कयने रहथि।

हमर कविता सभ मे पराजय-बोधक स्वर थोड़ कविता मे अबैत अछि। अबैतो अछि, तँ ओ प्राकृतिक आपदाक पृष्ठभूमि पर लिखल गेल कविता सभ मे आयल अछि। 1987क बाढ़िक अवसर पर लिखल गेल कविता सभ एकर बहुत श्रेष्ठ प्रमाण अछि। तहिना भूकम्पक पछाति लिखल किछु कविता मे दैन्यक स्वर आयल अछि। हमर उपन्यास 'अगिनबान' मे पात्र सभ दीन आ मूढ़ भ' जाइत अछि।

गाम-घरक लोक बहुत दब अछि, दब माने गरीब, अशिक्षित, असंगठित, अंधविश्वासी, गन्दा पसारि क' रहनिहार, बाट केँ धकिओनिहार, छोट-छोट चोरि कयनिहार, अनकर कोनो वस्तु केँ नष्ट क' देबाक इच्छा रखनिहार, इत्यादि-इत्यादि...

गामक लोक बहुत अकर्मण्य आ भाग्यवादी अछि, पिण्डोपजीवी अछि, इत्यादि-इत्यादि...

गामक लोक केँ नवजीवन प्रदान कयल जा सकैछ, जँ सार्थक उद्देश्य सँ ईमानदार प्रयास कयल जाइक। आजादी आ प्रजातंत्रक ढकोसला मे गाम आर विपन्न भेल जाइत अछि। गाम केँ संगठित करब कठिन छैक, ओकरा विघटित करब आसान छैक। देशक सभ पार्टी भोट लेल गाम केँ धर्म आ जाति आ भाषाक नाम पर खंडित करैत गेल अछि। स्थिति आइ ई अछि जे गाम मे प्रत्येक व्यक्ति एक-दोसराक शत्रु

भेल बैसल अछि। गाम केँ आब गामेक लोक नंड-भंड कर' लागल अछि।

आजादी आ प्रजातंत्र अयबा सँ पहिनहु राजसत्ता अपन सुरक्षा आ भोग-विलास मे डूबल छल आ ग्रामीण जनता अपना भागें जीबैत आ मरैत छल। ओ मरैत छल रौदी सँ, ओ मरैत छल दाही सँ, वसंत-कालीन अग्निकांड सँ, हैजा-मलेरिया सँ, भूकम्प सँ आ समस्त प्राकृतिक आपदा सँ।

तथापि आजादी आ प्रजातंत्र सँ पूर्व प्रत्येक गाम मे एक टा पवित्र आ नैतिक ग्राम-भावना रहैक, प्रत्येक ग्रामीण भैयारी आ सहानुभूतिक बोध सँ गाम सभ केँ रहबाक योग्य (कम सँ कम बरदास्त करबाक योग्य) रह' देने छल।

प्राकृतिक आपदा मे सँ अनेक मानव-निर्मित अछि, जेना रौदी आ दाही। तथापि ओ ऊपर सँ प्राकृतिक अबस्स लगैत अछि। एहि सँ, एहि सभ सँ बचयबा लेल भारतक प्रजातंत्री शासन-तंत्र मे इच्छा-शक्तिक अभाव छैक।

गामक लोक ठीके आब भगवानक भरोसे अछि, भाग्यवादी आ अकर्मण्य भ' गेल अछि। ओकरा मे पराजय-बोध छैक आ संगठनक महत्त्व बूझियो क' एहि लेल ओ अपना केँ असमर्थ पबैत अछि।

फागुन-चैत मे जखन तीव्र-गति सँ अनवरत पछबा बहैत छैक, आ साओन-भादो मे जखन अनवरत बरखा झहरैत रहैत छैक, तखन लगैत छैक जे गामक संपूर्ण अस्तित्व पर संकट अछि। ओहि क्षण मे मनुक्ख निर्मित कोनो एजेंसी ओकरा उबारि नहि सकैत छैक।

शासन, प्रशासन आ राजनीतिक दल सभक उद्देश्य दिनानुदिन लोक केँ निराशा, असमर्थता आ भाग्यवाद मे डुबओने जा रहल छैक। मनुष्यता पर मनुक्खक विश्वास नष्ट भेल जाइत छैक।

ड्योढ़ आ ब्रह्मपुरा जोड़ल बस्ती अछि। आइ तीन दिन सँ ब्रह्मपुराक ब्रह्मस्थान मे अष्टयाम कीर्त्तन ध्वनिवर्द्धक यंत्र पर भ' रहल अछि, आ ड्योढ़क पुबारि टोल मे ध्वनिवर्द्धक पर रामायणक चौपाइ सभक अनवरत पाठ भ' रहल अछि जे 'दशरथ अजिर बिहारी' द्रवित होथि।

गाम मे रहबा मे जे अदंक छैक, से कहियो काल कोनो कविता मे आबि गेल अछि, तकरा बुझबा लेल गामक संपूर्ण परिवेश आ परिस्थिति केँ बूझब आवश्यक छैक।'

जीवकांत : 12.04.1992

जीवकांतक कविता केँ एहि टिप्पणी सँ थोड़-बहुत बूझल जा सकैत अछि। हुनक किछु कविता केँ बुझबाक लेल ई पत्र सहायक होइत अछि।

4 जुलाइ 1991क पत्र मे जीवकांत लिखैत छथि—'कोसी के आरपार' एखनो विवाद आ अवसाद उत्पन्न करैत अछि। राज मोहन जी केँ अहाँक अनुवाद अधलाह लगलनि। धूमकेतु केँ हमर अनुवाद 'निर्धिन' लगलनि। धूमकेतु केँ तारानंद वियोगी उद्धृत कयलनि अछि।

राज मोहन जी केँ 'धार नहि होइ मुक्त'क आवरणक मुद्रण नीक नहि लगलनि अछि।

काज करैत चलू। टीका-टिप्पणी पर ध्यान कम दिअ'। अहाँ अपन लेखन केँ महत्त्व दिअ'। अपन कविता संग्रह, कथा संग्रह, समीक्षात्मक पोथी बहार करबाक दिशा मे प्रयत्नशील होइ।'

7 जुलाइ 1991क पत्र मे लिखैत छथि—'डा. राणाक दवाइ सँ क्रमिक लाभ अछि, मुदा दवाइ एखन खाय पड़त। तत्काल दवाइ अछि, पठयबाक काज नहि अछि। डा. राणा केँ सेहो पत्र देल अछि।

सोमदेव बेसी बीमार छथि, से राज मोहन जी लिखने छलाह। कन्यादानक पछाति भीम भाइ पेट दर्दक कारणे अस्पताल मे भर्ती भेल छलाह। मोहन भारद्वाज आब रोगमुक्त भेल छथि।

'कोसी के आरपार' पर जे प्रतिक्रिया व्यक्त भ' रहल अछि, हम तकर विरोध मे भीम भाइ केँ पत्र देल अछि जे एहि प्रकारक टिप्पणीबाजीक वार्षिक कार्यक्रम जँ ओ लोकनि चालू रखलनि, तँ ओहि सँ हमरा सभ केँ क्लेश होइत अछि आ धैर्य टुटैत अछि।'

17 जुलाइ 1991क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'हमरा लोकनि सकुशल एहिठाम पहुँचि गेल छी।

डा. राणा द्वारा पठाओल हमरा लेल दवाइ हमरा परोक्ष मे एहिठाम आयल छल, सेहो भेटल।

ऋषिकेश जीक पत्र हमरो आयल अछि जे ओ समकालीन परिभाषा-4 केँ पुस्तकाकार प्रकाशन करताह।

अहाँ लेल भारतीय अंग्रेजीक कविता सभक एक पुरान संकलन पठायब।'

21 जुलाइ 1991क पत्र मे ओ लिखलनि—'अहाँक 17 आ 18 जुलाइक दू गोट पत्र भेटल अछि। मंत्रेश्वर झा जीक पता नहि बूझल अछि। दरभंगा मे सुनने रही जे ओ इंगलैंड मे छथि। हुनक पता जनयबा लेल डा. रमानंद झा 'रमण' आ पं. गोविंद झा केँ लिखलहुँ अछि।

उमाकांतक 'यथार्थ' पर एक टिप्पणी लिखल अछि जे काल्हि चंद्रेश केँ नवानी मे देब।

भारत यायावरक पत्र हमरो आयल अछि, से चंडेश्वर खाँ लग अछि। हमरा हाथ मे नहि आयल अछि। 'विपक्ष'क रेणु अंक देखबाक इच्छा अछि।

नवानी मे रमेशक कथा संग्रहक विमोचनक संभावना अछि। डा. धीरेंद्र पर लिखबाक मोन बना रहल छी।'

22 जुलाइ 1991क पत्र मे लिखलनि—'षष्ठि पूर्त्तिक अवसर पर लेखक लोकनि पर मोनोग्राफ बहार करबाक बात नीक अछि। ओहि मे लेखक लोकनिक संक्षिप्त जीवनी, हुनक समकालीन लोकनि द्वारा हुनका बारे मे संस्मरणात्मक लेख आ हुनक विश्लेषण आ मूल्यांकन कर' बला लेख सभ द' एक गोट छोट पुस्तिका बहार कयल जा सकैछ।

कोनो योजना पर हड़बड़ी मे निर्णय नहि लेबाक चाही। योजना बनय, तँ ओहि मे समय देबाक चाही। योजना पर पर्याप्त सोच-विचार कयल जयबाक चाही। कोनो लेख परिश्रमपूर्वक तैयार कराओल जयबाक चाही। जे छपय से श्रेष्ठ एवं सराहनीय होअय।

तें एहि प्रकारक योजना पर तत्काल सोच-विचार शुरू करू, ओहि पर काज करब शुरू नहि करू। सोच-विचार जरूरी छैक।

सहयोगी कविता-संग्रह पर काज शुरू क' देब जरूरी छैक। भाइ हरेकृष्ण झा एक सम्मानजनक उपस्थिति होयताह, मुदा, हुनक समयबद्ध सहयोग, अपेक्षित सूचना सभ पठयबाक संदर्भ मे, पायब कठिन होयत। तें हुनका लेल प्रकाशन केँ अनावश्यक विलम्ब देब ठीक नहि होयत।

आइ नवानी जा रहल छी। नारायणजी सेहो जायब गछलनि अछि।'

23 जुलाइ 1991क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'नवानी मे कथागोष्ठी भेल। डा. रमानंद झा 'रमण' सँ सूचना भेल जे मंत्रेश्वर जी विदेश मे छथि, जुलाइक बाद पटना अबैत छथि।

'समाँग' (रमेश)क तीन प्रति अछि। डा. शिवेंद्र आ महाप्रकाशक प्रति सेहो अछि। रमेश केँ प्राप्ति-सूचना पठाओल जाय। गोष्ठी मे पं. गोविंद झा आयल छलाह।'

25 जुलाइ 1991क पत्र मे लिखलनि—'मैथिली नवकविता'क दू प्रति प्राप्त भेल। अहाँ केँ 'समाँग' (3 प्रति), 'लोकवेद आ लालकिला' आ 'हंत! अयोध्याकांड' पठाओल अछि।

नवानी मे पं. गोविंद झा जी कहलनि जे ओ अपना डेरा मे पोथीक जैकेट बनयबाक कौटेज इंडस्ट्री खोललनि अछि। ओ प्रस्ताव देलनि जे हमरा लोकनि 'धार नहि होइछ मुक्त'क किछु जैकेट हुनका ओहिठाम बनबा ली। हम आश्वासनक

आभास देलियनि। किछु प्रति अहाँ कूट बाइंडिंगक बात कहने रही, तकरे आधार पर हम ई आश्वासन देल।'

30 जुलाइ 1991क पत्र मे लिखलनि—'काल्हि डाक मे 'सोभन' (कथा) छोड़ल अछि।

28/7 केँ नारायणजी 82 सँ 86 धरिक पत्रक बोरा मे सँ महत्त्वपूर्ण लेखक सभक पत्र छाँटि क' गाम पर ल' गेलाह।

डा. धीरेंद्र पर संस्मरण लिखबाक मोन बना रहल छी। लिखब एखन शुरू नहि कयल अछि।

छोट भाइ नवकांत काल्हि एहिठाम आयल छलाह, 11/8 केँ बेटा केँ ल' क' दिल्ली जयताह।'

31 जुलाइ 1991क पत्र मे लिखलनि—'अहाँक पत्र आयल। गंगेश गुंजनक पत्र सेहो भेटल अछि। मोनोग्राफ बला योजनाक बात सेहो स्पष्ट भेल। डा. धीरेंद्र पर संस्मरण एक सप्ताह बाद लिखब। स्कूल परीक्षाक कॉपी देखि रहल छी।'

जुलाइ मासक पत्र मे 'कोसी के आरपार' पर जीवकांत बेस चर्चा करैत छथि। राज मोहन जी केँ हमर अनुवाद बहुत नहि जँचल रहनि, से पत्र द्वारा ओ हमरो सूचित कयने रहथि। हुनक कथा छल—'कोई एक शाम'। ओम्हर धूमकेतु जीक कथा छल 'अगुरबान', जकर अनुवाद जीवकांत कयने रहथि। अनुवादक अतिरिक्त अनेक ठाम एहि पोथीक प्रसंग टीका-टिप्पणी होइत रहल छल जे उत्साहो बढ़बैत छल आ निराश सेहो करैत छल। एहि प्रसंग जीवकांत भीम भाइ केँ सेहो एक पत्र देने रहथि, तकर सूचना जीवकांत हमरा देलनि।

'धार नहि होइछ मुक्त'क आवरण लेल सेहो टीका-टिप्पणी भेल। आवरण प्रभास जी आ राज मोहन जी केँ नहि रुचलनि। सुपौल मे हमर सभक पोथी-प्रकाशनक ई पहिल प्रयास छल, तें किछु गड़बड़ी जरूर भेल छल।

जीवकांत हमरा अपन संग्रह सभ लेल प्रेरित करैत रहलाह। मुदा सभ चीजक अपन समय होइत छैक आ समये भेला पर सोझाँ अबैत छैक—सैह प्राय: हमरो संग्रहक संग होयबाक छल।

कन्यादानक पछाति भीम भाइ अस्वस्थ भ' दरभंगा अस्पताल मे भर्त्ती भेल रहथि, से सूचना आनो स्रोत सँ बाद मे भेटल मुदा पहिल सूचना जीवकांते सँ भेटल, तहिना सोमदेव जीक अस्वस्थताक सूचना सेहो।

मंत्रेश्वर जीक विषय मे हम जिज्ञासा कयने रही आ ताहि पर जीवकांत जी अपना स्तर सँ प्रयास कयने रहथि आ पटनाक पता हमरा पठौने रहथि।

एम्हर भारत यायावर जी निरंतर हमरा संपर्क मे छलाह, आ हम वृहत्तर मैथिली

लेखक सँ 'विपक्ष' केँ जोड़य चाहैत रही। भारत जी केँ हम मैथिलीक लेखक लोकनिक पता पठबैत रही आ ओ निरंतर हुनका लोकनि सँ संपर्क करैत छलाह। वैह कारण छल जे 'विपक्ष'क फणीश्वरनाथ रेणु पर केन्द्रित अंक मे प्राय: दस-बारह गोट मैथिली लेखक अपन रचनात्मक सहयोग कयने रहथि।

'संकल्प' पत्रिकाक संग हम एक टा पुस्तिका बहार करय चाहैत रही, ताहि मे ओहन सभ महत्त्वपूर्ण लेखक पर एकाध टा लेख देब' चाहैत रही, जे सभ अपन जीवनक साठि बर्ख पूर्ण क' लेने रहथि। ई हमर एक महत्त्वाकांक्षी योजना छल। ओ कोनो योजना बनयबा मे हड़बड़ी नहि करबाक सलाह हमरा दैत छथि। जे वास्तव मे एक महत्त्वपूर्ण बात थिक।

साझी संकलनक बात एखनो हवा मे छल। जीवकांत जी भाइ हरेकृष्ण जी पर ठीक टिप्पणी कयने रहथि। ओ आइयो अपन आलस्य लेल विख्यात छथि अथवा ततेक अंतर्मुखी छथि जे हुनका प्रसंग अनेक काज सोचले रहि जाइत अछि।

नवानी कथागोष्ठी मे रमेश जीक कथा संग्रह 'संगोर'क लोकार्पण भेल छल। सरस जीक 'लोकवेद आ लालकिला'क लोकार्पण भेल छल। एक-एक प्रति हमरो सभ केँ पठाओल गेल छल। नवानी मे पंडित गोविंद झा जी पोथीक जैकेटक नव बात जीवकांत जी केँ कहने रहथि। आइयो ई बात हमरा लेल उत्सुकता आ जिज्ञासा सँ लैस कयने अछि।

धीरेंद्र जी अपना पीढ़ी मे वास्तविक रूप सँ सभ सँ बेसी उपेक्षित रहलाह। मैथिलीक तथाकथित आलोचक लोकनि ठीके हुनका पर अपेक्षित ध्यान नहि देलनि। तें हमरा मोन मे छल जे संकल्प मे धीरेंद्र जी पर विशिष्ट सामग्रीक संयोजन होइ। एहि मे जीवकांत जी हमरा सर्वप्रथम आगाँ बढ़िक' अपन रचनात्मक सहयोग देने रहथि।

1 अगस्त 1991क पत्र मे ओ लिखलनि—'मातृवाणी' आफसेट पर छपिक' आयल अछि। छओ पृष्ठ। अढ़ाइ टाका। भाइ राज मोहन झाक पत्र आयल अछि। अहाँक लेल कथाक कोनो चर्चा नहि। भाइ गंगेश गुंजनक पत्र आयल अछि। 'मैथिली' कथा त्रैमासिक लेल ओ दिल्ली वला नवयुवक सँ पुछारि करताह। लिखैत छथि जे पैघ अवकाशक पछाति ओ दिल्ली गेल छथि। 'धार नहि होइछ मुक्त' देखताह। लिखैत छथि जे ई दिल्ली मे कत' उपलब्ध छैक?

अनिल ठाकुर (ड्योढ़) केँ कोसी कोलोनी मे एक डेरा चाही। एहि लेल डा. एन.के. दास केँ लिखलियनि अछि जे ओकर कार्यपालक अभियंता मोहन तिवारी केँ ई बात कान मे देथिन।'

7 अगस्त 1991क पत्र मे लिखलनि—''सोभन' कथा पठओने छी। पहुँचनामा पठाउ। रमेश केँ 'समाँग'क पहुँचनामा पठाउ।

भारत यायावरक नव पत्र। राजेंद्र यादव केँ पत्र लिखबाक आग्रह। 'हंस'क कोन अंक मे हमर टिप्पणी छपत, तकर जिज्ञासा करबाक प्रस्ताव।

भारत यायावरक नव आग्रह। नागार्जुनक कविता (मैथिली कविता) पर लिखबाक नोंत। सकब नहि। एम्हर किछु लिखल नहि।'

8 अगस्त 1991 केँ पुन: हुनक पत्र भेटल—'डा. धीरेंद्र पर संस्मरण लिखबाक मोन हम बना लेने छी। अगस्तक दोसर पक्ख मे लिखब।

'सोभन' अहाँ केँ भेटल। से प्रसन्नताक बात। पढ़िक' जनाउ, केहन भेल छैक ई कथा?

धीरेंद्रक जीवनक किछु तथ्य (बायोडाटा सँ विस्तृत सन चीज) हुनका सँ मँगबाउ। धीरेंद्रक अपन सभ सँ प्रिय कथा, कविता, लेख हुनका सँ माँगू आ ओकरो छापल जयबाक औचित्य सोचू।

शिवशंकर श्रीनिवास। कविता संग्रह मे आत्मकथ्य नहि दैत छथि, तँ की एहि लेल संग्रहक प्रकाशन मे अनावश्यक विलम्ब कयल जयबाक चाही? हमरा बुझने नहि।

राजेंद्र यादव (हंस) केँ पत्र देल अछि। दू गोट। हुनक उत्तरक प्रतीक्षा अछि।

'धार नहि होइछ मुक्त'क जैकेट लेल व्यग्र नहि होइ। पटना जाइ तँ बूझि क' डेग बढ़ाबी।

'धार नहि होइछ मुक्त'क तेहेन मोटा अनिल ठाकुर केँ नहि देबैक जे ओकरा बलाय भ' जाइक।

अनिल ठाकुरक कार्यपालक अभियंता तिवारी जी डा. एन.के. दासक परिचित छथिन। अनिल ड्योढ़ मे कहने रहय जे डा. दास जँ मोन देथि, तँ ओकर काज भ' जयतैक। हमर अनुमान जे ओकरा डेरा-डंडाक तकलीफ छैक।

नवीन बाबू केँ एहि आशयक पत्र डाक सँ देने छलियनि, पत्रोत्तर नहि आयल अछि।

अहूँक ध्यान पर देबा मे कोनो उद्देश्य अछि।'

11 अगस्त 1991क पत्र मे लिखलनि—'काल्हि अनिल ठाकुर अहाँक पत्र आ ज्ञानरंजन द्वारा पठाओल पोथी देलनि। 'धार नहि होइछ मुक्त' तैयार नहि होयबा मे भेल बाधाक बात बुझलहुँ। बिजली मिस्त्री केँ सद्गति भेटओ। पोथी अहाँ सुविधानुसार पठायब। बहुत औनयबाक बात नहि छैक।

गंगेश गुंजन केँ पोथी पठा देबा लेल अनुगृहीत भेल छी।

अनिल ठाकुरक समस्याक प्रति अहाँ सभ प्रयत्नशील भेल छी, से हमरा लेल सुखद। अहाँ सभ अपन प्रयास मे सफल होइ।

डा. धीरेंद्र पर संस्मरण हम लिखब।'

15 अगस्त 1991क पत्र मे लिखलनि—'कथा-गोष्ठी मे आलोचक लोकनिक अ-गंभीर भूमिका सँ क्षुब्ध भ' एक पत्र मे मोहन भारद्वाजक ध्यान पर ई बात आनल। ओ अपन एक पत्र मे बहुत रास बात लिखैत छथि जे हुनक निराशा केँ आ प्रत्याघात केँ रेखांकित करैत अछि। ओही पत्रक उत्तर मे कुलानंद जी अपन निर्णय लैत छथि जे ओ समालोचना-कर्म त्यागि रहल छथि।

दोसर दिस हमर ओहि पत्र पर शिवशंकर श्रीनिवास आ अशोक प्रसन्नता व्यक्त कयलनि अछि।

विजय गुप्त (साम्य) लेखकीय सहयोग सेहो मँगैत छथि।

धीरेंद्र पर एक गोट टिप्पणी संलग्न अछि। नारायणजी केँ सेहो किछु लिखबाक बात कहल अछि।

ए.सी. दीपक अहाँ केँ 'मातृवाणी' पठओने होयताह। ए.सी. दीपक कथागोष्ठी नेहरा मे रखबा लेल प्रस्तुत भेल छथि।'

16 अगस्त 1991क पत्र मे लिखलनि—'आइ धार नहि...क 40 प्रति रजिस्टर्ड डाक मे भेटल। 26/- रु. डाकखर्च व्यर्थ बुझायल।

गोविंद बाबू अहाँ केँ मंत्रेश्वर जीक पता लिखि पठओने छथि। पं. गोविंद झा चेतना समितिक गृहकलह, पाठ्य पुस्तक संस्थानक मैथिली पाठ्य-पुस्तक (भाषेतर)क पुनरीक्षणक समाचार देलनि अछि।

ए.सी. दीपक मातृवाणी बहार कयलनि। ओ हमरा प्रस्ताव पर कथागोष्ठीक आयोजन पर अपन स्वीकृति देलनि।'

19 अगस्त 1991 केँ ओ लिखलनि—'कविता संग्रह केँ सूत सँ नत्थी करायब ओकर जीवन बढ़ओतैक। रंग बदलब नीक लागल। कभरक अंतिम पृष्ठ सेहो नीक लागल। एहि सँ बेसी कोनो बात देब नीक नहि होइत।

'मधुप : अमर कीर्त्ति कवि तोर'क एक प्रति कमलेश जी हमरा द' गेल रहथि। से हम पठा रहल छी। सुविधानुसार कोनो अधिकारी व्यक्ति केँ (जेना उग्रमोहन झा जी) द' देल जाय।'

20 अगस्त 1991क पत्र मे लिखैत छथि—'कीर्त्ति भाइ 'विराट वटवृक्ष के प्रतिवाद में' कविता संग्रह पठओलनि अछि।

भारत यायावरक पत्र आयल अछि। राज मोहन जी एक भेंट मे भारत केँ हमरा सभक विषय मे (स्पष्टत: अहूँक मादे) बहुत प्रशंसात्मक बात कहने छथिन।

भारत यायावर लिखैत छथि जे राज मोहन जी शीघ्र पटना आबि रहल छथि। ई प्रसन्नताक बात।

कीर्त्ति भाइक मैथिली कविता संग्रह 'ध्वस्त होइत शांतिस्तूप' सितंबरक पहिल सप्ताह मे अग्निपुष्प बहार क' देताह।

एम्हर हम ढेर पत्र अहाँ केँ पठाओल अछि।'

21 अगस्त 1991 केँ ओ लिखलनि—'भारत यायावरक पत्र आयल अछि। पटना अहाँ किएक ने जाइत छी?

गर्मी आ रौदी अछि। एक मास सँ बिजली नहि आयल अछि। 'कपीश कथामृत'क उद्घाटन एहि सप्ताह होयत। कमलेश पत्र द' बजबैत छथि।

चेतना समितिक भीतरी कलह। व्यास जी आ गोविंद बाबू त्यागपत्र द' हटलाह।'

22 अगस्त 1991 केँ ओ लिखलनि—''बेचैनी' दिस सँ आयोजित विचार गोष्ठी मे बोकारो मे अहाँ आमंत्रित छी, से सूचना भारत यायावरक पत्रो सँ ज्ञात भेल छल। अहाँ बोकारो सँ आबि गेल होयब।

'समकालीन पाकिस्तानी साहित्य' आ 'मौत उनके लिए नहीं' पठा देने छी।

प्रभास नीकें छथि। भुवनेश्वर पाथेय बेसी रुग्ण छथि। ई दुनू सूचना रमानंद झा 'रमण' दैत छथि। ओ कहैत छथि जे मंत्रेश्वर जी पटना आबि गेल छथि आ 'भाखा टाइम्स' प्रेस मे छपल आबि रहल अछि।

दिल्ली मे गंगेश गुंजनक कथा संग्रह छपैत छनि।'

27 अगस्त 1991क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'अहाँक बोकारो सँ घुरला पर चिट्ठी नहि भेटल अछि।

शिवशंकर श्रीनिवास लिखैत छथि जे ए.सी. दीपक जीक प्रस्ताव पर आयोजित कथागोष्ठीक पक्ष मे ओ छथि। आब मोहन भारद्वाज, भीम भाइ, अशोक इत्यादिक रुखिक प्रतीक्षा लेल हिनका लोकनिक बाट तकैत छी।'

हुनक 29 अगस्त 1991क पत्र भेटल—'अहाँक पत्र नहि आबि रहल अछि। स्कूलक काजक अलावे आर कोनो काज नहि कयल होइत अछि।

रमाकर जी (प्रो. बुद्धिधारी सिंह)क देहांत भ' गेलनि।

20 अगस्त केँ डा. भीमनाथ झाक माताक देहांत भेलनि।

हमर छोट भाइ 13 केँ दिल्ली पहुँचलाह। ओहि ठाम बड़का अस्पताल मे डाक्टर सभक हड़ताल छैक। ई लोकनि दिल्ली मे अड़ल छथि। हिनको लोकनिक अयबाक प्रतीक्षा अछि।

राँची सँ 23/8क लिखल अहाँक पत्र भेटल अछि।

हमर छोट भाइ दिल्ली सँ आइ सपरिवार गाम अयलाह।'

31 अगस्त 1991क पत्र मे ओ लिखलनि—'अहाँ वापसी मे सुपौल पहुँचि गेल होयब आ स्वस्थ-सक्रिय होयब।

राज मोहन जी 'संकल्प' लेल कथा देने होयताह। 'विपक्ष' सँ अहाँ स्थायी रूप सँ जुड़ि गेल छी, से नीक लागल। नागार्जुन पर हम लेख देब, की नहि, से संयोगक बात अछि, एखन किछु कहब संभव नहि अछि।

'धार नहि होइछ मुक्त'क विमोचन समारोहक अवसर पर लेल गेल फोटोग्राफ मे सँ किछु फोटोग्राफ नारायणजी लेब' चाहैत छथि। विशेषत: ओ फोटोग्राफ जे ए. झाक निवास पर साँझ मे सामूहिक फोटोग्राफ छल। कोनो व्यवस्था सँ हुनका पठाउ, नहि तँ अपन वला प्रति हम हुनका द' देबनि।

नारायणजी केँ अपन कविता, वक्तव्य आ बायोडाटा शिवशंकर श्रीनिवास पठा देने छथि। मुदा, सामग्री हमरा पसिन्न नहि भेल।

राज मोहन जी शीघ्रे पटना ज्वाइन करताह, से आशा करैत छी।

कोसी धार मे जलस्तर चिंताजनक हमरो लेल अछि।'

नेहरा निवासी ए.सी. दीपक मैथिली मे अत्यंत सक्रिय छलाह आ आरंभे सँ नव-नव प्रयोग करैत छलाह। राजकमल चौधरीक समकालीन दीपक जी 'मातृवाणी' नामक छओपेजी पत्रिका ऑफसेट पर बहार कयने रहथि। एहि पत्रक सूचना जीवकांत जी सांगोपांग दैत छथि।

डा. गंगेश गुंजनक स्थानांतरण दिल्ली आकाशवाणी भ' गेल रहनि। ओ 'मैथिली' कथा त्रैमासिकक पुछारि दिल्ली मे करताह, सेहो सूचना हमरा जीवकांते जी द्वारा भेल। गुंजन जी तकरा बादो अनेक पत्र-पत्रिकाक योजना दिल्लीक किछु उत्साही युवक लोकनिक संग बनौलनि, ताहि मे एकाध टा मे ओ सफल भेलाह। जीवकांत जीक कविता संग्रह ओ देख' चाहैत रहथि, जे बाद मे हम हुनका पठा देलियनि।

जीवकांत जीक एक पौत्र अनिल ठाकुर सुपौलक कोशी प्रोजेक्ट मे स्थानांतरित भ' क' आयल रहथि। ओहि समय कार्यपालक अभियंता छलाह मोहन तिवारी जे चिकित्सा-क्रम मे आ ओहिनो साँझ केँ डा. नवीन कुमार दासक ओतय गप-गोष्ठी मे सम्मिलित होइत रहथि। ई बात अनिल ठाकुर केँ सेहो बूझल रहनि। तिवारी जी समेत सुपौलक अनेक पदाधिकारीक बैसार ओतय होइत छल। अद्‌भुत समय छल ओ। से एक दिन तिवारी जी लग नवीन बाबू चर्चा क' देलथिन। अनिल ठाकुर केँ

अंतत: कोशी कॉलोनी मे क्वार्टर भेटि गेलनि। जीवकांत जी निरंतर एहि प्रसंग लिखैत रहलाह।

भारत यायावर संग सघन पत्राचार छल। ओ मैथिलीक अनेक लेखक सँ निरंतर संपर्क क' रहल छलाह। एहि काज मे हुनका अनेक सफलता सेहो भेटलनि। हुनके अनुरोध पर जीवकांत जी हंस संपादक आ कथाकार राजेंद्र यादव केँ किछु पत्र लिखने रहथि।

ओ कतेक सतर्क रहैत छलाह, से हुनक पत्र सभ सँ ज्ञात होइत अछि। रमेश जीक 'समाँग' हमरा भेटि गेल छल मुदा ओ संशय मे रहथि जे हम रमेश जी केँ पोथीक पहुँचनामा पठौलियनि वा नहि, तें ओ एहि प्रसंग तगादा कयलनि, जखन कि हम रमेश जी केँ प्राप्ति-स्वीकृति आ कथा संग्रह पर अपन प्रतिक्रिया सेहो पठा देने रहियनि।

प्रो. धीरेंद्र जीक उपेक्षा-भाव केँ जीवकांत जी सेहो अनुभव करैत छथि। ओ 'संकल्प' लेल धीरेंद्र जी पर अपन संस्मरण लिखबाक मन बना लेने रहथि आ बाद मे पठयबो कयलनि। ओ चाहैत रहथि जे एहि अंक आ धीरेंद्र जी पर पठनीय आ महत्त्वपूर्ण सामग्री आबि सकय।

साझी संकलन लेल शिवशंकर श्रीनिवास जीक सामग्री अयबा मे विलंब भ' रहल छल मुदा बाद मे ओ सामग्री पठौलनि। ओहि सामग्रीक प्रस्तुति अथवा सामग्रीक किछु अंश हुनका पसिन्न नहि भेल रहनि, तकर सूचना ओ हमरा देलनि।

कथा-गोष्ठीक अनेक विशिष्टता अछि तँ ओकर किछु कमजोर पक्ष सेहो अछि। किछु कथाकार-आलोचक अपन-अपन गुटक कथाकारक कथा पर बहस करैत छथि आ किछु कथाकारक कथा सर्वथा उपेक्षित रहि जाइत अछि। एना जें कि निरंतर होइत रहल अछि जे कोनो जागरूक लेखक केँ खराब आ असंगतिपूर्ण लागि सकैत अछि। एहि विषय केँ केन्द्र मे राखि जीवकांत जी प्रसिद्ध आलोचक मोहन भारद्वाज केँ प्रत्युत्तर देने रहथि। आ एहि पत्र सभक प्रतिक्रिया एहन भेल जे एक दिस प्रखर आलोचक कुलानंद मिश्र आलोचना-कर्म केँ त्यागि देबाक बात सेहो लिखलनि। दोसर दिस कथाकार अशोक आ शिवशंकर श्रीनिवास जीवकांत जीक एहि पत्रक समर्थन कयलनि।

अगस्त मे भारत यायावर बोकारो मे 'बेचैनी' (भारत यायावरक हिंदी कविता संग्रह) आ 'विपक्ष' पत्रिका पर एक गोष्ठीक आयोजन कयने रहथि आ हमरा विशेष रूपें आमंत्रित कयने रहथि। हमरा जयबाक एक अन्य आकर्षण छलाह ओहि समय बोकारो मे पदस्थापित भाइसाहेब, माने राज मोहन झा। बोकारो जाइत काल पटना सँ बोकारोक बीच मे हम पाँच गोट हिंदी कविता लिखलहुँ जे उक्त गोष्ठी मे पढ़ने

रही आ बाद मे ओ पाँचो कविता धनबाद सँ प्रकाशित 'आवाज' साप्ताहिक मे प्रकाशित भेल छल। ओहि गोष्ठीक अध्यक्षता संयोग सँ हमरे करय पड़ल छल आ लगभग बीस गोट रचनाकार ओहि गोष्ठी मे सम्मिलित भेल रहथि। हम ठहरल छलहुँ भाइसाहेबक सरकारी क्वार्टर मे आ हुनके कार्यालयक वैन पर गोष्ठी मे उपस्थित भेल रही। 'विपक्ष' सँ हम स्थायी रूपें जुड़ि गेल रही। ओहि ठामक साहित्यक केन्द्रविंदु रहथि भारत यायावर, अत्यंत लोकप्रिय आ चर्चित कवि-व्यक्तित्व। हमरा आ भाइसाहेब केँ ओहि प्रवास-काल मे भाइ भारत यायावर आवेशपूर्वक एक दूपहर भोजन पर बजौने रहथि। एहि प्रवास-काल मे हम पहिल बेर भौजी केँ (श्रीमती राज मोहन झा) देखने रहियनि। हमरा संग मे हमर पितिऔत अमरनाथ रहथि, जकरा हमसभ 'गुरुजी' कहैत छलहुँ। गुरुजीक संग भौजी खूब बतिआइत छलीह। गुरुजी केँ स्त्री लोकनि सँ तुरत मित्रता भ' जाइत छलैक। हमसभ बोकारो आ चास घुमैत रही आ गुरुजी भौजीक संग गपिआइत रहैत छल। भाइसाहेबक क्वार्टर खुशफैल छल, अनेक कमरा। चारू कात जमीन आ बीच मे क्वार्टर। आम-लतामक गाछ सँ भरल-पुरल। मनोहारी। आइ गुरुजी केँ स्मरण करैत ई कहबाक मोन होइत अछि जे ओ बहुत साहसी आ प्रसन्नचित्त रहयबला लोक छल। ओ हमरा संग यत्र-तत्र जाइत छल आ यात्रा मे कोनो असुविधा उत्पन्न नहि होब' दैत छल। हमर ओहि गुरु जीक कैंसर सँ असामयिक निधन भ' गेलनि, जखन कि ओ मात्र 26-27 बर्खक छल।

बोकारोक बाद हम राँची चलि गेलहुँ। ओतय एक सप्ताह रहि फेर गाम अयलहुँ। एहि बीच जीवकांत जीक पत्र सुपौलक पता पर अबैत रहल छल। बोकारो मे भेल गोष्ठीक परिणाम भेल जे हम 'विपक्ष' संग स्थायी रूप सँ जुड़ि गेलहुँ आ कालांतर मे विपक्षक रेणु अंक, विपक्षक ललित-अंक (मैथिलीक कथाकार ललित पर संपूर्णतः एकाग्र) आ अन्यो सामान्य अंक सभ पर मैथिलीक रचनाकार लोकनि हमरा रचनात्मक सहयोग करैत रहलाह आ 'विपक्ष' बेस चर्चित-प्रशंसित भेल। भारत यायावर बोकारो सँ जखन पटना आयल रहथि, तँ हमरो पटना अयबाक लेल कहने रहथि। ओ पुरान अखबार आ पत्रिका मे प्रकाशित फणीश्वरनाथ रेणुक असंकलित रचना सभक खोज मे 'खोजीराम' बनल रहथि। एहि क्रम मे हुनका संग दिन भरि बौआइत रही, हिंदी आ अंगरेजीक अनेक प्रोफेसर सभक ओतय। मोन पड़ैत अछि प्रो. मंगलमूर्त्तिक (आचार्य शिवपूजन सहायक पुत्र) पुनाइचक स्थित निवास, अरुण कमल, कलक्टर सिंह केसरी जीक अतिरिक्त एक अन्यो प्रोफेसरक (संभवतः कोनो पाण्डेय जीक) ओतय गेल रही। एक-एक अखबार, पोथी-पत्रिकाक एहन सुव्यवस्थित रख-रखाव हम कतहु आनठाम नहि देखल। हुनका ओतय रेणु जीक बहुत रास सामग्री भेटल। तकरा सभ केँ हाथ सँ उतारलहुँ, जे बाद मे अनेक पोथी आ रेणु

रचनावली मे प्रकाशित भेल। भाइसाहेब (राज मोहन झा) सँ भेंट तँ नित्तह होइते छल। ताहि क्रम मे नया टोला मे भारत यायावर केँ भेंट करौलियनि उमाकांत बाबू सँ। उमाकांत बाबू (श्रीवास्तव) प्रखर समाजवादी आ लोकनायक जयप्रकाश नारायणक निकटतम संबंधी। संगहि हमर ससुर शैलेश कुमार पाठक जीक आत्मीय संगी। श्रीमती सुधा श्रीवास्तव (बिहारक काबीना मंत्री) जीक ओ पति रहथि मुदा एकसरे नया टोलाक एक मकान मे रहैत छलाह। एक टा समाजवादी अखबार कहियो एहि भवन सँ बहराइत छल। एकसर रहथि उमा बाबू। संग रहनि एक टा पुरान झंखाड़ साइकिल। ओ ओही पर चढ़िक' अबैत छलाह हमर पी.जी. होस्टल। अपन कुरता-पायजामाक ढेरी ल' क'। गंगाक कात मे धोबीक भरमार रहैत छल। कपड़ा जखन साफ करयबाक होनि तँ एक गट्ठर साइकिल पर लदने अबैत रहथि। हमर लेमन टीक विरल प्रशंसक सभ मे सँ एक। दुब्बर-पातर, नमछुर, आँखि पर चश्मा। हम कपड़ा धोबी केँ द' क' साफ करबा दैत रहियनि आ ओ तीन-तीन मास निश्चिंत रहैत छलाह। एहि बीच जहिया हमरा पलखति होअय, हुनक कपड़ा सभ नया टोला पहुँचा अबियनि। कतेक दिन हुनका संग, हुनक बनाओल खिच्चड़ि खयलहुँ। भानस करबाक हुनक ढंग विलक्षण रहनि। सभकिछु केँ एक्के मे चढ़ा ओ स्टोव पर भोजन बनबैत रहथि। एतेक सादा जीवन आ उच्च विचार विरल छल। गप-शप मे संयमित। कहियो एकर भान नहि होब' देलनि जे ओ एतेक पैघ लोक छथि। हुनक दुनिया सीमित छलनि। हमरा सँ आत्यंतिक लगाओ। भारत यायावर केँ हुनका सँ बहुत रास वैचारिक सहयोग भेटल छलनि। उमा बाबूक जीवन आ रंग-ढंग सँ ओ बहुत प्रभावित भेल रहथि।

ई ओहन समय छल जखन चेतना समितिक आंतरिक कलह सँ ऊबि पं. गोविंद झा आ उपेन्द्रनाथ झा व्यास जी त्यागपत्र द' देलनि आ समिति सँ बाहर भ' गेलाह। ओहि समय मंत्रेश्वर बाबू विदेश सँ घुरल छलाह आ गोविंद बाबू हुनक पत्राचारक पता हमरा पठौने रहथि। मंत्रेश्वर बाबू सँ सघन पत्राचार आरंभ भेल छल जे आइयो ई क्रम बनले अछि।

एहि बीच 'धार नहि होइछ मुक्त' केर कवरक रंग किछु प्रति मे बदलि देने छलहुँ आ किताबक स्थायित्व लेल सूत सँ नत्थी करबा देने छलहुँ—ई क्रिया जीवकांत जी केँ नीक लागल रहनि आ ओ प्रसन्न भेल रहथि।

बड़गाम निवासी उग्रमोहन झा स्थानीय कोशी कॉलोनी मे एक स्कूल खोलने रहथि, हमरा सँ तीन-चारि वर्ष सीनियर रहथि। 'अमर कवि कीर्त्ति तोर' (मधुप अभिनंदन ग्रंथ, कलकत्ता) मे हुनका सँ सेहो एक लेख लिखबौने रही। ओ पोथी जीवकांत जी हमरा लेल पठा देलनि, जे उग्रमोहन जी केँ हम द' देने छलियनि। एही उग्रमोहन जी सँ हुनक गाम 'बड़गाम' पर 'माटिपानि'क एक अंक मे विस्तृत रपट

लिखबौने रही जे भाइ उदयचंद्र झा 'विनोद' जी आ विभूति जी स्नेहपूर्वक प्रकाशित कयने रहथि।

प्रो. बुद्धिधारी सिंह 'रमाकर' जीक देहांत भ' गेलनि। ई सूचना जीवकांत जी देलनि, वैह लिखलनि जे भीमनाथ जीक माताक देहांत 20 अगस्त केँ भ' गेलनि। मोन पड़ैत अछि पटना। पटना मे भीम भाइक डेरा, जतय लगभग प्रतिदिन जाइत रही। भीम भाइक स्नेह आ प्रेमक नदी सभ लेल सदैव कलकल-छलछल करैत छल। स्नेह-प्रेम सँ लबालब ई नदी कहियो सुखायल नहि, ओहिना अखनो भरल-पुरल अछि। तहिना भीम भाइक माता, हमर सभक काकी! अत्यंत सहज, सरल स्वभावक प्रतिमूर्त्ति। धार्मिक प्रवृत्तिक ओहि काकीक दुब्बर-पातर काया मोन पड़ैत अछि। हमरा प्रति हुनका अत्यंत स्नेह रहनि। हुनक मृत्यु सँ हम अत्यंत दुखी भेलहुँ आ अवसाद सँ भरि गेलहुँ। आइ हुनका हम प्रणाम आ सश्रद्ध स्मरण करैत छियनि।

एहि बीच जीवकांत जीक अनुज अपन पुत्रक संग दिल्ली सँ घुरलाह, जकर चिंता एम्हर निरंतर हुनका रहनि।

'धार नहि होइछ मुक्त'क विमोचन समारोह पर सुपौल मे अनेक फोटोग्राफी भेल छल। ताहि फोटोग्राफी मे सँ किछु नारायणजी अपना लेल चाहैत छलाह। जीवकांत जी केँ किछु चित्र पठौने रहियनि। ओ लिखलनि जे जँ हम नहि पठा दियनि तँ ओ अपने बला प्रति नारायणजी केँ द' देताह।

ए.सी. दीपक जी नेहरा मे कथा गोष्ठी करथि, ई बात जीवकांत जी उठौने रहथि। एकर समर्थन कयने रहथि कथाकार अशोक आ शिवशंकर श्रीनिवास। जीवकांत जी हिनका सभक संगहि आलोचक मोहन भारद्वाजक पत्रक प्रतीक्षा क' रहल छलाह, जे अखनधरि हुनका नहि भेटल रहनि।

3 सितंबर 1991क पत्र मे ओ लिखलनि—'शनि-रवि केँ एक गोट कथा लिखल—तेल। कथा समाप्त कयला पर नीक लागल।

अहाँक राँची सँ लिखल पत्र भेटल छल। राँची सँ घुरला पर अहाँक कोनो पत्र नहि आयल अछि। ओना तीन दिन बन्न रहलाक पछाति आइ डाकघर फूजल अछि, भ' सकैछ आइ कोनो पत्र भेटय।

कथागोष्ठी पर हमरा पत्र सँ जे बात पता चलल छल, से अपन चक्र पूरा नहि कयलक अछि। एहि संबंध मे मोहन भारद्वाजक पत्रक प्रतीक्षा अछि।

ए.सी. दीपक कथागोष्ठीक आयोजन करथि, ताहि प्रसंग मे मोहन भारद्वाज आ अशोकक पत्र नहि आयल अछि। शिवशंकर जी एहि लेल उत्सुक छथि, से हुनक पत्र आयल अछि।

अगिला पोथी हम अपन कथा-संग्रह छाप' चाहब। देखी, से संभव होइत अछि, की नहि!'

एहि पत्रक पीठ पर ओ 4 सितंबर 1991 केँ लिखलनि—'कल्हुका डाक मे अपराजिता देवीक पोथी 'बरबाद होअ सँ पहिने' आयल अछि। गीत, भजन आ लेख अछि। पठओने छथि डा. जयकांत मिश्र।

प्रदीप बिहारी तीन सप्ताह सँ खाट धयने छथि। फेफड़ा मे कफक चर्चा करैत छथि।

'भाखा टाइम्स' आफसेट पर 4 पृष्ठ अखबारी साइज मे छपल अछि। दरभंगा मे अंक उपलब्ध अछि।

मनमोहन झा (सीनियर)क कथासंग्रह 'वीरभोग्या', सदन मिश्रक नाटक 'मीनाक्षी', भवेश मिश्रक कथा संग्रह 'कपीश कथामृत' दरभंगा मे विमोचित भेल अछि।'

6 सितंबर 1991क पत्र मे लिखलनि—'अहाँक 2/9क लिखल दीर्घ पत्र पाबि संतोष भेल अछि।

अहाँ लेल एक गोट हथौटी पत्र अपन पितियौत सुशील केँ देल अछि जे आइ सुपौल गेल छथि।

कुलानंद जी कीर्त्तिनारायण मिश्रक हिंदी कविता संग्रहक प्रकाशन केँ व्यर्थ आ अनुपयोगी बुझैत छथि।'

8 सितंबर 1991क पत्र मे लिखैत छथि—'अहाँक नोकरी छुटबाक बात सँ अतिशय कष्ट भेल छल। एक तँ ई नोकरी कोन वांछनीय छल। दोसर नोकरी भेटि जाय, से प्रयत्न करू। वेतन बिना जीवन अत्यंत कठिन। भाऊ समर्थक आत्म-कथात्मक पोथी 'मिस्सी' पढ़ि रहल छी। कलाकारक दैन्य आ दुर्दशा पढ़ि देह कंटकित होइत अछि।

भाखा टाइम्स मे एक गोट कविता आ 'आँजुर' मे हमर दू गोट कविता आयल अछि। एम्हर कथात्मक कविता सभ लिखबाक इच्छा भेल अछि। एहेन तीन-चारि टा कविता लिखल अछि।

अभाव मे धैर्य आ गरिमा जोगाउ। आर की कहू?'

9 सितंबर 1991क पत्र मे ओ लिखलनि—'काल्हि साँझ मे अनिल ठाकुर अहाँ लोकनिक पत्र आ कविता संग्रहक 50 प्रति लेने अयलाह। कल्हुका बरखा-झटक मे, यात्रा मे हुनका बहुत कष्ट भेलनि।

पोथीक पैकेट थोड़ेक समसि गेल छैक। रौद देखओला सँ फेर ठीक भ' जयतैक। अनिल कहैत छथि जे कटैया पावर हाउस लग सड़क टूटल छैक। ओहिठाम

रिक्शा उनटि क' खत्ता मे खसि पड़लनि। अस्तु, स्वस्थ छथि आ सभ सामान लगभग सुरक्षित अछि।

पोथीक एहि खेप केँ दरभंगा मे कतहु-कतहु रखा देब जे ओ उपलब्ध रहय।'

15 सितंबर 1991क पत्र मे लिखलनि—'अहाँ पुत्रीक पिता भेल छी, ताहि लेल अहाँक संवर्द्धनाक कामना करैत छी। कालिदास शकुंतला मे कन्या केँ समस्त करुणा आ अनुरागक केन्द्र माननलि अछि। नवजातक आ प्रसूतिकाक स्वास्थ्यक कामना करैत छी। अरुण बाबूक माय हुनक पत्र नहि भेटबाक चिंता करैत छथि। हुनका पत्र देबाक चाहियनि।

ए.सी. दीपक 15/10क 'मातृवाणी'क अंक लघुकथा विशेषांकक रूप मे बहार करताह। हमरा बनओताह अतिथि संपादक। हम तारानंद वियोगी, शिवशंकर श्रीनिवास, रमेश इत्यादि मे सँ किनको अतिथि संपादक बनयबाक विचार देलियनि अछि।

थोड़ेक लघुकथा ओम्हर सँ दीपक जी केँ उपलब्ध करबियनि।

यात्री जीक दुखित भ' दरभंगा अयबाक सूचना अहींक पत्र सँ प्राप्त भेल अछि। दरभंगा जायब, पुछारि करबनि।'

17 सितंबर 1991क पत्र मे ओ लिखैत छथि 'नवजात आ प्रसूतिकाक स्वास्थ्य आ प्रसन्नता लेल शुभकामना।

'तेल' कथा ल' अहाँ की करब ? तेल कथा अगिला कथागोष्ठी मे पढ़ब, तखन पठायब। अगिला गोष्ठी 7.11 केँ होयबाक संभावना अछि।

नागार्जुन पर लिखबाक कोन कथा, कोनो समीक्षा लिखबाक मोन नहि करैत अछि। बड़ व्यस्त रहैत छी। हाइ स्कूलक नोकरी बड़ जबदाह अछि। हाइस्कूल मे सहकर्मी लोकनि बड़ झगड़ाहु, तहिना दुष्ट...।

बहुत कम ऊर्जा बचैत अछि, पढ़बा लेल आ ताहू सँ कम लिखबा लेल।

कथागोष्ठी मे भाग लेबाक इच्छा नवकथा लिखबाक चैलेंज प्रदान करैत अछि।'

22 सितंबर 1991क पत्र मे लिखलनि—'एम्हर अहाँक पत्र कम आयल। सझिया संकलन आब आबि जयबाक चाही। प्रयत्नशील होउ।

विजय विक्रम खड़गपुर सँ लिखने छथि जे 'धार नहि होइछ मुक्त 'क अहाँक लिखल समीक्षा ओ पढ़ने छथि। तकर अर्थ ई लागल जे अहाँ विमोचनक जे रिपोर्ट छपओने छी, से ओ पढ़ने छथि।

यात्री अभिनंदन ग्रंथ लेल किछु वर्ष पूर्व एक लेख लिखने रही। से लेख मोहन भारद्वाज केँ पठओने रही। तकर कार्बन प्रति नारायणजी लग अछि। नारायणजी केँ कहल जे ओ तकर प्रतिलिपि अहाँ केँ पठा देथि। काज जोग होइक, तँ अहाँ 'विपक्ष' लेल ओकर अनुवाद क' लेब।

7/11 केँ कथागोष्ठी दू ठाम (नेहरा, सखबार) आ दू आयोजक (दीपक जी, राम बाबू)—तकर सूचना आयल अछि। तकरा ठीक करबा लेल पत्र लिखि रहल छी।

डा. दुर्गानाथ झा श्रीश, शिवशंकर श्रीनिवास आ आब तकर बाद कुलानंद मिश्र आवेश सँ हमरा एक उपन्यास लिखबाक बात स्मरण देअओलनि अछि। मुदा, जे मति-गति अछि, ताहि मे एखन उपन्यास लिखब संभव नहि अछि।'

23 सितंबर 1991क पत्र मे ओ लिखलनि—'अहाँक पटना यात्रा आ ओही समय मे भारत यायावरक पटना यात्राक समाचार सेहो आयल अछि।

अहाँक थीसिस बला काज भ' जाय, से प्रसन्नताक बात होयत। भारत यायावर केँ हमर हिंदी लेखन चाही, जे संभव नहि अछि। यात्री जी पर लिखल हमर एक समीक्षा अहाँ केँ नारायणजी पठओताह, काज जोग बूझि पड़य, तँ तकर हिंदी अनुवाद क' लेब।'

25 सितंबर 1991क पत्र मे ओ लिखैत छथि—'हंस'क अंक बहुत दिन सँ नहि देखल अछि। एहिठाम नहि अबैछ। रामधारी सिंह दिवाकरक कथाक 'मधुरमनि' सँ साम्य आश्चर्यकर लागल।'

27 सितंबर 1991क पत्र मे ओ लिखलनि—'आइ सकरी सँ आयल छी। काल्हि ओहिठाम कथागोष्ठी आयोजित छल। आयोजन सफल रहल। अध्यक्षता कयलनि ए.सी. दीपक। प्रभास, देवशंकर नवीन, तारानंद वियोगी प्रभृति अनेक साहित्यकार आयल छलाह। अगिला गोष्ठी नेहरा मे जनवरीक दोसर शनि केँ होयत।

प्रदीप बिहारी सकरी गोष्ठी मे आयल छलाह। इलाज ओहो करा रहल छथि।

लघुकथा सभ शीघ्र पठाउ। भीम भाइक 'साहित्यालाप'क विमोचन सकरी मे भेल।

भुवनेश्वर पाथेयक देहांत भ' गेलनि। ई गोष्ठी भुवनेश्वर पाथेयक स्मृति केँ समर्पित भेल।'

27 सितंबर 1991क पत्र मे लिखलनि—'मातृवाणी'क लघुकथा अंक लेल सामग्री शीघ्र मातृवाणीक पता पर पठाउ।

कथागोष्ठी अक्टूबर मे होयबाक संभावना अछि।

भाखा टाइम्स अंक-2 आ तीरभुक्ति-1 आयल अछि।'

फेर 29 सितंबर 1991क पत्र मे ओ लिखलनि—'चंडेश्वर खाँ पटना सँ आयल छथि। बुध (25.9) केँ अहाँ सँ भेंट करबा लेल ओ चेतना समिति सेहो गेल छलाह। ओहिठाम पता लगलनि जे हमर कविता संग्रह ने तँ ओहि ठाम चेतना समिति आ ने भाखा प्रकाशन धरि पहुँचल अछि। भाखा प्रकाशन केँ एक प्रति समीक्षार्थ खाँ जीक हाथें पठाओल अछि।

ई सभ बात सूचनार्थ लिखल अछि, कोनो कार्यार्थ नहि। ई जनैत छी, कविता

पोथीक ग्राहक नहि छैक। तें अगुताइ नहि अछि जे ई पोथी बिकाइत, तँ पाइ घुरैत।

रमेश (दरभंगा) लिखलनि जे हुनक दुनू कविता पोथीक एकहु प्रति नहि बिकयलनि।

भीमनाथ झाजी लिखैत छथि जे यात्रीजी अस्वस्थ नहि छथि, ओहिना दरभंगा प्रवास लेल एक मासक हेतु आयल छथि।

अहाँ पटना सँ सुपौल आबि गेल होयब। थीसिसक काज मे की प्रगति भेल?'

सितंबर मासक पत्र मे हुनक मुख्य चिंता कथागोष्ठी थिक। से कथागोष्ठी संपन्न भेल सकरी मे। प्रदीप बिहारी जीवकांत जीक छात्र सेहो रहल छथि। ओ ओहि समय अस्वस्थ रहथि आ हुनक चिकित्सा चलि रहल छलनि मुदा ओहो सकरी कथागोष्ठी मे उपस्थित रहथि।

हमर नोकरी छुटबाक चर्चा छल, से बात हम हुनका लिखने रहियनि, ताहि सँ ओ अत्यंत दुखी आ क्षुब्ध भेल छलाह। संयोग सँ ओहि समय भाऊ समर्थक आत्मकथात्मक पोथी 'मिस्सी' पढ़ि रहल छलाह। कवि-कलाकार लोकनिक आर्थिक दुख-धंधा आ दैन्य सँ भरल ई पोथी हुनका विचलित कयने रहनि आ हमर नोकरी छुटि जयबाक बात सँ ओ क्षुब्ध भेल कोनो दोसर नोकरी तकबाक बात कयलनि, जे हमरा लेल ओहि समय दुष्कर छल। आइयो, दुर्योग सँ, ई लिखैत काल, हमर नोकरी छूटल अछि।

अनिल ठाकुरक हाथें पत्र आ 'धार नहि होइछ मुक्त' केर 50 प्रति जीवकांत जी केँ पठौने रहियनि। हुनक रिक्शा कटैया लग उनटि गेल रहनि। मुदा ओ आ हुनक सामान सभ सुरक्षित छलनि। दुर्घटनाक जानकारी हुनके पत्र सँ भेटल छल।

एम्हर 10 सितंबर केँ हमर दोसर पुत्रीक जन्म भेल छल तँ ओ कालिदासक एक प्रसिद्ध उक्ति अपन पत्र मे लिखि पठौलनि।

'मातृवाणी'क संपादक दीपक जी लघुकथा विशेषांक लेल अतिथि संपादकक रूप मे जीवकांत जी केँ आमंत्रित क' रहल छलाह ओम्हर जीवकांत जी नवका लेखक मे सँ कोनो एक केँ ई भार देब' चाहैत छलाह। ई हुनक उदारता आ नव लोक केँ प्रेरित-प्रोत्साहित करबाक अपन निराला ढंग रहनि आ ई प्रवृत्ति जीवन भरि हुनका मे विद्यमान रहलनि।

•••



केदार कानन

जन्म : 10 जुलाइ, 1959 कें सुपौल, बिहार।

शिक्षा : एम.ए (मैथिली आ हिंदी)

कृति : 'आकार लैत शब्द', 'व्योम मे शब्द' (कविता-संग्रह), 'अक्ष पर नचैत' (जीवकांत पर केंद्रित)।

'मैथिली कविताएँ', 'प्रायश्चित', 'निशांत की चिड़िया', 'तुमि चिर सारथि' आदि पोथीक मैथिली सँ हिंदी अनुवाद, 'भारतीय परंपराक भूमिका', 'मगध', 'अकाल मे सारस', 'देवताक घाटी' आदि पोथीक हिंदी सँ मैथिली अनुवाद आ 'चंदु मेनन' एवं 'राजा राममोहन राय'क अंग्रेजी सँ मैथिली अनुवाद प्रकाशित छनि।

महत्त्वपूर्ण मैथिली पत्रिका 'संकल्प' आ 'भारती मंडन'क संपादक। दर्जनाधिक पोथी आ कतेको पत्रिकाक संपादन-सहयोगी। अनेक महत्त्वपूर्ण पत्र-पत्रिका मे हिनका द्वारा अनूदित रचना निरंतर छपैत रहलनि अछि।

साहित्य अकादेमीक अनुवाद पुरस्कार सहित कतेको सम्मान सँ सम्मानित।

सम्प्रति : प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, सुखासन, मधेपुरा सँ प्राचार्य पद सँ सेवा-निवृत्तिक बाद स्वतंत्र लेखन आ संपादन मे व्यस्त।

संपर्क : किसुन कुटीर, गुदरी बाजार,
सुपौल-852131 (बिहार)

अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.
सी-56/ यूजीएफ-4
शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-II
ग़ाज़ियाबाद-201005 (उ.प्र.)

मूल्य : ₹ 345/-

ISBN 978-93-88799-97-3